वर्ष:46, अंक: 5 सितम्बर-अक्टूबर 2023

गगनांचल

साहित्य, कला एवं संस्कृति का संगम

वसुधैव कुटुम्बकम्

सारा विश्व एक परिवार

गगनांचल के आगामी अंकों की आवरण कथाओं के संभावित विषय

नवम्बर-दिसम्बर, 2023

भारत-रूस सम्बन्ध के 70 वर्ष

रूस में भारतीय संस्कृति
भारत-रूस संबंध और हिन्दी की भूमिका
भारत-रूस सम्बन्धों का इतिहास
भारत-रूस में सांस्कृतिक आदान-प्रदान
भारत-रूस आर्थिक संबंधों की संभावनाएं
भारत और रूस में सामरिक संबंध
विविध सोवियत गणराज्यों के साथ भारत के सम्बन्ध

जनवरी-फ़रवरी, 2024

लोक साहित्य और विज्ञान

भारत में विज्ञान की लोकसुलभता
भारत की वाचिक परंपरा में विज्ञान
लोक साहित्य में स्वास्थ्य
लोक साहित्य में मौसम विज्ञान
लोक साहित्य में समाज विज्ञान
लोक साहित्य में काल-विज्ञान
लोक साहित्य में खगोल विज्ञान
लोक साहित्य में कृषि विज्ञान

ISSN : 0971-1430

वर्ष:46, अंक: 5

सितम्बर-अक्टूबर 2023

गगनांचल

साहित्य, कला एवं संस्कृति का संगम

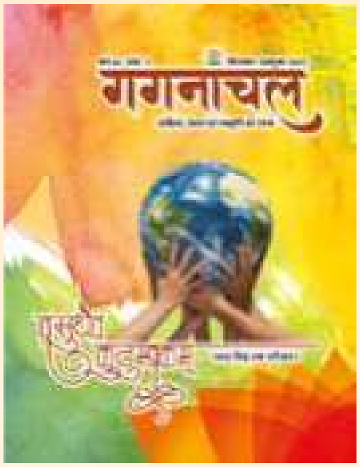

प्रकाशक

कुमार तुहिन

महानिदेशक

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

संपादक

रवि शंकर

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

आजाद भवन, इंद्रप्रस्थ एस्टेट,

नई दिल्ली-110002

ई-मेल : pohindi.iccr@nic.in

गगनांचल अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध
http://www.iccr.gov.in/Publication/Gagananchal
पर क्लिक करें।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक :		₹ 500
	यू.एस	$ 100
त्रैवार्षिक :		₹ 1200
	यू.एस.	$ 250

उपर्युक्त सदस्यता शुल्क का अग्रिम भुगतान 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली' को देय बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

मुद्रण : स्पेस 4 बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि. दिल्ली

इस अंक के आकर्षण

भारत की जी-20 अध्यक्षता: वैश्विक सफल कूटनीति और सॉफ्ट पावर का प्रभुत्व

भक्त एवं संत साहित्य में वसुधैव कुटुंबकम्

प्राचीन बाल्टिक धर्म रोमुआ औरवसुधैव कुटुम्बकम्

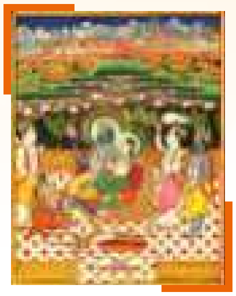

प्राचीन चित्रांकन परम्परा में श्रीराम

विशिष्ट है कोकणा जनजाति की लोक-संस्कृति

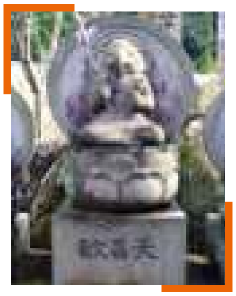

जापान में हिन्दू प्रतीकों की व्याप्ति

गगनांचल में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है किंतु पुनर्मुद्रण के लिए आग्रह प्राप्त होने पर अनुमति दी जा सकती है। अतः प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना कोई भी लेखादि पुनर्मुद्रित न किया जाए। गगनांचल में व्यक्त विचार संबद्ध लेखकों के होते हैं और आवश्यक रूप से परिषद की नीति को प्रकट नहीं करते। प्रकाशित चित्रों की मौलिकता आदि तथ्यों की जिम्मेदारी संबंधित प्रेषकों की है, परिषद की नहीं।

गगनांचल
साहित्य, कला एवं संस्कृति का संगम
वर्ष:46, अंक: 5, सितम्बर-अक्टूबर 2023

अनुक्रम

प्रकाशकीय

3 फैलाना होगा विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव
कुमार तुहिन

संपादकीय

4 वसुधैव कुटुम्बकम् में निहित है विश्व का विकास
रवि शंकर

आवरण कथा

5 भारत की जी-20 अध्यक्षता: वैश्विक सफल कूटनीति और सॉफ्ट पावर का प्रभुत्व
प्रोफेसर जगमीत बाबा, कर्म सिंह

13 जी-20 : बदलती विश्व व्यवस्था का संकेत
डॉ. ध्रुव कुमार

16 "वसुधैव कुटुम्बकम्" के परिप्रेक्ष्य में भारतीय राजनीतिक चिंतन का दृष्टिबोध
डॉ रूबल शर्मा, डॉ जागीर कौर

वसुधैव कुटुम्बकम्

21 वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ और अनर्थ
प्रो. रामेश्वर मिश्र पंकज

24 भक्त एवं संत साहित्य में वसुधैव कुटुंबकम्
कविता सरोज

31 सतत विकास की वैदिक अवधारणा
डॉ. सोनिया, प्रो. रसाल सिंह

36 प्राचीन बाल्टिक धर्म रोमुआ और वसुधैव कुटुम्बकम्
गाइले वनजाइने

साहित्य

41 बदलते विश्व में हिंदी की बढ़ती संभावनाएं
कोमल

44 कविता के अनुवाद की समस्याएँ
प्रो.पूनम कुमारी

कला

48 प्राचीन चित्रांकन परम्परा में श्रीराम
ललित शर्मा

54 आदिगुरू शंकराचार्य की प्रतिमा का अनावरण
संजय गोस्वामी

57 विशिष्ट है कोकणा जनजाति की लोक-संस्कृति
निलेश शिवाजी देशमुख

68 अत्यंत समृद्ध है भारत में नृत्यों की परंपरा
रमेश चन्द्र

73 भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भ नटराज शिव
डॉ० कमल किशोर मिश्र

विश्ववारा संस्कृति

82 जापान में हिन्दू प्रतीकों की व्याप्ति
केशव चंद्र

स्थायी स्तंभ

61 कहानी : मुझे माफ़ कर दो माँ
पूनम देवी

67 कविता : पितृपक्ष
मनोज कुमार श्रीवास्तव

88 गतिविधियाँ

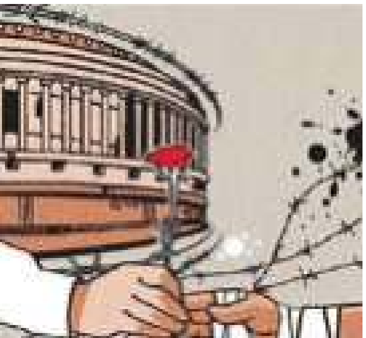

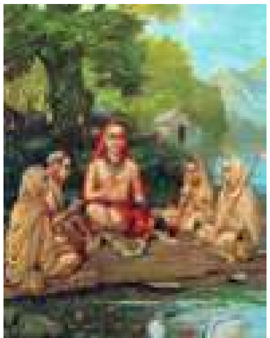

प्रकाशकीय

फैलाना होगा विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव

जी 20 की अध्यक्षता भारत के लिए एक गौरव की बात थी। परंतु जब यह सम्मेलन समाप्त हुआ तो कहा जा सकता था कि भारत की अध्यक्षता जी 20 समूह के लिए गौरव की बात थी। भारत की अध्यक्षता में जी 20 सम्मेलन ने नई उपलब्धियाँ हासिल कीं। यह हमारी वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा का ही प्रतिफलन है। महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि भारत ने इस जी 20 सम्मेलन का मुख्य विचार वुसधैव कुटुम्बकम् ही रखा था, जो कि विश्व की वर्तमान समस्याओं के आलोक में सर्वाधिक उपयुक्त दिखता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की शिक्षा भारत ने ही विश्व को दी है। आज से चार सौ वर्ष पूर्व तक विश्व में कोई भी उपनिवेश नहीं था, जबकि भारतीयों का संपूर्ण विश्व में संचार था। वैश्विक संचार के बाद भी भारत ने विश्व में केवल मानवोत्थान की संस्कृति का विकास किया। उपनिवेश नहीं बनाये। आज विश्व एक अर्थ में औपनिवेशवाद से मुक्त हो चुका है, परंतु सही अर्थ में औपनिवेशवाद की समाप्ति अभी तक नहीं हुई है। आज के समय में भी यह औपनिवेशवाद पूरे विश्व में आधुनिकता के नाम पर फैलाया जा रहा है।

सांस्कृतिक औपनिवेशवाद को समाप्त करना भी एक बड़ी चुनौती है। स्वाभाविक ही है कि इसमें भी बड़ा योगदान भारत को ही करना था, क्योंकि वैविध्य का सबसे बड़ा संरक्षक भी भारत ही है। प्राचीन काल से ही भारत में वैचारिक से लेकर सांस्कृतिक विविधता को भरपूर संरक्षण मिलता रहा है। एक ही तत्त्व के विविध रूपों में प्रकटीकरण के तथ्य का अनावरण भारत ने ही किया है और इसलिए समस्त भूतों में एक तत्त्व की उपस्थिति को वही अनुभूत कर सकता है और करवा भी सकता है। आत्मवत् सर्वभूतेषु की घोषणा भारतीयों ने ही की है। इस आत्मवत् सर्वभूतेषु का उद्घोष पूरे विश्व में गूंजे, यह दायित्व भी हमारा ही है।

इस बात को ध्यान में रखकर ही गगनांचल के इस अंक का संयोजन किया गया है। गगनांचल के इस अंक में हम यह प्रयास कर रहे हैं कि भारत की जी20 अध्यक्षता के वैशिष्ट्य को तो हम रेखांकित करें ही, साथ ही वसुधैव कुटुम्बकम् की वास्तविक निहितार्थ को भी उल्लिखित कर सकें। वसुधैव कुटुम्बकम् के व्यावहारिक प्रतिफलन को चिह्नित करने का भी प्रयास इस अंक में किया जा रहा है।

वस्तुतः हमारा प्रयास है कि भारत ने जो अभियान प्रारंभ किया है, उसके सांस्कृतिक तथा वैचारिक पक्ष को हम प्रस्तुत करें। इस कार्य को करने में हमारे लेखकों की महती भूमिका है। ऐसे समस्त शोधपूर्ण आलेखों की हमें प्रतीक्षा रहेगी, जो नई बन रही वैश्विक व्यवस्था में भारत के सांस्कृतिक पक्ष को मजबूत कर सकें। विश्व मानवता के हित में यह एक आशा की किरण है और इस किरण को बनाए रखना गगनांचल के लेखक, पाठक और प्रसारक होने के नाते हम सभी का दायित्व है।

कुमार तुहिन

महानिदेशक

संपादकीय

वसुधैव कुटुम्बकम् में निहित है विश्व का विकास

अमृत महोत्सव काल से भारत अमृतकाल में प्रवेश कर गया है। इस अमृतकाल में भारत का वैश्विक महत्त्व भी बढ़ने लगा है। वैश्विक राजनय में भारत की बढ़ती भूमिका का एक बड़ा प्रमाण था भारत की जी-20 देशों की अध्यक्षता। हालाँकि जी-20 एक आर्थिक मंच रहा है, परंतु पिछले कुछ वर्षों से इसका व्याप बढ़ा है और अब वह केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गया है। वैसे भी आचार्य चाणक्य ने कहा है – धर्मस्य मूलं अर्थः, अर्थस्य मूलं राज्यः, राज्यस्य मूलं इंद्रियजयः। अर्थात धर्म का मूल आधार अर्थ है, अर्थ का मूल आधार राज्य है और एक अच्छे सुव्यवस्थित राज्य का आधार है इंद्रियों को विजित करना। इस प्रकार देखा जाए तो अर्थ को व्यवस्थित करने के लिए राज्य और समाज दोनों को ही व्यवस्थित करना पड़ता है।

संभवतः यह बात जी-20 के प्रमुखों के भी ध्यान में रही होगी और इसलिए जी-20 के अंतर्गत सिविल-20, युवा-20, स्त्री-20 जैसे अनेक गैरआर्थिक परंतु अर्थनीति को प्रभावित करने वाले अनेक समूह बना कर जनप्रबोधन तथा जनसंपर्क का कार्य किया गया। भारत में आयोजित जी-20 सम्मेलन के दौरान इन समूहों का व्याप और प्रभाव दोनों ही काफी बढ़े।

जी-20 सम्मेलन में भारतीय संस्कृति सभी के आकर्षण का केंद्र थी। भारत सरकार ने भी भारतीय संस्कृति को अभिव्यक्त करने का बहुआयामी प्रयास किया था। भारत मंडपम् के बाहर नटराज की उपस्थिति इसका ज्वलंत प्रमाण थी। विभिन्न उपसमूहों के देश भर में जो कार्यक्रम आयोजित किये गए, उनमें भी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गए और विदेशी प्रतिनिधियों को भारतीय संस्कृति के वैविध्य तथा उनमें व्याप्त एकात्मता के दर्शन करवाए गए।

जी-20 सम्मेलन का घोष वाक्य रखा गया था – वसुधैव कुटुम्बकम्। यह भी भारत की एक विशेषता है। वसुधैव कुटुम्बकम् का उद्घोष केवल वही कर सकता है, जो संपूर्ण वसुधा को अपना मानता हो, जिसके लिए समस्त मानव समुदाय अपने परिवार के समान हो, जिसकी वैश्विक दृष्टि और भावना दोनों ही आध्यात्मिक तथा आत्मिक चरम पर हों, जिसके लिए जड़ और चेतन संपूर्ण सृष्टि उस एक परमात्मा के निच्छवास के समान हो। इस एकत्व को देखने वाला ही वसुधैव कुटुम्बकम् की घोषणा कर सकता है। इतिहास बताता है कि यह दृष्टि केवल और केवल भारत के पास है।

यही कारण है कि विश्व संचार के लंबे इतिहास में भारत ने कभी कहीं उपनिवेश नहीं बनाए। भारत ने राज्य नहीं, उनके हृदयों को जीता। भारत ने अपना राज्य कम फैलाया, अपनी संस्कृति अधिक फैलायी। आज वैश्विक राजनय में इसे साफ्ट पॉवर कहा जा रहा है, परंतु यह वस्तुतः पॉवर नहीं, प्रेम है। भारत सभी को प्रेम से देखता है और यही उसकी आंतरिक शक्ति का मूल रहस्य है।

किसी देश का आर्थिक विकास भी इस वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रेम की भावना पर ही निर्भर है। संपूर्ण समाज को अपना मानने की इस वैश्विक दृष्टि का ही परिणाम था कि भारत में राजा स्वयं को सत्ता और शक्ति का केंद्र नहीं, बल्कि संपूर्ण प्रजा के पालक तथा पिता के रूप में देखता था। भारत ही विश्व का वह एकमात्र देश है, जहाँ के राजा स्वेच्छा से राज छोड़ कर वन में जाते रहे हैं, जहाँ के सम्राट समस्त निजी संपत्ति का त्याग करके मिट्टी बर्तनों में भोजन करते रहे हैं। यह संभव होता है वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को आत्मसात करने के कारण। संपूर्ण वसुधा यानी पृथिवी मात्र को अपना कुटुम्ब मानने की उदात्तता के कारण।

वस्तुतः विकास इसे ही कहते हैं। भौतिक समृद्धि प्राप्त करना विकास नहीं है। विकास है मनुष्य का सभ्य बनना, मानव समाज का सभ्य बनना, संपूर्ण विश्व को सभ्य बनाकर शांति और सद्भाव स्थापित करना। यही भारत का एतिहासिक कर्तव्य रहा है, जो उसने कभी कृण्वंतो विश्वमार्यम् का उद्घोष करके किया था और आज वसुधैव कुटुम्बकम् का उद्घोष करके कर रहा है।

रवि शंकर

मोबाइल : +91-8076624400

ई-मेल : ravis.dhn@gmail.com

भारत की जी-20 अध्यक्षता

वैश्विक सफल कूटनीति और सॉफ्ट पावर का प्रभुत्व

– प्रोफेसर जगमीत बाबा*, कर्म सिंह**

वर्ष 2023 भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा क्योंकि भारत को विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले संगठन का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ और भारत ने इस अवसर को अब तक के इतिहास का सबसे सफलतम आयोजन बनाकर संपूर्ण विश्व को भारत की काबिलियत तथा मानवीय सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित करवाया है। आज विश्व के अधिकतर देश अर्थव्यवस्था की शिथिलता तथा खाद्य संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। वहीं भारत की अर्थव्यवस्था तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या को खाद्य संसाधन उपलब्ध करवा रही है। भारत भविष्य में आधारभूत समस्याओं का समाधान निकालकर आने वाले समय में जी-20 संगठन का एक महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली खिलाड़ी बनकर उभरेगा।

जी-20 शिखर सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में भारत जटिल वैश्विक समस्याओं के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए एक सफल आयोजन करवाने मे कामयाब हुआ। भारत ने जी-20 के लिए एक समावेशी और महत्वाकांक्षी एजेंडा तैयार किया था। दिल्ली घोषणा पत्र पर सर्व सम्मति, अफ्रीकन यूनियन को सदस्यता दिलाना,स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए नई पहल तथा इंडिया ईस्ट यूरोपीयन इकोनामिक कॉरिडोर पर सहमति बनाना इस सम्मेलन की सफलता के परिणाम है। भारत ने सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से वैश्विक पटल पर सॉफ्ट पावर को प्रतिस्थापित करने के नए आयाम स्थापित किए हैं। इस शिखर सम्मेलन में भारत ने गरीब और अल्प-विकसित देशों के मुद्दों का समर्थन किया और उनके लिए महत्वपूर्ण विकल्प प्रस्तुत किए। दुनिया की जीडीपी केंद्रीय दृष्टिकोण से हटकर भारत ने मानव केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया है। भारत जी-20 अध्यक्षता मे एक वैश्विक नेता के रूप में उजागर हुआ है। भारत वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और एक अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण विश्व बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत ने एक दिसंबर 2022 को जी-20 समूह की अध्यक्षता ग्रहण की थी। भारत इस समूह का पहली बार अध्यक्ष बना

था। भारत जी-20 का अध्यक्ष 30 नवंबर 2023 तक रहेगा। (संस्कृति, 2022) जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता बारी-बारी से सभी 19 सदस्य देशों को मिलती है। भारत को अगली मेजबानी का अवसर वर्ष 2043-44 में मिलेगा। वर्ष 2022 में इंडोनेशिया तथा वर्ष 2023 में भारत की अध्यक्षता में जी-20 सम्मेलन संपन्न हुआ। वर्ष 2024 में ब्राजील इसकी अध्यक्षता करेगा। अध्यक्ष देश द्वारा इसकी वार्षिक बैठक में कुछ अतिथि देशो को भी बुलाया जाता है। वर्ष 2023 में भारत द्वारा बांग्लादेश, मॉरिशस, सिंगापुर, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, स्पेन, ईजिप्ट और संयुक्त अरब अमीरात को अतिथि देश के रूप में बुलाया था। अध्यक्ष देश द्वारा ही इसकी अंतरराष्ट्रीय स्तर की बैठक का आयोजन भी करवाया जाता है।

इस संगठन का कोई स्थायी कार्यालय या सचिवालय नहीं है। इस संगठन का 18वां सम्मेलन भारत की राजधानी नई दिल्ली में 9-10 सितंबर 2023 को आयोजित हुआ। 9 सितंबर 2023 को इस शिखर सम्मेलन की शुरुआत में दो सत्र वन अर्थ और वन फैमिली पर आयोजित हुए। 10 सितंबर 2023 को एक सत्र जिसमें वन फ्यूचर की अवधारणा पर विचार विमर्श किया गया। (पीएमओ, 2023) भारत की अध्यक्षता में आयोजित यह सम्मेलन अब तक के पिछले सारे सम्मेलनों की तुलना में सबसे सफलतम सम्मेलन रहा। यह सम्मेलन भारत के 60 शहरों में करीब 200 बैठकों के आयोजनों के साथ संपन्न हुआ, जिसमें 20 सदस्य देश, 9 अतिथि देशों तथा 14 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के अध्यक्षों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की थी। चीन, रूस तथा मेक्सिको के राष्ट्राध्यक्षों की गैर मौजूदगी में भी यह सम्मेलन सफलता के मार्ग को प्रशस्त करने में कामयाब रहा। भारत को जी-20 की अध्यक्षता मिलने से दुनिया के छोटे-बड़े देश इसके परिणामो के लिए अधिक आशान्वित थे। जी-20 के अबतक के इतिहास में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का विकास तथा आर्थिक मुद्दे ही सुर्खियों में रहते थे। गरीब तथा अल्प विकसित देशों को वर्तमान में ग्लोबल साउथ अथवा दक्षिणी देश कहा जाता है। भारत के नेतृत्व में इन देशों की चुनौतियों व मुद्दों को भी विश्व के इस शक्तिशाली संगठन में विचार-विमर्श किया गया, यह एक नई बात थी। भारत ने इन देशों की रक्षा हेतु 'जलवायु न्याय' की धारणा का भी समर्थन किया। भारत में ग्लोबल साउथ के देशों के लिए समावेशी, महत्वकांक्षी और निर्णायक परिणाम दिए है। यह भारत की कूटनीति का वैश्विक पटल पर सफल संचालन था। (ब्यूरो, 2023)

जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान पूरी दुनिया के नेताओं को भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर को करीब से समझने तथा परखने का मौका मिला। भारत सदियों से मानव कल्याण तथा उत्थान के लिए पूरी दुनिया का मार्गदर्शक रहा है। भारत की प्राचीनतम ज्ञान परंपरा संपूर्ण विश्व के लिए नई खोजो का रास्ता अख्तियार करने का साधन आज भी बनी हुई है। (संस्कृति, 2023)भारत पर विदेशी आक्रांताओं के हमले तथा ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी ने भारत की ज्ञान परंपरा तथा आर्थिक समृद्धि को ध्वस्त कर दिया गया। वैश्विक पटल पर भारत को पिछलग्गू राष्ट्र के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। लंबी आजादी की लड़ाई के उपरांत भारत धीरे-धीरे पुन: अपनी खोई हुई साख को प्राप्त करने का प्रयास किया है।

भारत का विशाल आकार, भौगोलिक परिस्थितिय, विविधता पूर्ण लोकतांत्रिक परंपरा, विशाल जनसंख्या तथा धर्मनिरपेक्ष शासन प्रणाली भारत को विश्व का सर्वाधिक वैचारिक देश के रूप में प्रतिस्थापित करती है। भारत में हर धर्म, समुदाय, जाति के लोग पूर्ण स्वतंत्रता तथा समानता के साथ अपना जीवन-यापन करते हैं। भारत ने अपनी विकास यात्रा में मानवतावादी दृष्टिकोण को सर्वोच्च स्थान दिया है। किसी भी प्रकार की विचारधारा का हनन न करते हुए आज आधुनिक भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़े आयोजन करने के बहुत ही कम अवसर प्राप्त हुए हैं। वर्ष 2023 मे भारत को विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं काअध्यक्ष बनने का सुअवसर मिला। भारत के प्रति वैश्विक पटल पर प्रतिस्थापित संकुचित सोच तथा विजन को परिवर्तित करने के इस अवसर को भारत ने अपनी कूटनीतिक पहलों के कारण सफल बनाया है। आज का भारत विकास तथा वैश्विक समस्याओं के बीच में एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपना आधिपत्य स्थापित कर रहा है। दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या की स्थल भूमि भारत के लोगो के लिए यह गौरवान्वित करने वाला पल है।

इस सम्मेलन की हर घटना, बैठक तथा आयोजन के विभिन्न पहलुओं को भारत ने अपनी समृद्ध ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर तथा हर पल जनमानस तथा मुद्दों के साथ जोड़कर रखा। परिणामस्वरूप यह सम्मेलन वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी नए आयाम स्थापित करने में सफल हुआ। 4 से 7 दिसंबर 2022 को पहली शेरपा बैठक, उदयपुर, राजस्थान में आयोजित हुई। इस बैठक में जी-20 सदस्यों, 9 अतिथि देशों और 14 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की पूर्ण और सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। भारत ने पहली बैठक से ही भारतीय संस्कृति तथा धरोहर से वैश्विक नेताओं को परिचित करवाने की पहल शुरू कर दी थी।

वैश्विक पटल पर भारत की सॉफ्ट पावर का बढ़ता हुआ प्रभुत्व

भारत अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार से वैश्विक पटेल पर अपनी सॉफ्ट पावर को मजबूत कर रहा है। अमेरिकी लेखक डेविड

फ्रॉले भारतीय संस्कृति के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है, "भारत के पास जबरदस्त सांस्कृतिक और सभ्यतागत शक्ति है जिसने हजारों वर्षों से दुनिया पर गहरा प्रभाव बनाए रखा है"। भारतीय संस्कृति एक जीवंत और लगातार विकसित होती हुई परंपरा है। जो कई अलग-अलग स्रोतों से प्रभावित है। फ्रॉले भारतीय संस्कृति के बारे में एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण रखते हैं। (फ्रॉले, 2011) भारत द्वारा इस सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने से लेकर समाप्ति तक हर मंच पर भारत की कला, संस्कृति, सभ्यता तथा प्रगति का प्रदर्शन वैश्विक नेताओं के लिए आकर्षण का केंद्र रहा। सर्वप्रथम अध्यक्ष देश द्वारा जी-20 के सम्मेलन के लिए एक विशेष थीम निर्धारित की जाती है। भारत द्वारा 'वसुधैव कुटुंबकम' अर्थात 'एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य' निर्धारित की गई थी। एक पृथ्वी, इस धरती के सारे मनुष्य के जीवन को बेहतरीन बनाने का संकल्प ले। एक परिवार, विकास के लिए एक दूसरे के सहयोगी बने। एक भविष्य, उज्जवल भविष्य के लिए एक साथ आगे बढ़े। वर्तमान समय में विश्व अनेकों नवीनतम चुनौतियों का सामना कर रहा है।

ऐसे समय में विश्व को एक परिवार के रूप में रेखांकित करना भारत के मानवतावादी दृष्टिकोण को चरितार्थ करता है। (पीएमओ, 2023) भारत के प्राचीन संस्कृत साहित्य से इस विचार को लिया गया है। भारत इस पृथ्वी के समस्त प्राणियों को एक ही परिवार मानता आया है। यह थीम प्राचीन भारत की वैभवशाली ज्ञान परंपरा तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को उजागर करती है। (पीएमओ, 2023) इसमें संपूर्ण ब्रह्मांड के मानव पशु तथा सूक्ष्म जीवों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। यह थीम मानवीय जीवन शैली तथा एल.आई.एफ.ई. 'लाइफ स्टाइल फॉर एनवायरमेंट' अर्थात पर्यावरण के लिए जागरूक जीवन शैली पर भी आधारित थी। पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता, स्वच्छ, हरे-भरे और उज्जवल भविष्य का निर्माण करना है। भारत वैश्विक पटल पर अपनी प्राचीनतम ज्ञान परंपराओं के लिए ख्याति प्राप्त है। भारत ने पूरी दुनिया को गणित, विज्ञान, चिकित्सा दर्शन, और साहित्य सहित ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से परिचित करवाया है। जी-20 का थीम भारत की वैश्विक कल्याण की भावना को समर्पित है। जी-20के प्रतीक चिह्न (लोगों) मे भी भारत के राष्ट्रीय पुष्प कलम तथा पृथ्वी के गोलाकार चित्र को उद्धृत किया गया था। इस प्रतीक चिह्न में केसरिया, सफेद, हरे और नीले रंग का प्रयोग किया गया था। यह पृथ्वी ग्रह पर पर्यावरण के प्रति भारत केसंवेदनशीलतावादी दृष्टिकोण को प्रकट करता है। जी-20 प्रतीक चिह्न के नीचे भारत 2023 इंडिया शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रतीक चिह्न और विषय (थीम) संपूर्ण विश्व के लिए न्यायसंगत और समान विकास का सशक्त संदेश दिया। इस शिखर सम्मेलन में अतिथियों को भारत के राष्ट्रपति की ओर से निमंत्रण में इंडिया शब्द की जगह भारत शब्द का प्रयोग किया गया जोकि देश तथा दुनिया के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना।

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी अतिथियों का भारतीय संस्कृति के अनुसार स्वागत किया। कोणार्क के सुप्रसिद्ध सूर्य मंदिर का महत्व तथा दुनिया के पहले सार्वभौमिक ज्ञान केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय के इतिहास का महत्व शीर्ष विदेशी नेताओ के समक्ष बड़ी सुगमता से प्रस्तुत किया गया। नालंदा विश्वविद्यालय 427 ई. पू. अपने ज्ञान तथा वैभवता के लिए विश्व विख्यात था। यूरोप के प्रथम बोलोग्ना विश्वविद्यालय से 1500 साल पहले भारत का नालंदा विश्वविद्यालय स्थापित हो चुका था। इस शिखर सम्मेलन के मुख्य आयोजन स्थल 'भारत मंडप' में भारतीय कला, संस्कृति तथा वास्तुकला, कालजयी परंपरा तथा सांस्कृतिक धरोहरों के प्रदर्शन और भारत की आर्थिक, वैज्ञानिक वतकनीकी प्रगत्ति एवं गतिशीलता पूरी तरह से परिलक्षित हुई है। इस परिसर में विशाल नटराज प्रतिमा को प्रस्थापित किया गया था। (पीएमओ, 2023) इस शिखर सम्मेलन में भारत की कूटनीतिक व सर्वसम्मति निर्माण कौशल, विश्व के सर्वाधिक युवा देश तथा विविधतापूर्ण लोकतंत्र की भूमिका ने इस सम्मेलन को एक विशेष गरिमा प्रदान की। आज भारत वैश्विक पटल पर विश्व गुरु और विश्वमित्र के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित हो गया है। पिछले 7 दशकों से भारत में जब कोई भी बड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर का आयोजन होता था, तो उसमें ब्रितानियों द्वारा बसाए और उन्हीं के नाम पर प्रचलित 'लुटियंस दिल्ली' या विज्ञान भवन या आसपास के प्रमुख स्थल ही आकर्षण का केंद्र रहते थे। लेकिन इस बार

भारत में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन की बैठकों के दौरान भारत के अनेकों शहरों तथा वहां के जनमानस को अंतरराष्ट्रीय मंच के साथ जोड़कर दुनिया को भारत की विविधता और सुंदरता से अवगत करवाने का सफल प्रयास किया है।

इस वर्ष यह सम्मेलन न केवल साधारणजनों तक पहुंचा अपितु इसमें उनकी भागीदारी भी सुनिश्चित हुई है। भारत जी-20 शिखर सम्मेलन में वैश्विक पटल पर एक अनूठी छाप छोड़ने में भी सफल हुआ है। इस सम्मेलन का सफल आयोजन अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के प्रभुत्व को मजबूत करने में अहम भूमिका सुनिश्चित करेगा। वर्तमान समय हार्ड पावर तथा सॉफ्ट पावर के सामंजस्य में देश के हितों को निर्धारित तथा परिपूर्ण करने का है। भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के साथ अपनी सॉफ्ट पावर को हर मंच पर मजबूती के साथ प्रस्तुत करके संपूर्ण विश्व में अपने आधिपत्य को स्थापित करने के नए आयाम स्थापित कर रहा है। इस शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता के दौरान भी भारत ने अपनी सॉफ्ट पावर को पूरी दुनिया के समक्ष प्रतिस्थापित करने का सफल प्रयास किया है। (खेल, 2023)

जी-20 शिखर सम्मेलन का विश्लेषण

इस सम्मेलन की हर घटना, बैठक तथा आयोजन के विभिन्न पहलुओं कोभारत ने अपनी समृद्ध ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर को हर पल जनमानस तथा मुद्दों के साथ जोड़कर रखा। परिणामस्वरुप यह सम्मेलन वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी नए आयाम स्थापित करने में सफल हुआ। 4 से 7 दिसंबर 2022 को पहली शेरपा बैठक, उदयपुर, राजस्थान में आयोजित हुई। इस बैठक में जी-20 सदस्यों, 9 अतिथि देशों और 14 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की पूर्ण और सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। भारत ने पहली बैठक से ही भारतीय संस्कृति तथा धरोहर से वैश्विक नेताओं को परिचित करवाने की पहल शुरू कर दी थी। जिसके बहुत ही सार्थक तथा सकारात्मक परिणाम देखने को मिले। विदेशी मेहमानों कोभारत के ऐतिहासिक यूनेस्को विश्व धरोहर कुंभलगढ़ किले का भ्रमण करवाया गया। इसके उपरांत मघाई नदी के तट पर स्थित 15वीं शताब्दी के वास्तुशिल्प रणकपुर मंदिर के दर्शन करवाए गए। यह मंदिर मघाई नदी के तट पर स्थित है जो कि उत्कृष्ट वास्तुकला का जीवंत दृश्य उजागर करते हैं। मंदिर परिसर में पार्श्वनाथ मंदिर, चौमुखा मंदिर, सूर्य मंदिर और अंबा माता का भव्य मंदिर मौजूद है। विदेशी मेहमानों को भारत के सबसे बड़े प्रांत राजस्थान के इतिहास और सहस्राब्दियों से चली आ रही समृद्ध अटूट

> **जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान पूरी दुनिया के नेताओं को भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर को करीब से समझने तथा परखने का मौका मिला। भारत सदियों से मानव कल्याण तथा उत्थान के लिए पूरी दुनिया का मार्गदर्शक रहा है। भारत की प्राचीनतम ज्ञान परंपरा संपूर्ण विश्व के लिए नई खोजो का रास्ता अख्तियार करने का साधन आज भी बनी हुई है।**

परंपराओं की अनुभूति और झलक देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सांस्कृतिक महत्व के इन स्थलों के दीदार के उपरांत राजस्थान के सुप्रसिद्ध स्वादिष्ट व्यंजन भारतीय संस्कृति के अनुरूप परोसे गए। विदेशी मेहमानों को अद्भुत सांस्कृतिक दृश्यों, भारतीय संस्कृति में सुसज्जित खाने के बर्तन तथा व्यंजन अत्यधिक पसंद आए जिसकी उन्होंने खुले मंच से प्रशंसा भी की। भारतीय संस्कृति की अनूठी छाप इन विदेशी मेहमानों ने पहली बार देखी तथा भारत के प्रति इनकी सोच का नजरिया भी बदला। भारत की वैभवशाली प्राचीनतम संस्कृति का विविधतापूर्ण अनुभव देखने को मिला। इस सम्मेलन में वैश्विक चुनौतियों पर सारगर्भित चर्चा और भारत की अतिथियों के सत्कार के लिए सदियों से चली आ रही 'अतिथि देवो भव' परंपरा का सुंदर उदाहरण पेश किया गया। (विदेश, 2022)

जी-20 के इतिहास का सबसे सफलतम सम्मेलन

जी-20 के अब तक के 17 सम्मेलनों की ऐतिहासिक घटनाओं का यदि विश्लेषण किया जाए तो अंतिम प्रस्ताव पर प्रथम बार सबसे ज्यादा सहमति भारत के नेतृत्व में 18वें शिखर सम्मेलन में बनी। इस सम्मेलन में 112 परिणाम दस्तावेज व अध्यक्षीय दस्तावेज स्वीकृत हुए है। (पीएमओ, 2023) वैश्विक सहमति बनने पर भारत के शेरपा अमिताभ कांत तथा अन्य अधिकारियों व शीर्ष नेतृत्व ने करीब 200 घंटे की सघन वार्ताओं का आयोजन किया था। वर्ष 2022 इंडोनेशिया के बाली में 73 परिणाम दस्तावेज यानी आउटकम डॉक्यूमेंट्स स्वीकृत हुए थे। भारत इस संगठन में 21वें सदस्य के रूप में अफ्रीकन यूनियन को जोड़ना चाहता था। भारत ने इस संगठन की अध्यक्षता ग्रहण करते समय ही अफ्रीकन यूनियन को इस संगठन का सदस्य बनाने के कूटनीतिक प्रयास शुरू कर दिए थे, जिसमें वह अंततः सफल हुआ और अब जी-20 संगठन G21 के नाम से वैश्विक पटल पर जाना जाएगा। अफ्रीकन यूनियन के 55 देशों को विश्व के इस सबसे शक्तिशाली संगठन के साथ अपनी समस्याओं तथा मुद्दों को पूरी दुनिया के समक्ष रखने का मंच भारत ने तैयार किया। भारत का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी चीन अफ्रीका के देशों की तरफ पहले से ही अपनी रणनीति पर काम कर रहा था। अफ्रीकन देश प्राकृतिक संसाधनों तथा खनिज संसाधनों से परिपूर्ण है। चीन इन देशों में धीरे-धीरे अपने पैर पसार रहा था लेकिन भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन में अफ्रीकन संघ को स्थायी सदस्यता दिलाकर एक बड़ी कूटनीतिक जीत हासिल की है। भारत संपूर्ण विश्व के मानव कल्याण की अवधारणा को लेकर काम करता है।

अफ्रीकन यूनियन को इस संगठन का सदस्य देश बनाने की पहल भारत के संकल्प 'सबका साथ,सबका विकास' को चरितार्थ करती है। (ब्यूरो, 2023)

इस शिखर सम्मेलन में 9 सितंबर 2023 को भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर को बनाने पर सहमति की घोषणा करवाने मे भारत कामयाब हुआ। यह भारत की इस शिखर सम्मेलन की एक बड़ी सफलता मानी जा सकती है। भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय यूनियन सहित कुल 8 देशों के इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट का लाभ इजराइल और जॉर्डन तक पहुंचेगा। इस इकोनामिक कॉरिडोर की लंबाई करीब 6000 किलोमीटर होगी, जिसमें 35 किलोमीटर समुद्र मार्ग भी सम्मिलित है। इस कॉरिडोर के निर्मित होने से जल और रेल मार्ग के जरिए भारत और यूरोप में व्यापार, ऊर्जा और संचार क्षेत्र में नई उन्नति का संचार होगा। इस मार्ग से भारत और यूरोप के मध्य व्यापार 40% तेज हो जाएगा। मुंबई से शुरू होने वाला यह नया कॉरिडोर चीन के महात्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बी.आर.आई.) का विकल्प बन सकता है। वैश्विक भू-राजनीति के विद्वानों द्वारा यह परियोजना चीन के बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव की प्रतिस्पर्धा के रूप में देखी जा रहा है। जोकि भविष्य में वैश्विक व्यापार के मार्ग के लिए एक चुनौती पैदा कर रहा था। भारत का यह आर्थिक गलियारा भविष्य में पूरी दुनिया के बीच व्यापार के लिए व्यापक संभावनाएं पैदा करेगा और किसी एक देश के एकाधिकार तथा अनियंत्रित विस्तारवादी धारणाओ को भी लगाम लगाएगा। (पीएमओ, 2023)

इस शिखर सम्मेलन के प्रारंभ में संयुक्त घोषणा हस्ताक्षरित होना लगभग असंभव लग रहा था। इस शिखर सम्मेलन में रूस तथा चीन के राष्ट्रध्यक्षों का सम्मिलित न होना भारत के लिए बड़ी चुनौती था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2019 में ह्यूस्टन में हाऊडी मोदी कार्यक्रम में तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पक्ष में प्रचार करते हुए 'अब की बार ट्रंप सरकार' का उद्घोष किया था। अमेरिका में परिणाम इस उद्घोष के विपरीत गए जो. बाइडेन वहां के राष्ट्रपति बने थे। प्रारंभ में ऐसा लग रहा था कि मोदी तथा जो. विडेन के बीच संबंध अच्छे नहीं होंगे लेकिन दोनों नेताओं ने आपसी समझ तथा वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए बेहतरीन संबंधों के मार्ग को प्रशस्त किया है। पिछले कुछ वर्षो से दुनिया कोरोना महामारी से जूझ रही थी। उसके उपरांत अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी तथा रूस-यूक्रेन युद्ध पर पश्चिमी देशों की प्रतिक्रियाओं पर सामंजस्य बैठाना भारत के समक्ष एक बहुत बड़ी चुनौती थी। रूस-यूक्रेन युद्ध मे यूक्रेन जहां अमेरिका तथा यूरोपीय देशों का समर्थन हासिल किया है, तो दूसरी तरफ रूस के साथ चीन खड़ा है। वैश्विक मामलों में भारत का शांतिपूर्ण व संतुलित दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने किसी पक्ष का समर्थन नहीं किया है तथा इस संकट के समाधान हेतु कूटनीतिक व शांतिपूर्ण प्रयासों का समर्थन किया है। वर्ष 2022 के जी-20 सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस यूक्रेन युद्ध को लेकर कहा था कि यह समय युद्ध का नहीं है। इस वक्तव्य का पूरी दुनिया ने समर्थन किया था। चीन के साथ भारत की प्रतिद्वन्दता जगजाहिर है। (गुप्ता, 2022) ऐसी स्थिति में अंततोगत्त्वा, भारत द्वारा विश्व के दोनों विरोधी पक्षो के बीच सफलतापूर्वक संयुक्त घोषणा पत्र हस्ताक्षरित करवाना एक बड़ा कीर्तिमान माना जा सकता है। जी-20 का बहुपक्षीय मंच भारत को वैश्विक पटल पर अपने प्रभुत्व को स्थापित करने के अनेकों नए अवसर उपलब्ध करवा गया। भारत ने जी-20 की अध्यक्षता का अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की सॉफ्ट पावर के प्रभुत्व को स्थापित करने का सफल प्रयास किया। भारत की पारंपरिक समृद्ध सभ्यता तथा संस्कृति को सम्मिलित करके पूरी दुनिया को भारत ने मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ विकास तथा आधुनिकता में सामंजस्य स्थापित करके आगे बढ़ने का विजन दिखाया। भारत ने इस शिखर सम्मेलन के भविष्य के लिए एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया जिस पर विचार-विमर्श के लिए आज पूरी दुनिया मजबूर हो चुकी है। शिखर सम्मेलन को विश्व की अत्यधिक गंभीर समस्याओं के बीच में भी किस तरह से सफल बनाया जा सकता है। इसका सफल उदाहरण भारत ने पूरी दुनिया के समक्ष पेश किया। इस सम्मेलन

> **इस शिखर सम्मेलन के मुख्य आयोजन स्थल 'भारत मंडप' में भारतीय कला, संस्कृति तथा वास्तुकला, कालजयी परंपरा तथा सांस्कृतिक धरोहरों के प्रदर्शन और भारत की आर्थिक, वैज्ञानिक वतकनीकी प्रगति एवं गतिशीलता पूरी तरह से परिलक्षित हुई है। इस परिसर में विशाल नटराज प्रतिमा को विस्थापित किया गया था। इस शिखर सम्मेलन में भारत की कूटनीतिक व सर्वसम्मति निर्माण कौशल, विश्व के सर्वाधिक युवा देश तथा विविधतापूर्ण लोकतंत्र की भूमिका ने इस सम्मेलन को एक विशेष गरिमा प्रदान की। आज भारत वैश्विक पटल पर विश्व गुरु और विश्वमित्र के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित हो गया है।**

की सफलता के उपरांत आज भारत की सॉफ्ट पावर सर्वोच्च स्थान पर है। (एक्सल बर्गेरा, 2019)

वर्ष 2023 का जी-20 शिखर सम्मेलन वैश्विक आर्थिक समाधान के विचार विमर्श के अलावा विश्व के अल्प विकसित तथा विकासशील देशो की समस्याओं तथा मुद्दों का मंच बनकर संपूर्ण विश्व के हर देश के प्रतिनिधित्व प्रदान करने की नई पहल को शुरू करने में सफल हुआ है। जिससे इस संगठन की कार्यप्रणाली की विश्वसनीयता मजबूत हुई है। दिल्ली घोषणा की भू-राजनीतिक भाषा, शांति तथा सौहार्दपूर्ण जीवन-यापन का संदेश देने में कामयाब हुई है। भारत वैश्विक मंच पर एक मजबूत बहुपक्षीय खिलाड़ी के रूप में उभरा है। आज भारत ने उच्च स्तरीय कूटनीतिक प्रयासों से मदर ऑफ डेमोक्रेसी और मॉडल ऑफ डाइवर्सिटी के रूप में दुनिया को नई राह दिखाई है। आज वैश्विक मंचों पर यदि कोई गंभीर समस्या या कोई बड़ा काम करना हो तो भारत देश को जरूर याद किया जाता है। भारत का यह स्वरूप सरकार की दृढ संकल्प नीतियों तथा देश की जनता द्वारा दिए गए स्पष्ट जनादेश का साक्षात परिणाम है। इस शिखर सम्मेलन ने जहां एक तरफ भारत के प्रति वैश्विक नेताओं की पारंपरिक तथा संकुचित सोच को बदलने का मार्ग प्रशस्त किया वहीं दूसरी ओर भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपनी दावेदारी को भी मजबूत किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो. बाइडन और तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप अर्दोआन ने द्विपक्षीय वार्ता में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का प्रबलता से समर्थन किया है। (पीएमओ, 2023)

वर्ष 2023 भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा क्योंकि भारत को विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले संगठन का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ और भारत ने इस अवसर को अब तक के इतिहास का सबसे सफलतम आयोजन बनाकर संपूर्ण विश्व को भारत की काबिलियत तथा मानवीय सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित करवाया है। आज विश्व के अधिकतर देश अर्थव्यवस्था की शिथिलता तथा खाद्य संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। वहीं भारत की अर्थव्यवस्था तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या को खाद्य संसाधन उपलब्ध करवा रही है। भारत भविष्य में आधारभूत समस्याओं का समाधान निकालकर आने वाले समय में जी-20 संगठन का एक महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली खिलाड़ी बनकर उभरेगा।

संदर्भ सूची

1. एक्सल बर्गेरा, ए. ए. (2019). जी 20 शिखर सम्मेलन का एक दशक: अशांत समय में वैश्विक क्लब प्रशासन के लाभों, सीमाओं और भविष्य का आकलन करना. *रूटलेज*. Retrieved from https://www.tandfonline.com/doi/epdf/10.1080/10220461.2019.1705889?needAccess=true&role=button
2. एशियन न्यूज इंटरनेशनल, न .द,2023) . (09 09. *भारत मंडपम में क्राफ्ट बाजार: जी20 शिखर सम्मेलन*. Retrieved from द हिंदुस्तान टाइम्स :https://www.hindustantimes.com/cities/chandigarh-news/craft-bazaar-in-bharat-mandapam-g20-summit-padma-shri-awardee-lajwanti-showcases-phulkari-101694283889542.html
3. खेल, म .य. (2023, अप्रैल 28). *भारत की समृद्ध कला, संस्कृति और विरासत ने दुनिया भर के जी20 के*

प्रतिनिधियों पर अमिट छाप छोड़ी है. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1920664

4. गुप्ता, अ .म(2022) .. *भारत की G20 अध्यक्षता: चुनौतियां, अवसर और आगे का रास्ता.* Retrieved from https://www.news18.com/news/opinion/opinion-indias-g20-presidency-challenges-opportunities-and-the-way-forward-6592375.html
5. गौतम, आ(2022) .. भारत और जी 20: वैश्विक शासन को मजबूत करना और आकार देना.*रिसर्च गेट.* Retrieved from file:///C:/Users/MY%20DELL/Downloads/INDIAANDG20_STRENGTHENINGANDSHAPINGGLOBALGOVERNANCE_EPRAInternationalJournalofMultidisciplinaryResearchIJMR%20(2).pdf
6. दुबे, र .प. (2023, सितंबर 12). *G20 सम्मेलन के जरिये PM मोदी ने 'सबका साथ-सबका विकास' की राह पूरी दुनिया को दिखाई.* Retrieved from www.hindi.news18.com: https://hindi.news18.com/news/nation/opinion-g20-summit-pm-modi-showed-path-of-sabka-saath-sabka-vikas-to-whole-world-7528889.html
7. पीएमओ. (2023, सितंबर 9). *ग्लोबल इंफ्रास्ट्रक्चर एंड इन्वेस्टमेंट (पीजीआईआई) और इंडिया- मिडिल ईस्ट- यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर (आईएमईसी) के लिए भागीदारी.* Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955977
8. पीएमओ. (2023, सितंबर 9). *जी20 नई दिल्ली में नेताओं की घोषणा.* Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955822
9. पीएमओ. (2023, सितंबर 10). *जी20 शिखर सम्मेलन सत्र 3 में प्रधान मंत्री का वक्तव्य.* Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955999
10. पीएमओ. (2023, अगस्त 25). *जी20 संस्कृति कार्य समूह की चौथी बैठक का आज वाराणसी में समापन हुआ.* Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1952311
11. पीएमओ. (2023, सितंबर 08). *नई दिल्ली जी20 शिखर सम्मेलन मानव-केंद्रित और समावेशी विकास का एक नया मार्ग तैयार करेगा.* Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955633
12. पीएमओ. (2023, सितंबर 08). *प्रधानमंत्री ने जी20- शिखर सम्मेलन में आने वाले नेताओं का स्वागत किया.* Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955689

13. पीएमओ. (2023, जून 10). *प्रधानमंत्री ने शिक्षा मंत्रालय की पहल, जी20 जनभागीदारी कार्यक्रम में रिकॉर्ड संख्या में लोगों के भाग लेने की सराहना की*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1931388
14. पीएमओ. (2023, सितंबर 08). *भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका का संयुक्त वक्तव्य*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955719
15. पीएमओ. (2023, सितंबर 7). *मानव-केंद्रित वैश्वीकरण: हमें जी20 को दुनिया के अंतिम छोर तक ले जाना है, किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना है*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1955327
16. प्रौद्योगिकी, म .व. (2023, जुलाई 06). *जी-20 अनुसंधान एवं नवाचार समूह (आरआईआईजी) के प्रतिनिधियों ने आईआईटी बॉम्बे का अध्ययन दौरा किया*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1938613
17. फ्रॉले, ड(2011) .. *द ग्रेट इंडियन वे: सिंधु घाटी से वैश्विक युग तक भारत का एक सांस्कृतिक इतिहास*.हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
18. ब्यूरो, प .इ. (2023, सितंबर 13). *नई दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन की सफलता पर कैबिनेट में प्रस्ताव पारित*. Retrieved from ब्यूरो, प्रेस इनफॉरमेशन :https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1957181
19. ब्यूरो, प .इ. (2023, सितंबर 11). *नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में नेताओं की घोषणा न्यायसंगत एवं सतत शिक्षा के लिए विश्व की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है*. Retrieved from www.pib.gov.in: https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1956517
20. भारत(2023) .. *जी20- नई दिल्ली लीडरस डेकलैरैशन*.जी20- लीडरस, नई दिल्ली. Retrieved from https://www.g20.org/content/dam/gtwenty/gtwenty_new/document/G20-New-Delhi-Leaders-Declaration.pdf
21. मंत्रालय वन, ज .प. (2023, मई 22). *जी20 देशों के लिए आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान से जुड़े मामलों का संयुक्त अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के माध्यम से सामूहिक रूप से समाधान किया जाये*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1926489
22. मंत्रालय, म .ए. (2023, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय 10). *लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1956233
23. यशपाल(07 09 ,2023) .. *विंग कमांडर गजेंदर ने 10,000 फीट की उंचाई पर फहराया G20 फ्लैग*. Retrieved from https://www.punjabkesari.in/national/news/wing-commander-gajender-hoisted-the-g20-flag-at-a-height-of-10000-thousand-feet-1876118
24. विदेश, म. (2022, दिसम्बर 10). *जी20- और भारत की अध्यक्षता*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1886768
25. शर्मा, ह. (2023, अगस्त 28). *भारत की जी20- अध्यक्षता 'जनता की अध्यक्षता' है :पीएम मोदी*. Retrieved from द इंडियन एक्सप्रेस :https://indianexpress.com/article/india/mann-ki-baat-pm-narendra-modi-live-updates-8911311/
26. श्रीनिवास, व(2022) .. *जी20- रोडमैप*. विश्व मामलों की भारतीय परिषद सप्रू हाउस, नई दिल्ली. Retrieved from http://www.ncgg.org.in/sites/default/files/lectures-document/G202023.pdf
27. संस्कृति, म. (2022, दिसम्बर 05). *भारत द्वारा 01 दिसंबर से प्रतिष्ठित जी20- की अध्यक्षता ग्रहण*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1881013
28. संस्कृति, म. (2023, जुलाई 21). *वर्तमान में जी20 की अध्यक्षता के दौरान भारत संस्कृति को नीति निर्माण के केंद्र में रखने का प्रयास कर रहा है*. Retrieved from https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1941582
29. सरकार, भ(2023) .. *जी 20 - पृष्ठभूमि संक्षिप्त*.जी 20 सचिवालय, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार. Retrieved from https://www.g20.org/en/about-g20/

• • •

*विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश (भारत)

**रिसर्च स्कॉलर
राजनीति विज्ञान विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश (भारत)

जी-20 : बदलती विश्व व्यवस्था का संकेत

– डॉ. ध्रुव कुमार

भारत की अध्यक्षता में इस वर्ष जी-20 देशों का शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में भारत द्वारा इस विशाल और प्रतिष्ठित समूह की अध्यक्षता करना कई मायनों में विशेष है। जब हमें 1 दिसंबर 2022 को अध्यक्षता मिली तो उस समय दुनिया कई मोर्चों पर अलग-अलग समस्याओं से घिरी हुई थी। निश्चित रूप से भारत भी न सिर्फ उन समस्याओं से जूझ रहा था, बल्कि दुनिया की अलग-अलग क्षेत्र में हो रही गतिविधियों का भारत पर प्रभाव भी पड़ रहा था। लेकिन उसके बावजूद भारत ने जी-20 की अध्यक्षता को एक अवसर के रूप में देखा। हमने इसे वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए प्लेटफार्म के रूप में देखा। अब जब जी-20 की अध्यक्षता धीरे-धीरे अपने समापन की ओर है तो यह उल्लेखनीय है कि भारत ने उन लक्ष्यों व समस्याओं पर सभी देशों से लगातार संवाद किया है जिन्हें देश ने जी-20 मीटिंग से पहले एजेंडे के रूप में तय किया था।

जी-20 अपने आकार और उद्देश्य की दृष्टि से दुनिया में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जी-20, 19 देशों तथा यूरोपियन यूनियन का एक विशाल समूह है। आँकड़ों की बात करें तो यह संस्था दुनिया की लगभग दो तिहाई से अधिक जनसंख्या तथा साठ फ़ीसदी भूमि का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अतिरिक्त जीडीपी के मामले में देखें तो यह संस्था दुनिया की जीडीपी का 80 प्रतिशत तक कवर करती है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भी इस संस्था की भागीदारी 70 प्रतिशत से अधिक है। एक संस्था के रूप में यह दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित समूहों में से एक है। भारत की अध्यक्षता के साथ अब पूरी दुनिया भारत और जी-20 को

भारत ने अपनी अध्यक्षता में जी-20 की छवि को पूरी तरह बदल दिया है। इससे पहले जी-20 का सम्मेलन जब भी होता था तो उसे वैश्विक लीडर्स की एक मीटिंग के रूप में देखा जाता था लेकिन आज जी-20 इन सबसे कहीं ऊपर पीपल्स फेस्टिवल के रूप में तब्दील हो चुका है। पहले जी-20 की बैठकों में जहाँ व्यापार, निवेश, बैंकिंग और वित्तीय सुविधाओं जैसे आर्थिक मुद्दों पर चर्चाएँ होती थीं तो वहीं आज उनके साथ-साथ खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, जलवायु परिवर्तन जैसे सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर भी चर्चा हो रही है। भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान जिस प्रकार से अफ्रीकन यूनियन को जी-20 में शामिल करने की पैरोकारी की है वह वैश्विक विकास में थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।

नए नज़रिये से देख रही है तो एक बार फिर से इसके अतीत, वर्तमान और भविष्य और चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार करने की जरूरत है। साथ ही यह भी विचारणीय है कि भारत द्वारा जी-20 की अध्यक्षता के मायने क्या हैं तथा इसके दुनिया पर क्या परिणाम और प्रभाव हो सकते हैं।

जी-20 पर बात करने के क्रम में पहला प्रश्न यही उठता है कि यदि संयुक्त राष्ट्र संघ जैसा एक प्रभावशाली संगठन दुनिया में पहले से ही विद्यमान है, तो जी-20 की आवश्यकता ही क्या थी। इसे इस रूप में देखा जा सकता है कि 1945 में जब संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई थी तो वह एक बिल्कुल अलग समय था। हम संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के उद्देश्यों का आकलन करें तो देखेंगे कि 1945 के पहले की दुनिया बिल्कुल अलग थी। वह एक ऐसी दुनिया थी जिसमें भौगोलिक और सैन्य शक्ति को प्राथमिकता दी जाती थी। ऐसी धारणाओं को दुनिया के अनेक विद्वानों ने बल भी प्रदान किया। मैकिंडर की 'हर्टलैंड थ्योरी' ने जहाँ यूएसएसआर और पूर्वी यूरोप

पूरी दुनिया को एक परिवार की तरह देखने का भारत का यह स्वभाव नया नहीं है। यह स्वभाव तो हमें अपनी विरासत में मिला है। इतिहासकारों के बीच अतीत में भारत की समृद्धि को लेकर कोई मतभेद नहीं रहा। भारत इतना समृद्ध था की पूरी दुनिया के विभिन्न देश यहाँ आकर व्यापार करना चाहते थे। हमारी सैन्य शक्ति तथा अर्थव्यवस्था दोनों ही मजबूत होने के बावजूद भी हमने किसी दूसरे देश पर कभी भी उसको गुलाम बनाने के उद्देश्य से आक्रमण नहीं किया।

को शक्तिशाली बताया तो वहीं स्पाइकमैन की 'रिमलैंड थ्योरी' ने यूएसए और पूर्वी यूरोप की सर्वोच्चता का बखान किया। इस प्रकार की भौगोलिक और सैन्य शक्ति की सर्वोच्चता ने अनेक युद्धों को जन्म दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में तो हम सब जानते हैं कि आधुनिक विश्व में उससे बड़ा युद्ध कहीं नहीं लड़ा गया। दुनिया का एक बहुत बड़ा हिस्सा उस युद्ध से प्रभावित हुआ। उस युद्ध में गिराए गए बम सैनिकों पर नहीं बल्कि पूरी मानवता पर गिरे थे। इस भयानक त्रासदी व विभीषिका को देखते हुए विश्व के लगभग 51 देश एकजुट हुए और उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद देश को युद्धों व व विनाश से दूर रखने हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की। बाद में संगठन से और भी लोग जुड़ते चले गए और वह संगठन आज दुनिया के सबसे बड़े संगठन के रूप में सामने है। लेकिन यह बात दीगर है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की जब स्थापना हुई थी तो उसकी स्थापना का उद्देश्य सिर्फ यही ही था कि दुनिया को युद्धों की ओर जाने से रोकना है और उन्हें शांति की राह पर आगे बढ़ाना है। संयुक्त राष्ट्र संघ निश्चित रूप से अपने उद्देश्यों में सफल हुआ। बीते लगभग 8 दशकों की बात करें तो छिटपुट संघर्षों के अलावा पूरी दुनिया में कोई बहुत बड़ा युद्ध देखने को नहीं मिला।

लेकिन क्या दुनिया सिर्फ युद्धों को रोक देने से चल सकती है? जाहिर है इसका जवाब होगा नहीं। समय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बदलता रहता है। एक समय था जब दुनिया सैन्य बल पर ज्यादा फोकस करती थी। लेकिन 1945 के बाद दुनिया जिस तेजी से बदली उसमें सैन्य शक्ति की जगह विचारों की शक्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाने लगा। हम देख सकते हैं 1945 के बाद शीत युद्ध का जो दौर चला वह भी विचारों पर अधिक केंद्रित रहा। धीरे-धीरे दुनिया युद्ध, उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद के काले अतीत की छाया से बाहर निकली। जो दुनिया पहले प्रथम, द्वितीय और तृतीय विश्व में बँटी हुई थी, वह दुनिया विकसित और विकासशील देशों की श्रेणी में बदल गई। दुनिया के अलग-अलग देश अब अपनी अर्थव्यवस्थाओं के विकास पर ध्यान देने लगे। साथ ही साथ देशों को यह भी समझ में आया कि यदि दुनिया में शांति लानी है और समृद्धि को बढ़ाना है तो उसके लिए हमे दूसरे आयामों पर भी कार्य करना पड़ेगा। हमें एक तरफ आर्थिक रूप से दुनिया के देशों को एक-दूसरे से जोड़ना पड़ेगा तो वहीं दूसरी तरफ शिक्षा, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन जैसे जरूरी मुद्दों पर भी चर्चा करनी पड़ेगी।

इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जी-20 की स्थापना की गई। जहाँ दुनिया के प्रमुख देश आपस में मिलकर एक जगह बैठकर वैश्विक अर्थव्यवस्था, व्यापार, निवेश, और जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं। यह संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ के विरोध में नहीं बना बल्कि यह संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों को और अधिक व्यापक बनाने के लिए बना है। एक तरफ जहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का उद्देश्य युद्धों को रोकना था तो दूसरी तरफ जी-20 की स्थापना का उद्देश्य दुनिया में समृद्धि लाना लाना है।

इसके अतिरिक्त जी-20 और भी कई मायनों में महत्त्वपूर्ण है। जी-20 की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यहाँ वीटो पावर जैसी कोई पद्धति अस्तित्व में नहीं है। यहाँ सभी सदस्य देश बराबर भागीदारी रखते हैं। जी-20 में एक अवधारणा है ट्रोइका का। यह तीन देशों का एक समूह होता है, जिसके अनुसार जब भी कोई देश अध्यक्ष का पद ग्रहण करता है तो वह देश पिछले वर्ष के अध्यक्ष देश तथा आने वाले अगले वर्ष के अध्यक्ष देश के साथ समन्वय स्थापित करते हुए काम करता है। ट्रोइका का कॉन्सेप्ट दुनिया भर की संस्थाओं के लिए एक अनोखा कांसेप्ट है। यह कॉन्सेप्ट न सिर्फ एक दूसरे के प्रति अनुकूलन और सातत्य को सुनिश्चित करता है बल्कि यह अपने आप में ही जी-20 की समावेशिता को भी दर्शाता है। इस प्रकार

अफ्रीकन यूनियन को स्थायी सदस्यता देने के बाद जी-20 बना जी-21

जी-20 में एक अवधारणा है ट्रोइका का। यह तीन देशों का एक समूह होता है, जिसके अनुसार जब भी कोई देश अध्यक्ष का पद ग्रहण करता है तो वह देश पिछले वर्ष के अध्यक्ष देश तथा आने वाले अगले वर्ष के अध्यक्ष देश के साथ समन्वय स्थापित करते हुए काम करता है। ट्रोइका का कॉन्सेप्ट दुनिया भर की संस्थाओं के लिए एक अनोखा कांसेप्ट है। यह कॉन्सेप्ट न सिर्फ एक दूसरे के प्रति अनुकूलन और सातत्य को सुनिश्चित करता है बल्कि यह अपने आप में ही जी-20 की समावेशिता को भी दर्शाता है। इस प्रकार के ऐसे अनेक तत्व हैं, जो एक संस्था के रूप में जी-20 के लोकतंत्रीकरण को दर्शाते हैं।

के ऐसे अनेक तत्व हैं, जो एक संस्था के रूप में जी-20 के लोकतंत्रीकरण को दर्शाते हैं। ऐसे में लोकतंत्र की जननी के द्वारा इसकी अध्यक्षता करना इस संस्था के समावेशी दृष्टिकोण को और बढ़ावा दे रहा है।

भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान जी-20 की छवि को पूरी तरह बदल दिया है। इससे पहले G-20 का सम्मेलन जब भी होता था तो उसे वैश्विक लीडर्स की एक मीटिंग के रूप में देखा जाता था लेकिन आज जी-20 इन सबसे कहीं ऊपर पीपल्स फेस्टिवल के रूप में तब्दील हो चुका है। पहले जी-20 की बैठकों में जहाँ व्यापार, निवेश, बैंकिंग और वित्तीय सुविधाओं जैसे आर्थिक मुद्दों पर चर्चाएँ होती थीं तो वहीं आज उनके साथ-साथ खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, जलवायु परिवर्तन जैसे सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर भी चर्चा हो रही है। भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान जिस प्रकार से अफ्रीकन यूनियन को जी-20 में शामिल करने की पैरोकारी की है वह वैश्विक विकास में थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। हमारा यह कदम इस बात की ओर संकेत करता है कि जिन्हें दुनिया थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज मानती थी आज वह सारे देश विकसित देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तैयार हैं।

भारत द्वारा इस वर्ष जी-20 की अध्यक्षता पूरी दुनिया के समक्ष ग्लोबल साउथ के बढ़ते महत्त्व को भी दर्शाता है। एक समय था जब उत्तरी गोलार्ध के देश, ख़ासकर विकसित देश ही संस्थाओं के निर्माण में व उनके संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। लेकिन आज स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। ग्लोबल साउथ जिस तरह से सशक्त होकर आगे बढ़ा है उसने जी-20 समेत अनेक वैश्विक संस्थानों में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई है। भारत द्वारा जी-20 की अध्यक्षता इसका एक नवीन उदाहरण है।

भारत की अध्यक्षता कई मायनो में समावेशी है। इस वर्ष की जी-20 की थीम पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि हमने 'वसुधैव कुटुंबकम' के अपने ध्येय वाक्य के साथ दुनिया को 'वन अर्थ, वन फ़ैमिली, वन फ्यूचर' का संदेश दिया है। जैसा कि पूर्व में जिक्र है कि जब हमें अध्यक्षता मिली थी तब दुनिया कई समस्याओं से जूझ रही थी। लेकिन हमने अपनी अध्यक्षता के दौरान उन सारी समस्याओं पर बातचीत की व उन्हें सुलझाने का भी प्रयास किया। हमने दुनिया के प्रमुख देशों के साथ बातचीत करते हुए यह बताने का प्रयास किया कि यदि हमारी अनेक समस्याएँ एक जैसी हैं तो उनके समाधान के लिए हमारा दृष्टिकोण भी एक जैसा ही होना चाहिए। साझी समस्याओं के लिए हमें आपस में लड़कर नहीं बल्कि आपस में मिलकर समाधान ढूँढ़ना होगा। उल्लेखनीय है कि हमने दुनिया को सिर्फ यह उपदेश ही नहीं दिया बल्कि हमने अपने कार्यों के माध्यम से दुनिया को यह करके भी दिखाया कि हम अपनी जरूरत के साथ-साथ दूसरे की जरूरत का भी ध्यान रख सकते हैं। इसका एक उदाहरण हमने तब भी प्रस्तुत किया जब हमने कोविड से जूझ रहे विश्व के कई जरूरतमंद देश को वैक्सीन मैत्री के तहत वैक्सीन पहुँचाई थी। हालिया रूस-यूक्रेन विवाद पर भी हमारा पक्ष हमेशा से स्पष्ट रहा है कि हम किसी भी स्थिति में युद्ध के पक्षधर नहीं है। हमने दोनों ही देशों से लगातार टिएर 1 और टिएर 2 डिप्लोमेसी के तहत भी यह अपील की है कि आप अपनी समस्याओं का समाधान टेबल पर बैठकर आपसी बातचीत के माध्यम से करें। हमने युद्ध से प्रभावित क्षेत्रों में लोगों के लिए खाद्यान्न आपूर्ति भी सुनिश्चित की।

पूरी दुनिया को एक परिवार की तरह देखने का भारत का यह स्वभाव नया नहीं है। यह स्वभाव तो हमें अपनी विरासत में मिला है। इतिहासकारों के बीच अतीत में भारत की समृद्धि को लेकर कोई मतभेद नहीं रहा। भारत इतना समृद्ध था की पूरी दुनिया के विभिन्न देश यहाँ आकर व्यापार करना चाहते थे। हमारी सैन्य शक्ति तथा अर्थव्यवस्था दोनों ही मजबूत होने के बावजूद भी हमने किसी दूसरे देश पर कभी भी उसको गुलाम बनाने के उद्देश्य से आक्रमण नहीं किया।

हमने दुनिया में सदैव शांति का संदेश दिया। जब भारत इतना शक्तिशाली था कि उसकी सीमाओं का प्रभाव कैस्पियन सागर से लेकर दक्षिण चीन सागर तक था तब भी हमने दुनिया के किसी देश की धर्म व संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास नहीं किया। बल्कि हमने तो इसके विपरीत दुनिया को शांति के संदेश के रूप में बौद्ध धर्म दिया। हमने दुनिया को सहिष्णुता व सर्व धर्म समभाव का पाठ पढ़ाया।

हमारे यह सारे प्रयास बताते हैं कि भारत पूरी दुनिया में विश्व शांति चाहने वाला तथा अपने सिद्धांतों पर चलने वाला देश है, इसलिए यदि भारत को जी-20 की अध्यक्षता मिली है तो यह निश्चित रूप से तृतीय विश्व के देशों, विकासशील देशों तथा ग्लोबल साउथ के लिए एक बड़ा अवसर है।

• • •

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

"वसुधैव कुटुम्बकम्" के परिप्रेक्ष्य में भारतीय राजनीतिक चिंतन का दृष्टिबोध

- डॉ रुबल शर्मा*, डॉ जागीर कौर**

भवति एक विश्वनीड़म की भावना से प्रेरित भारतीय राजनीतिक चिंतन प्रारंभ से ही वैश्विक रहा है। इसकी वैश्विकता का प्रमाण हमें कई भारतीय राजनीतिक चिंतकों के विचारों में दृष्टिगोचर होता है। जहाँ महात्मा गाँधी का आत्मदर्शन दुनिया को सत्य व अहिंसा का मार्ग सुझाता है तो वही, स्वामी विवेकानंद का शिकागो व्याख्यान और गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर की वैश्विक सोच इन चिंतकों की सामूहिक जिम्मेदारी का एहसास भी कराती है। 18वीं शताब्दी में मनुष्य पश्चिमी चिंतन का केंद्र बिंदु बना जबकि भारतीय चिंतन में प्रारंभ से ही व्यक्ति मूल में रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम् की इसी भावना को भारतीय विचारकों ने पुनर्जीवित किया, जो विश्व के कल्याण के बारे में चिंतित थे।

वसुधैव कुटुम्बकम्, यानी अंतरराष्ट्रीय समुदाय वैश्विक परिवार का हिस्सा है और इस परिवार के सदस्यों को सद्भाव से रहना चाहिए, एक साथ काम करना चाहिए और एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। दरअसल, भारतीय चिंतन में एक विशेष संदेश है कि हम एक बड़े परिवार की तरह हैं और हमें एक-दूसरे और पृथ्वी पर सभी जीवित चीजों की भलाई का ख्याल रखना होगा।[1] यह विचार महोपनिषद से आया है, जो बताता है कि कैसे सभी जीवित चीजें आपस में जुड़ी हुई हैं और महत्वपूर्ण हैं। यह सिर्फ एक वर्णनात्मक वाक्यांश नहीं बल्कि भारतीय कूटनीतिक शब्दावली का एक मंत्र है। वसुधैव कुटुम्बकम्

> **भारत ने दो दिन तक चलने वाले जी-20 सम्मेलन के तीन सत्रों में, "एक पृथ्वी, एक परिवार एवं एक भविष्य" विषय पर, गहनता से विस्तृत चर्चा की और सदस्य देशों से सभी के सामूहिक हित में काम करने की अपील की और सुझाव दिया कि कोविड-19, यूक्रेन-रूस संकट से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए सबसे पहले विश्वास की कमी को दूर करने और सबका साथ, विकास और विश्वास की दिशा में अथक प्रयास करने की आवश्यकता है।अपनी सभ्यता, संस्कृति, संस्कारों, मान्यताओं, प्रतीकों को भी बेहद अनूठे तरीके से दुनिया को देखा। भारत की अध्यक्षता में आयोजित G-20 सम्मेलन सफलतम आयोजनों मे गिना जाएगा क्योंकि अब तक के जी-20 में 25-30 प्रतिशत मुद्दों पर ही आम सहमति बन पाती थी लेकिन दिल्ली समिट में 73 प्रतिशत पर आम राय बनी।**

वेदांत विचार है और हिंदू दर्शन का अभिन्न अंग भी। यह शून्य निहित स्वार्थों के साथ सहानुभूति, सहयोग, साझेदारी और सह-अस्तित्व पर जोर देता है।[2]

भारत ने जी-20 समूह की अध्यक्षता करते समय वसुधैव कुटुम्बकम् को मुख्य विषय बनाया ताकि दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए दुनिया के सभी देश मिलकर काम करें और विभिन्न संस्कृतियों और जीवन जीने के तरीकों का मिलकर उत्सव मनाएं ताकि पारस्परिक लाभ और उचित परिणाम की प्राप्ति हो |

स्वामी विवेकानंद की जब भी बात होती है तो अमरीका के शिकागो की धर्म संसद में वर्ष 1893 में दिए गए व्याख्यान की चर्चा ज़रूर होती है। उन्होंने पूरी दुनिया के सामने भारत को एक मजबूत छवि के साथ पेश किया था। स्वामी विवेकानन्द ने एक बार टिप्पणी की थी, "इस दुनिया में सभी मतभेद स्तर के हैं, प्रकार के नहीं, क्योंकि एकता ही हर चीज़ का रहस्य है।"[3] यह विचार उस तरीके में प्रतिबिंबित होता है जिस तरह से भारत अपनी विदेश नीति के माध्यम से दुनिया के साथ जुड़ता है। विदेश नीति निस्संदेह किसी भी सरकार या प्रशासन के एजेंडे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

महात्मा गांधी एक मानववादी, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, नीतिज्ञ, समाज सुधारक, राष्ट्रवादी और अन्तरराष्ट्रीयवादी के रूप में प्रसिद्ध हैं जिन्होंने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह राज्य और आर्थिक पहलुओं पर विचार किया है। उनके ये विचार और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पहले थी। देश की सत्ता में चाहे कोई भी राजनीतिक दल हो, गांधी के विचार प्रासंगिक हैं। महात्मा गांधी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अहिंसा का प्रयोग विशेष तौर से राजनीति के क्षेत्र में किया। उन्होंने राष्ट्रों की नियति को आकार देने के साधन के रूप में लगातार "वसुधैव कुटुंबकम" का प्रचार किया। आधुनिक युग में राष्ट्र व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महात्मा गांधी की यह संकल्पना एक बड़ा योगदान है।[4] गांधी अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में और उसके बाद भी, भारत की आंतरिक और अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर छाए रहे। अहिंसा का उनका सिद्धांत जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त था।

भारत की अध्यक्षता में जी-20 समूह के सभी अतिथियों ने मिलकर गांधीजी को श्रद्धांजलि दी, इससे दुनिया भर में गांधीवादी दर्शन के परस्पर सद्भाव, सभ्यता के लिए आवश्यक मानवीय करुणा की महत्ता स्थापित होती है। भारत इसी वैश्विक हित और बहुपक्षवाद के अपने दृष्टिकोण को जी-20 की अध्यक्षता के माध्यम से समस्त विश्व को एक मंच पर लाने का काम कर रहा है।

जी-20 समूह का महत्व इसकी आर्थिक ताकत से परिलक्षित होता है। इसके सदस्य देशों का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 80 प्रतिशत से अधिक, वैश्विक व्यापार में 75 प्रतिशत और विश्व की 60 प्रतिशत आबादी का योगदान है। यह सम्मेलन भारत को एक "अग्रणी शक्ति" के रूप में अपनी उभरती स्थिति को रेखांकित करने के अवसर के रूप में रहा है और दुनिया ने इसे स्वीकार भी किया है, जैसा कि भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी इसकी पुष्टि की है।

भारत के बुनियादी चिंतन में पंचशील है। यह वसुधैव कुटुम्बकम् का ही विस्तार है । 29 अप्रैल, 1954 को चीन और भारत के तिब्बती क्षेत्र के बीच हस्ताक्षरित व्यापार समझौते में पांच शीलों को भी शामिल किया गया था, और बाद में इसे दुनिया भर में अंतरराष्ट्रीय संबंधों को संचालित करने के आधार के रूप में विकसित किया गया। ये पाँच सिद्धांत हैं: एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान, ii. परस्पर अनाक्रमण, iii. परस्पर अहस्तक्षेप, iv. समानता, पारस्परिक लाभ और v. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।[5] यही वजह है कि आज भी विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारतीय राजनीतिक चिंतन एक विशेष स्थान गृहण किये हुए है।

आदर्श के साथ-साथ यदि राजनीति के व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान दिया जाये तो भारतीय राजनीतिक विचारक चाणक्य के ग्रन्थ "अर्थशास्त्र" में वर्णित सामरिक और रणनीतिक पद्धतियाँ याद आती हैं। किसी एक व्यक्ति को अपना अनुगामी बनाना चाणक्य का उद्देश्य कतई नहीं था, उनकी शर्त तो केवल इतनी थी कि कोई भी राजनीतिक निर्णय लेते वक्त भावना व तर्क दोनों का सामंजस्य होना आवश्यक है। परिणामस्वरूप आज विश्व के तमाम विकसित देश उनके राजनीतिक परामर्श प्रशंसा करते हुए नजर आते हैं। ख़ासतौर पर चीन और दक्षिणपूर्वी एशिया के देश जो चाणक्यनीति का अनुसरण करने विचार को प्रकट कर ही चुके हैं। हालांकि यूरोप और अमरीका भी इनसे पीछे नहीं हैं। वहाँ भी चाणक्यनीतियां अपना परचम फहरा रही हैं। यही कारण है की इटली के विचारक मैकियावेली और चीन के कूटनितिज्ञ सुन्जू से भी कही अधिक आगे चाणक्यनीति को बुद्धि और तर्क की कसौटियों पर कसकर आजमाया जा रहा है। यही बौद्धिक तार्किकता विश्व के अधिकतम देशों को विकास के अधिकतम अवसर भी प्रदान कर रही है।

कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीतिक चिंतको का समग्र विश्लेषण आज भी दुनिया के तमाम देशों के लिए संभावनाओं का मुख्य द्वार खोलता जा रहा है। चाणक्य का अन्तरराज्यीय संबंधों पर दृष्टिबोध बहुत गहरी समझ समाहित किए हुए व अत्यंत उपयोगी था। जिसे आज भारत की सामरिक और विदेश नीति में मुख्य भूमिका निभाते हुए देखा जा सकता है। यह हमारे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हित में है। भारत अपनी कूटनीतिक पहुंच में रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांत पर जोर देता है। किसी भी प्रमुख शक्ति के साथ गठबंधन करने के बजाय हित-आधारित विदेश नीति

अपनाता है। इस वैश्वीकरण युग में भारत कई देशों और यूरोपीय संघ, ब्रिक्स , अफ्रीकी संघ ,अफ्रीकन यूनियन और आसियान आदि जैसे बहुपक्षीय क्षेत्रीय समूहों के साथ अपनी भागीदारी बढ़ा रहा है। इसके अलावा, भारत हिंद महासागर रिम एसोसिएशन और बिम्सटेक, एशिया सहयोग वार्ता में भी सक्रिय रूप से शामिल रहा है।

जी-20 की अध्यक्षता: भारतीय चिन्तन की महत्वपूर्ण उपलब्धि

भारत जी20 नामक महत्वपूर्ण देशों के समूह के साथ चार महत्वपूर्ण चीजों पर बात करने का प्रभारी है। ये चार चीजें हैं: अतीत की महत्वपूर्ण चीजों का ध्यान रखना, भविष्य में हमारी मदद करने के लिए पुरानी चीजों का उपयोग करना, कला और रचनात्मकता से जुड़े व्यवसाय का समर्थन करना और हमारी संस्कृति को बनाए रखने और साझा करने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।

भारत के नेतृत्व में, जी-20 स्वास्थ्य अधिकारी तीन प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं: महामारी से बचाव की तैयारी, चिकित्सा प्रतिक्रिया और डिजिटल स्वास्थ्य, दुनिया की सबसे कम विकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए समान पहुंच सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करना । भारत अपने नेतृत्व के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और प्रौद्योगिकी सहित दुनिया के महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने का इच्छुक है। नई दिल्ली ने ऐतिहासिक रूप से बहुपक्षीय मंचों के भीतर वैश्विक दक्षिण की ओर से चिंताओं को उठाया है, और यह निस्संदेह जी-20 उच्च तालिका में भी ऐसा करने के लिए अपनी अध्यक्षता का लाभ उठाए । अपने नेतृत्व वर्ष के दौरान, भारत से उन मुद्दों को उजागर करने की कोशिश मे दिखाई दिया, जो उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण हैं: डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा , उद्यमिता और नवाचार, जलवायु न्याय और स्वास्थ्य देखभाल तक सस्ती पहुंच।[6]

भारत ने दो दिन तक चलने वाले इस सम्मेलन में तीन सत्रों में, "एक पृथ्वी, एक परिवार एवं एक भविष्य" विषय पर, गहनता से विस्तृत चर्चा की और सदस्य देशों से सभी के सामूहिक हित में काम करने की अपील

> **इस आयोजन के माध्यम से भारत ने पूरी दुनिया को दिखा दिया है कि वह अब न केवल ग्लोबल साउथ के देशों बल्कि पूरे ग्रह का नेतृत्व करने में सक्षम है। साथ ही, भारत ने इस आयोजन के माध्यम से यह भी कर दिखाया है कि वह विश्व मंच पर और भी कई नेतृत्व संभालने के लिए तैयार है। इससे भारत की स्थायी सदस्यता के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बदलाव का रास्ता भी खुलेगा। जी-20 का सुचारू संचालन और अपने संयुक्त वक्तव्य में नेताओं की सर्वसम्मति इतिहास बनाती है।**

की और सुझाव दिया कि कोविड-19, यूक्रेन-रूस संकट से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए सबसे पहले विश्वास की कमी को दूर करने और सबका साथ, विकास और विश्वास की दिशा में अथक प्रयास करने की आवश्यकता है।अपनी सभ्यता, संस्कृति, संस्कारों, मान्यताओं, प्रतीकों को भी बेहद अनूठे तरीके से दुनिया को देखा।[7] भारत कीअध्यक्षता में आयोजित जी-20 सम्मेलन सफलतम आयोजनों मे गिना जाएगा क्योंकि अब तक के जी-20 में 25-30 मुद्दों पर ही आम सहमति बन पाती थी लेकिन दिल्ली समिट में 73 प्रतिशत पर आम राय बनी।[8]

दिल्ली घोषणापत्र एक ऐतिहासिक मोड़

तथ्य यह है कि नई दिल्ली आने वाले जी-20 नेताओं ने सर्वसम्मति से एक एकीकृत घोषणा प्रकाशित की, जिसे पिछले जी-20 शिखर सम्मेलन (इंडोनेशिया) में हासिल करना असंभव था, जिससे वहां जी-20 सम्मेलन महत्वपूर्ण माना जाएगा। साथ ही सभी नेताओं के बीच कई मुद्दों पर बनी सहमति भी ऐतिहासिक है। जी-20 को पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ। यह भारत के प्रभावी प्रबंधन और दूरदर्शी कूटनीति को प्रदर्शित करता है। इस जी-20 बैठक में कई विषयों पर चर्चा की गई और सभी के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। नई दिल्ली में जी-20 बैठक के दौरान सौर गठबंधन और जैव ईंधन गठबंधन पर सहयोग करने का निर्णय लिया गया। भारत के नेतृत्व में जलवायु विनिमय योजना पर मिलकर काम करने को प्राथमिकता दी गई है।

जी20 घोषणापत्र में सतत आपूर्ति श्रृंखला ऊर्जा परिवर्तन पर जोर दिया गया है। घोषणा में कहा गया है कि जी-20 देश नवाचार, स्वैच्छिक और पारस्परिक रूप से सहमत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और कम लागत वाले वित्तपोषण तक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए मजबूत अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सक्षम वातावरण का समर्थन करते हैं।[9] शनिवार को जारी जी-20 नेताओं की घोषणा में महत्वपूर्ण खनिजों सहित ऊर्जा परिवर्तन के लिए एक विविध, टिकाऊ और जिम्मेदार आपूर्ति श्रृंखला की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। घोषणा में कहा गया है कि जी-20 देश नवाचार, स्वैच्छिक और को बढ़ावा देने के लिए मजबूत अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सक्षम वातावरण का समर्थन करते हैं। पारस्परिक रूप से सहमत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, और कम लागत वाले वित्तपोषण तक पहुंच। इसमें कहा गया है कि सदस्य देश "ऊर्जा संक्रमण के लिए विश्वसनीय, विविध, टिकाऊ और जिम्मेदार आपूर्ति श्रृंखलाओं का समर्थन करते हैं, जिसमें स्रोत, अर्धचालक और प्रौद्योगिकियों से लाभान्वित महत्वपूर्ण खनिज और सामग्री शामिल हैं।" घोषणा में प्रौद्योगिकियों के विकास, तैनाती और प्रसार में तेजी लाने और कम उत्सर्जन वाली ऊर्जा

प्रणालियों की ओर संक्रमण के लिए नीतियों को अपनाने के महत्व को भी मान्यता दी गई, जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा सहित स्वच्छ बिजली उत्पादन की तैनाती को तेजी से बढ़ाना भी शामिल है। ऊर्जा दक्षता उपायों के रूप में, जिसमें राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप, निर्बाध कोयला बिजली को चरणबद्ध तरीके से कम करने की दिशा में प्रयासों में तेजी लाना और उचित बदलावों के लिए समर्थन की आवश्यकता को पहचानना शामिल है। इसमें ग्रिड इंटरकनेक्शन, लचीली ऊर्जा बुनियादी ढांचे और क्षेत्रीय/सीमा पार बिजली की भूमिका को भी मान्यता दी गई है। सिस्टम एकीकरण, जहां ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और सभी के लिए सार्वभौमिक ऊर्जा पहुंच की सुविधा प्रदान करने में लागू हो। भारत ग्रिड इंटरकनेक्शन का समर्थक रहा है और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के माध्यम से इसने विभिन्न क्षेत्रों के देशों के राष्ट्रीय ग्रिड को जोड़ने के लिए वन सन वन वर्ल्ड वन ग्रिड (ओएसओडब्ल्यूओजी) शुरुआत की है।[10]

रूस-यूक्रेन संघर्ष के बीच पिछले एक साल में ऊर्जा सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित हुआ है और कई देश अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने पर विचार कर रहे हैं क्योंकि नवीकरणीय ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला और संबंधित घटक और प्रौद्योगिकियां बड़े पैमाने पर चीन में केंद्रित हैं। भू-राजनीतिक चिंताओं के बीच, विशेष रूप से आपूर्ति परिदृश्य को प्रभावित करने वाली कोविड-19 महामारी के बाद, देश नए आपूर्ति स्रोतों पर विचार कर रहे हैं।[11]

ये भारतीय चिंतकों का दृष्टिबोध ही है कि उनके बताए मार्ग का अनुसरण करके भारत, जिसकी शीत युद्ध के दौरान के अमेरिकी तक पहुंच कम ही थी, लेकिन जी-20 में दोनों देश कदम से कदम मिलाते नजर आते हैं जो स्वयं संयुक्त राज्य अमेरिका के हित में भी है। अमेरिका के संबंध में भारतीय नीतियों को देखें तो दोनों देशों के बीच संबंधों की पुनः रचना में भारतीय चिंतन अपना पूर्ण रूप से योगदान दे रहा है। पंडित नेहरू जैसे नेताओं ने लंबे समय से विश्व के प्रति भारत के दृष्टिकोण की एक केंद्रीय विशेषता के रूप में विदेश नीति की स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी है। यदि इसका गंभीरता से विश्लेषण किया जाए तो पायेंगे कि विशेष रूप से शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से, भारतीय नेताओं ने अमेरिका के साथ संबंधों में सुधार का प्रयास ज़रूर किया है, लेकिन इसके लिए विदेश नीति के प्रति भारत के स्वतंत्र दृष्टिकोण से कोई समझौता नहीं किया है। भारत अमेरिकी सहयोगी के रूप दिखाई जरूर देता रहा है; चूँकि भारत अपनी विदेश नीति में गुटों से निरपेक्षता का

> **प्रधानमंत्री मोदी ने रूस या यूक्रेन का नाम लिए बिना कहा कि आज का युग युद्ध का नहीं, बल्कि शांति का युग हैं; इसलिए हमें सभी विवादों को शांति से सुलझाना चाहिए। उन्होंने सतत विकास लक्ष्यों के बारे में भी बात की, अवैध हथियारों की तस्करी और अन्य मुद्दे जैसे परमाणु युद्ध का खतरा, किसी देश की जमीन पर जबरन क जा आदि को भी जोरदार ढंग से उठाया और ऐसा करने वाले देशों को चेतावनी दी कि ऐसा करना अनुकूल नहीं होगा। विश्व के लाभ के लिए सभी को मिलकर काम करने के लिए आगे आना चाहिए। यही वसुधैव कुटुंबकम का विशुद्ध रूप है।**

दृष्टिकोण रखता है, इसलिए उसे 'अमेरिकी सहयोगी' नहीं कहा जा सकता। फिर भी यह सत्य है कि हम साथ-साथ आर्थिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। इसके उदाहरण के रूप में कई नये आयाम परिलक्षित होते हैं। अमरीका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और सबसे महत्त्वपूर्ण निर्यात बाज़ार है। वर्ष 2000 के बाद से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में दस गुना वृद्धि हुई है। वर्ष 2022, में यह प्रगति 191 बिलियन डॉलर के स्तर तक जा पहुंची है और इसी के साथ द्विपक्षीय व्यापार में दस गुना वृद्धि हुई है। वर्ष 2021-22 में, भारत का अमेरिका के साथ 32.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापार पर्याप्त था।[12]

अफ्रीकन यूनियन, ग्लोबल साउथ की बढ़ती हुई ताकत के रूप में

बैठक के दौरान भारत के अथक प्रयासों के कारण अफ्रीकी संघ के 55 देशों को जी-20 में शामिल किया गया। अब से यह जी-21 के नाम से जाना जाएगा। जिस तरह से इसने पहल की और अफ्रीकी संघ में भागीदारी सहित ग्लोबल साउथ से संबंधित कई विषयों पर सामान्य सहमति बनाने के लिए काम किया, ग्लोबल साउथ के सभी देशों ने भारत को एक रोल मॉडल के रूप में देखा। शिखर सम्मेलन में सर्वसम्मति से इस घोषणा का समर्थन किया गया, जिसे समकालीन विश्व राजनीति के संदर्भ में एक असंभव प्रस्ताव माना जाता था, लेकिन भारत ने अपनी निष्ठा, दूरदर्शिता और राजनीतिक सूझबूझ से इस चुनौतीपूर्ण उद्देश्य को संभव बना दिया।इस आयोजन के माध्यम से भारत ने पूरी दुनिया को दिखा दिया है कि वह अब न केवल ग्लोबल साउथ के देशों बल्कि पूरे ग्रह का नेतृत्व करने में सक्षम है।

साथ ही, भारत ने इस आयोजन के माध्यम से यह भी कर दिखाया है कि वह विश्व मंच पर और भी कई नेतृत्व संभालने के लिए तैयार है। इससे भारत की स्थायी सदस्यता के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बदलाव का रास्ता भी खुलेगा। जी-20 का सुचारू संचालन और अपने संयुक्त वक्तव्य में नेताओं की सर्वसम्मति इतिहास बनाती है। इसने भारत के इतिहास और कूटनीति में एक नया, चमकदार अध्याय जोड़ा है, और देश अब ऐसी कई अंतरराष्ट्रीय सभाओं की मेजबानी करने और नेतृत्व संभालने के लिए

तैयार है।

आतंकवाद से मुक्ति पर दुनिया की एक राय

नई दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद जैसे अन्य महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर भी चर्चा की गई और आतंकवाद के सभी रूपों की अस्वीकार कर दिया गया। निकट भविष्य में यह जी-20 बैठक अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद पर लगाम लगाने में अग्रणी भूमिका निभाती नजर आएगी। अब तक संयुक्त राष्ट्र भी आतंकवाद को परिभाषित करने में पूर्ण सफल नहीं रहा है, लेकिन जिस तरह से नई दिल्ली मे आयोजित जी-20 सम्मेलन मे आतंकवाद को गंभीरता से लिया है, वह भविष्य में संयुक्त राष्ट्र के लिए एक नई राह तैयार करेगा। क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया और अन्य प्रमुख देश इसका समर्थन करते हैं।[13]

रूस-यूक्रेन युद्ध में सटीक कूटनीति

प्रधानमंत्री मोदी ने रूस या यूक्रेन का नाम लिए बिना कहा कि आज का युग युद्ध का नहीं, बल्कि शांति का युग है; इसलिए हमें सभी विवादों को शांति से सुलझाना चाहिए। उन्होंने सतत विकास लक्ष्यों के बारे में भी बात की, अवैध हथियारों की तस्करी और अन्य मुद्दे जैसे परमाणु युद्ध का खतरा, किसी देश की जमीन पर जबरन कब्जा आदि को भी जोरदार ढंग से उठाया और ऐसा करने वाले देशों को चेतावनी दी कि ऐसा करना अनुकूल नहीं होगा।[14] विश्व के लाभ के लिए सभी को मिलकर काम करने के लिए आगे आना चाहिए। यही वसुधैव कुटुंबकम का विशुद्ध रूप है।

जी-20 द्वारा आमंत्रित अंतरराष्ट्रीय संगठनों में संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व व्यापार संगठन, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, वित्तीय स्थिरता बोर्ड, ओईसीडी, के अध्यक्ष शामिल हैं। भारत के जी-20 के विशेष अतिथि देश बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात हैं।[15]

अफ्रीकी विकास के लिए नई साझेदारी के अध्यक्ष अफ्रीकी संघ, आसियान अध्यक्ष, एशियाई विकास बैंक, अंतर्राष्ट्रीय निवेश समझौते और विकास संस्थान की उपस्थिति ने इस सम्मेलन का महत्व और बढ़ा दिया। पूरी घटना मानवीय मूल्यों को नई राह दिखाती नजर आ रही है। जी20 भी लोगों को पहले स्थान पर रखता है और इसने समावेशी विकास का रास्ता खोला है जो लोगों को पहले स्थान पर रखता है। विद्वानों का यह भी मानना है कि नई दिल्ली में होने वाला जी-20 शिखर सम्मेलन और उसमें होने वाले विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा न सिर्फ जी-20 बल्कि पूरी दुनिया के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

अहम सवाल यह है कि वैश्वीकरण के इस युग में हमारा देश इन मंचों के साथ-साथ अन्य प्रमुख शक्ति केंद्रों के साथ कैसे काम करता है और उनसे कैसे निपटता है। इसलिए, हम बहुपक्षीय जुड़ाव के इस वैश्विक युग में एक बहुत ही व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. http;//pib.gov.in. visited on 09th August,2023
2. https://thepangean.com/The-Vedantic-Influence-on-Indian-Foreign-Policy
3. https://thepangean.com/The-Vedantic-Influence-on-Indian-Foreign-Policy
4. https://www.deccanherald.com/specials/do-gandhis-views-on-world-order-peace-and-war-still-hold-water-896028.html.
5. http://mea.com.
6. By Harsh V. Pant, the vice president for studies and foreign policy at the Observer Research Foundation in New Delhi, and Sameer Patil, a senior fellow at the Observer Research Foundation. / http://foreignpolicy.comhttp://foreignpolicy.com.
7. http;//pib.gov.in. visited on 10th August,2023
8. Indian express – 11/09/2023
9. 09 सितंबर 2023, 06:23 अपराह्न IST
10. India's moment: On the G-20 summit outcome available at http//:thehindu.com. visited on 12/09/2023
11. Ibid.
12. https://tradingecomincs.com visited on 12/09/2023
13. https://www.prabhatkhabar.com/national/g20-group-condemned-all-forms-ofterrorism-considered-it-a-serious-threat-to-international-security-prt.
14. http://ddnews.gov.in visited on 12/09/2023
15. http://ddnews.gov.in visited on 12/09/2023

• • •

*एसोसिएट प्रोफेसर
माता सुन्दरी कॉलेज फॉर वीमेन
दिल्ली विश्वविद्यालय

**एसोसिएट प्रोफेसर
एस जी टी बी खालसा कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ और अनर्थ

– प्रो. रामेश्वर मिश्र पंकज

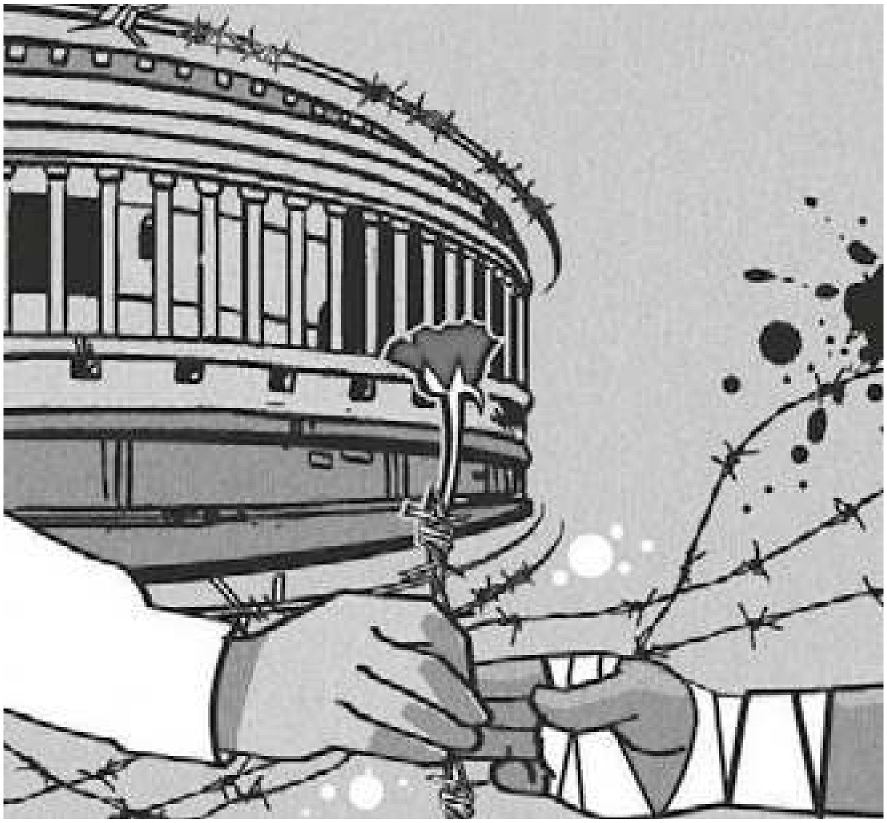

जी 20 के शिखर सम्मेलन के लिये, जो नई दिल्ली में होने जा रहा है 'वन अर्थ, वन फैमिली' का उद्घोष किया गया है। वस्तुतः 19 देशों और 20वीं यूरोपीय यूनियन को मिलाकर जी 20 समूह बना है। ये मिलकर विश्व की जनसंख्या का दो तिहाई अंश हो जाते हैं तथा विश्व व्यापार का तीन चौथाई एवं वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 85 प्रतिशत अंश है। अतः यदि इन देशों की सरकारों के मध्य नीतिगत न्यायपूर्ण व्यवहार का निर्णय होता है तो यह सचमुच समस्त विश्व के लिये ही कल्याणकारी होगा।

इन दिनों 'वसुधैव कुटुम्बकम' नामक सूक्ति का अतिशय और अतिरंजित प्रयोग चल रहा है। परन्तु उस प्रयोग के पीछे प्रायः न तो भाव का ध्यान रहता है और न ही अर्थ का। इससे अनर्थ की ही संभावना रहती है। अतः सर्वप्रथम इस सूक्ति का वास्तविक और प्रामाणिक संदर्भ एवं अर्थ जानना आवश्यक है।

यह ठीक है कि भारत की संसद में सभागार के प्रवेश द्वार में ही यह सूक्ति अंकित है और इस प्रकार इसे संविधान निर्माताओं और आरंभिक सांसदों की सर्वसम्मत दृष्टि मानना चाहिये। परंतु इसके अर्थ का ध्यान नहीं रखने पर यह एक वैचारिक अराजकता को जन्म दे सकता है।

सर्वप्रथम तो इसका मूल संदर्भ जानना आवश्यक है। महोपनिषद का यह श्लोकांश सन्यस्त और वीतराग सिद्ध पुरूष के लिये ही है। जिसे जीवन में न तो किसी से राग है और न ही द्वेष। सभी से प्रेम है क्योंकि सर्वत्र एक ही परमसत्ता दिखती है। सन्यास लेते समय पूर्णतः निर्भय रहने और सबको अभय देने की प्रतिज्ञा की जाती है जिसका अर्थ है कि किसी भी मनुष्य और किसी भी प्राणी को तनिक सी भी क्षति मेरे द्वारा पहुँचेगी, इसकी कोई संभावना नहीं है। अतः मैं सबको अभय देता हूँ। साथ ही मुझे किसी का भी भय नहीं है। मैं निर्भय होकर स्वधर्म का पालन करूंगा और सन्यासी का जीवन जीऊँगा, जब तक प्रारब्ध है और ऐसा जीवन जीते हुये कब किस प्रकार किस कारण से मेरी मृत्यु हो जाये, इसकी मुझे कोई चिंता नहीं है और कोई भय नहीं है। कोई प्रारब्धवश मुझे मार डाले या किसी प्राकृतिक विपदा से मृत्यु हो जाये या कोई विषधर डस ले या किसी अन्य प्रकार से आघात अथवा दुर्घटना हो जाये, कोई चिंता नहीं है। ऐसा सबको अभय देता हुआ और सब प्रकार से निर्भय सन्यासी यह घोषणा करता है।

कहीं भी राजपुरूषों के द्वारा ऐसी किसी घोषणा का कोई प्रावधान नहीं है। क्यो नहीं है? राजपुरूष के लिये भी तो अभय सर्वोपरि गुण कहा गया है। तो फिर राजपुरूष को ऐसी घोषणा का अधिकार क्यों नहीं है? राजपुरुष ही नहीं, किसी गृहस्थ को भी ऐसी घोषणा का अधिकार नहीं है।

राजपुरूष को यह अधिकार इस लिये

नहीं है कि वह सबको अभय नहीं दे सकता। उसे चोरों, डाकुओं, वंचकों और दुष्टों को भय देना है। यह भय देना उसका धर्म है। यह राजधर्म का अनिवार्य अंग है। जिस शासक से दुष्ट और अपराधी भयभीत नहीं रहें, वह अयोग्य शासक है। अतः राजपुरूष के लिये 'वसुधैव कुटुंबकम' सूक्ति नहीं है।

इसी प्रकार गृहस्थ के लिये भी यह सूक्ति नहीं है। क्योंकि गृहस्थ का कर्तव्य है सब प्रकार से प्रयास करके और पुरूषार्थ करके अपने कुटुम्ब का पालनपोषण। यह वह अन्य कुटुम्बों के लिये नहीं कर सकता। उनके प्रति उसके सीमित सामाजिक दायित्व हैं। अतः 'वसुधैव कुटुम्बकम' सूक्ति गृहस्थों के लिये भी नहीं है।

तब संसद के सभागार में यह सूक्ति क्यों लगी है? क्या संविधान निर्माताओं और संसद के मूल स्वामियों ने इसे सन्यासियों की संसद माना था? स्पष्ट रूप से नहीं। वे सब राजनैतिक लोग थे। वे राजनीति कर रहे थे। अतः संसद के सभागार में लगा हुआ 'वसुधैव कुटुम्बकम' का उद्घोष ऋजु यानी सहज सरल उदघोष नहीं है। वह एक राजनैतिक उदघोष है। उसका उद्देश्य अंग्रेज ईसाइयों को उनके बड़बोलपन के समकक्ष अपना एक उच्च उदघोष रखना था। इंग्लैंड के शासकों ने कभी भी यह नहीं कहा कि वे भारत को गुलाम बनाने आये हैं। उन्होंने सदा यह कहा कि हम भारत में सुशासन लाने और भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के लिये यहाँ हैं और तब तक रहेंगे जब तक भारतीय लोग चाहते हैं। एक दिन भी यह कहने का साहस वे नहीं जुटा पाये कि भारतीयों के न चाहने पर भी हम यहाँ रहेंगे। जबकि उनके मन में तो यही था परंतु यह वे कभी कह नहीं सके। सदा यही कहते रहे कि हम तो भारत के भले के लिये और यहाँ की प्रजा के कल्याण के लिये रह रहे हैं। उसे सुशासन और ज्ञान देने के लिये रह रहे हैं। स्पष्टतः वे राजनैतिक वाक्य थे। अतः संसद के सभागार में भी यह राजनैतिक वाक्य के रूप में लिखा गया उद्घोष है - 'वसुधैव कुटुम्बकम'। वहाँ इसका अर्थ यह है कि यदि आप हमें कुटुम्ब मानते हैं तो हम आपको नीचा या अपवित्र या असंस्कृत या अपने से हीन समाज या समूह नहीं कहेंगे। हम सचमुच आपको कुटुम्ब ही मानेंगे। बराबरी से व्यवहार करेंगे। उचित व्यवहार करेंगे। आप भिन्न हैं इसलिये व्यवहार में कोई अन्याय या असभ्यता नहीं करेंगे। संसद के सभागार में 'वसुधैव कुटुम्बकम' का यही अर्थ है।

जी 20 के शिखर सम्मेलन के लिये, जो नई दिल्ली में होने जा रहा है 'वन अर्थ, वन फैमिली' का उद्घोष किया गया है। वस्तुतः 19 देशों और 20वीं यूरोपीय यूनियन को मिलाकर जी 20 समूह बना है। ये मिलकर विश्व की जनसंख्या का दो तिहाई अंश हो जाते हैं तथा विश्व व्यापार का तीन चौथाई एवं वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 85 प्रतिशत अंश है। अतः यदि इन देशों की सरकारों के मध्य नीतिगत न्यायपूर्ण व्यवहार का निर्णय होता है तो यह सचमुच समस्त विश्व के लिये ही कल्याणकारी होगा। परंतु यह इतना सरल भी नहीं है। क्योंकि

सत्य तो यह है कि आकर्षक नारे के रूप में सम्पूर्ण पृथ्वी को एक कुटुम्ब के रुप में घोषित करना अलग बात है, अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों का कोई भी व्यवहार अभी तक उसके अनुरूप नहीं रहा है। समस्त अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें भी यूरोप और अमेरिका के पक्ष में तथा विश्व के अन्य देशों के विरोध में अनेक प्रावधानों वाली हैं। गांधीजी के समय से ऊँची घोषणाओं का उपयोग अपनी हीनता को ढंकने और स्वयं को समकक्ष दिखाने की चेष्टा के रूप में होता रहा है।

अभी तक पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकारों ने व्यापार विनिमय की सभी शर्तें अपने पक्ष में रखी हैं। यहाँ तक कि विश्व व्यापार संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश तथा विश्व बैंक - कहीं भी नीतिगत न्याय नहीं है। सभी जगह यूरोप एवं अमेरिका के पक्ष में तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों के प्रति भेदभावपूर्ण नीतियाँ एवं नियम बने हैं। यह काम शाब्दिक स्तर पर बड़ी ही परिष्कृत पदावली का प्रयोग करके ही हो पाता है।

सौभाग्यवश इस समय भारत का नेतृत्व श्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं जो व्यापार और वाणिज्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के प्रति अत्यंत सजग राष्ट्र नेता हैं। उन्हें इस बात का सजग स्मरण रहता है कि वे 140 करोड़ लोगों के राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वे इसका बल जानते हैं और निर्भय होकर न्याय का आग्रह करना भी जानते हैं। इसलिये इस सम्मेलन के लिये 'सम्पूर्ण पृथ्वी ही एक कुटुम्ब है' यह उद्घोष भारत के हित का ध्यान रखकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर न्यायपूर्ण व्यवहार का आग्रह करने वाला सिद्ध हो सकता है। जबकि यदि सजग नेतृत्व न हो तो यही उद्घोष कातर समर्पण का आधार बन जाता है। सोवियत ब्लाक के प्रति जवाहरलाल नेहरू का कातर समर्पण विश्वशांति एवं पंचशील जैसे सुंदर

संसद के सभागार में भी यह राजनैतिक वाक्य के रूप में लिखा गया उद्घोष है - 'वसुधैव कुटुम्बकम'। वहाँ इसका अर्थ यह है कि यदि आप हमें कुटुम्ब मानते हैं तो हम आपको नीचा या अपवित्र या असंस्कृत या अपने से हीन समाज या समूह नहीं कहेंगे। हम सचमुच आपको कुटुम्ब ही मानेंगे। बराबरी से व्यवहार करेंगे। उचित व्यवहार करेंगे। आप भिन्न हैं इसलिये व्यवहार में कोई अन्याय या असभ्यता नहीं करेंगे। संसद के सभागार में 'वसुधैव कुटुम्बकम' का यही अर्थ है।

उदघोषों की आड़ में हुआ था। अतः इस नारे में स्वयं में कोई स्पष्ट अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में नहीं है। इसमें अर्थ संबंधित राष्ट्रीय नायकों को भरना है। सौभाग्यवश इस समय हमारे पास एक समर्थ राष्ट्रीय नायक है।

वस्तुतः यह सम्पूर्ण पृथ्वी एक है यह बात विज्ञान के नवीन निष्कर्षों से निगमित है। न्यूटन के समय से विज्ञान बहुत अधिक आगे बढ़ चुका है। न्यूटन के समय यूरोपीय वैज्ञानिकों के निष्कर्ष थे कि यह विश्व एक यांत्रिक व्यवस्था जैसा है। उससे प्रेरणा लेकर मूर्खतापूर्ण ढंग से यूरोप के लोगों ने यह मान लिया था कि वे इस यांत्रिक व्यवस्था का संचालन और नियंत्रण करने के नियम जान सकते हैं। इस क्रम में उन्होंने भूमि, जल और पर्यावरण का अंतहीन शोषण किया है और कुछ ही समय में विनाश का आमंत्रण करते दिखे। हजारों वर्षों में संचित और संग्रहीत खनिज पदार्थों का विशाल भंडार सौ-डेढ़ सौ वर्षों में ही लगभग आधा समाप्त कर दिया गया दिखने लगा। उस पर से 'लिमिट्स टू ग्रोथ' नामक प्रसिद्ध रोम रिपोर्ट आई। उसके बाद पर्यावरण की रक्षा की चिंता जताई जाने लगी। परंतु उस विषय में निर्णायक कदम आज तक नहीं उठाये जा सके हैं। उदाहरण के लिये खाद्य पदार्थों के उत्पादन पर आग्रह के चलते सरकारें लगातार रासायनिक उर्वरकों के उपयोग पर बल देती चली गई हैं। रसायनिक उर्वरकों के उत्पादन पर बहुराष्ट्रीय निगमों का नियंत्रण है और व्यापार में बहुत अधिक असंतुलन है। एक ओर जहाँ रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग सीमित करना होगा वहीं उनके व्यापार को भी न्यायपूर्ण बनाना होगा।

विकसित देशों के बड़े बहुराष्ट्रीय व्यापारिक प्रतिष्ठानों ने हरित क्रांति को बढ़ावा दिया और कृषि रसायनों एवं आधुनिक कृषि मशीनों का बाजार कई गुना बढ़ा दिया गया। इससे उन विदेशी कंपनियों का धंधा भारत में तेजी से फूला फला जो कृषि रसायन, कृषि संयंत्र, कृषि यंत्र तथा आधुनिक कृषि तकनीकि की बिक्री का व्यवसाय कर रही थीं। इस व्यापार को संतुलित किस प्रकार किया जायेगा, यह चुनौती अपनी जगह है। अनुचित और विषमतापूर्ण नीतियों के कारण हमारे सुरक्षित विदेशी मुद्रा भंडार की बड़ी रकम रासायनिक उर्वरकों के आयात में पहले खर्च की गई। इसके लिये पहले तो मूल द्रव्यों (फंडामेंटल मेटेरियल) को कच्चा माल (रॉ मेटेरियल) कहा गया और फिर इनके आधार पर तथा इनके संशोधन- परिशोधन से तैयार माल को बहुत महत्व देकर उसका दाम मूल द्रव्य से कई गुना अधिक बढ़ाया गया। इससे भारत का मूल द्रव्य बहुत सस्ते में विदेशों को भेजा गया और वहाँ से तैयार माल ऊँची दरों में बुलाया गया और इस क्रम में भारतीय राजकोष का बहुत बड़ा अंश लुटा दिया गया। इस प्रकार 1858 से 1947 तक इंग्लैंड ने जो भी लूट भारत की की थी, उससे कई गुना अधिक माल और धन भारत का 75 वर्षों में लुटा दिया गया है। क्या जी 20 सम्मेलन में इस व्यापारिक असंतुलन को संतुलित करने पर कोई विचार किया जायेगा? क्योंकि तभी तो 'वसुधैव कुटुम्बकम' नाम सार्थक होगा।

अभी तक जो स्थिति है उसमें 6 एजेंडा ही मुख्य हैं -

1. हरित विकास, जलवायुगत वित्तव्यवहार और जलवायुगत जीवन की दशा पर विचार।
2. 2030 तक टिकाऊ विकास के स्वरूप एवं कार्यक्रमों के निर्धारण के लक्ष्य पर विचार।
3. प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और डिजिटल सार्वजनिक संरचना।
4. बहुआयामी संस्थाओं का आगामी समय के लिये विकास।
5. वृद्धिदर को समेकित रूप से तीव्र करने पर विचार और
6. स्त्रीशक्ति के नेतृत्व में विकास पर विचार।

स्पष्ट है कि इसमें सूत्र रूप में भले ही विकास की नीतियों को न्यायपूर्ण और संतुलित बनाने का विचार निहित है परंतु उस विचार की स्पष्ट घोषणा नहीं है। टिकाऊ विकास के स्वरूप और कार्यक्रमों के निर्धारण के समय इस पक्ष पर विचार किया जा सकता है। सत्य तो यह है कि आकर्षक नारे के रूप में सम्पूर्ण पृथ्वी को एक कुटुम्ब के रूप में घोषित करना अलग बात है, अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों का कोई भी व्यवहार अभी तक उसके अनुरूप नहीं रहा है। समस्त अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें भी यूरोप और अमेरिका के पक्ष में तथा विश्व के अन्य देशों के विरोध में अनेक प्रावधानों वाली हैं। गांधीजी के समय से ऊँची घोषणाओं का उपयोग अपनी हीनता को ढंकने और स्वयं को समकक्ष दिखाने की चेष्टा के रूप में होता रहा है। इसका उपयोग करके विगत 75 वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों के भारतीय एजेंटों ने भारत की हीनता को ही गौरव की वस्तु की तरह प्रचारित किया है। परन्तु मोदी जी के आने के बाद से स्थिति बदली है और हम आशा करते हैं कि अब इस वसुधा को कुटुम्ब मानने का आग्रह अर्थात न्यायसंगत नीतियों का आग्रह वस्तुतः किया जायेगा।

• • •

वरिष्ठ सामाजिक एवं राजनीतिक विचारक

भक्त एवं संत साहित्य में वसुधैव कुटुंबकम्

– कविता सरोज

मध्यकालीन भक्त एवं संतों ने अपने साहित्य में विशाल जीवन-दर्शन को पोषित किया। उन्होंने ऐसी अवधारणा को विकसित की जिससे संपूर्ण विश्व का कल्याण हो सके। इन भक्त-संतों का साहित्य जगत-कल्याण का पर्याय है, जिसमें 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना दृढ़ एवं शीर्ष पर विराजित है। इतना विशाल दृष्टिकोण भारतीय साहित्य एवं दर्शन का है, जिसे हमारे ऋषि-मुनियों सहित भक्त-संतों ने पल्लवित एवं संरक्षित किया। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना भारतीय साहित्य और दर्शन से परस्पर अनुस्यूत है, जिससे इसका प्रभाव भावी साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक एवं सहज था।

वसुधैव कुटुंबकम् से आशय है 'संपूर्ण पृथ्वी एक कुटुंब (परिवार) सदृश है। यह संकल्पना भारतवर्ष के प्राचीन ऋषियों, मनीषियों द्वारा की गई थी जिसका ध्येय था वसुंधरा पर स्नेह, सौहार्द, बंधुत्व, त्याग, करुणा का पल्लवन कर मानवता का विकास करना। इस विचार के माध्यम से उन्होंने यह संदेश प्रसृत किया कि इस पृथ्वी पर मनुष्य के साथ प्राणिमात्र का समान अधिकार है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को हमारे भक्त और संत भी अपने साहित्य में पल्लवित और पुष्पित करते हैं, वे अपने इस अमर्त्य संदेश से आज भी संसार को स्पंदित एवं परिवर्तित करने में सक्षम हैं। आज उपयोगितावादी, वैश्वीकरण, बाजारवादी संस्कृति से मनुष्यत्व की संस्कृति खतरे में है, मनुष्य मानवीय मूल्यों से दूर हो रहा है और विविध समस्याओं से घिर रहा है जिससे परिवार से लेकर समाज, राष्ट्र और विश्व में विघटनकारी स्थितियां उत्पन्न हो रही हैं, सम्पूर्ण जगत के कल्याण हेतु इसका सीघ्र निदान होना आवश्यक है।

मध्यकालीन भक्त एवं संतों ने अपने साहित्य में विशाल जीवन-दर्शन को पोषित किया, उन्होंने ऐसी अवधारणा को विकसित की जिससे संपूर्ण विश्व का कल्याण हो सके। इन भक्त-संतों का साहित्य जगत-कल्याण का पर्याय है, जिसमें 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना दृढ़ एवं शीर्ष पर विराजितहै। इतना विशाल दृष्टिकोण भारतीय साहित्य एवं दर्शन का है, जिसे हमारे ऋषि-मुनियों सहित भक्त-संतों ने पल्लवित एवं संरक्षित किया।'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना भारतीय साहित्य और दर्शन से परस्पर अनुस्यूत है, जिससे इसका प्रभाव भावी साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक एवं सहज था। यह अवधारणा हमारे साहित्य में वैदिक काल से चिरव्याप्त है। डॉ. रमेश ए. वाला लिखते हैं- ''वैदिक समाजवाद का ध्येय है कि आपस में कोई द्वेष न करके सभी जन परस्पर मैत्री की भावना में व्यवहार करें। वेद की दृष्टि तो इससे अधिक व्यापक है। वह तो पशु-पक्षियों तक का प्रिय होने का उपदेश देता है''[1] यजुर्वेद की एक ऋचा है जिसमें सबके लिए मांगलिक शब्द और दृश्य देखने-सुनने की कामना के साथ-साथ यह करते हुए सौ वर्ष जीने की भी कामना की गई है-

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवः ।

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।।(यजु.25.21)[2]

वेद में राष्ट्र मंगलकामना ही नहीं अपितु 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम' इस दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय मंगल कामना की गई है। जो सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय की भावना से ओत-प्रोत है। ऋग्वेद का स्वस्तिवाचन और शक्ति प्रकरण ऐसे ही मंत्रों से अनुस्यूत है । बिना सद्भावना और बंधुत्व

के 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना फलीभूत नहीं हो सकती। यजुर्वेद में कहा गया है कि हमें मित्र की दृष्टि से संपूर्ण विश्व के सभी मानवों को देखना है-

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥(यजु. 36.18)[3]

विश्व शांति और विश्व बंधुत्व की उदात्त भावनाओं से ओत-प्रोत वैदिक मंत्रों में मानवमात्र के प्रति सौहार्द, मैत्री एवं सहाय्य की भावना का पाया जाना स्वाभाविक है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को पोषित करने वाले महावाक्य हमारे वेद और उपनिषदों में परिव्याप्त हैं।**"अहं ब्रह्मास्मि/ सर्व खल्विदं ब्रह्म/तत्त्वमसि/"**[4] इत्यादि सूक्त विशाल जीवन-दर्शन का निर्माण करते हैं जिसमें वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना भी समाहित हो जाती है। महोपनिषद में लिखा गया है-

"अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्'।।[5]
(महोपनिषद् अध्याय 6, मंत्र 71)

अर्थात् यह मेरा है, यह तुम्हारा है, इस तरह की गणना छोटे चित्त (संकुचित मन) वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो संपूर्ण धरती ही परिवार है। इस जीवन-दृष्टि को आत्मसात करके हम संपूर्ण विश्व के लिए उत्तम एवं परस्पर स्नेहपूर्ण संबंध तथा समावेशी और सामंजस्यपूर्ण संसार बनाने की दिशा में कार्य उत्तम ढंग से कर सकते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है-

"स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव"[6]
(ऋग्वेद 5-51-151)

अर्थात् हम कल्याण मार्ग के पथिक बने।

'वसुधैव कुटुंबकम्''संसार के लिए एक ऐसे प्रेरणापुंज का स्रोत है जिसके चहुंओर प्राणिमात्र के प्रति सत्यं, शिवं, सुंदरम् की स्रोतस्विनि प्रवाहित होती है। यह भावना भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा के रूप में स्थिर है। डॉ.रमेश.ए.वाला लिखते हैं- "विश्व का प्रत्येक मानव वैदिक समाजवाद की परिधि में आ जाता है, वेद समान रूप में मानव मात्र के कल्याण तथा उत्थान की बात सोचता है,किसी वर्ग विशेष की नहीं"।[7] इन विचारधाराओं की वर्तमान में प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। भारतीय-दर्शन सदैव दूरदर्शिता से प्रभावित रहा है, आज 'वसुधैव कुटुंबकम्'' भारतीयता की पहचान को स्थापित कर रहा है ।

वर्तमान विश्व की जो समस्याएं और विद्रूपताएं हैं उसको देखते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना अतिमहत्वपूर्ण होती जा रही है, वैश्विक महाशक्ति बनने की होड़ में विविध देश वैश्विक शांति के स्थान पर अशांति को जाने-अनजाने पोषित कर रहे हैं। असमानता, निर्धनता, आपसी संघर्ष, द्वन्द्व, अमानवीयता इत्यादि विसंगतियों को देखते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना का पल्लवन अनिवार्य और उपयोगी होता जा रहा है। जीवन मुक्त गीता में कहा गया है- "मुक्त वही है जो अपने को जगत् के समस्त प्राणियों के भीतर देखने वाला, अहिंसा पर तथा सब जीवों के हित में रत है"।[8] साधु, संतों, ऋषियों एवं मनीषियों की यह भूमि भारतवर्ष जहां की संस्कृति का मूल ही एकत्व है। यहां के विविध धर्म-दर्शन अंततः संपूर्ण सृष्टि के समत्व की स्थापना करते हुएपृथ्वी के प्रत्येक मनुष्य को गृह-सदस्य के रूप में स्वीकार करता है। राधाकमल मुखर्जी का निम्नलिखित कथन है-"भारतीय सभ्यता की एकता के बीज वैदिक दर्शन, धर्म और पुराणों में निहित उन आधारभूत योजना में निहित है जिसने शाश्वत मनुष्य और शाश्वत समुदाय को मानव आत्मा की गतिमान धारा के रूप में सामने रखा"।[9] वसुधैव कुटुंबकम् की भावना धर्म जाति, नस्ल, राष्ट्रीयता इत्यादि के आधार पर उत्पन्न भेद को स्वीकार नहीं करता है, चूंकि यह वाक्यांश इस विश्वास का सृजन एवं प्रतिनिधित्व करता है, कि हमें प्राणिमात्र के साथ दया, स्नेह, करुणा, सम्मान का व्यवहार करना चाहिए,और परस्पर शांति, सद्भाव और स्नेह से रहने का प्रयास करना चाहिए। भक्त और संतों ने धर्म जैसे व्यापक तत्त्व को बहुत ही सहजता से व्याख्यायित किया है। श्रुतियों, स्मृतियों, श्रीमद्भागवत और महाभारत के साथ ही भारतीय संस्कृति और परंपरा के अनेक मूल्यवान और महत्वपूर्ण आर्य ग्रंथों में बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने धर्म कोइतने सहज और कम शब्दों में समेट लिया है कि आश्चर्य होता है। वे धर्म को अनेकानि जटिलताओं और विसंगतियों से बचाते हुए कहते हैं-

"परहित सरिस धरम नहिं भाई परपीड़ा सम नहिं अधमाई।[10]

'वसुधैव कुटुंबकम्'' की अवधारणा या दर्शन आत्मा के पूर्ण विस्तार का प्रतीक है। यह हमारे मध्यकालीन भक्त-संतों में पूर्णतः प्रत्यक्ष है। उनमें सहृदयता, उदारता, करुणा, सहिष्णुता आदि गुण पराकाष्ठा तक जा पहुंचते हैं जहां भेद दृष्टि समाप्त हो जाती है। वे अपनी उज्ज्वल मनीषा से संपूर्ण विश्व को आलोकित करते हैं। वे एक ऐसे पथ का सृजन करते हैं जिसपर सभी मनुष्य चल सकें, तथा सहजता और मानवीय गुणों को आत्मसात कर सकें। 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना शांति को प्रसृत करतीहै, तथा विविधता के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करतेहुए वैश्विक जिम्मेदारीका बोध कराती है।संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, कबीर, तुलसी, जायसी, दादू, नानक, रैदास, रज्जब, तुकाराम इत्यादि अनेक भक्त-संत कवियों ने 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना को दृढ़ करते हैं। मानव-कल्याण को इन्होंने अपने साहित्य का ध्येय बनाया, फिर वह मनुष्य विश्व के चाहे जिस कोने का हो। गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं-

"कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सबकहं हित होई।।[11]

अर्थात्- कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है, जो गंगाजल की तरह सब का कल्याण करे। संत नामदेव महाराज गोविंद की व्यापकता के संदर्भ में लिखते **हैं-**

" सभु गोविंदु है सभु गोविंदु है, गोविन्दु बिन नहिं कोई।
सूतु एकु मणि सत सहस जैसे, ओति पेति प्रभु सोई।।[12]

अर्थात् वे सर्वत्र गोविंद की व्यापकता मानते हैं संपूर्ण सृष्टि में गोविंद का वास है, इस व्यापक दृष्टि से देखें तो पूरी पृथ्वी कुटुंब की भांति है। आगे नामदेव महाराज कहते हैं-

"सभैघट रामु बोलै रामा बोलै, राम बिना को बोलै रे।
एकल माटी कुंजर चीटी। भाजन है बहु नान्हा रे।
अस्थावर जंगम कीट पतंगा, घटि घटि रामु समाना रे"।।[13]

अर्थात् घट-घट में राम का वास है, राम के बिना कुछ नहीं, हांथी से लेकर चींटी तक और अस्थावर-जंगम,कीट-पतंगें सभी में प्रभु का वास है। हमारे भक्त-संतों का इतना व्यापक दृष्टिकोण हैजिससे कभी अलगाव और द्वेष की भावना उत्पन्न नहीं हो सकती। संत कबीर संतों के संदर्भ में कहते हैं-

"संत न छोड़ै संतई, जे कोटिक मिलै असंत।
चंदन भुवंगा बैठिया, शीतलता न तजंत"।।[14]

अर्थात् संत प्रवृत्ति के मनुष्य का व्यक्तित्व सभी परिस्थितियों और व्यक्तियों के लिए एक जैसा होता है। यद्यपि उन्हें बुरे लोग भी मिलते हैं फिर भीवे सम रहते हैं और अपनी अच्छाइयों को कदापि नहीं त्यागते। कबीर कहते हैं कि इस पूरे संसार में कोई बैरी(दुश्मन) नहीं है अगर आपका मन शीतल है। सभी के प्रति कल्याण व परोपकार की भावना रखनी चाहिए, वे प्रत्येक जीवों पर दया करने की बात करते हैं-

"जग में बैरी कोई नहीं,जो मन सीतल होय।
या आपा को डारिदे, दया करै सब कोय"।।[15]

मध्यकालीन काव्य जो 'भक्तिकालीन' काव्य से प्रसिद्धहै ये अपनी साहित्यिक समृद्धि एवं विचारों की उदात्तता के कारण 'साहित्य का स्वर्णयुग' कहलाता है। हिंदी साहित्य के प्रभृति विद्वानों एवं आलोचकों नेइस कालखंडको अपने-अपने दृष्टिकोण से विवेचित एवं विश्लेषित किया है। इस काल के भक्त-संतों ने जिस साहित्य का सृजन किया उसकी आधारभूमिमुख्यत: भक्ति क्षेत्र है, किंतु इसी भाव-भूमि पर खड़े होकर इन्होंने संपूर्ण समाज के कल्याण हेतु भव्य प्रासाद निर्मित किया। भक्त-संतों के विचारों की औदात्यता, दिव्यता और सर्वोच्चता संपूर्ण विश्व के लिए अद्वितीय है। वेकाल एवं सीमा के बंधन से मुक्त हैं, उनका साहित्य 'विश्व साहित्य' का प्रतीक है, जिसमें मनुष्य के साथ प्राणिमात्र के कल्याण की भावना निहित है इनका काव्य मानवतावाद का प्रतिबिंब है। डॉ.भगवानदेव पांडेय लिखते हैं-"हमने अपने उन मनीषियों की वाणी को विस्मृत कर दिया है जिनकी मनीषा का आधार केवल मनुष्य है वह मनुष्य चाहे भारत का हो या विश्व के किसी भी कोने का या किसी भी धर्म का हो, किसी भी जाति का हो या किसी भी वर्ण का हो अपनी संवेदनाओं के धरातल पर एक होता है"।[16] भक्त एवं संतों ने 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना कोऔरमजबूत किया।इनकी दया,करुणा, प्रेम,समानता केवल हिंदुस्तान की सीमा में आने वाले मनुष्यों के लिए ही न थी अपितु संपूर्ण विश्व के लिएथी। पृथ्वी

पूरी दुनिया को एक परिवार की तरह देखने का भारत का यह स्वभाव नया नहीं है। यह स्वभाव तो हमें अपनी विरासत में मिला है। इतिहासकारों के बीच अतीत में भारत की समृद्धि को लेकर कोई मतभेद नहीं रहा। भारत इतना समृद्ध था की पूरी दुनिया के विभिन्न देश यहाँ आकर व्यापार करना चाहते थे। हमारी सैन्य शक्ति तथा अर्थव्यवस्था दोनों ही मजबूत होने के बावजूद भी हमने किसी दूसरे देश पर कभी भी उसको गुलाम बनाने के उद्देश्य से आक्रमण नहीं किया।

पर जितने भी प्राणी हैं सभी का स्नेहपूर्ण अधिकार है जीने का, सहजता से विचरण करने का अर्थात् संपूर्ण पृथ्वी ही हमारा गृह है। इस विचार में विश्व-दृष्टि परिलक्षित है, जिसमें धर्म,जाति,वर्ण, नस्ल,धन इत्यादि से कोई छोटा-बड़ा नहीं है; किसी का भी सर्वस्व पर मालिकाना हक नहीं है बल्कि इस वसुंधरा पर सभी का सामान एवं सहज अधिकार है।

संपूर्ण 'धरा' को जब हम अपना गृह स्वीकार कर लेते हैं और परिवार के रूप में देखते हैं तो स्वत: आपसी संघर्ष, तनाव,द्वंद,असमानता,भेद-बुद्धि,कटुता, मानवता का हनन इत्यादि समस्याएं स्वयं हल हो जाती हैं। क्योंकि यह उदात्त विचार हमारे मानस-पटल पर सभी को एक परिवार के रूप में रेखांकित कर देता है जिससे हमारे मनोभावों में किसी के अहित की भावना नहीं रह जाती; हम परस्पर आत्मीय और स्नेह पूर्वक रहने को प्रेरित होते हैं। संत दादू कहते हैं-

"काहेकौ दुख दीजिए, सांई है सब मांहि।
दादू एकै आत्मा, दूजा कोई नांहिं ।।[17]

संत दादू का कितना विस्तृत दृष्टिकोण है, जिससे सृष्टि का कोई भी प्राणि अछूता नहीं है,उनकी दया, करुणा मनुष्य के साथ पृथ्वी के संपूर्ण जीवों के लिए है। गुरु नानक सृष्टि के सिरजनहार परमेश्वर की व्यापकता का वर्णन करते हैं जिनमेंवसुधैव कुटुंबकम् की भावना परिलक्षित है-

"आसणु लोइ लोइ भंडार। जो किछु
पाइआ सु एका वार।
करि करि वेखै सिरजनहारु। नानक सचे
की साची कार"।।[18]

अर्थात् उस परमात्मा का लोक-लोक में आसन है, और लोक-लोक में उसका भंडार, उनमें जो कुछ रखना था वह एक बार ही रख दिया है, वह सिरजनहार सृष्टि को रच-रचकर उसे देखता और संभालता है। नानक उस सच्चे परमात्म का कार्य भी सच्चा है। संत कबीरसंपूर्ण संसार के लिए चिंतित हैं और आर्त भाव से कहते हैं-

"सुखिया सब संसार है खावे और सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवे।।[19]

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मध्यकालीन भक्तों और संतों ने मानवीय एकता का बिगुल फूंका। इन्होंने जाति-पाति, छूआछूत, रंगभेद और हिंसा तथा घृणा से जुड़े हुए मानवीय विचारों से संघर्ष किया ये सभी भक्त और संत सच्चे अर्थों में जननायक हैं। भक्ति-भाव और कविता की दृष्टि से इन भक्त-संतों ने विलक्षण प्रयोग और उपलब्धि प्राप्त किया है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से साधुत्व का नव्य कीर्तिमान स्थापित किया, उसके नये-नये द्वार फोड़े। अपनी सृजन शक्ति से कविता का अध्यात्म रचा तथा धर्म,जाति में बंटे हुए मनुष्य विरोधी संगठनों को कविता के तीक्ष्ण शस्त्र से विनिष्ट करने का महनीय प्रयास किया। इन भक्त-संतों ने ही 'वसुधैव कुटुंबकम्''का पाठ पढ़ाया।इनकी संस्कृति एकता की संस्कृति है ये आध्यात्मिक भाव-भूमि पर समानता का महल निर्मित करते हैं, जिसमें सभी प्रवेश पा सकते हैं उनका ध्येय सुधार के संकुचित आवरण में आबध्द नहीं है, अपितु संपूर्ण संसार के लिए है। कबीर कहते हैं-

"बृच्छ कबहुं नहिं फल भखैं, नदी न संचै
नीर।
परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर"।।[20]

वास्तव में भक्त-संतों का चिंतन तो संपूर्ण सृष्टि के जीवों के लिए है, उनकी संवेदनशीलता का प्रसरण इतना विस्तृत है कि संसार का कोई भी प्राणी उससे अछूता नहीं है। 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की मूल भावना ही मानवीय एकता, करुणा, स्नेह पर टिका है। जहां पर अपने पराये का भेद नहीं है। तथा मनुष्य अपने सगे-संबंधी जैसा ही संसार के अन्य मनुष्यों और जीवों के प्रति स्नेही बने। ऐसे उदात्त भाव हमारे मध्यकाल के भक्तिकालीन साहित्य में परिव्यात है। लगभग प्रत्येक भक्त-संत इस भाव से अनुप्राणित हैं कि संसार के प्रत्येक जीव का कल्याण हो, इस वसुंधरा पर पर किसी का अधिकार कम या ज्यादा नहीं अपितु सभी का समान अधिकार है, यह पृथ्वी सभी का कुटुंब है। ऐसी कल्याणमयी भावना के प्रसरण से संपूर्ण संसार का शुभ होगा, चहुंओर शांति और प्रसन्नता होगी,परस्पर देशों में द्वन्द्व, संघर्ष और युद्ध की स्थिति समाप्त होगी; भय, चिंता, मतभेद, असमानता, शोषण का अंत होगा। इस विचार को हृदयंगम करने से संपूर्ण'धरा'सुख, समृद्धि से परिपूर्ण हो जाएगी। संत सुंदरदास कहते हैं-

"शील संतोष क्षमा उर धारै।धीरज सहित
दया प्रतिपारै।"[21]

भक्त-संतों का हृदय करुणामय होता है, वे धैर्यवान, शीलवान होते हैं। अर्थात् संतों का व्यवहार सृष्टि के प्रत्येक मनुष्य के लिए समान है, सभी के प्रति ममत्व और स्नेह है। संत तुलसीदास अपने आराध्य श्रीराम का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

आज प्रत्येक देश अन्य देशों से मधुर संबंध रखना चाहते हैं और विविध समझौते भी करते हैं किन्तु तनिक लोभ-लाभ के कारण सारे संबंध टूट जाते हैं, और किए गए समझौते निरस्त एवं निरर्थक हो जाते हैं; कुछ समय में ही हम एक दूसरे पर आक्रमण करने को तत्पर हो जाते हैं। विश्व के परस्पर देशों में सीमा-विवाद इतना भयानक रूप ग्रहण करता है जिसमें मनुष्यता और मानव-सभ्यता दोनों ही घुटकरदम तोड़ती हैं। इन तमाम समास्याओं और विसंगतियों को देखते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्" की अवधारणा विश्व को तारने में सर्वाधिक सहायक और सर्वोच्च प्रतीत होती है। वर्तमान समय में विश्व शांति और समृद्धि तभी पल्लवित होगी जब हम परस्पर प्रेम, करुणा, त्याग, बंधुत्व, सौहार्द और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को आत्मसात करेंगे।

"देहि सकल सुख, दुख दहै, आरत-जन-बंधु।
गुन गहि, अघ-औगुन हरै, अस करुणा सिंधु।।
देसकाल-पूरन सदा वद वेद पुरान।
सबको प्रभु सबमें बसै, सबकी गति जान।।[22]

अर्थात् कोशलपति सब सुख दे देते हैं, और दुःखों को भस्म कर डालते हैं। वे दुखी जनों के बंधु हैं, गुणो को ग्रहण करते और अवगुणों को हर लेते हैं ऐसे करुणा-सागर हैं। सब देश और सब समय पूर्ण रहते हैं। ऐसा वेद पुराण कहते हैं। वे सबके स्वामी हैं। सबमें रमते हैं और सबके मनकी बात जानते हैं।

मध्यकाल के भक्त एवं संतों का साहित्य भक्ति तथा धर्म की केंद्रीयता के बावजूद वह केवल छाप-तिलक, पूजा-अर्चना, ध्यान, उपासना और लोक-परलोक की बात नहीं करता अपितु वह समाज में अन्याय, अनाचार, शोषण से संघर्ष करने वाला साहित्य है। उस समय के संतों ने सामाजिक, सांस्कृतिक उपलब्धि का निर्माण किया। नानक,दादू, कबीर, रैदास, तुलसी, जायसी, ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम इत्यादि भक्त-संतों ने सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत की। भले ही यह परिवर्तन मुख्य रूप से धर्म और भक्ति के क्षेत्र में हुआ हो, किंतु एक विश्वदृष्टि प्रदान करता है।विविधभेदों वर्ण, जाति, सम्प्रदाय, नस्ल, धर्म इत्यादि के बंधनों को तोड़कर हृदय की एकात्मकता को स्थापित किया। वर्तमान समय में पुनः हमें धर्म,जाति, संप्रदाय के नाम पर बांटकर उसीसंकरी और घुटन भरी गली में धकेला जा रहा है, जहां से हमारे भक्त-संतों ने हमें निकला था। डॉ.शिवकुमार मिश्र लिखते हैं-"कहना ना होगा की लंबे अंतराल के बाद ये संत आज हमारे लिए फिर से प्रासंगिक हो उठे हैं। प्रासंगिक वे पहले भी थे, परंतु आज की स्थितियों ने उनकी प्रासंगिकता का न केवल गहरा अहसास हमें कराया है उसे सार्वकालिक भी बना दिया है"।[23] वर्तमान में संपूर्ण विश्व की स्थिति को देखते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना एक स्रोत के रूप में दिखाई दे रहा है, जिससे संपूर्ण संसार का काया-पलट हो सकता है और सर्वत्र प्रेम,समानता,सहभागिता, करुणा का पल्लवन भी संभव हो सकेगा। मानव सभ्यता तमाम आग्रहों-दुराग्रहों से मुक्त हो सकेगा, तथा आने वाले अनेक खतरों से बच सकता है; जो दुधारी तलवार की भांति मानवता की गर्दन पर लटक रही है। आज प्रत्येक देश अन्य देशों से मधुर संबंध रखना चाहते हैं और विविध समझौते भी करते हैं किन्तु तनिक लोभ-लाभ के कारण सारे संबंध टूट जाते हैं, और किए गए समझौते निरस्त एवं निरर्थक हो जाते हैं; कुछ समय में ही हम एक दूसरे पर आक्रमण करने को तत्पर हो जाते हैं। विश्व के परस्पर देशों में सीमा-विवाद इतना भयानक रूप ग्रहण करता है जिसमें मनुष्यता और मानव-सभ्यता दोनों ही घुटकरदम तोड़ती हैं। इन तमाम समास्याओं औरविसंगतियों को देखते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की अवधारणा विश्व को तारने में सर्वाधिक सहायक और सर्वोच्च प्रतीत होती है। संत तुलसीदास लिखते हैं-

"संत हृदय नवनीत समाना।कहा कविन्ह पर कहै न जाना।
निज परिताप द्रवइ नवनीता। परदुख द्रवइ संत सुपुनीता"।।[24]

अर्थात् संतों काहृदय नवनीत के सदृश होता है ऐसा कवियों ने कहा है किन्तु नवनीत अपने ताप से पिघलता है, जबकि संत तो दूसरों के दुखों से द्रवित होते हैं। ऐसे ही महाराष्ट्र के संत तुकाराम महाराज जी मानवीय एकता का शंखनाद करते हैं। वे मानव-मानव में उत्पन्न भेद को अस्वीकार करते हैंऔर जगत-कल्याणको ही संतों का ध्येय बताते हैं। संत तुकाराम महाराज लिखते हैं-

संपूर्ण सृष्टि ही इस उदात्त प्रेम को प्राप्त करना चाहती है। प्रेम केवल आकाश से ऊंचा ही नहीं, अपितु प्रेम का ध्रुव तो गगन में स्थित ध्रुव से भी ऊंचा है। जायसी ने प्रेम का उदात्तीकरण करके उसे भक्ति के स्तर पर पहुंचाकर जन-मन के मन में प्रेम के विरवे रोपते हैं। यह प्रेम-तत्त्व इतना विशाल है कि संपूर्ण सृष्टि को अपने में समाहित करता है, और 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना को मजबूती प्रदान करता है। बिना प्रेम के 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना फलीभूत नहीं हो सकती। जायसी के प्रेम तत्त्व का स्वरूप अत्यधिक व्यापक है। इनकी दृष्टि से देखें तो संपूर्ण चराचर जगत में प्रेम के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं पड़ता।

**"जगाच्या कल्याणा संतांच्या विभूती.
देह कष्टविति उपकारे,भूतांची दया हें
भांडवल संतां आपुली ममता नाहीं देही.
तुका म्हणे सुख पराविया सुखे. अमृत हे
मुखे सुवसते.[25]**

अर्थात् संत जगत के कल्याण हेतु आते हैं और इसी में उनकी महानता है, वे सभी जगत प्राणियों के उपकार के लिए अपने शरीर पर अनेकानि कष्ट सहन करते हैं।सब प्राणियों के लिए वे दया का भंडार होते हैं। उनमें अपने शरीर के प्रति ममता नहीं होती। तुकाराम कहते हैं कि संतों के मुख से अमृत बरसता है, और उन्हें दूसरों के सुख से सुख मिलता है। संत तुकाराम अपने एक अभंग में कहते **हैं-"भूतीं देव म्हणोनि भेटतों या जना। नाही हे भावना नरनारी"।[26]**

अर्थात् संपूर्ण संसार में जो भी मिलते हैं;वे सभी ईश्वर के ही स्वरूप हैं, इस उदात्त विचारधारा से अगर हम देखे तो सारे भेदभाव स्वत: समाप्त हो जाते हैं। संत दादू कहते **हैं-**

**"निरवैरी सब जीव सूं संतजाना सोई।
दादू एकै आतमा वैरी नहिं कोई"।।[27]**

इनके इस विचार से मनुष्यों में परस्पर वैर-भावना का क्षयहोगा और प्रेम का प्रसरण होगा। जिसकी वर्तमान विश्व को सर्वाधिक जरूरत है। प्रेम के कवि जायसी भी संसार में मानवीय एकता को स्नेह के धागे से दृढ़ करना चाहते हैं। वे लिखते हैं-

**"ज्ञान दिस्टि सौं जाइ पहूंचा। प्रेम अदिस्ट
गगन सौं ऊंचा ।।
धुवतेऊंच पेम धुम उवा। सिर दै पाउदेइ
सो छुवा"।।[28]**

इन पंक्तियों में प्रेम की उदात्तता, तन्मयता और अंतरंगता का अद्वितीय वर्णन है । संपूर्ण सृष्टि ही इस उदात्त प्रेम को प्राप्त करना चाहती है। प्रेम केवल आकाश से ऊंचा ही नहीं, अपितु प्रेम का ध्रुव तो गगन में स्थित ध्रुव से भी ऊंचा है। जायसी ने प्रेम का उदात्तीकरण करके उसे भक्ति के स्तर पर पहुंचाकर जन-मन के मन में प्रेम के विरवे रोपते हैं। यह प्रेम-तत्त्व इतना विशाल है कि संपूर्ण सृष्टि को अपने में समाहित करता है, और 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना को मजबूती प्रदान करता है। बिना प्रेम के 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना फलीभूत नहीं हो सकती। जायसी के प्रेम तत्त्व का स्वरूप अत्यधिक व्यापक है: इनकी दृष्टि से देखें तो संपूर्ण चराचर जगत में प्रेम के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं पड़ता।

**"तीन लोक चौदह खंड,सबै परै मोहि
सूझि।
प्रेम छांड़ि नहिं लेन किछु, जो देखा मन
बूझि"।।[29]**

जायसी ने मानुष प्रेम की अभिव्यंजना अनुपम व्यापकता, गहनता और आंतरिकता के साथ की है। वर्तमान समय में विश्व शांति और समृद्धि तभी पल्लवित होगी जब हम परस्पर प्रेम, करुणा, त्याग, बंधुत्व, सौहार्द और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को आत्मसात करेंगे। 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना कोई काल्पनिक सिध्दांत नहीं है, अपितु जीता-जागता प्रज्वलित मशाल है; जिसकी संपूर्ण विश्व को जरूरत है, यह भारतीय संस्कृति की समृद्ध थाती है जिसकी रक्षा प्रत्येक भारतीय को अवश्यकरनी चाहिएतथा इस विचार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक ले जाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए। जिस बीड़ा को हमारे भक्त-संतों, ऋषियों-मुनियों, तपस्वियों ने उठाया उसे जरूरत है आज आगे ले जाने की; क्योंकि समाज की चिंतनशीलता, गतिशीलता और अनुकूलता सद्विचारों और कर्मठता पर आधारित है। साधु-प्रकृति सदैव कल्याणकारी मार्ग का सृजन करती रहती है।

विश्व में भारत ऐसा देश है, जहां पर भिन्न-भिन्न संस्कृति का सबसे जटिल समायोजन परिलक्षित होता है, यही भारतीय संस्कृति की आत्मा 'विवधता में एकता' है। यहां पर विविध धर्म, संस्कृति, रहन-सहन का मंजुल योग है; विविधता होने पर भी एकता की गहरी छाप है। 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की अवधारणा भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की सर्वोच्च मनीषा का प्रतिफलन है, जिसे वैदिक काल से लेकर अब तक के संत-महात्माओं ने पोषित एवं पल्लवित किया। यह विश्व के समक्ष ऐसी अवधारणा है जो स्नेह, सौमनस्य, बंधुत्व, परस्पर-संवेदनशीलता को पोषित करती है। इसलिए यह सिध्दांत संपूर्ण विश्व के लिए कल्याणमयी 'थाती' है, एक ऐसा स्रोत है जहां से हम निरंतर प्रेरणा प्राप्त करके समता

और बंधुत्व के मार्ग पर चल सकते हैं।

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व वैश्वीकरण,बाजारीकरण,उपयोगितावादी सिद्धांत से उपजे तमाम विद्रूपताओं और अवरोधों-विरोधों को झेल रहा है।विज्ञान और तकनीकी ने जहां बहुतायत में भौतिक संसाधनों को उपलब्ध करवाया और तमाम भौगोलिक जटिलताओं को कम किया है, किंतु वहीं पर इसके दुष्परिणाम भी परिलक्षित हुए। मानव संबंधों में संकीर्णता और लोभ-लाभ की प्रवृत्ति बढ़ी, वह उपयोगितावादी सिद्धांत पर चल रहा है; जिससे मानवीय मूल्य स्वत: उपेक्षित हो रहे हैं। स्नेह, बंधुत्व, सौमनस्य, करुणा, त्याग, परोपकार जैसी उच्च भावना का दम घुट रहा है,ऐसे में संपूर्ण विश्व के समक्ष प्रश्नवाचक चिन्ह लटक रहा है,कि हम मानव सभ्यता को कल्याण के मार्ग पर ले चल पाएंगे कि उसे विनाश का मार्ग देंगे। इन सभी प्रश्नों और समास्याओं का हल हम 'वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना में पाते हैं जो मानव सभ्यता को स्नेह, बंधुत्व और कल्याण के मार्ग पर प्रशस्त कर पाएगा जिसे हमारे ऋषि-मुनियों के साथ मध्यकाल के भक्त-संतों ने पूरी तन्मयता के साथ पोषित किया। उन्होंने भक्ति-भाव के साथ मानवीय-मूल्यों को विश्व में प्रसृत किया जिससे हम आज भी प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं और निरंतर भविष्य में भी।

विश्व में भारत ऐसा देश है, जहां पर भिन्न-भिन्न संस्कृति का सबसे जटिल समायोजन परिलक्षित होता है, यही भारतीय संस्कृति की आत्मा 'विवधता में एकता' है। यहां पर विविध धर्म, संस्कृति, रहन-सहन का मंजुल योग है; विविधता होने पर भी एकता की गहरी छाप है। 'वसुधैव कुटुंबकम्" की अवधारणा भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की सर्वोच्च मनीषा का प्रतिफलन है, जिसे वैदिक काल से लेकर अब तक के संत-महात्माओं ने पोषित एवं पल्लवित किया। यह विश्व के समक्ष ऐसी अवधारणा है जो स्नेह, सौमनस्य, बंधुत्व, परस्पर-संवेदनशीलता को पोषित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. रमेश डॉ.ए.वाला, वेदों में शैक्षिक मूल्य और मानवाधिकार, रावत प्रकाशन नई दिल्ली, 2015, पृ.93
2. जातवेद डॉ.त्रिपाठी, वेदों में राष्ट्र का स्वरूप, विद्यानिधि प्रकाशन नई दिल्ली, 2013,पृ.118
3. वही, पृ.119
4. वही, पृ.95
5. Vasudhaiva-Kutumbakam-in-g-20-logo-sparks-protest/
6. अनिल डॉ.कुमार सिन्हा, वैदिक संस्कृति में मानव धर्म, आस्था प्रकाशन नई दिल्ली, 2020 पृ.8
7. रमेश डॉ.ए.वाला, वेदों में शैक्षिक मूल और मानवाधिकार, रावत प्रकाशन नई दिल्ली, 2015,पृ.95
8. विजयेन्द्र डॉ.नाथ मिश्र, भावनात्मक एकता और संत साहित्य, सेवक प्रकाशन ईश्वरगंगी वाराणसी,1994, पृ.52
9. वही, पृ.62
10. दयानिधि डॉ.मिश्र, मध्यकालीन कविता विमर्श के नए आयाम, प्रलेक प्रकाशन, 2023, पृ.367
11. पोद्दार हनुमानप्रसाद, बालकाण्ड (गोस्वामी तुलसीदासविरचित) गीताप्रेस गोरखपुर,संवत्2070, पृ.29
12. परशुराम आचार्य चतुर्वेदी,संतकाव्य, किताब महल इलाहाबाद, 2019, पृ.80
13. वही, पृ.81
14. वही, पृ.44
15. हरि वियोगी,संत सुधा सार, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन,2004, पृ.138
16. भगवानदेव डॉ. पाण्डेय, संतों राह दुओ हम दीपा(कबीर संत और विचारक) विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,1999, पृ.5(भूमिका)
17. हरि वियोगी, संत सुधा सार, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2004, पृ.404
18. वही, पृ. 198
19. भगवानदेव डॉ. पाण्डेय, संतों राह दुओ हम दीपा(कबीर संत और विचारक) विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,1999, पृ.9(भूमिका)
20. हरि वियोगी, संत सुधा सार, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2004, पृ.135
21. वही,पृ.476
22. तुलसीदास गोस्वामी, विनय-पत्रिका, गीताप्रेस, गोरखपुर,संवत् 2078,पृ.139
23. मिश्र शिवकुमार, भक्ति-आन्दोलन और भक्ति-काव्य, लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ.222
24. विजयेन्द्र डॉ.नाथ मिश्र, भावनात्मक एकता और संत साहित्य, सेवक प्रकाशन ईश्वरगंगी वाराणसी,1994, पृ.40
25. देवसरे हरिकृष्ण, संत तुकाराम, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2012,पृ.55
26. खंदारकर श्री.शंकर महाराज, श्रीतुकाराम महाराज गाथा भाष्य, भाग-1, अभंग क्रं.1217,पृ.388
27. विजयेन्द्र डॉ. नाथ मिश्र,भावनात्मक एकता और संत साहित्य, सेवक प्रकाशन ईश्वरगंगी वाराणसी,1994, पृ.41
28. दयानिधि डॉ.मिश्र, मध्यकालीन कविता विमर्श के नए आयाम, प्रलेक प्रकाशन, 2023, पृ.74
29. वही, पृ.75

• • •

शोध छात्रा- हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

सतत विकास की वैदिक अवधारणा

– डॉ. सोनिया*, प्रो. रसाल सिंह**

भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन का मूल विषय **"वसुधैव कुटुंबकम्"** रखते हुए **"एक पृथ्वी, एक कुटुंब, एक भविष्य"** को आदर्श-वाक्य/मूल-मंत्र बनाया। अतः जी-20 घोषणा-पत्र सतत, सर्वसमावेशी, प्रकृति-केन्द्रित विकास के मॉडल पर आधारित है। इसमें विकास हेतु सतत हरित मार्ग की परिकल्पना की गई है। इसी के अंतर्गत भारत की पहल पर विश्व जैव ईंधन गठबंधन की शुरुआत भी हुई। विश्व कल्याण ही इस सम्मेलन का अभिप्रेत था। ग्लोबल साउथ अर्थात् एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अविकसित, अल्पविकसित और विकासशील देशों की अगुवाई करते हुए भारत ने इस चुनौती को केंद्रीय विमर्श बना दिया है। पर्यावरण संबंधी सभी आयामों एवं संरक्षण सम्बन्धी सभी प्रश्नों के उत्तर सनातन संस्कृति और वैदिक वाङ्मय में सहज उपलब्ध हैं। वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की 70वीं बैठक में '2030 सतत विकास हेतु एजेंडा के तहत सदस्य देशों द्वारा 17 विकास लक्ष्य अर्थात् एसडीजी (Sustainable Development goals-SDGs) तथा 169 प्रयोजन अंगीकृत किये गए हैं।

जी-20 सम्मेलन के समय जारी दिल्ली घोषणा-पत्र ने प्राचीन भारतीय संस्कृति और भारतीय वाङ्मय में अंतर्निहित पर्यावरण-चिंतन और धारणीय विकास की अवधारणा की महत्ता को प्रतिपादित किया है। इस विकास का उद्देश्य पर्यावरण के विपरीत चलने वाली विकास नीतियों में परिवर्तन लाना है। सतत विकास न केवल पर्यावरण में संतुलन बनाये रखना व सामंजस्य लाना है, बल्कि एक परिवर्तन की प्रक्रिया भी है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, तकनीकी विकास की

आज के सतत विकास की इस अवधारणा के प्रमुख तत्व वैदिक वाङ्मय में निरन्तर स्पष्ट हुए हैं। वैदिक साहित्य भारतीय धर्म व संस्कृति की अमूल्य निधि होने के साथ-साथ वैश्विक धरोहर है क्योंकि इसमें संपूर्ण वातावरण व परिवेश का समुचित वर्णन है तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन के बीज भी सन्निहित हैं। भारतीय ऋषि-ज्ञान परंपरा ने प्रकृति के तत्वों का बहुत गहन अध्ययन और उस अध्ययन आधारित प्रयोग किए उनसे मिलने वाले परिणामों को देखते हुए कुछ तार्किक सिद्धांत प्रतिपादित किए। उन तार्किक सिद्धांतों को जन सामान्य तक व्रत, पर्व एवं उत्सवों के माध्यम से सरल रूप में उपलब्ध कराया। भारतीय मनीषी बहुत पहले जान चुके थे कि मानव और प्रकृति में जब तक सामंजस्य है, तब तक मानव स्वस्थ और दीर्घ जीवन जी सकता है।

स्थिति, निवेश की दिशा को वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की जरूरतों के भी अनुकूल बनाया जा सके। 'पर्यावरण तथा विकास पर विश्व आयोग' (1983) के अंतर्गत बर्टलैंड कमीशन द्वारा जारी रिपोर्ट (1987) के अनुसार सतत विकास –'आने वाली पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु विकास ही सतत विकास है।' अर्थात् विकास तो हो परंतु प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करने व पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना हो।

आज के सतत विकास की इस अवधारणा के प्रमुख तत्व वैदिक वाङ्मय में निरन्तर स्पष्ट हुए हैं। वैदिक साहित्य भारतीय

धर्म व संस्कृति की अमूल्य निधि होने के साथ-साथ वैश्विक धरोहर है क्योंकि इसमें संपूर्ण वातावरण व परिवेश का समुचित वर्णन है तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन के बीज भी सन्निहित हैं। भारतीय ऋषि-ज्ञान परंपरा ने प्रकृति के तत्वों का बहुत गहन अध्ययन और उस अध्ययन आधारित प्रयोग किए उनसे मिलने वाले परिणामों को देखते हुए कुछ तार्किक सिद्धांत प्रतिपादित किए। उन तार्किक सिद्धांतों को जन सामान्य तक व्रत, पर्व एवं उत्सवों के माध्यम से सरल रूप में उपलब्ध कराया। भारतीय मनीषी बहुत पहले जान चुके थे कि मानव और प्रकृति में जब तक सामंजस्य है, तब तक मानव स्वस्थ और दीर्घ जीवन जी सकता है।

प्राचीन भारत भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में शीर्ष पर था। हमारे पूर्वज पर्यावरण की विशेषताओं से अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने सदा यही प्रयास किया कि मानव और प्रकृति के मध्य सामञ्जस्य बना रहे। भारतीय समाज प्रकृति की पूजा करता है। पूजा करने का यह आशय नहीं कि हम प्रकृति से कोई भी पदार्थ ग्रहण ही न करें, पूजा का अर्थ होता है- ''यथायोग्य व्यवहार करना''। वास्तव में यह असम्भव है कि मानव बिना प्रकृति पर आश्रित हुए जीवन यापन करे। किन्तु पुराकालीन विद्वज्जनों ने सदा प्रकृति का उतना ही उपयोग किया जितना जीविका निर्वाह के लिए परमावश्यक था। उन्होंने इसका दोहन नहीं किया। ईशोपनिषद् के प्रथम मन्त्र में यही भावना दर्शाई गई है कि इस चराचर जगत् की प्रत्येक वस्तु का सम्बन्ध एकमात्र ईश्वर से ही है। अतः उन सब का केवल आवश्यकतानुसार ही उपयोग किया जाना चाहिए और वह भी अनासक्त भाव से।[1] यही परम बुद्धिमत्ता है। प्रकृति के समीपस्थ वैदिक काल के मानव ने प्रकृति-प्रदत्त संसाधनों का उपयोग बड़े सम्मान से किया। उन्होंने पर्यावरण तत्त्वों में देवत्व का अनुभव किया और उनका पूजन प्रारंभ किया। प्रकृति को देव मानने का कारण निरुक्त में दी गई देव शब्द की व्युत्पत्ति से स्पष्ट है कि दान देने के कारन, दीपनकर्ता होने से, प्रकाशक होने से या द्युलोक में निवास करने से ''देव'' कहलाते हैं।[2] अर्थात् प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ हमें देता है इस कारण उन तत्वों को देवता कहा जाता है।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में यह कहा गया है कि हे भूमि माता! मैं जो आपको हानि पहुंचाता हूं, शीघ्र ही उसकी क्षतिपूर्ति हो जाए। हम आपके मर्म स्थलों को चोट ना पहुंचाएं।[3] यह मन्त्र स्पष्ट रूप से ऋषियों की दूरदर्शिता का द्योतक है। आज मानव पृथ्वी से खनिज पदार्थों की प्राप्ति के लिए भूमि का अमर्यादित विच्छेदन कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप भूकंप, जल-प्लावन, भूस्खलन आदि की समस्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वैदिक ऋषियों ने हमें इससे बहुत पहले ही सचेत कर दिया था। इससे यह अनुमान भी होता है कि पहले मानव समाज प्राकृतिक उपादानों के प्रति अति संवेदनशील था।

वेद मन्त्रों में भौतिक उन्नति के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति से वियुक्त रहकर मानव के अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की है। वेद-मन्त्र मानव शरीर को पंचभूत जन्य मान कर पर्यावरण को उसका अविभाज्य अंग बताते हैं - मेरे नेत्र सूर्य के समान है जो प्रदर्शक या प्रकाशक रुपी है, प्राण वायु के समान गतिशील है, आत्मा अन्तरिक्ष के समान मध्यवर्ती है तथा शरीर पृथ्वी के समान सहनशील है। ऐसा मैं अनावृत प्रसिद्ध हूँ तथा सब जानते हैं और मैं अपनी आत्मा को सूर्य और पृथ्वी की रक्षा के लिए नित्य देता हूँ।[4]

वेद मनुष्य और प्रकृति के मध्य एक गहन सम्बन्ध की कल्पना आदि काल से रखता आ रहा है। वेदानुसार मानव शरीर का निर्माण प्रकृति के पञ्च तत्त्वों से हुआ है- भूमि, जल, अग्नि,वायु तथा आकाश।[5] इस सम्बन्ध की पुष्टि हेतु ऋग्वेद के दशम मण्डल का 90वाँ सूक्त प्रमाण प्रदान करता है। इस सूक्त को "पुरुष सूक्त" इस नाम से भी जाना जाता है। इस सूक्त में ब्रह्माण्ड को एक मानव शरीर के रूप में मानकर सृष्टि-संरचना को बताया गया है। एक मन्त्र में पुरुष एवं प्रकृति के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए चन्द्रमा का सम्बन्ध मन से, सूर्य का सम्बन्ध चक्षु से, वायु और प्राणवायु का सम्बन्ध श्रोत्र से एवम् अग्नि का सम्बन्ध मुख से बतलाया गया है।[6] अन्य मन्त्र में अंतरिक्ष का सम्बन्ध नाभि से, द्युलोक का सम्बन्ध सिर से, भूमि का सम्बन्ध पैर से, श्रोत्र का सम्बन्ध दिशाओ से बताया गरा है।[7] पुरुष सूक्त में प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्ध के अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इस प्रकार प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध तथा उसके अंगों का महत्त्व जो मनुष्य समझता है वह स्वस्थ जीवन एवं सुख की प्राप्ति करता है–

वेद मनुष्य और प्रकृति के मध्य एक गहन सम्बन्ध की कल्पना आदि काल से रखता आ रहा है। वेदानुसार मानव शरीर का निर्माण प्रकृति के पञ्च तत्त्वों से हुआ है - भूमि, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश। इस सम्बन्ध की पुष्टि हेतु ऋग्वेद के दशम मण्डल का 90वाँ सूक्त प्रमाण प्रदान करता है। इस सूक्त को "पुरुष सूक्त" इस नाम से भी जाना जाता है। इस सूक्त में ब्रह्माण्ड को एक मानव शरीर के रूप में मानकर सृष्टि-संरचना को बताया गया है। एक मन्त्र में पुरुष एवं प्रकृति के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए चन्द्रमा का सम्बन्ध मन से, सूर्य का सम्बन्ध चक्षु से, वायु और प्राणवायु का सम्बन्ध श्रोत्र से एवम् अग्नि का सम्बन्ध मुख से बतलाया गया है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। (ऋग्वेद 10/90/18)

ऋग्वेद में अग्नि को पिता के समान कहा

गया है।[8] जिस प्रकार परिवार में पिता अग्रणी बनकर परिवार का कल्याण करता है उसी प्रकार अग्नि भी समस्त परिवेश (पर्यावरण) को शुद्ध करता है। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में ही अग्नि का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए वैदिक ऋषि कहते हैं–

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देव ऋत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्। (ऋग्वेद 1/1/1)

इसमें अग्नि को समाज संतुलन के रूप में चित्रित किया गया है। 'देव ऋत्विजम्' का तात्पर्य त्याग की भावना रखना है क्योंकि त्याग की भावना से ही निःस्वार्थ भावना जागृत होती है जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहता है।

अथर्ववेद में सभी प्राणी पृथ्वी के पुत्र के समान बताए गए हैं।[9] सभी को उपदेश किया गया है कि यह भूमि ईश्वर का रूप है तथा पर्यावरण की रक्षा ही पूजा का एक अविभाज्य अंग होना चाहिए। अथर्ववेद के 10वें काण्ड के एक मन्त्र में कहा गया है कि भूमि जिसके चरण हैं और अंतरिक्ष उदर के समान है तथा द्युलोक जिसका मस्तक है, हम उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार करते हैं।[10] नाना प्रकार के फल, औषधियां, फसलें, अनाज, पेड़-पौधे, सब इसी भूमि पर उत्पन्न होते हैं। अतः पृथ्वी को हमें माता के समान आदर देना चाहिए। इसी भावना को पुष्ट करते हुए अथर्ववेदीय भूमि सूक्त में उल्लिखित है कि जो पृथ्वी समस्त विश्व को एवम् अनेकानेक रत्नों एवं वैश्वानर अग्नि को धारण करती है, हम उसे प्रणाम करते हैं।[11]

जल जीवन का प्रमुख तत्त्व है इसलिए वेदों में अनेक संदर्भों में इस बात पर प्रकाश डाला गया है। प्राण और कांति, बल और पौरुष देने वाला अमरता की ओर ले जाना वाला मूल तत्त्व जल को ही माना गया है। यथा अथर्ववेद के एक मन्त्र में उल्लिखित है कि निश्चित रूप से जल हमारे लिए कल्याणकारी है। वह घृत प्रदायक है। अग्नि और सोम उसे पुष्ट करते हैं। ऐसा वह कल्याणकारी जल हमें प्राप्त हो।[12] अथर्ववेद की एक अन्य ऋचा में कहा गया है कि जल से ही देखने, सुनने, एवं बोलने की शक्ति प्राप्त होती है। अर्थात् शुद्ध जल के सेवन से प्राणियों का बल, तेज, दृष्टि और श्रवण शक्तियां बढ़ती हैं।[13]

मुण्डकोपनिषद् के अनुसार मानव की उत्पत्ति ही प्रकृति से हुई है। इसमें समस्त ब्रह्मांड को विराट पुरुष का शरीर कहा गया है। उस विराट पुरुष से अग्नि की उत्पत्ति, अग्नि से सूर्य की उत्पत्ति, सूर्य से सोम की उत्पत्ति, सोम से पर्जन्य (वर्षा) की उत्पत्ति तथा पर्जन्य से ही औषधियाँ/वनस्पतियों की उत्पत्ति हुई है और इस औषधि के आहूतियों से पुरुष के शरीर में अग्नि अर्थात वीर्य उत्पन्न होता है, जिससे प्रजा अर्थात सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।[14]

वैदिक ऋषियों ने अनेक स्थलों पर जल, वायु और औषधियों के संरक्षण पर बल दिया है। यथा, अथर्ववेद के एक मन्त्र में उल्लेख है कि तीनों वेदों का वर्णन अर्थात् ज्ञान का उपयोग परमात्मा को लक्ष्य में रखकर करो क्योंकि जिस प्रकार जल, वायु और औषधियाँ भूलोक में उत्पन्न होती हैं और भूलोक को ही समर्पित होती हैं, (अर्थात् इनके संरक्षण से ही पृथ्वी का संरक्षण होता है) उसी प्रकार वेद उस परमात्मा से उत्पन्न होते हैं। इस वेद मन्त्र में गौण रूप से निश्चय ही वायु, जल आदि के संरक्षण की बात कही गई है। पुनः ऋग्वेद में उल्लिखित है कि जैव मण्डल का सम्मान किया जाना चाहिए।

अग्नि —> सूर्य —> सोम —> पर्जन्य —> औषधि —> वीर्य

वैदिक ऋषियों ने अनेक स्थलों पर जल, वायु और औषधियों के संरक्षण पर बल दिया है। यथा अथर्ववेद के एक मन्त्र में उल्लेख है कि तीनों वेदों का वर्णन अर्थात् ज्ञान का उपयोग परमात्मा को लक्ष्य में रखकर करो क्योंकि जिस प्रकार जल, वायु और औषधियाँ भूलोक में उत्पन्न होती हैं और भूलोक को ही समर्पित होती हैं, (अर्थात् इनके संरक्षण से ही पृथ्वी का संरक्षण होता है) उसी प्रकार वेद उस परमात्मा से उत्पन्न होते हैं।[15] इस वेद मन्त्र में गौण रूप से निश्चय ही वायु, जल आदि के संरक्षण की बात कही गई है। पुनः ऋग्वेद में उल्लिखित है कि जैव मण्डल का सम्मान किया जाना चाहिए।

पर्वत, जल, वायु, वर्षा, अग्नि को पर्यावरण शुद्ध करने वाले तत्त्वों के रूप में परिगणित किया गया है। ये प्रदूषण (विकार) को नष्ट कर पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। इसकी पुष्टि अथर्ववेद के निम्नलिखित मन्त्र में की गई है–

अथर्ववेद में सभी प्राणी पृथ्वी के पुत्र के समान बताए गए हैं। सभी को उपदेश किया गया है कि यह भूमि ईश्वर का रूप है तथा पर्यावरण की रक्षा पूजा का एक अविभाज्य अंग होना चाहिए। अथर्ववेद के 10वें काण्ड के एक मन्त्र में कहा गया है कि भूमि जिसके चरण हैं और अंतरिक्ष उदर के समान है तथा द्युलोक जिसका मस्तक है, हम उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार करते हैं। नाना प्रकार के फल, औषधियां, फसलें, अनाज, पेड़-पौधे, सब इसी भूमि पर उत्पन्न होते हैं। अत: पृथ्वी को हमें माता के समान आदर देना चाहिए।

ये पर्वताः सोमपृष्ठा आपः।
वातः पर्जन्य आदग्निस्ते
क्रव्यादमशीशमन्।। (अथर्ववेद 3.21.10)

अथर्ववेद में ही वायु के दो गुण बताये गए हैं। प्रथम प्राणवायु के द्वारा मनुष्य में जीवन शक्ति का संचार करना और द्वितीय अपान वायु के द्वारा सभी दोषों को शरीर से बाहर करना।[16] इस लिए वायु को विश्व भेषज कहा गया है । क्योंकि यह सभी रोगों और दोषों को नष्ट करती है।[17]

जल शोधन की विशेष प्रक्रिया का संकेत वेदों में प्राप्त होता है। नदियों आदि के जल को प्रदूषण रहित करने के विशिष्ट उपायों का वर्णन है। ऋग्वेद में बताया गया है कि सूर्य की किरणें जितना जल छिन्न-भिन्न अर्थात् कण-कण कर वायु के संयोग से खैंचती हैं, उतना ही वहाँ से निवृत्त होकर भूमि और ओषधियों को प्राप्त होता है। विद्वान् लोगों को वह जल, पान, स्नान और शिल्पकार्य आदि में संयुक्त कर नाना प्रकार के सुख सम्पादन करने चाहिये।[18] यजुर्वेद के अनुसार जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं, वे अग्नि के निमित्त से अतिसूक्ष्म परमाणुरूप होकर वायु के बीच रहा करते हैं और कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं, परन्तु जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और वृष्टि, जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है, वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती इससे विद्वानों को चाहिये कि होमक्रिया से शुद्ध किये वायु, अग्नि, जल आदि पदार्थ वा शिल्पविद्या से अच्छी-अच्छी सवारी बना के अनेक प्रकार के लाभ उठावें अर्थात् अपनी मनोकामना सिद्ध करके औरों की भी कामनासिद्धि करें। जो जल इस पृथिवी से अन्तरिक्ष को चढ़कर, वहां से लौटकर, फिर पृथिवी आदि पदार्थों को प्राप्त होते हैं, वे प्रथम और जो मेघ में रहने वाले हैं, वे दूसरे कहाते हैं। ऐसी शतपथ-ब्राह्मण में मेघ का वृत्र तथा सूर्य्य का इन्द्र नाम से वर्णन करके युद्धरूप कथा के प्रकाश से मेघविद्या दिखलाई है।[19]

वृक्ष और वनस्पति सम्पूर्ण संसार को प्राणवायु (ऑक्सीजन) रूपी दूध पिलाते हैं, अतः उनको माता कहा गया है।[20] ओषधियाँ 'ओष' अर्थात दोषों एवं प्रदूषण को समाप्त करती हैं इसलिए इन्हें ओषधि कहा जाता है।[21] पुनः शतपथब्राह्मण में वृक्ष वनस्पति (ओषधि) को पशुपति अर्थात शिव का रूप माना गया है। जिस प्रकार भगवान शिव विष को पीते हैं और अमृत प्रदान करते हैं उसी प्रकार वृक्ष कार्बनडाई ऑक्साइड रूपी विष को पीते हैं और ऑक्सीजन रूपी अमृत (प्राणवायु) प्रदान करते हैं।[22] मत्स्यपुराण में वृक्षों के संरक्षण का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए उन्हें दस पुत्रों के तुल्य बताया गया है।[23]

वैदिक ऋषियों का यह भी मानना था कि सूर्य से हमें आरोग्यादि की प्राप्ति होती है, जिसे आज आधुनिक विज्ञान ने भी प्रमाणित किया है। अतएव शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा एवं मानसिक शांति के लिए सूर्य (जो कि एक प्राकृतिक उपादान है) की उपासना पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में यहाँ श्वेताश्वतर उपनिषद् का भी एक मन्त्र दर्शनीय है जिसका भाव है कि जो ईश्वर अग्नि में है, जल में है, जो समस्त लोकों में अंतर्यामी रूप से प्रविष्ट हो रहा है, जो औषधियों में है और जो वनस्पतियों में है, उसको नमस्कार है।[24] इस प्रकार से इन्हें ईश्वरभाव से देखने की बात दृष्टिगोचर होती है। यही एकात्मता का तथा ऐश्वर्य का भाव पर्यावरण से मनुष्य को जोड़ता है।

अत: कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति का शोषण पूर्वक विकास नहीं बल्कि **"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः"** त्याग पूर्वक भोग करने का उपदेश किया गया है। यही त्याग पूर्वक भोग ही प्रकृति की पूजा है, जिसमें किसी प्राणी की हिंसा नहीं अपितु समर्पण होता है। वैदिक ज्ञान परंपरा मानव और पर्यावरण को जुड़े रहने की बात ही करती है। मानव को पर्यावरण के प्रति चिन्तनशील रहने का निर्देश देती है। पुनश्च, व्यक्ति दैनंदिन की व्यस्तता में त्याग पूर्वक भोग के अनुपालन को भूल सकता है अत: पर्व के रूप में उस दिन विशेष को वह पुन: स्मरण कराती है। भारतीय पर्व मनाने की यह परंपरा यह सन्देश देती है कि अपने परिश्रम के उपरांत प्राप्त फल के लिए कृतज्ञता तथा त्याग करते हुए प्रसन्न हो कर मिल बाँट कर खाना चाहिए। प्रकृति से मिलने वाले ऐश्वर्य का स्वयं भोग करने से पहले वह प्रकृति को ही दे, जिससे पर्यावरण में संतुलन

बना रहता है। प्रकृति को देने का सबसे अधिक वैज्ञानिक स्रोत अग्नि ही है। अत: इस समर्पण और प्रसन्नता का ही प्रयोगात्मक रूप यज्ञ है। यज्ञ का अभिप्राय है प्रकृति से प्राप्त धन धान्य की सर्वोत्तम हवि को अग्नि को समर्पित करना, क्योंकि अग्नि ही इस सृष्टि का वह तत्व जो उसमें डली हुई प्रत्येक वस्तु को सूक्ष्म करके प्रकृति के अन्य प्रत्येक पदार्थ तक पहुंचा देती है।[25] उदाहरण के लिए होली वासन्तीय नवसस्येष्टि है (नव= नई, सस्य= फसल, इष्टि= यज्ञ) अर्थात् नई फसल के आगमन पर किया जाने वाला यज्ञ है। जन सामान्य के उत्सव और त्याग के प्रतिक इन पर्वो का मानव और पर्यावरण के बीच आपसी सम्बन्ध ही था जो एक दूसरे को आपस में जोड़ता है। ऋग्वेद में भी भैतिक उन्नति के बाद त्याग पूर्वक आनन्द उत्सव को मनाने के संकेत उपलब्ध होते हैं, जिसकी पुष्टि निम्न मन्त्र से होती है-

ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः।

संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मंडूकाः प्रावृषीणं बभूव।। (ऋग्वेद 7/103/7)

प्रस्तुत मन्त्र में उत्सव के आनन्द की तुलना वर्षाकाल के समय मण्डूकों की प्रसन्नता से की गई है। यही कारण है कि वैदिक युग में भारत और सम्पूर्ण विश्व का 'सतत विकास' होता रहा। आज इसे ही 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' का नाम देकर विश्व के सभी देशों ने साधने का लक्ष्य बनाया है। इसके मूल में भी यही भावना है कि जगत् का समग्र विकास हो किन्तु इस विकास के क्रम में पर्यावरण को क्षति न हो, यह भी ध्यातव्य है।[26] निश्चित ही सदियों पहले विश्व ऐसी ही स्वर्णिम स्थिति में था जिसके प्रमाण स्वयं वेद हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।। (ईशोपनिषद् 1)
2. देवः दानात् वा दीपनात् वा द्योतनात् वा। द्युस्थानो भवति इति वा। (निरुक्त 7.15)
3. यत्ते भूमि विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मां ते मर्म विमृग्वरी या ते हृदयमर्पितम्।। (अथर्ववेद 12.1.35)
4. सूर्यो मे चक्षुर्वात: प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्। अस्तृतो नामाहमयमस्मि स आत्मानं निदधे द्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय।। (अथर्ववेद 5.9.7)
5. तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः। (तैत्तिरीयोपनिषद् 2.1)
6. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। (ऋग्वेद १०/९०/१२)
7. नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।। (ऋग्वेद १०/९०/१३)
8. स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।। (ऋग्वेद 1.1.9)
9. माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः। (अथर्ववेद 12.1.12)
10. यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्। दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्राह्मणे नमः।। (अथर्ववेद 10/7/32)
11. शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता। तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः।। (अथर्ववेद 12/1/26)
12. आपो भद्रा घृतमिदाप आसन्नग्नीषोमौ बिभ्रत्याप इत्ताः। तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत्।। (अथर्ववेद 3/13/5)
13. आदित्पश्याम्युत वा श्रृणोम्या मा घोषो गच्छति वांग मासाम् । मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः।। (अथर्ववेद 3/13/6)
14. तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात् पर्जन्य ओषधयः पृथिव्यां। पुमान् रेतः सिन्चति योषितायाम् बह्वीः प्रजाः पुरुषात् संप्रसूताः।। (मुण्डकोपनिषद् 2/1/5)
15. त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्। आपो वाता औषधयः तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि।। (अथर्ववेद 18.1.17)
16. द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः। दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः। (अथर्ववेद 4.13.2)
17. आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः। त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे।। (अथर्ववेद 4.13.3)
18. सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः। (ऋषि दयानन्द भाष्य, ऋग्वेद 1.23.18)
19. सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यः (ऋषि दयानन्द भाष्य, यजुर्वेद 1.12)
20. ओषधीरिति मातरः। (यजुर्वेद 12.78)
21. ओषं धयेति तत ओषधयः समभवन्। (शतपथब्राह्मण 2.2.4.5)
22. ओषधयो वै पशुपतिः। (शतपथब्राह्मण 6.1.3.12)
23. दश कूप समो वापी दशवापी समोहृदः। दशहृदः समः पुत्रो दश पुत्रो समो द्रुमः।। (मत्स्यपुराण)
24. यो देवो अग्नौ यो अप्सु यो विश्वं भुवनमाविवेश। यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमो नमः।। (श्वेताश्वतरोपनिषद् 2.17)
25. यजूंष्येनं नयन्तीति वा – निरुक्त 3/19
26. ब्रण्टलैण्ड रिपोर्ट, 1987, पृष्ठसंख्या- 37

• • •

*सहायक आचार्या, संस्कृत, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू दिल्ली

**प्रोफेसर, हिंदी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली

प्राचीन बाल्टिक धर्म रोमुवा और वसुधैव कुटुम्बकम्

– गाइले वनजाइने

इस लेख में, मैं लिथुआनियाई (अधिक मोटे तौर पर, बाल्ट्स) के पैतृक धार्मिक विश्व दृष्टिकोण और उनके प्राकृतिक परिवेश - प्रकृति, सामान्य रूप से दुनिया, और इसमें रहने वाले सभी लोगों और अन्य चेतन प्रजातियों के साथ उनके संबंध को प्रस्तुत कर रही हूं। वैदिलोस (पुजारियों) और रोमुवा (लिथुआनिया के पुराने बाल्टिक धार्मिक समुदाय "रोमुवा") के आध्यात्मिक नेताओं के ज्ञान पर भरोसा करते हुए, मैं विलिनस के केंद्र में एक पहाड़ी पर एक ऐतिहासिक स्थान पर पवित्र अग्नि जलाने के अपने व्यक्तिगत विचार और अनुभव भी साझा कर रही हूं, जहां लिथुआनियाई और विदेशी, जो यहां रहते हैं या बस देश का दौरा करते हैं, दोनों का हमेशा स्वागत रहता है।

हम सभी लिथुआनिया की राजधानी विलिनस के केंद्र में ऐतिहासिक गेडिमिनस टॉम्ब हिल पर वेदी पर जलाई गई पवित्र अग्नि के चारों ओर एक घेरे में खड़े होकर (क्योंकि ऐसा माना जाता है कि लिथुआनिया के ग्रैंड ड्यूक गेडिमिनस को यहीं दफनाया गया था), अनुष्ठान की शुरुआत निम्नलिखित स्तोत्र से करते है:

लिथुआनियाई विश्वदृष्टि में, परिवार किसी वंश या राष्ट्र की सबसे मौलिक जीवित इकाई है। यह परिवार के कारण ही है कि हमारी मूल संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज और लिथुआनियाई राष्ट्र सबसे चुनौतीपूर्ण समय में जीवित रहे। माँ, पिता, भाई, बहन, या परिवार के अन्य सदस्यों को संदर्भित करने वाले नाम एक परिवार के भीतर आवश्यक मानवीय गुणों और जिम्मेदारियों का वर्णन करते हैं। संपूर्ण लिथुआनियाई लोकगीत और सभी लोक गीत एकल या विस्तारित परिवारों के दायरे में बनाए गए थे। आकाश में भी सूर्य को माता या दादी के रूप में, चंद्रमा को पिता के रूप में और सितारों को बहनों के रूप में देखा जाता है। ये खगोलीय पिंड भी एक परिवार ही हैं।

Oi kalnas, kalnas, kalnelis aukščiausias.
Oi ant to kalno ąžuolas sotvėjo,
Po tuo ąžuolu ugnelė žibėjo.
Ugnelė žibėjo, mergelės kalbėjo:
Gabija ugnele, ugnele švenčiausia,
Tu man padėki darbelius nudirbti.
Gabija ugnele, ugnele švenčiausia,
Tu man padėki kelelį keliauti.
On a hill that's the highest
an oak tree stood,
and under the oak tree
a fire was glowing.
A fire was glowing,
as young maidens were talking:
Gabija, the Sacred Fire,
make our chores lighter.
Gabija, the Sacred Fire,
clear the roads for us.

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, यह उस विशेष स्थान की पूजा करने का हमारा तरीका है जहां हम इकट्ठा होते हैं - एक पहाड़ी जिस पर हम कई वर्षों से हर गुरुवार को गर्मी और सर्दी, बारिश और बर्फ दोनों में चढ़ते हैं, और साथ आकर लिथुआनियाई लोक भजन गाते हुए पवित्र अग्नि को प्रज्वलित करते है।

प्राचीन काल से, लोग ठंड के मौसम से लड़ने और खुद को गरम रखने हेतु और रोशनी को देखने के लिए आग के पास इकट्ठा होते रहे हैं। पुराने दिनों में, आग जंगली जानवरों से सुरक्षा के रूप में काम करती थी, और माना जाता था कि आग का घेरा खतरनाक मिथकीय काली छाया या छलावा से भी सुरक्षा प्रदान करता था। आज, अग्नि संस्कार की प्राचीन परंपराएँ मोमबत्तियों की प्रतीकात्मक लौ के रूप में बची हुई हैं, जिन्हें लोग मृतकों के स्मरणोत्सव सहित विभिन्न महत्वपूर्ण अवसरों पर जलाते हैं।

लिथुआनिया में, पवित्र अग्नि, लिथुआनियाई लोगों के पूर्वजों के पुराने धार्मिक पंथ से जुड़े अन्य स्थानों पर (टीलों और पवित्र पहाड़ों पर), मुख्य रूप से मोमबत्तियों के रूप में, हर्षोंल्लास से जलाई और देखभाल की जा रही है। इनमें से कुछ स्थानों पर, पुराने लिथुआनियाई धर्म के रखवाले और पवित्र अग्नि के संरक्षक बारी-बारी से इस अखंड लौ की देखभाल करते हैं: ज्यादातर मामलों में, एक ढकी हुई लंबे समय तक जलने वाली मोमबत्ती का उपयोग किया जाता है, जिसे बाद में सहमति से इस प्रकार बदला जाता है कि वही जलती हुई लौ स्थानांतरित हो जाए और कई वर्षों तक जलती रहे।

लिथुआनिया में एक अनोखी घटना वह शाश्वत अग्नि है जो समोगिटिया (या जेमेतिजा) में ऐतिहासिक सत्रिजा हिल पर लगभग तीस वर्षों से लगातार दिन-रात जलती रही है। यह पैतृक परंपरा फिर से शुरू हो गई है जो उस समय लिथुआनिया में ईसाई धर्म के आने के पश्चात् बाधित हो गई थी।

एक और घटना, जिसका मैंने लेख की शुरुआत में उल्लेख किया था जो अब और अधिक जोर-शोर से पूरे लिथुआनिया में प्रचलित हो गई है और वह परंपरा है - पैतृक बाल्टिक धर्म के रखवालों द्वारा पवित्र अग्नि को हर गुरुवार के दिन एक वेदी पर जलाना, जो कि प्राचीन लिथुआनियाई देवता पेरकुनास का दिन है। हालाँकि, शरद ऋतु और सर्दियों के महीनों के दौरान, यह आग आमतौर पर घर के अंदर रख ली जाती है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ इसे मोमबत्तियों के रूप में जलाया जाता है। लिथुआनिया की राजधानी विलिनस के केंद्र में गेडिमिनस टॉम्ब हिल की वेदी पर पवित्र अग्नि पूरे वर्ष हर गुरुवार शाम को जलाई जाती है। इस प्रकार, यह वह स्थान है जहां हम हमेशा उन सभी लोगों का स्वागत करते हैं जो एकीकृत आग की पवित्रता का अनुभव करना चाहते हैं, साम्य और दोस्ती पाना चाहते हैं, लिथुआनियाई लोक भजन गाते हैं, और पारिवारिक संस्कारों की व्यवस्था करते हैं। जैसा कि लिथुआनियाई दार्शनिक विदुनास ने लिखा है, "केवल अग्नि ही ज्ञान को आध्यात्मिकता की ओर मोड़ सकती है। यह अग्नि ही है जिसके द्वारा लिथुआनियाई लोगों का गंभीर स्वभाव, उनका संपूर्ण और परिष्कृत गुण, जिसकी अंतिम चमक में हम आज भी आनंद मना सकते हैं , का निर्माण हुआ। जीवन और चेतना की संपूर्णता हमेशा अग्नि के रूप में मानी गई है और मानी जाएगी। अग्नि जीवन और प्रकाश दोनों है। अग्नि को प्रज्वलित करना संसार और स्वयं जीवन को जन्म देना है।"

आग की लिथुआनियाई देवी को गैबिया कहा जाता है। अग्नि बाल्टिक संस्कारों का मुख्य पवित्र तत्व है। ऐसे संस्कारों और त्योहारों के दौरान, इसे औपचारिक रूप से प्रज्वलित किया जाता है और नमक से पोषित किया जाता है और यह मंत्र बोला जाता है: हे पवित्र गैबिया आपका पोषण हो , आपको आराम मिले। जलती हुई आग के पास एक कप ताजा पानी रखने की परंपरा है ताकि वह खुद को शुद्ध कर सके। यदि अग्नि दूषित हो तो भी उसे शुद्ध किया जाता है।

गैबिया न केवल अग्नि की पवित्र शक्तियों की देवी है, बल्कि वह घर के चूल्हे, परिवारों के कल्याण, रिश्तों के सामंजस्य और संसाधनों की संरक्षक भी है। साथ ही, वह ब्रह्मांड की अमर अग्नि की अभिव्यक्ति है जिसकी दिव्य शक्तियां न केवल जीवित लोगों को परिवारों, वंशावली, जनजातियों और राष्ट्रों में एक-दूसरे से बांधती हैं बल्कि हमें देवताओं और मृतकों की आत्माओं की शक्ति, हमारे पूर्वजों की बुद्धि और रचनात्मकता के संपर्क में भी रखती हैं।

प्रार्थना के लिए वेदी की अग्नि सबसे अच्छा माध्यम है। अग्नि के माध्यम से ही हमारी प्रार्थनाओं, इच्छाओं और अनुरोधों के शब्द देवताओं और हमारे पूर्वजों तक पहुंचते हैं। संस्कार के दौरान, प्राचीन लिथुआनियाई देवताओं (न केवल पवित्र अग्नि की देवी गैबिया, बल्कि पर्कुनास, प्रकृति की महत्वपूर्ण और रचनात्मक शक्तियों के दाता और जागृतकर्ता ,ज़ेमिना, धरती माता का अवतार जो जन्म देती है, विकास और परिपक्वता को सक्षम बनाती है , लाइमा, सर्वज्ञ देवी जो प्रत्येक व्यक्ति के भाग्य का निर्धारण करती है, और अन्य देवता) पूजनीय हैं।

Dega Ugnelė, tūta tūta,
Dega Gabija, tūta tūta,
Piliakalnely,
Aukštajam kalnely,
Po ąžuolėliu,
Gabija Ugnele,
Sukurta žibėki,
Užgobta gobėki,
Stiprinki mumi,
Sujunki mumi.
Protėvių vėlės,
Protėvių galios,
Stiprinki mumi,
Sujunki mumi.
Perkūne dievaiti,
Mes tavo sūneliai,
Laima lėmėjėle,
Mes tavo dukrelės
Žeme Žemynėle,
Mes tavo vaikeliai,
Saulele motule,
Mes tavo dukrelės,
Mėnuo tėveli,
Mes tavo sūneliai,
Dega Ugnelė,
Dega Gabija.
A Fire's burning, tootah tootah,
Gabija's burning, tootah tootah,
on a tall mound,
on the highest hill
under an oak tree.
Gabija, the Fire,
you were born to glow,
enkindled and worn,
strengthening us,
binding us.
Spirits of our forefathers,
unleash your powers,
strengthening us,
binding us.
We are sons of god Perkūnas,
daughters of fate weaver Laima,
children of Žemyna, the Earth,
daughters of Sun, the Mother,
sons of Moon, the Father.
A Fire's burning,
Gabija's burning.

(रोमुवा का एक अनुष्ठानिक भजन, जिसके कई संस्करण मौजूद हैं)

यह भजन प्रकृति के साथ लिथुआनियाई लोगों के रिश्ते को भी दर्शाता है, जिसे कई लिथुआनियाई लोक भजनों की तरह, परिवार के सदस्यों को दिए गए नामों द्वारा व्यक्त किया गया है: हम धरती माता की संतान हैं, भगवान पेरकुनास के पुत्र हैं, लाईमा के भाग्य बुनकर हैं, सूर्य माता की बेटियाँ... संपूर्ण विश्व को एक ही परिवार के रूप में देखा जाता है जिसके सभी सदस्य एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं।

लिथुआनियाई विश्वदृष्टि में, परिवार किसी वंश या राष्ट्र की सबसे मौलिक जीवित इकाई है। यह परिवार के कारण ही है कि हमारी मूल संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज और

सदभाव विभिन्न या यहां तक कि विरोधी ताकतों की परस्पर क्रिया से बनता है। अंधेरा और प्रकाश, आग और पानी, पुरुष और महिला, और अन्य जैसे द्विआधारी विरोध अच्छे और बुरे के बीच संबंध का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। ऐसे द्विआधारी विरोध स्थिर नहीं हैं क्योंकि वे न केवल परस्पर क्रिया करते हैं बल्कि बदलते भी हैं। मनुष्यों के संबंध में, कोई भी देवता या देवी पूरी तरह से अच्छा या स्थायी रूप से बुरा नहीं है। बुराई को सदभाव की अनुपस्थिति, इसे बनाने या बनाए रखने में असमर्थता के रूप में देखा जाता है।

लिथुआनियाई राष्ट्र सबसे चुनौतीपूर्ण समय में भी जीवित रहे। माँ, पिता, भाई, बहन, या परिवार के अन्य सदस्यों को प्रस्तुत करने वाले नाम एक परिवार के भीतर आवश्यक मानवीय गुणों और जिम्मेदारियों का वर्णन करते हैं। संपूर्ण लिथुआनियाई लोकगीत और सभी लोक गीत एकल या विस्तारित परिवारों के दायरे में बनाए गए थे। आकाश में भी सूर्य को माता या दादी के रूप में, चंद्रमा को पिता के रूप में और सितारों को बहनों के रूप में देखा जाता है। ये खगोलीय पिंड भी परिवार से सम्बंधित हैं।

हमारी संस्कृति में, सबसे महत्वपूर्ण नैतिक उपदेशों में से एक है अपनी माता, पिता और बड़ों का सम्मान करना। यहां तक कि लिथुआनिया के ग्रैंड ड्यूक गेडिमिनस के दिनों में भी , अपने बड़ों को अपने माता-पिता के रूप में, समान उम्र के लोगों को अपने भाइयों के रूप में और जो छोटे थे उन्हें अपने बेटों के रूप में संबोधित करने की प्रथा थी। गेडिमिनस ने अपने लिखित पत्रों में इन दृष्टिकोणों को व्यक्त किया।

लिथुआनिया में, अपने बड़ों का सम्मान करने की परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। उदाहरण के लिए, एक लिथुआनियाई

व्यक्ति की प्रार्थना इस प्रकार है: “क्या मैं अपने पिता और माता, और अपने बड़ों का सम्मान सकता हूँ; क्या मैं उनकी कब्रों की बर्बरता या अपवित्रता से रक्षा कर सकता हूँ; क्या मैं उनके विश्राम स्थलों में ओक (oak), जुनिपर (junipers), वर्मवुड (wormwood) और सिल्वरवीड (silverweed) लगा सकता हूँ। जो कोई भी अपने माता-पिता से प्यार और सम्मान नहीं करता है, उसे पृथ्वी पर बुढ़ापे में दुर्भाग्य का सामना करना पड़ेगा या वह बुढ़ापे तक जीवित नहीं रहेगा” (1938 में विल्किजा में रिकॉर्ड की गई “ए प्रेयर ऑफ ए लिथुआनियाई” पर आधारित)। किसी के बड़ों को उनकी मृत्यु के बाद भी सम्मानित किया जाना चाहिए। पुरानी लिथुआनियाई मान्यताओं के अनुसार, मानव आत्मा अमर है, इसलिए पुनर्जन्म व्यक्ति के सांसारिक जीवन की निरंतरता को दर्शाती है।

मृत्यु के बाद, मृत व्यक्ति एक अतिथि आत्मा के रूप में पूर्वजों के पथ पर यात्रा करता है। विलाप में निम्नलिखित शब्द शामिल हैं: “आत्मा के द्वार खोलो, आत्मा के द्वार खोलो; (...) हमें हमारे पीले हाथों से पकड़ो, हमें स्पिरिट बेंच पर बिठाओ"। परिवारों और वंशावली में जीवित और मृत दोनों शामिल होते हैं। परिवार के सदस्यों की विभिन्न पीढ़ियाँ अनंत काल में संवाद करती हैं क्योंकि पूर्वज जीवित लोगों को समर्थन और शक्ति प्रदान करते हैं। संस्कारों के दौरान जीवित और मृत भी एक साथ आते हैं। मृत्यु प्रकृति का एक चक्रीय परिवर्तन है। जब शरीर मर जाता है, तो आत्मा दूसरा रूप धारण करके आगे बढ़ती है, और मृत व्यक्ति अपने मृत रिश्तेदारों के साथ फिर से मिल जाता है। प्रसिद्ध लिथुआनियाई धार्मिक विद्वान गिंटारस बेरेसनेविसियस के शब्दों में, “लोग अपने मृत रिश्तेदारों से मिलने की उम्मीद करते हैं और उनके द्वारा उनका स्वागत किया जाता है। जीवित लोग मृत व्यक्ति को किसी भयानक अज्ञात स्थान पर नहीं, बल्कि एक सुदूर लेकिन प्रिय मातृभूमि में विदा करते हैं, जहाँ उसे कभी अकेलेपन का एहसास नहीं होगा। हम अपने पूर्वजों को लगातार याद करते हैं और उनका सम्मान करते हैं क्योंकि हम अपने अस्तित्व, भाषा और मातृभूमि के लिए उनके प्रति कृतज्ञता महसूस करते हैं। हम संस्कारों और स्मरणोत्सव के अन्य रूपों के माध्यम से अपने मृत रिश्तेदारों के साथ अपना संबंध बनाए रखते हैं।

रोमुवा के उच्च पुजारियों (वैदिलोस) द्वारा लिखे गए पुराने लिथुआनियाई धर्म के सिद्धांतों के अनुसार, प्रकृति और मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में सद्भाव की लगातार तलाश की जानी चाहिए - परिवार, जनजाति, समुदाय, राष्ट्र, रिश्ते में हमारे पूर्वजों, प्रकृति और संपूर्ण ब्रह्मांड के साथ। हमें यह भी याद दिलाया जाता है कि पूरी दुनिया जीवंत है, इसलिए जीवन का सम्मान और सराहना की जानी चाहिए। विकास एक सामंजस्यपूर्ण दुनिया का सार है, इसलिए दुनिया की जीवन शक्ति सद्भाव बनाए रखने पर निर्भर करती है। जीवित रहने की विशेषता न केवल जीव-जंतुओं और वनस्पतियों तक सिमित है बल्कि यह अधिक व्यापक रूप से - सूर्य, पानी, पेड़, पत्थर, आदि से भी जुड़ी है। संपूर्णता में जीवन पुराने बाल्टिक धर्म का मूल है।

जिस परिवार में अपने रीति-रिवाजों और मान्यताओं को बरकरार रखा जाता है और अपने पूर्वजों और जीवित रिश्तेदारों का सम्मान किया जाता है, वह शाश्वत और अमर होता है। एक व्यक्ति जो खुले दिल से मेहमानों का स्वागत करता है और उनमें से प्रत्येक को परिवार के सदस्यों की बहुमूल्य उपाधियों से संबोधित करता है, जो सभी का रिश्तेदारों, परिवार के रूप में स्वागत करता है, वह मजबूत है, प्रकृति के साथ सद्भाव में रहता है, और विविध और प्रचुर दुनिया की सराहना कर सकता है। सद्भावना पुराने बाल्टिक धर्म की नींव है। यह लोगों, उनके समुदायों (परिवारों) और उनके प्राकृतिक परिवेश के बीच सद्भाव है जो नैतिकता और सार्वभौमिक सद्भाव पैदा करता है। इस तरह के सामंजस्य को स्थिर या अपरिवर्तनीय के रूप में नहीं देखा जाता है, क्योंकि यह काफी हद तक मानवीय प्रयासों और विचारों पर निर्भर करता है। ऐसा सामंजस्य मानव जीवन का उद्देश्य नहीं है। यह जीवन को बनाए रखने और संरक्षित करने का एक साधन मात्र है। सद्भाव के लिए लिथुआनियाई शब्द डरना (Darna) हिंदू शब्द धर्म (दुनिया की सामाजिक व्यवस्था का सिद्धांत) से निकटता से संबंधित है।

प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाते हुए, हमारे पूर्वजों ने न केवल अपने दैनिक कार्यों के लिए बल्कि अपनी आत्माओं के लिए भी अग्नि के महत्व को समझा। पूजा स्थलों पर लगातार जलाई जाने वाली आग ने हमारे देश को एकजुट किया और इसकी भावना को मजबूत किया। अग्नि, देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ थी, हमारे घरों की संरक्षक थी, और प्रत्येक व्यक्ति में नैतिक अखंडता और सदाचार की रक्षक थी। गेडिमिनस टॉम्ब हिल पर हमारे अग्नि संस्कार में अन्य लिथुआनियाई शहरों और दूर-दराज के विदेशी देशों के मेहमान शामिल होते हैं। जो लोग अपने पूर्वजों की आस्था के साथ-साथ अन्य धर्मों और संस्कृतियों के प्रतिनिधियों के बारे में जानना चाहते हैं, वे यहां हमसे जुड़ते हैं।

सद्भाव विभिन्न या यहां तक कि विरोधी ताकतों की परस्पर क्रिया से बनता है। अंधेरा और प्रकाश, आग और पानी, पुरुष और महिला, और अन्य जैसे द्विआधारी विरोध अच्छे और बुरे के बीच संबंध का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। ऐसे द्विआधारी विरोध स्थिर नहीं हैं क्योंकि वे न केवल परस्पर क्रिया करते हैं बल्कि बदलते भी हैं। मनुष्यों के संबंध में, कोई भी देवता या देवी पूरी तरह से अच्छा या स्थायी रूप से बुरा नहीं है। बुराई को सद्भाव की अनुपस्थिति, इसे बनाने या बनाए रखने में असमर्थता के रूप में देखा जाता है। यह उन मामलों में सबसे अधिक स्पष्ट होता है जब लोग एक-दूसरे के विरुद्ध और प्राकृतिक व्यवस्था के विरुद्ध कार्य करते हैं। अच्छाई लोगों की सक्रिय भागीदारी के साथ, विभिन्न या यहां तक कि विरोधी ताकतों की बातचीत से पैदा होती है। इस प्रकार की अंतःक्रिया ब्रह्मांड के अस्तित्व का सार भी है।

मुख्य नैतिक उपदेश जीवन का सम्मान करना और उसकी रक्षा करना है, इसलिए किसी की हत्या न करने की आज्ञा दी गई है। चूंकि प्राकृतिक पर्यावरण को जीवंत माना जाता है, इसलिए इसकी सभी आवश्यक अभिव्यक्तियों का सम्मान किया जाता है। यही कारण है कि लिथुआनियाई लोग पृथ्वी, जल, अग्नि, सूर्य, चंद्रमा, पेड़, पक्षी, जानवर आदि का सम्मान करते हैं। प्राचीन काल से, जीवन का सम्मान करने के इन सिद्धांतों का उल्लंघन करने वाले कार्य को पाप माना जाता है। इसलिए, पानी (यानी, एक झरना), आग (यानी, एक चूल्हा) को प्रदूषित करना, भूमि को मारना या तबाह करना पाप है। रोमुवा के उच्च पुजारियों (वैदिलोस) द्वारा लिखे गए पुराने लिथुआनियाई धर्म के सिद्धांतों के अनुसार, प्रकृति और मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में सद्भाव की लगातार तलाश की जानी चाहिए - परिवार, जनजाति, समुदाय, राष्ट्र, रिश्ते में हमारे पूर्वजों, प्रकृति और संपूर्ण ब्रह्मांड के साथ। हमें यह भी याद दिलाया जाता है कि पूरी दुनिया जीवंत है, इसलिए जीवन का सम्मान और सराहना की जानी चाहिए। विकास एक सामंजस्यपूर्ण दुनिया का सार है, इसलिए दुनिया की जीवन शक्ति सद्भाव बनाए रखने पर निर्भर करती है। जीवित रहने की विशेषता न केवल जीव-जंतुओं और वनस्पतियों तक सिमित है बल्कि यह अधिक व्यापक रूप से - सूर्य, पानी, पेड़, पत्थर, आदि से भी जुड़ी है। संपूर्णता में जीवन पुराने बाल्टिक धर्म का मूल है।

रोमुवा का विश्वास दुनिया की सद्भाव बनाने और बनाए रखने में मदद करता है। विदुनास का प्रस्ताव है कि ''हम सद्भाव के बारे में केवल वहीं बात कर सकते हैं जहां प्रकृति की कई अलग-अलग शक्तियां काम कर रही हैं, सद्भाव तब मौजूद होता है जब ये ताकतें सुरुचिपूर्ण ढंग से बातचीत करती हैं और एक साझा उद्देश्य की दिशा में प्रयास करती हैं। फिर, लोग भी शक्तिशाली हैं। इस प्रकार, एक सामंजस्यपूर्ण व्यक्ति को यह निरंतर एहसास होता है कि वह अपने भीतर प्रकाश रखता है। न्यायपूर्ण होना सामंजस्यपूर्ण होना है। न्याय की यही भावना एक समुदाय पर भी लागू होती है।''

प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाते हुए, हमारे पूर्वजों ने न केवल अपने दैनिक कार्यों के लिए बल्कि अपनी आत्माओं के लिए भी अग्नि के महत्व को समझा। पूजा स्थलों पर लगातार जलाई जाने वाली अग्नि ने हमारे देश को एकजुट किया और इसकी भावना को मजबूत किया। अग्नि, देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ थी, हमारे घरों की संरक्षक थी, और प्रत्येक व्यक्ति में नैतिक अखंडता और सदाचार की रक्षक थी। गेडिमिनस टॉम्ब हिल पर हमारे अग्नि संस्कार में अन्य लिथुआनियाई शहरों और दूर-दराज के विदेशी देशों के मेहमान शामिल होते हैं। जो लोग अपने पूर्वजों की आस्था के साथ-साथ अन्य धर्मों और संस्कृतियों के प्रतिनिधियों के बारे में जानना चाहते हैं, वे यहां हमसे जुड़ते हैं। एक सदाचारी, अच्छी भावना वाला व्यक्ति किसी भी शुभचिंतक का परिवार के सदस्य के रूप में स्वागत करेगा, व्यक्तिगत मतभेदों को एक समुदाय की ताकत के रूप में मानेगा, और अपने स्वयं के मूल्यों को संरक्षित और बढ़ावा देते हुए विभिन्न विचारों का सम्मान करेगा।

एक व्यक्ति जो सद्भाव चाहता है और इसके विचार को बनाने और बनाए रखने के लिए समर्पित है, वह पूरी मानवता को एक एकीकृत परिवार के रूप में मानेगा, जो पवित्र अग्नि के चारों ओर एक घेरे में खड़ा है जो हम सभी को गर्म और शुद्ध करता है। ऐसे परिवार के सदस्य सांस्कृतिक, नस्लीय या धार्मिक मतभेदों की परवाह किए बिना शांति और दयालुता के साथ एक-दूसरे को गले लगाते हैं, प्रकृति (हमारी धरती माता) की रक्षा करते हैं, अपने पूर्वजों का सम्मान करते हैं और जीवन के सभी रूपों का पोषण करते हैं।

• • •

रोमुवा पंथ की प्रीस्टेस एवं रिसर्च स्कॉलर

बदलते विश्व में हिंदी की बढ़ती संभावनाएं

- कोमल

विश्व बदल रहा है। भाषा के परिदृश्य में नया विश्व क्या है ? अगर हम साधारण दृष्टिकोण से देखें तो इस शीर्षक के माध्यम से, इस विषय के माध्यम से हमें यह पता लगता है कि भाषाई स्तर पर विश्व की चेतना में क्या परिवर्तन हो रहा है ? वैश्विक चेतना के परिवर्तन की जब हम बात करेंगे तो महत्वपूर्ण बात यह होगी कि उसमें चार महत्वपूर्ण चीजें अंतर्निहित होती है।

1. पहली बात है कि भाषा संप्रेक्षण के स्तर पर कहां पहुंची है ?
2. दूसरी बात है कि भाषा उपयोग के स्तर पर कहां पहुंची है ?
3. और तीसरी बात है इसको उपयोग करने वाले लोग, प्रयोगकर्ताओं की संख्या की वृद्धि किस अनुपात में विश्व की अन्य भाषाओं के समकक्ष हो रही है ?
4. चौथी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस भूमंडलीकरण के युग में, बाजारवाद के इस प्रचंड वेग भरे युग में, डिजिटलाइजेशन के इस युग में जब सब चीजे विश्व में संकुचित होकर के एक स्थान पर इकट्ठी होती जा रही हैं, सूचनाओं का आदान-प्रदान बहुत ही सरल और सहज हो गया है तो ऐसी स्थिति में क्या हिंदी भाषा अपनी वैश्विकता को बाजार में सिद्ध करने में सक्षम हुई है ?अगर कोई भाषा अपनी को वैश्विकता को बाजार में सिद्ध करने में सक्षम होती है तो निश्चित रूप से वह भाषा वैश्विक होती है, नए विश्व की भाषा होती है।

इस भूमंडलीकरण के युग में, बाजारवाद के इस प्रचंड वेग भरे युग में, डिजिटलाइजेशन के इस युग में जब सब चीजे विश्व में संकुचित होकर के एक स्थान पर इकट्ठी होती जा रही हैं, सूचनाओं का आदान-प्रदान बहुत ही सरल और सहज हो गया है तो ऐसी स्थिति में क्या हिंदी भाषा अपनी वैश्विकता को बाजार में सिद्ध करने में सक्षम हुई है ?अगर कोई भाषा अपनी को वैश्विकता को बाजार में सिद्ध करने में सक्षम होती है तो निश्चित रूप से वह भाषा वैश्विक होती है, नए विश्व की भाषा होती है।

आज का वर्तमान युग यांत्रिक अधिक होता जा रहा है। मानवीय संवेदनाएं जैसे स्पर्श, बातचीत, आलिंगन, संबंध, भावनाएं सिमटती जा रही हैं। इन सब को देखते हुए हिंदी के द्वारा इन्हें पुनः जीवित करना, पुनः इन सबको सशक्त करना एक कठिन कार्य है ,परंतु असंभव नहीं। वर्तमान में हर जगह नई तकनीक का ही बोल बाला है एवं कुछ समय पहले तक केवल अंग्रेजी में ही सब प्रकार के तकनीकी कार्य होते थे। परंतु आज आधुनिकता के साथ - साथ हिंदी ने भी कोमलता और सौम्यता के साथ अपना स्थान लेना आरंभ कर दिया है। कंप्यूटर, मोबाइल फोन में भी हिंदी टाइपिंग, गूगल हिंदी आदि ऐप्स (Apps) प्रस्तुत है जो हिंदी को वर्तमान की भाषा बनाते हैं। वैश्वीकरण का पर्याय में कहे जाने वाले गूगल पर हिंदी उपस्थित है अर्थात वैश्वीकरण प्राप्त करने की ओर अग्रसर। आज हिंदी में भी लगभग सभी विषयों से सम्बंधित सामग्री साहित्य उपलब्ध है। यह वैश्वीकरण की ओर एक सशक्त और सार्थक कदम है।

हिंदी के वैश्विक संदर्भ का वस्तुपरक विश्लेषण कुछ आधारो पर किया जा सकता हैं। जब हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं और उसे विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं तब यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्वभाषा का स्वरूप विश्लेषण कर लें। संक्षेप में विश्वभाषा के निम्नलिखित लक्षण निर्मित किए जा सकते हैं:-

1. उस भाषा को बोलने-जानने तथा समझने वालो की संख्या अधिक हो और विश्व के अनेक देशों में बोलबाला हो।
2. उस भाषा में साहित्य-सृजन की प्रदीर्घ परंपरा हो और प्राय: सभी विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों। उस भाषा में सृजित कम-से-कम दो विधा का साहित्य विश्वस्तरीय हो।
3. उसकी शब्द-संपदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की बडी भाषाओं से विचार-विनिमय करते हुए एक -दूसरे को प्रेरित -प्रभावित करने में सक्षम हो।
4. उसकी शाब्दी एवं आर्थी संरचना तथा लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसका पठन-पाठन और लेखन सहज-संभाव्य हो। उसमें निरंतर परिष्कार और परिवर्तन की गुंजाइश हो।
5. उसमें ज्ञान-विज्ञान के अनुशासनों में वाङमय सृजित एवं प्रकाशित हो तथा नए विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता हो।
6. वह नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने-आपको पुरस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त हो।
7. वह अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भो, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक हो।
8. वह जनसंचार माध्यमों में बडे पैमाने पर देश-विदेश में प्रयुक्त हो रही हो।
9. उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में पहुँच रहा हो।
10. उसमें मानवीय और यांत्रिक अनुवाद की आधारभूत तथा विकसित सुविधा हो जिससे वह बहुभाषिक कम्प्यूटर की दुनिया में अपने समग्र सूचना स्रोत तथा प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) के साथ उपलब्ध हो।
11. उसमें उच्चकोटि की पारिभाषिक शब्दावली हो तथा वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम आविष्कृतियों को अभिव्यक्त करते हुए मनुष्य की बदलती जरूरतों एवं आकांक्षाओं को वाणी देने में समर्थ हो।
12. वह विश्व चेतना की संवाहिका हो। वह स्थानीय आग्रहों से मुक्त हो तथा विश्व दृष्टि सम्पन्न कृतिकारों की भाषा हो, जो विश्वस्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग जानते हों।

हम देखते हैं कि हिंदी में उपरोक्त सभी गुण विद्यमान हैं फिर आखिर हमें अपनी भाषा को लेकर के संगोष्ठी क्यों करनी पड़ती है ? हमारी संवैधानिक व्यवस्था किस स्तर पर है कि हम हमेशा अपनी भाषा को लेकर के कभी हिंदी दिवस, कभी विश्व हिंदी दिवस जैसे आयोजनों को करते रहते हैं ? दूसरी बात यह है कि हिंदी के विकास की जो संभावनाएं हैं उसके मूल में क्या है ? क्या उसके मूल में भारतीयता है ? क्या उसके मूल में राष्ट्रवाद है ? क्या उसके मूल में भारत की संचित सारगर्भित और सनातन संस्कृति है ? या फिर बाजार है ? तीसरी बात भाषा के विकास को लेकर के है कि हमारी वर्तनी की उपयोगिता कितनी सार्थक, सिद्ध और वैज्ञानिक है ? अगर हमारी वर्तनी जैसा हम बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं तो मैं यह समझती हूं कि दोबारा इसकी पुनरावृत्ति की, पृष्ठ प्रेक्षण की जरूरत ही नहीं है कि दुनिया की सबसे समृद्ध शब्दावली और व्याकरण सम्मत भाषा अगर कोई है तो हिंदी है।

मंदारिन विश्व की सबसे बड़ी भाषा के रूप में जानी जा रही है। चीन की भाषा है। यह भी आंकड़ों का खेल है। आंकड़ों के हिसाब से उसे विश्व की प्रथम भाषा बताई जाती है, बनाई जाती है लेकिन उपयोगकर्ता के अनुरूप अगर हम इसकी गणना करेंगे, इसकी संख्या के अनुरूप प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या को अगर हम कुल मिलाकर देखेंगे तो विश्व स्तर पर हिंदी प्रथम भाषा के रूप में है। मंदारिन के अंतर्निहित अन्य भाषाएं हैं, लगभग 300 अन्य भाषाएं हैं जबकि भारत की प्रथम अनुसूची में जिन 22 भाषाओं के बारे में कहा गया है उनकी ज्यादातर की लिपियां तो देवनागरी ही है फिर उनके संख्या को घटाकर के हिंदी के प्रयोग करने वालों की संख्या को क्यों बताया जाता है ?

नए विश्व की नई संभावनाएं हैं, नया विश्व है। रोज हम बदल रहे हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम' की परिकल्पना भारत ही नहीं पूरा विश्व मिलकर एक करने में जुटा है। सूचनाओं का आदान-प्रदान इतना सन्निकट हो गया है, इतना आसान हो गया है कि अमेरिका में घटने वाली घटना की सूचना छः सेकंड के बाद भारत में होती हैं। कुछ क्षणों में ही हम सूचित हो जाते हैं लेकिन सूचनाओं को जबसे हम ने जानकारी मानना, माध्यम मानना शुरू कर

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ-सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएँ। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराइयों तक महसूस करेंगे और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित होंगे। आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमाम निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें। क्योंकि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, यह अपने देश की संस्कृति की आत्मा भी होती हैं।

उपयोगकर्ता के अनुरूप अगर हम गणना करेंगे, इसकी संख्या के अनुरूप प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या को अगर हम कुल मिलाकर देखेंगे तो विश्व स्तर पर हिंदी प्रथम भाषा के रूप में है। मंदारिन के अंतर्निहित लगभग 300 अन्य भाषाएं हैं। दूसरी ओर, भारत की प्रथम अनुसूची में जिन 22 भाषाओं के बारे में कहा गया है उनकी ज्यादातर की लिपियां तो देवनागरी ही है फिर उनके संख्या को घटाकर के हिंदी के प्रयोग करने वालों की संख्या को क्यों बताया जाता है?

दिया है तभी से हम पिछड़ते जा रहे हैं इसलिए जरूरी है कि सूचनाओं के आदान-प्रदान के समय में, इस बलिष्ट बाजार के आगमन के समय में, प्रत्यावर्तन के इस समय में, संप्रेक्षण के इस समय में अपनी भाषा की गुणवत्ता, महत्ता और उपयोगिता को हम सब बचाए रखें तभी नए विश्व के साथ हिंदी चार कदम और आगे चलने में सफल होगी।

जब हम भाषा की बात वैश्विक स्तर पर करते हैं तो हमें उसमें दो चीजों का और ध्यान रखना चाहिए।

- एक तो बाजार है जो स्वयं में सिद्ध है। बाजार स्वयं में सिद्ध होता है। बाजार को सिद्ध करने की जरूरत नहीं होती और जो भाषा बाजार की भाषा हो जाती है, वह विश्व की भाषा होती है।
- दूसरी बात है कि शैक्षणिक दृष्टिकोण से भी हमे इसका आकलन करना पड़ेगा कि हिंदी का अध्ययन, अध्यापन किस स्तर पर विश्व के अन्य देशों में हो रहा है तभी नए विश्व के संभावनाओं के द्वार को टटोला जा सकता है, उसके चौखट पर जाकर उसको खटखटाया जा सकता है।

इसके अंतर्निहित कुछ और बिंदु भी है। एक बात है कि इसका सृजनात्मक पक्ष कैसा है ? वैश्विक स्तर पर हिंदी में लिखे जाने वाले साहित्य की स्थिति क्या है ? क्या हम स्पेनिश साहित्य के समकक्ष हैं ? क्या हम फ्रेंच के आस पास खड़े हैं ? क्या अंग्रेजी में सृजन करने वाले साहित्य के समकक्ष हमारी कुछ रचनाएं वैश्विक पटल पर चर्चा में है ? क्या हम रशियन भाषा में लिखे जाने वाले रचनाओं के समकक्ष है ? क्या हिंदी भाषा का मूल्यांकन इस स्तर पर भी नहीं होना चाहिए कि उसकी सृजनात्मकता विश्व की अन्य भाषाओं के समकक्ष कहां खड़ी है ? सुनने में कठोर लगेगा परंतु यथार्थ के धरातल पर जब तक हम चिंतन नहीं करेंगे तब तक हम अपनी भाषा के साथ न्याय नहीं करेंगे।

हौड़ मची है। हर चीज में हौड़ है। सृजन में हौड़ है। संस्कृति में हौड़ है। शिक्षा में हौड़ है। बाजार में हौड है लेकिन मैं क्षमा के साथ कहना चाहूंगी कि भाषा हौड़ से नहीं चलती। भाषा को चलाने के लिए, भाषा को बचाने के लिए धैर्य की जरूरत होती है और उस धैर्य से जो साहित्य, संस्कृति और भाषा उत्पन्न होती है वह वैश्विक होती है।

मैं आशान्वित हूं और गौरवान्वित भी हूं कि प्रयोग के स्तर पर हिंदी को अब पीछे नहीं धकेला जा सकता। हिंदी बहुत आगे आ चुकी है। बस हमें करना यह है कि इस भाषा के प्रति निष्ठा, इसकी उपयोगिता और अपने घरों में हम हिंदी को बचालें। नए विश्व की नई संभावनाओं का द्वार हमारे घरों से खुलता है वो किसी और देश से नहीं खुलता है।

निष्कर्षत:

यही कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हिंदी को अत्यधिक कार्य करना होगा। प्रवासी हिंदी साहित्य, हिंदी साहित्य एवं हम हिंदुस्तानियों को मिलकर हिंदी के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध होना होगा। जिस प्रकार विदेशों में हिंदी को सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है वैसे ही हिंदुस्तान में भी हिंदी को उतना ही सम्मान मिले।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ¬सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएँ। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराइयों तक महसूस करेंगे और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित होंगे। आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमाम निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें। क्योंकि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, यह अपने देश की संस्कृति की आत्मा भी होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी, अध्याय - 2, दिनेश प्रसाद सिंह, पृष्ठ संख्या - 46
2. भाषा और हिंदी का इतिहास, प्रो नरेश मिश्र, पृष्ठ संख्या - 436
3. हिंदी का प्रवासी साहित्य एक: सर्वेक्षण- डॉ कमल किशोर गोयनका
4. साहित्य में प्रवासी भारतीय :समाज के विविध पक्ष - सुषम बेदी
5. वतन से दूर --'अभिव्यक्ति' पत्रिका।
6. हिंदी भाषा और विकास - डॉ श्यामसुंदर दास
7. जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में दिसंबर 2016 में प्रकाशित लेख - 'हम प्रवासी'
8. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य: विमलेश कांति वर्मा
9. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में देवनागरी- श्री जीवन नायक
10. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी - प्रो सिद्धेश्वर प्रसाद
11. भारत की राजभाषा नीति - श्री कृष्ण कुमार श्रीवास्तव
12. भारत की राजभाषा नीति और उसका कार्यान्वयन - श्री देवेंद्र चरण ।
13. हिंदी का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य - श्री बच्चन प्रसाद सिंह

• • •

कवयित्री एवं लेखिका

कविता के अनुवाद की समस्याएँ

माइया एंजेलो की कविताओं के विशेष संदर्भ में

– प्रो.पूनम कुमारी

जाने-माने इतालवी लेखक, अनुवादक और प्राध्यापक 'उमबेर्तो एको ' ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Mouse of Rat?' में कहा है, कि 'अनुवाद मात्र दो भाषाओं के बीच आदान- प्रदान ही न होकर, दो संस्कृतियों, दो देशों की बीच आवागमन का एक मार्ग है।' उनका मानना है कि अनुवादक केवल भाषाविद् के नियमों में न बंधकर, एक सांस्कृतिक परिवेश में अनुवाद करे। यह सही है कि संस्कृति को नजरअंदाज करते ही अनुवाद का सारा सौन्दर्य जाता रहता है। साहित्य में तो संस्कृति और परिवेश को ध्यान में रखे बिना कोई अनुवाद हो ही नहीं सकता है।

"All translation seems to me simply an attempt to solve an unsolvable problem". माइया एंजेलो की कविताओं को पढ़ते और उन्हें पुन: काव्य रूप देते हुए बार-बार मुझे याद आती रहीं। लेकिन किसी भी देश के समाज,इतिहास, संस्कृति और साहित्य को जानने का जरिया अनुवाद ही तो बनता है। अनुवाद का होना अपरिहार्य है, इसके बिना कम नहीं चल सकता है। अब प्रश्न उठता है कि अनुवाद कैसा होना चाहिए ?

जाने -माने इतालवी लेखक, अनुवादक और प्राध्यापक 'उमबेर्तो एको ' ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Mouse of Rat?' में कहा है, कि — 'अनुवाद मात्र दो भाषाओं के बीच आदान- प्रदान ही न होकर, दो संस्कृतियों, दो देशों की बीच आवागमन का एक मार्ग है। उनका मानना है कि अनुवादक केवल भाषाविद् के नियमों में न बंधकर, एक सांस्कृतिक परिवेश में अनुवाद करे। यह सही है कि संस्कृति को नजरअंदाज करते ही अनुवाद का सारा सौन्दर्य जाता रहता है। साहित्य में तो संस्कृति और परिवेश को ध्यान में रखे बिना कोई अनुवाद हो ही नहीं सकता है। साहित्य में भी कविता के अनुवाद को लेकर प्रारंभ से ही विद्वानों में काफी विवाद रहा है और साहित्यकारों का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो मानता है कि कविता का सार्थक अनुवाद नहीं हो सकता अथवा नहीं होना चाहिए। अनुवाद कभी भी मूल का सा आनंद और प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकता। वस्तुत: ऐसी धारणाओं के पीछे वे सभी कारक हैं जो कविता के सफल अनुवाद में आड़े आते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कारकों की चर्चा हम नीचे कर रहे हैं –

कविता में लक्षणा और व्यंजना का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। अर्थात् कवि अपनी कविता में जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वे शब्द प्रायः अपने अभिधार्थ या सामान्य अर्थ अथवा कोशीय अर्थ के अतिरिक्त अपनी ध्वनि से कुछ और अर्थ भी देते हैं। अब लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त अनुवादित शब्द में ध्वनि और अर्थ का वैसा ही संयोजन ला पाना जैसा कि स्रोत भाषा में हुआ है असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। कहने का तात्पर्य है कि कविता का अनुवादक स्रोत भाषा के शब्दों का अभिधार्थ या कोशार्थ स्तर का ही अनुवाद कर पाता है।ध्वनि या वर्ण मैत्री आदि के स्तर का अनुवाद इसलिए भी मुश्किल हो जाता है कि हर भाषा में अर्थ और ध्वनि के वैसे ही संयोजन वाले शब्द (जैसा कि स्रोत भाषा में है) होते ही नही। उदाहरण के लिए किसी हिंदी कविता में प्रयुक्त 'बिजली' शब्द को ले सकते हैं। 'बिजली' शब्द में एक साथ स्फूर्ति, तेजी और तरलता की ध्वनि संप्रेषित होती है। अब अंग्रेजी अनुवाद में यदि बिजली के स्थान पर Thunder या Thunderbolt रखें तो इनमें कड़क ध्वनि संप्रेषित होगी और यदि lightning रखे तो चकाचौंध। पर ये शब्द बिजली से संप्रेषित होने वाली ध्वनि के पर्याय नहीं कहे जा सकते हैं, जबकि सामान्य भाषा में ये शब्द बिजली के पर्याय हैं।

हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थबिम्ब होता है, जो वहां के सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंध होता है। लक्ष्य भाषा का उसी का समानार्थी शब्द वैसा अर्थबिंब नहीं उभार सकता क्योंकि वह उस पृष्ठभूमि से संबंध नहीं होता है। उदाहरण के लिए रूसी कविता में प्रयुक्त जाड़ा शब्द का अरबी भाषा में अनुवाद किया जाए तो दोनों से संप्रेषित होने वाले भाव में भिन्नता आ जाएगी। इसी प्रकार भारत की गर्मी और फ्रांस की गर्मी एक नहीं हो सकती।

काव्य की भाषा प्रायः अलंकार प्रधान होती है, किंतु एक भाषा के अलंकारों को दूसरी भाषा में शब्दशः ला पाना अत्यंत कठिन है। कभी-कभी तो यह कार्य असंभव हो जाता है। शब्दालंकारों जैसे अनुप्रास आदि का अनुवाद कार्य अत्यंत कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए 'कनक-कनक ते सौ गुनी' दोहे का अनुवाद किसी अन्य भाषा में तब तक संभव नहीं हो सकता जब तक सोना तथा धतूरा दोनों का अर्थ रखने वाला कोई शब्द उस भाषा में हो। यही स्थिति–

" रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे मोती, मानुष, चून।"

दोहे की है। चमक, इज्जत, पानी तीन-तीन अर्थ वाले एक शब्द के बिना उक्त दोहे का अनुवाद नहीं हो सकेगा।

अर्थालंकार भी उपमानों की असमानता के कारण कभी-कभी अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करते हैं (जैसे 'वह उल्लू जैसा है' में उल्लू मूर्खता का प्रतीक है किंतु इसका अंग्रेजी अनुवाद करना हो, और उल्लू के स्थान पर owl रख दें तो काम नहीं चलेगा, क्योंकि अंग्रेजी में उल्लू 'बुद्धिमान' माना जाता है।)

कविता छंदबद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति होती है, अतः उसका अपना प्रभाव भी होता है और कविता के भाव से उसका सीधा संबंध भी होता है। लेकिन भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छंद हैं तो यूरोपीय भाषाओं में दूसरी तरह के फारसी आदि में तीसरी तरह के। ऐसी स्थिति में अनुवादक के सामने जटिल समस्या उत्पन्न हो जाती है। यदि वह लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छंद में अनुवाद करता है तो स्रोत भाषा के मूल शब्द का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा और यदि वह स्रोत सामग्री के छंद में ही अनुवाद करता है तो लक्ष्य भाषा में वह समुचित प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाएगा। क्योंकि स्रोत सामग्री का छंद स्रोत भाषा-भाषियों पर परंपरागत रूप में जो प्रभाव डालता आ रहा है, लक्ष्य भाषा-भाषी पर अनभ्यस्त होने के कारण वह प्रभाव नहीं डाल पाएगा। यहां दोनों ही स्थितियां अनुवादक के लिए विषम हैं। वह असमर्थ है। मूल छंद का जो प्रभाव मूल भाषा- भाषियों पर पड़ता है, अनुवादक किसी भी तरह लक्ष्य भाषा- भाषी पर वह प्रभाव नहीं डाल सकता।

कविता का अनुवाद प्राय कवि ही करते हैं और वह अनुवाद एक प्रकार से पुनर्रचना होता है। अनुवादक मूल काव्य को हृदयंगम करके पुनर्रचना करता है, इस पुनर्रचना में अनुवादक कवि का अपना व्यक्तित्व बड़ा प्रभावी होता है। इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कविता का अनुवाद मूल कविता का एक नया रूप होता है। कहानी, उपन्यास, नाटक, विज्ञान और वाणिज्य के अनुवाद में ऐसी बात नहीं होती, अतः इनमें किसी सामग्री का अनुवाद दो या चार अनुवादक अलग-अलग करें तो उनके अनुवादों में बहुत अधिक अंतर नहीं आएगा। परंतु एक ही कविता का अनुवाद अलग-अलग व्यक्ति करें तो अनुवादों में काफी अंतर आ जाएगा। उदाहरण के लिए 'उमर खय्याम' की रुबाई अपने कुछ अनुवादों के साथ यहां देखी जा सकती है–

'आमद सहरे निदा जे मयखान -ए -मा।
के रिंद खराबती व दिवान -ए -मा।
बरखेज़ कि पुरकुने पैमाना जे मय।
जां पेश कि पुरकुनंद पैमान -ए मा।'

(सुबह होते ही मदिरालय से आवाज आई कि रे पीने वाले व मेरे दीवाने! उठ और शराब से अपने प्याले को भर ले। कब्ल इसके कि हमारे शरीर की मिट्टी से बने प्याले भरे अर्थात् हम मर जाएं।)

वाम -कनक -कर ने उषा के
जब पहला प्रकाश डाला,
सुना स्वप्न में मैंने सहसा
गूंज उठी यों मधुशाला–
उठो , उठो वो मेरे बच्चों

कविता का अनुवाद प्रायः कवि ही करते हैं और वह अनुवाद एक प्रकार से पुर्नरचना होता है। अनुवादक मूल काव्य को हृदयंगम करके पुर्नरचना करता है, इस पुर्नरचना में अनुवादक कवि का अपना व्यक्तित्व बड़ा प्रभावी होता है। इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कविता का अनुवाद मूल कविता का एक नया रूप होता है। कहानी, उपन्यास, नाटक, विज्ञान और वाणिज्य के अनुवाद में ऐसी बात नहीं होती, अतः इनमें किसी सामग्री का अनुवाद दो या चार अनुवादक अलग-अलग करें तो उनके अनुवादों में बहुत अधिक अंतर नहीं आएगा। परंतु एक ही कविता का अनुवाद अलग-अलग व्यक्ति करें तो अनुवादों में काफी अंतर आ जाएगा।

पात्र भरो, ना विलंब करो
सूख न जावे जीवन -हाला,
रह जावे रीता प्याला।

—मैथिलीशरण गुप्त (रुबाइयत उमर खय्याम,2)

उषा ने ले अंगड़ाई हाथ
दिए जब नभ की ओर पसार
स्वप्न में मदिरालय के बीच
सुनी तब मैंने एक पुकार —
' उठो मेरे शिशुओं नादान,
बुझा लो पी -पी मदिरा भूख,
नहीं तो तन प्याली की शीघ्र
जाएगी जीवन मदिरा सूख।'

—बच्चन (खय्याम की मधुशाला,2)

खोल कर मदिरालय का द्वार
प्रातः ही कोई उठा पुकार
मुग्ध श्रवणों में मधु रव घोल,
जाग उन्मद मदिरा के छात्र!
ढुलक कर यौवन मधु अनमोल

शेष रह जाए नहीं मृदु मात्र,
ढाल जीवन मदिरा जी खोल
लबालब भर ले उर का पात्र।

— सुमित्रानंदन पंत(मधु ज्वाल,2)

पौ फटते ही मधुशाला में, गूंजा शब्द
निराला एक,
मधुबाला से हंस-हंस कर यों कहता था
मतवाला एक—
स्वांग बहुत है रात रही पर थोड़ी,
ढालो ढालो शीघ्र
जीवन ढल जाने के पहले, ढालो मधु का
प्याला एक।"

— रघुवंश लाल गुप्त(उमर खय्याम की रुबाइयां, 2)

उमर खय्याम की एक ही रुबाई का अलग-अलग कवियों द्वारा किए गए उक्त अनुवाद से स्पष्ट है कि हर कवि के व्यक्तित्व की छाया, उसका अपना प्रभाव अनुवाद पर पड़ा है। कहने का तात्पर्य है कि उपन्यास, कहानी, नाटक अथवा वैज्ञानिक-साहित्य, सूचना- साहित्य आदि अनुवादों की तुलना में कविता में अनुवादक का व्यक्तित्व मूल और अनुवाद के बीच में अधिक आ जाता है, अतः मूल और अनुवाद में अंतर पड़ जाता है।

कविता की शैली समाज प्रधान होती है। कविता कई रिक्त स्थान छोड़ती है जिसे पाठक अथवा आलोचक अपने तई भरते और समझते हैं। इस क्रम में कविता का अनुवादक मूल कविता में काफी कुछ नया जोड़ देता है। फिट्ज्जेराल्ड ने उमर खय्याम के अनुवाद में अपनी ओर से काफी जोड़ा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है– "अनुवादक को अपनी रुचि के अनुसार मूल को फिर से डालना चाहिए– भूसा भरे गीध की अपेक्षा मैं जीवित गौरैया चाहूंगा।" परंतु बहुत से अनुवादक जोड़ने के पक्ष में नहीं है, उनके अनुसार जोड़ना मूल रचना से अनुवाद को दूर ले जाना है।

ऊपर जिन कठिनाइयों का संकेत किया गया है वह मुख्यतया वहीं पाई जाती है जहां स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में बहुत अधिक अर्थात् सांस्कृतिक, भाषिक,पारिवारिक और कालिक अंतर हो। जहां ये अंतर कम होते हैं, वहां ये कठिनाइयां भी काफी कम हो जाती हैं।

बहरहाल , हमें यहाँ माइया एंजेलो के कविताओं और उसके अनुवाद में आई दिक्कतों पर बात करनी है। मैंने स्वयं माइया एंजेलो के काव्य संग्रह And StillI Rise, (यहाँ प्रकाशन का वर्ष, प्रकाशन कहाँ से है डालो) की प्रमुख कविताओं का भावानुवाद "फिर भी उठूंगी मैं" के नाम से किया है। मैंने भावानुवाद कहा है, कविता का अक्षरशः अनुवाद होता भी नहीं है। अंग्रेजी और हिंदी में भाषाई और सांस्कृतिक भिन्नता होते हुए भी मुझे इन कविताओं के अनुवाद में कोई भी परेशानी नहीं हुई – इसका मूल कारण माईया एन्जेलो की कविताओं में अंतर्निहित भाव है जो उनके स्त्री और दास होने की पीड़ा से निःसृत है।sisterhoodIs powerful की अवधारणा को भले ही अस्सी के दशक में वर्ग,वर्ण,रंग,धर्म और क्षेत्र के आधार पर स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव के कारण चुनौती दी गई हो लेकिन औरत की अपनी एक जाति है जो सदियों से शोषित,अपमानित और पीड़ित है तथा जो मनुष्य का दर्जा पाने के लिए संधर्षरत है। इस दृष्टि से माईया की आवाज में हर औरत को अपनी आवाज सुनाई देती है तथा इसी कारण सांस्कृतिक और भाषाई भिन्नता की अड़चनें दूर छिटक जाती हैं और बच जाति है एक स्त्री की पीड़ा ,संघर्ष, आकांक्षा और अभिलाष जिसे पाने के लिए वह अपनी हर साँस दांव पर लगाने को तैयार रहती हैI

And StillI Rise की कविताएँ हर स्त्री के जीवन के सच को बयाँ करती हैं। उदाहरण के लिए एक कविता है " woman work'' जिसका अनुवाद मैंने "काम -औरत का" के नाम से किया है – मुझे बच्चों को पालना है ? कपड़ों की मरम्मत करनी है / फर्श की सफाई करनी है / घर की सफाई करनी है / राशन खरीदना है/ सूर्य की रश्मियाँ नहला दो मुझे / मेघ बरसो मुझ पर /सूर्य .चाँद, तूफान ,पहाड़ , बर्फ, समंदर और लहरें /तुम सब ही तो मेरे अपने हो/जिसे मैं अपना कह सकती हूँ।इस कविता में हर स्त्री के जीवन का सच है , और उसकी अपनी आकांक्षा भी।"stillI rise" जिसका अनुवाद मैंने "तब भी मैं उठूंगी" शीर्षक से किया है। इस कविता में उन तमाम जीवन संघर्षों का उल्लेख है जिससे स्त्री को गुजरना पड़ता है लेकिन इसके साथ ही वह अदम्य साहस भी है जो हर स्त्री की थाती है , जिसने स्त्री के वजूद को अब तक बनाए रखा है। कुछ पंक्तियाँ हैं – मैं उठती हूँ /मैं काला सागर हूँ , हहराती , भहराती / नित नया तटबंध बनाती / अपने पीछे स्याह रातों और भयानक डर को पीछे छोड़- मैं उठती हूँ / मेरे साथ मेरे पूर्वजों के दर्द की थाती है / मैं अपने पूर्वज दासों का भविष्य हूँ , मैं उनकी खुशी हूँ / मैं उठूंगी / मैं उठूंगी / मैं उठूंगी। मुझे नहीं लगता कोई भी स्त्री चाहे वह किसी भी वर्ग, धर्मसमाज अथवा जाति की हो इन पंक्तियों से अपने को एकाकार न महसूस करती हो।इसी तरह की एक और कविता है – "पिंजरे की चिड़िया"। कुछ पंक्तियाँ हैं –पिंजरे की चिड़िया फुदकती है और टकराती है , पिंजरे की सलाखों से / नहीं पसार पाती अपने पंखों को / उसके पंख नियंत्रित होते हैं और पैर बंधे। इसलिए वह गाती है / पिंजरे की चिड़िया गाती है / डर से भरी है उसकी कलरव / उस डर में एक अदम्य इच्छाशक्ति है / आज़ाद चिड़िया ढूढ़ती है अपना एक अलग जहान / चिड़िया देती है उस जहान को एक नया नाम / लेकिन पिंजरे की चिड़िया के पास बस उसके सपने हैं / इसलिए वह गाती है रात-दिन। इस कविता के अनुवाद में कोई समस्या नहीं आई सिर्फ भाषा अलग है। वही स्त्री होने का दर्द, पीड़ा लेकिन इसके साथ अदम्य इच्छाशक्ति जो एक स्त्री को माइया एंजेलो बना देता है , हम और आप बना देता है।

माइया एंजेलो से जो लोग परिचित हैं

वे उनके वर्ग, समाज औरजीवन परिस्थितियों से भी वाकिफ होंगे। ऐसे में एक और कविता का जिक्र करना चाहूंगी "पम्परा"।इसकी कुछ पंक्तियाँ हैं – अब तक की परम्पराएँ नहीं जानती हमें / अपने को दूर रखा परम्पराओं ने – हमारी सोच,रहन-सहन ,इच्छा और आकांक्षाओं से / परम्पराएँ नहीं जानती कि – हम पूरे दिन झोंक देते हैं अपने पसीनें की बूंदें , फिर भी हँसते ,गाते नाचते हैं / दूसरे दिन वैसा ही करने के लिए / परम्पराएँ नहीं जानती कि- मेरा जीवन स्वर्ग नहीं है ,लेकिन मैं इसे नरक नहीं बनने देती / मैं काम करती हूँ और इतराती हूँ अपने कम पर / परम्पराएँ नहीं जानती कि – काले लोगों की भी एक परम्परा है – जो बनाने को आतुर है एक नई परंपरा।

इस कविता से कोई भी संवेदनशील व्यक्ति अभिभूत हो उठेगा। यदि उसने मजदूर सा जीवन न भी जिया हो न भी भोगा हो तो भी उसने उस जीवन को देखा तो होगा, महसूस तो किया होगा – इस कविता को समझने और आत्मसात करने के लिए यह पर्याप्त है।

माइया एंजेलो ने कई कविताएँ प्रेम पर लिखी हैं। प्रेम एक नैसर्गिक शाश्वत भाव है। सहज , सरल रूप में लिखी गई इन कविताओं का अनुवाद भी मुश्किल नहीं था – तुम्हारे कितने रहस्य छिपे हैं ,मेरे भीतर। मेरे बालों में – तुम्हारी अँगुलियों की थिरकन आज भी है , मेरी ठुड्डी पर आज भी तुम्हारी ही हंसी चिपकी है , मेरी सांसों में घुली है आज भी तुम्हारी सांसें। अब जब कि तुम नाराज हो , मैं तुम्हारे अहसास को आज भी छाती से लगाए हूँ। आज भी डूबी हूँ तुममें आकंठ।

दरअसल माइया की कविताएँ अलंकारिक सौन्दर्य या काव्य के प्रचलित प्रतिमानों के अनुसार काव्य-सौष्ठव के लिए नहीं जानी जाती हैं , वे जानी जाती हैं स्त्री जीवन के सच को बेबाकी से चित्रित करने के लिए। वैसे हिंदी के कबीर और मीरा की कविताओं की तरह इसमें काव्य सौन्दर्य कम नहीं है बल्कि औरों से ज्यादा है।

बहरहाल इन कविताओं के अनुवाद के दौरान एक बात मेरे लिए बिलकुल स्पष्ट थी कि भाव साम्य हो तो संस्कृति आड़े नहीं आती समाज और परिवेश आड़े नहीं आता। भाषा तो भाव को उजागर करने का एक माध्यम है। अनुभूति की समानता हो तो किसी भी भाषा से किसी भी अन्य भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। माइयाएंजेलो कीकविताओंको समर्पित मेरी कुछ पंक्तियाँ हैं –

माइया तुम कहीं नहीं गई,
यहीं हो-
जब भी रंगभेद के खिलाफ कोई आवाज
उठेगी,
उसमें एक मुखर आवाज तुम्हारी भी होगी।
जब भी एक स्त्री चल पड़ेगी एक नए रस्ते की
ओर,
उसे दिखाई देंगे तुम्हारे अमित पद चिन्ह।
तुमने सौंपी है औरतों को –
अपनी तक़दीर रचने की परम्परा।

इसीलिए यदि कविता का अनुवादक यदि अच्छा अनुवाद करना चाहता है तो उसे किसी कवि की उन्हीं कविताओं को लेना चाहिए जो उसकी अपनी रुचि और अनुभूति के अनुकूल हो, तभी वह मूल कविता के साथ न्याय कर पाएगा। क्योंकि कविता अनुभूति होती है और सच्ची अनुभूति अनूदित नहीं हो सकती, हां समान या उसके निकट की अवश्य हो सकती है। हिंदी में धर्मवीर भारती इसलिए कविता के सफल अनुवादक माने जाते हैं कि उन्होंने किसी कवि की उन्हीं कविताओं को अनुवाद के लिए चुना जो उनकी रुचि और प्रवृत्ति के अनुरूप थीं। मुझे भी माइया एंजेलो की कविताओं के अनुवाद में इसलिए परेशानी नहीं हुई कि ये कविताएँ एक स्त्री के जीवन के सच के ताने-बाने से बुनी गई हैं बिना किसी लागलपेट के।

स्त्री जीवन के सच को एक स्त्री से ज्यादा और कौन समझ सकता है। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि यदि माइया की कविताओं का अनुवाद कोई पुरुष करे (यदि किसी पुरुष ने उनकी कविताओं का किसी अन्य भाषा में

उपयोगकर्ता के अनुरूप अगर हम गणना करेंगे, इसकी संख्या के अनुरूप प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या को अगर हम कुल मिलाकर देखेंगे तो विश्व स्तर पर हिंदी प्रथम भाषा के रूप में है। मंदारिन के अंतर्निहित लगभग 300 अन्य भाषाएं हैं। दूसरी ओर, भारत की प्रथम अनुसूची में जिन 22 भाषाओं के बारे में कहा गया है उनकी ज्यादातर की लिपियां तो देवनागरी ही है फिर उनके संख्या को घटाकर के हिंदी के प्रयोग करने वालों की संख्या को क्यों बताया जाता है?

अनुवाद किया है तो इसका संज्ञान मुझे नहीं है) तो निश्चय ही उसे बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। वस्तुत: एक स्त्री के दुःख, दर्द, परेशानियाँ तो दिखती हैं पर उसके अन्दर की आग और अपने लभ्य को पाने की अंतिम साँस तक तड़प नहीं दिखती, पर किसी न किसी वाक्य या शब्द में वह होता अवश्य है जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। लेकिन यह देखना काफी रोचक होगा कि माइया एंजेलो की कविताओं का एक पुरुष द्वारा किया गया अनुवाद कैसा होगा?

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन है परंतु असंभव नहीं है।अनुवाद के माध्यम से ही हम दूसरी भाषाओं की कविताओं का रसास्वादन कर पाते हैं। विश्व में अब तक कई हजार कविताओं के अनुवाद हुए हैं, आज भी कविताओं के अनुवाद हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। ऐसी स्थिति में हम कैसे कह सकते हैं कि कविता का अनुवाद नहीं हो सकता। हां, यह आशय है कि कविताओं के बहुत कम ही अनुवाद मूल का पूरी तरह - भाव और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से - प्रतिनिधित्व करते हैं।

• • •

प्रोफेसर, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्राचीन चित्रांकन परम्परा में श्रीराम

- ललित शर्मा

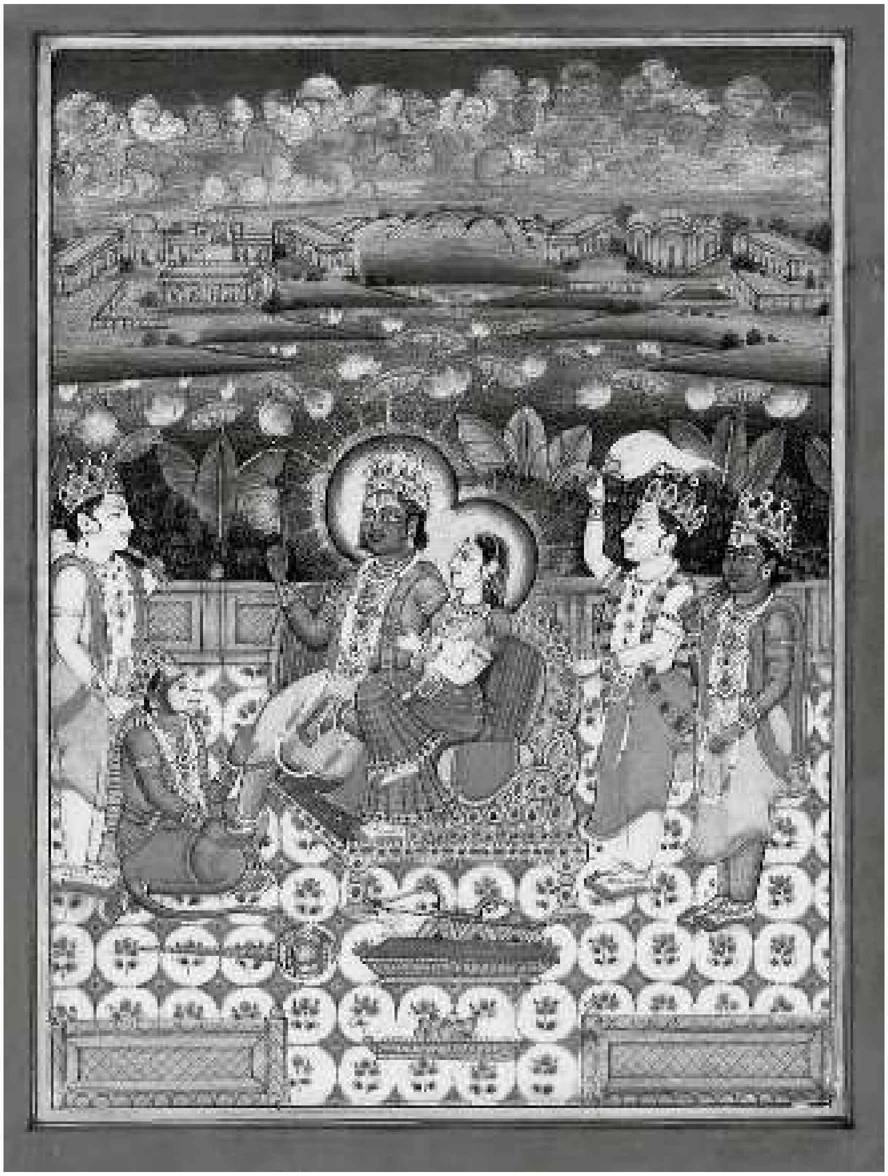

श्रीराम जीवन्त सत्य हैं। जिन्होंने पाषाण को अपने पांव के स्पर्श से मानवी रूप में परिवर्तित कर दिया हो, वे कैसे पत्थर के हो सकते हैं? इसलिये हमारी आस्था श्रीराम को सजीव स्वरूप में पूजती है। यही कारण है कि आज इस कोरोना काल में हर राम आराधक भले ही राम मन्दिर निर्माण का दैहिक रूप से साक्षी न बन पा रहा हो लेकिन आज हर उस भारतवासी का मन जो श्रीराम के समरसतापूर्ण लोक चरित्र की आराधना करता है वह मन सरयू का तट हो गया है और उसका मानस अयोध्या।

श्रीराम की इस कथा को वाल्मीकि ने सबसे पहिले शब्दों में गूंथा और फिर यह कथा महाभारत के द्रोण पर्व, अग्नि, गरुड़ और हरिवंश पुराण से लेकर कालिदास के रघुवंश और भवभूति के उत्तररामचरित और दक्षिण के कंबन तक अनेक रूपों में गाई जाती रही फिर तुलसी तक आते आते रामकथा की सरिता, सागर में बदल गई। तुलसी ने श्रीराम की विरलता को अविरल कर दिया।

आठवीं शताब्दी के भवभूति के उत्तररामचरित में एक सुन्दर प्रसंग चित्रांकन पर केन्द्रित है जब श्रीराम और सीता को लक्ष्मण अयोध्या में उन भित्तिचित्रों को देखने के लिए आमंत्रित करते हैं जिनमें उनकी स्वयं की कहानी को तूलिका से उकेरा गया है। इस प्रसंग का आरंभ चित्रों से ही होता है। ऋषि अष्टावक्र श्रीराम के पास आए हैं। वे बातें ही कर रहे हैं कि लक्ष्मण आ जाते हैं और श्रीराम से कहते हैं कि, ''उस चित्रकार ने हमारे बताए अनुसार आपके चरित् इस भीत के ऊपरी भाग में उरेहे हैं, उन्हें आर्य देखें।'' इस पर देवी सीता और श्रीराम उन चित्रों को देखने लगते हैं।

भारत में दसवीं शताब्दी से भोजपत्रों व ताड़पत्रों पर बनाए गए सचित्र ग्रंथ व चित्र मिलते हैं। ईस्वी सन् 1020 में ताड़पत्रों पर लिखित रामायण प्राप्त हुई है। रामायण की लोकप्रियता के कारण उसकी अनेक अनुकृतियाँ तैयार की गईं। अभी तक हुए शोधों के आधार पर ऐसी 2000 हस्तलिखित पोथियों का पता चला है तथा जहाँ तक सचित्र पोथियों का प्रश्न है वे समूचे भारत में मध्यकाल में चित्रित हुई हैं फिर वे चाहे राजस्थान की या पहाड़ की रियासतें हों अथवा दक्षिण भारत के सुदूर क्षेत्र के अंचल।

इनमें सीता की अग्निपरीक्षा तक की पूरी कथा अंकित है। पहले उन दिव्य अस्त्रों के सजीव चित्र हैं जो श्रीराम को ताड़का वध के लिए विश्वामित्र से प्राप्त हुए थे। श्रीराम उन्हें देखकर देवी सीता से उन्हें प्रणाम कराते हैं ताकि वे दिव्यास्त्र उनकी गर्भस्थ संतति को अनायास प्राप्त हो जाएं। फिर मिथिला के वृत्तांत हैं, जिन्हें देखकर मैथिली कहती हैं, ''अहो, यहाँ खिलते हुए नवनील कमल से साँवले, स्निग्ध, मसृण, मांसल, सुभग देह वाले आर्यपुत्र को बनाया है।'' उन्होंने शंकर के शरासन को कुछ न समझकर तोड़ डाला है और विस्मय-चकित मेरे पिता (जनक) एकटक उनके भोले मुँह को, जिसपर काक-पक्ष शोभित हैं, देख रहे हैं।' उन्हें चित्र दिखाते हुए लक्ष्मण कहते हैं, 'यह तो देखिए, आपके पिता तथा पुरोहित शतानंद, वसिष्ठ आदि समधियों की अर्चा कर रहे हैं।' राम कहते हैं, 'यह देखने ही योग्य हैं, विदेहों और रघुओं का संबंध, जहाँ दोनों ओर विश्वामित्र ही समधी हैं, किसे न रुचेगा।' देवी सीता विवाह के दृश्य को कहने लगती हैं, 'यह, आप चारों भाई गोदान-मंगल करके विवाह-दीक्षित हुए हैं। अहो, ऐसा लगता है कि मैं उसी स्थान और उसी समय में हूं।

श्रीराम को भी वैसा ही अनुभव होता है और वे सीता का ध्यान पाणिग्रहण के दृश्य की ओर आकृष्ट करते हैं। भवभूति ने इस स्थल पर सीता के हाथ का वर्णन बड़े सुंदर शब्दों में किया है। लक्ष्मण इन चित्रों के संबंध में और विवरण देते हैं। भरत की वधु मांडवी और शत्रुघ्न की वधू श्रुतकीर्ति के चित्र दिखाते हैं। इस विवरण के बाद प्रसंग का सर्वश्रेष्ठ अंश आता है। उर्मिला (लक्ष्मण-पत्नी) के चित्र को इंगित करके सीता लक्ष्मण से पूछती हैं, 'वत्स, और यह कौन है ?' लक्ष्मण लजा जाते हैं और मन-ही-मन मुसकराते हुए प्रसंग बदलने के लिए परशुराम कांड के चित्र दिखाने लगते हैं। इसी क्रम में वे लोग श्रीराम के किष्किंधा पहुंच जाने तक के चित्रों को देखते हैं और उनके हृदय के प्रसंगानुकूल भांति-भांति के भावों की क्रिया तथा प्रतिक्रिया होती है।

इस प्रसंग से यह स्पष्ट है कि निश्चय ही भित्ति चित्र रामायण के प्रसंगों के आधार पर बने होंगे, जिनका सजीव वर्णन भवभूति ने किया है, किंतु अब ये भित्तिचित्र या अन्य चित्र उपलब्ध नहीं हैं। हम श्रीराम के इन विभिन्न रूपों से परिचित हैं लेकिन श्रीराम के उस स्वरूप से हम बहुत कम परिचित हैं जो चित्रों में है विशेष रूप से मध्यकाल के विभिन्न शैलियों में बनाए गए लघुचित्रों में।

भारत में दसवीं शताब्दी से भोजपत्रों व ताड़पत्रों पर बनाए गए सचित्र ग्रंथ व चित्र मिलते हैं। ईस्वी सन् 1020 में ताड़पत्रों पर लिखित रामायण प्राप्त हुई है। रामायण की लोकप्रियता के कारण उसकी अनेक अनुकृतियाँ तैयार की गईं। अभी तक हुए शोधों के आधार पर ऐसी 2000 हस्तलिखित पोथियों का पता चला है तथा जहाँ तक सचित्र पोथियों का प्रश्न है वे समूचे भारत में मध्यकाल में चित्रित हुई हैं फिर वे चाहे राजस्थान की या पहाड़ की रियासतें हों अथवा दक्षिण भारत के सुदूर क्षेत्र के अंचल। मुस्लिम प्रभाव के कारण सल्तनत काल या पूर्व मुग़ल काल की शैलियों में रामायण के अंकन नहीं मिलते हैं।

लेकिन यहाँ चर्चा उन लघुचित्रों की है जो मध्यकाल में पूरे भारत की चित्रशैलियों में बनाए गए। सबसे पहिले अकबर ने रामायण का अनुवाद अब्दुल कादर बदायूनी से करवाया तथा इसे सचित्र बनवाया इसमें **136** चित्र थे तथा यह सन् 1588 में पूर्ण हुई। एक और सचित्र रामायण अब्दुल रहीम खानखाना ने सन् **1598-1599** में बनवाई। ये दोनों क्रमशः जयपुर पोथीखाने और फ्रीर गैलरी वाशिंगटन में हैं। मेवाड़ में राजा जगतसिंह के समय साहिबदीन नामक एक कुशल चितेरे ने रामायण के अनेक काण्ड सचित्र रूप से सन् **1649** से **1653** के बीच तैय्यार किये। मनोहर नामक चितेरे ने बालकाण्ड के चित्र बनाए। ये अंकन ब्रिटिश संग्रहालय लंदन तथा छत्रपति वास्तु संग्रहालय मुंबई (पूर्व का प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय) में संरक्षित हैं तथा ख्यात कला इतिहासकार जे.पी. लॉस्टी ने इन पर विस्तृत शोध की है। जे.पी. लॉस्टी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य मेवाड़ की उस सचित्र रामायण को प्रतिष्ठा दिलाने का था जो मेवाड़ के राजा जगतसिंह (**1628** से **1652)** के समय में उनके अप्रतिम कलाकार साहिबदीन और मनोहर तथा एक अनाम चितेरे ने बनाई थी।

वाल्मीकि रामायण की एक अनुकृति महात्मा हीरानंद ने की। इसमें रामायण के सातों कांड चित्रित किए गए। इनमें से क्रमशः 2, 4, 6 के सचित्र कांड महाराणा भीमसिंह (1778 से 1828) ने कर्नल जेम्स टॉड को भेंट कर दिए जिन्हें वे लंदन ले गए तथा जिन्हें उन्होंने ड्यूक ऑफ ससेक्स को भेंट किया और जो आज ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन में हैं। जो शेष तीन कांड भारत में रहे उनमें से एक अभी प्राच्य संस्थान जोधपुर में है और शेष छत्रपति शिवाजी महाराज संग्रहालय मुम्बई के (पूर्व प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय), एक व्यक्तिगत संग्रह और बड़ौदा संग्रहालय में हैं। महाराणा जगतसिंह के संरक्षण में रामायण के विभिन्न कांडों पर 400, चित्र तीन चित्रशालाओं में बने।

जेरी लॉस्टी ने रामायण के इन सभी अंकनों को सहेजा और इनका अध्ययन किया। उन्होंने मुझे बताया था कि वर्ष 1971 में जब वे ऑक्सफोर्ड से सीधे ब्रिटिश संग्रहालय आए तो एक युवक के रूप में उनमें भारतीय सचित्र ग्रंथों का अध्ययन करने की तीव्र जिज्ञासा थी। तब तक रामायण के ये खंड ब्रिटिश लाइब्रेरी में स्थानांतरित नहीं हुए थे। रामायण के इतने बड़े आकार के अंकनों को देखकर वे विस्मित हो गए। इन्हें अभी तक कहीं प्रदर्शित भी नहीं किया गया था। इन उपेक्षित से सचित्र ग्रंथों की उन्होंने सुध ली। इनके तमाम संदर्भ खोजे, शैलीगत मिलान किया, निरंतर भारत आकर इनकी कड़ियां जोड़ीं, कलाकारों के इतिहास को खोजा और सम्पूर्ण रामायण की प्रदर्शनी

वर्ष 2008 में लंदन में आयोजित की।

इस अवसर पर उनके इन अंकनों पर केंद्रित कृति इंग्लैंड और भारत दोनो देशों से एक साथ प्रकाशित हुई। इसी के साथ उनका एक अपनी तरह का इकलौता अभियान आरंभ हुआ और वह था इन चित्रों और इनके पाठ को एक साथ डिजिटल रूप में लाने का ताकि सामान्य पाठक और विशेषज्ञ दोनों पाठ के साथ इन चित्रों को देखकर रामायण की कथा और उसके मर्म से एकात्म हो सकें। उनका सपना साकार हुआ **21** मार्च **2014** को जब छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय मुंबई जिसे पूर्व में प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय के नाम से जाना जाता था तथा जमशेदजी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से लगभग एक सौ पचास वर्ष बाद हमारे देश की यह अनमोल धरोहर अपनी संपूर्णता में जगत के सामने आ सकी। इस अवसर पर आयोजित समारोह में संग्रहालय के निदेशक डॉक्टर सव्यसाची मुखर्जी सहित ब्रिटिश उप उच्चायुक्त तथा विशेष रूप से मेवाड़ के महाराणा अरविंदसिंहजी उपस्थित थे। आज इस संग्रहालय की वेब साइट पर जाकर एक क्लिक में हमारी इस महान विरासत को हम देख सकते हैं।

वाल्मीकि रामायण की एक अनुकृति महात्मा हीरानंद ने की। इसमें रामायण के सातों कांड चित्रित किए गए। इनमें से क्रमश: 2, 4, 6 के सचित्र कांड महाराणा भीमसिंह (1778 से 1828) ने कर्नल जेम्स टॉड को भेंट कर दिए जिन्हें वे लंदन ले गए तथा जिन्हें उन्होंने ड्यूक ऑफ ससेक्स को भेंट किया और जो आज ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन में हैं। जो शेष तीन कांड भारत में रहे उनमें से एक अभी प्राच्य संस्थान जोधपुर में है और शेष छत्रपति शिवाजी महाराज संग्रहालय मुम्बई के (पूर्व प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय), एक व्यक्तिगत संग्रह और बड़ौदा संग्रहालय में हैं। महाराणा जगतसिंह के संरक्षण में रामायण के विभिन्न कांडों पर 400, चित्र तीन चित्रशालाओं में बने।

रामायण के चित्रों पर ऐतिहासिक कार्य फ्रांस के राष्ट्रीय संग्रहालय म्यूजी गियूमे की प्रमुख डॉक्टर अमीना ताहा हुसैन ओकाडा ने किया है। उन्होंने निरन्तर **10** वर्षों तक पूरे विश्व में घूमकर सभी प्रमुख संग्रहालयों और व्यक्तिगत संग्रहों से रामायण के **10** हज़ार चित्रों में से **660** चित्रों को चुनकर **5** खण्डों में उन्हें फ्रैंच में प्रकाशित किया है।

मुगल शैली के बाद के काल में राजस्थान और हिमाचल प्रदेश तथा मालवा और बुन्देलखण्ड सहित पूरे भारत के विभिन्न अंचलों में रामकथा के प्रसंगों के शानदार रूपायन हुए। कांगड़ा, गुलेर, बाहु और बसोहली सहित पहाड़ की विभिन्न शैलियों में और जयपुर, कोटा, बूंदी तथा मेवाड़ सहित राजस्थान की अनेक रियासतों और ठिकाणों में रामकथा चित्रित की गई। पहाड़ की शांग्री रामायण के भावप्रवण अंकन जो विश्व में विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित है, हमारी विशिष्ट धरोहर हैं।

इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है 'औतारचरित'। इसका मूल नाम है अवतारचरित। यह ग्रंथ हाड़ौती के झालावाड़ अंचल का प्रतिनिधि सचित्र ग्रंथ है। इस ग्रंथ के रचयिता बारहठ नरहरदास हैं जिनका वास्तविक नाम नरहरिदास है। इस सचित्र ग्रंथ से तुलनीय कोई अन्य सचित्र ग्रंथ राजस्थानी शैलियों में शायद ही हो। अद्भुत रंग संयोजन, रेखाओं की लयात्मकता, आनुपातिक आकृतियाँ तथा अत्यन्त कौशल के साथ उरेही गई नैसर्गिक दृष्यावलियाँ इस ग्रंथ की विशेषता हैं। राजस्थानी शैलियों में निर्मित किए गए सचित्र ग्रंथों में यह ऐसा इकलौता सचित्र ग्रंथ प्रतीत होता है जो परवर्तीकाल में अर्थात 19वीं सदी में तैयार किया गया और जिसमें कलम की इतनी बारीकी है अन्यथा 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा 19वीं सदी में कलम स्थूल होने लगती है, रंग बिखरने लगते हैं तथा ब्रिटिश प्रभाव के कारण स्थानीयता विलुप्त होने लगती है। संभवतः यह एकमात्र ऐसा सचित्र ग्रंथ है जिसमें रामचरितमानस के प्रसंगों को चित्रित किया गया है तथा चितेरे ने अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए भी चित्र बनाए हैं।

औतारचरित पांच भागों में सजिल्द रूप में राजकीय संग्रहालय झालावाड़ में संग्रहीत है। इन पांच भागों में दो भाग सचित्र हैं। ग्रंथ के प्रथम दृष्टयावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ अपूर्ण है। केवल दो जिल्द सचित्र हैं। पहली जिल्द जो पृष्ठ क्रमांक 1 से 133 तक है उसमें 132 चित्र हैं तथा दूसरी जिल्द में 157 पूर्ण चित्र व 34 अपूर्ण चित्र हैं। पहली जिल्द में अवतारों का विवरण है।

औतारचरित के पहले अंकन में भगवान गणेश के सामने सरस्वती बिराजी हैं तथा उनके पीछे एक सेविका अपने हाथ में चंवर लिए खड़ी हैं। इस ग्रंथ में सर्वाधिक दृश्य नृसिंह अवतार पर केन्द्रित हैं। हिरण्यकश्यपु तथा प्रह्लाद की कथा को विस्तार से चित्रित किया गया है।

14वीं सदीं में दक्षिण भारत के विजयनगर राज्य की स्थापना के साथ ही वहाँ के वीरभद्र मंदिर लेपाक्षी तथा विठ्ठल मंदिर हम्पी में रामायण की प्रमुख घटनाओं का मण्डप की छत पर चित्रांकन किया गया था। 16वीं सदीं में सम्राट अकबर के नवरत्न टोडरमल ने 75 हजार श्लोकों वाले 'टोडरनन्द' काव्य ग्रन्थ का 23 जिल्द में प्रथम बार सम्पादन करवाया था। इस ग्रन्थ में उन्होंने 'रामावतार' का सचित्र वर्णन किया है। इसी समय अकबर के एक और नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना ने सम्राट के आदेश पर वाल्मीकि रामायण का संस्कृत से फारसी में अनुवाद और श्रीराम के जीवन की प्रमुख घटनाओं को आकर्षक रूप में मुगल शैली में चित्रांकित किया था।

ग्रंथ के अंत में निम्नानुसार पुष्पिका है।

।। इतिश्री वेदव्यास अवतार चरित्रंबारहठनरहरदाससेन विरचितं संपूर्ण।।

।। 5000।। दोहा।। 16।। छंद 44।। कवित्त।। श्री।।

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है औतारचरित का यह प्रथम खण्ड दषावतारों से जुड़ी हुई कथाओं पर केन्द्रित है।

ग्रंथ का दूसरा सचित्र भाग पृष्ठ 134 से 325 तक है जिसमें रामकथा चित्रित की गई है। रामायण वाल्मीकि ने रची जिस पर केन्द्रित अंकन प्रायः सभी शैलियों में हुए हैं।

इस चित्रांकन की कथा के लिये बहुत विस्तार चाहिये। यह तो केवल छोटी सी झांकी है। यहाँ इन्हीं विभिन्न शैलियों में रचे गए लघुचित्रों की झांकी प्रस्तुत है।

जिन महान चितेरों ने श्रीराम को रचा उनकी आस्था और उनका विश्वास भी तुलसी की तरह अगाध और अटूट था। वे भी तुलसी की तरह चातक थे जो निरन्तर अपने मन की आंखों से अपने श्रीराम को निहारकर उन्हें और उनकी कथा को रचा करते थे।

14वीं सदीं में दक्षिण भारत के विजयनगर राज्य की स्थापना के साथ ही वहाँ के वीरभद्र मंदिर लेपाक्षी तथा विठ्ठल मंदिर हम्पी में रामायण की प्रमुख घटनाओं का मण्डप की छत पर चित्रांकन किया गया था। 16वीं सदीं में सम्राट अकबर के नवरत्न टोडरमल ने 75 हजार श्लोकों वाले 'टोडरनन्द' काव्य ग्रन्थ का 23 जिल्द में प्रथम बार सम्पादन करवाया था। इस ग्रन्थ में उन्होंने 'रामावतार' का सचित्र वर्णन किया है। इसी समय अकबर के एक और नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना ने सम्राट के आदेश पर वाल्मीकि रामायण का संस्कृत से फारसी में अनुवाद और श्रीराम के जीवन की प्रमुख घटनाओं को आकर्षक रूप में मुगल शैली में चित्रांकित किया था। इस चित्रांकन में भरत का वन में आगमन तथा श्रीराम से मिलन और अयोध्या चल कर राजपाट संभालने का अनुरोध किया गया है। मुगलकाल की यह चित्रांकन परम्परा कई मायनों में विशिष्ट है। इसमें भरत के सैनिक एवं सेवक मुगलकालीन वस्त्र पहने प्रदर्शित किये गये है जो विविध रंगों के है। इसमें पगड़ियों पर भी मुगल प्रभाव दर्शित है। कुछ व्यक्ति हाथी के महावतों के रूप में है। हाथियों का शृंगार व शारीरिक सौष्ठव उत्तम है। सैनिकों के हाथों में ढ़ाल, तलवार, खड़ग है तथा वे सभी सफेद रंग का पट्टा कमर में बांधे है। उनकी अंगरखी के विन्यास काफी आकर्षक है। सारे सैनिक सघन वन से धिरे क्षेत्र में दर्शाये है जिसके एक छोर पर चट्टानों के ऊपर स्वयं हिन्दू शाही वेश में मुकुटधारी भरत नील वर्णीय श्रीराम के समक्ष अयोध्या पधारने का निवेदन कर रहे है। भरत के पीछे बैठे एक अन्य विशिष्ट जन की मुद्रा भी अनुग्रह भाव की है। श्रीराम शान्त भाव से पीतवस्त्र पहने बैठे है। उनके हाथ में धनुष व पीठ पर तरकश बंधा हुआ हे। वे शान्त भाव से भरत के अनुग्रह को

स्वीकार न करने की विवशता को दर्शा रहे हे।

मुद्रा विशेषज्ञ डॉ. शशिकान्त भट्ट के निजी संग्रह में श्रीराम का एक ओर विशिष्ट चित्र मुगलकाल का है जिसमें श्रीराम और अंगद का मिलाप निहारते हुए भगवान ब्रह्मा, शिव, विष्णु और वायुदेव चित्रित है। इस दुर्लभ चित्र में आकाश में तीनो देवों एवं वायुदेव पद्मासन मुद्रा में एक दूसरे से राम अंगद मिलन को निहारने की वार्ता करते विराजे हुए है। इनमें ब्रह्मा तथा वायु को गौरवर्णीय ओपरना तथा धोती एवं माला पहने दर्शाया है, जबकि विष्णु को गहरे श्याम रंग व पीत वस्त्र में एवं शिव को आसमानी रंग से पीतवस्त्र धारण किये दर्शाया है। उनके गले में गहरे नीले रंग का सर्प भी दर्शाया गया है। इनके ठीक नीचे धरती पर एक घने वन में श्याम वर्णीय श्रीराम को राजसी मुकुट (जिस पर मध्य युगीन तीन पंखुड़ियाँ जड़ी है) पहने, ग्रीवा में मोतियों की लटकन वाली श्वेतमाला तथा हरे रंग का ओपरना व पीत वस्त्र की धोती पहने दर्शाया है। वे अपने दायें हाथ की अंगुली मुद्रा से समक्ष खडे वानरराज अंगद को आवश्यक नीति निर्देश देते हुए दर्शित है। उनके पीछे उन्हीं की भांति मुकुट पहने सेवक भाव से लक्ष्मण खड़े है। श्रीराम के समक्ष यूथपति मुकुटधारी जाम्बवन्त नील वर्णीय रूप में खड़े हुए हैं वे अपने दोनों हाथों की मुद्रा से श्रीराम को सलाह देते हुए दर्शित है। उनकी धोती, ओपरना भी दर्शनीय है। उनके पास ही श्वेत पगड़ी व श्वेत ओपरना पहने एक धोती धारित सेवक के हाथों में **2** तलवारें तथा लम्बा भाला है।

संभवतः यह दृश्य श्रीराम व जाम्बवन्त के मध्य वार्ता तथा दिशा एंव अस्त्र शस्त्र के उपयोग को लेकर दर्शाया गया है। श्रीराम, अंगद, लक्ष्मण तथा अन्य सेवक वानरों के शीश के मुकुट मध्य युगीन हिन्दू देवों के शीश पर उत्कीर्ण किये जाने वाले मुकुटों की भांति है। सभी की वेशभूषा भी पारम्परिक शुद्ध भारतीय है। उनके पीछे वीर वेश में ढ़ाल, तलवार थामें एक अन्य वानर सेवक भी खड़ा है। अंगद के समक्ष ही युद्ध के अस्त्रशस्त्र सिरटोप, भाला, वक्ष कवच, तलवार तथा कमर कटार भी रखी है जिन पर मध्ययुगीन अस्त्रों की शैली है। प्रतीत होता है सारे वानरपति श्रीराम के समक्ष अस्त्रशस्त्रों के संग्रहण की सूचना देने तथा इस दूत नीति पर मार्गदर्शन लेने आये है, जो अंगद के साथ है।

श्रीराम का एक अन्य विशिष्ट चित्र भी इसी काल का है जिसमें वे वन में स्वर्ण मृग का पीछा करते हुए ऊकेरे गए है। चित्र में वृक्ष-वनस्पति तथा पाषाण खण्डों को सुन्दरता से अंकित किया गया है। श्रीराम यहाँ मुकुट पहने ऊकेरे गये है। वे अपने हाथों से धनुष पर बाण चढ़ाये स्वर्णमृग पर संधान करने को तत्पर है। उनकी इस मृगया मुद्रा से भयभीत स्वर्णमृग वन में कुलाचें भरते हुए भाग रहा है। उसके सींग तथा शरीर पर स्वर्ण रंग व उन पर गोलाकार हरी-लाल एवं सफेद बिन्दिया व नीचे का श्वेत भाग एवं मुख अत्यन्त प्राणवान है।

एक अन्य विशिष्ट चित्र रामायण के पत्र से है। इसमें श्रीराम और परशुराम की भेंट है। राजस्थानी शैली का यह चित्र उदयपुर से प्राप्त हुआ है और वर्तमान में मुम्बई के छत्रपति शिवाजी वास्तु संग्रहालय की चित्रकला विथिका में क्रमांक 54.1/19 पर प्रदर्शित है। चित्रकार मनोहर द्वारा ऊकेरा यह चित्र ईस्वी सन् 1649 का है। यह पूरा चित्र 38 गुणा 2.5 सेमी लम्बा एवं 31.18 सेमी चौड़े पत्र पर है। इसे मेवाड़ महाराणा जगतसिंह के राज्याश्रय में बनाया गया था। यह मूलतः रामायण के बिखरे चित्रों में से एक है। इस कथाचित्र में परशुराम श्रीराम के विवाह की बारात को रोकते हुए है।

यदि इन तीनों विशिष्ट चित्रों का साम्य संत तुलसीदास कृत रामचरित मानस में वर्णित घटनाओं से बैठाया जाय तो इसमें प्रथम चित्र श्रीराम से वन से अयोध्या लौटने का विनय करते भरत का है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास अपने निम्न दोहे में यह घटना इस प्रकार रेखांकित करते है।

भरत सीलगुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।

प्रभू करि कृपा पाँवरी दीन्ही। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।

अर्थात् - 'इधर तो भरत जी का प्रेम और उधर गुरूजनों, मंत्रियों तथा समाज की उपस्थिति। यह देखकर श्रीराम (रघुराज) संकोच एवं प्रेम के वशीभूत (विवश) हो गये। अन्त में उनके प्रेमवश प्रभू श्रीराम ने कृपा करके उन्हें अपनी खड़ाऊ प्रदान की और भरतजी ने उन्हें सम्मान पूर्वक अपने सिर पर धारण किया।'

इसी प्रकार द्वितीय विशिष्ट चित्र श्रीराम जाम्बवन्त की वार्ता का तथा अंगद से श्रीराम की वार्ता निहारते भगवान ब्रह्मा, शिव, विष्णु एवं वायुदेव का है। संत तुलसीदास का इस बारे में रामचरित मानस का यह दोहा सटीक बैठता है -

सुनु सर्बग्य सकल डर बासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी।

मंत्र कहऊ निजमति अनुसारा। इत पठाइअ बालि कुमारा।।

अर्थात् - 'हे सर्वज्ञ! है सबके हृदय में बसने वाले अर्न्तयामी! है बुद्धि, बल, तेज, धर्म और गुणनिधान! मैं जाम्बवन्त अपनी बुद्धि के अनुसार आपको सलाह देता हूं कि आपके द्वारा बालिकुमार अंगद को रावण के पास अपना दूत बनाकर भिजवाया जाए।'

नीक मंत्र सबके मन माना। अंगद सन कह कृपा निधाना।

बालितनय बुधि बल गुना धामा। लंका जाहु तात मम कामा।। तथा

अर्थात् 'जाम्बवन्त की यह अच्छी सलाह सभी के मन में जंच गयी। कृपा के

निधान श्रीराम ने अंगद से कहा- ''है बल, बुद्धि गुणों के धाम बालिपुत्र। तुम मेरे कार्य के लिये लंका जाओ।''

तृतीय विशिष्ट चित्र स्वर्णमृग का वन में पीछा करते धनुर्धारी श्रीराम का है। संत तुलसीदास इस बारे में रामचरितमानस में यह दोहा रचते है जो इस चित्र के अंकन पर सटीक बैठता है -

मृगविलोकी कटि परिकर बांधा। करतल चाप रूचिर सर साँधा।।

प्रभूहि बिलोकी चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी।।

अर्थात् - 'स्वर्णमृग को देखकर श्रीराम ने कमर में अपना पटका बांधा और धनुष को हाथ में धारण कर उस पर सुन्दर बाण चढ़ाया। यह देखते ही आखेट के भय से श्रीराम को देखकर मृग कुलांचे मारते हुए भागा और श्रीराम भी धनुष चढ़ाकर उसके पीछे भागे।'

एक अन्य विशिष्ट चित्र रामायण के पत्र से है। इसमें श्रीराम और परशुराम की भेंट है। राजस्थानी शैली का यह चित्र उदयपुर से प्राप्त हुआ है और वर्तमान में मुम्बई के छत्रपति शिवाजी वास्तु संग्रहालय की चित्रकला विथिका में क्रमांक **54.1/19** पर प्रदर्शित है। चित्रकार मनोहर द्वारा ऊकेरा यह चित्र ईस्वी सन् **1649** का है। यह पूरा चित्र **38** गुणा **2.5** सेमी लम्बा एवं **31.18** सेमी चौड़े पत्र पर है। इसे मेवाड़ महाराणा जगतसिंह के राज्याश्रय में बनाया गया था। यह मूलतः रामायण के बिखरे चित्रों में से एक है। इस कथाचित्र में परशुराम श्रीराम के विवाह की बारात को रोकते हुए है। वे श्रीराम को उनकी योग्यता प्रामाणित करने हेतु विशाल शिव धनुष को झुका कर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने की चुनौती देते है। श्रीराम आसानी से धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा लेते है और एक बाण निकालते है। परशुराम इससे अवाक रह जाते है और तत्काल उन्हें यह आभास हो जाता है कि श्रीराम कोई असाधारण मनुष्य है। चित्रकार ने इस घटना को पूरी सुक्ष्मता और मनोयोग से ऊकेरा है और इस हेतु उसने संकेतों, कथा कहने की तकनीक के साथ-साथ बड़े चटक रंगों का भी सुन्दर इस्तेमाल किया है। प्रस्तुत चित्रांकन में जो तीन अलग-अलग जगहें दिखाई है वे अलग-अलग रंग की पृष्ठभूमि में है। आगे के हिस्से में पंच ऋषि यज्ञ कर रहे है। बारात में श्रीराम और उनके अनुज रथों पर सवार है तथा उनके पीछे सीता तथा दूसरी महिलाये दो हाथियों पर रखे हौदों में बैठे पीछे आ रही है।

परशुराम देवलोक से उतर कर आये है, जिसे हल्के बैगनी रंग में दर्शाया गया है। गुस्से में भरे हुए परशुराम काफी बड़े आकार में दर्शाये है जिससे उनका व्यक्तित्व इस चित्र में बड़े प्रभावी रूप में ऊभर आया है। प्रस्तुत चित्र में भगवान विष्णु के दो अवतारों के मिलने के इस पल को निहारने के लिए आकाश में देवता एकत्रित हुए दर्शाये है। घटनाओं के क्रम में श्रीराम तथा परशुराम बार-बार दिखाए गए है। श्रीराम के अतुलनीय पराक्रम तथा चमत्कार से शांत और विनम्र हुए परशुराम सामान्य मनुष्य के आकार में आ गए है और फिर उनके हाथ में धनुष के स्थान पर पुष्प है जो अब सन्धि तथा श्रीराम के प्रति भक्तिभाव का प्रतीक है। सांवले सलोने श्रीराम के हाथ में भी एक पुष्प है जो परशुराम के प्रति आदर समभाव का सूचक है। इस चित्र के अन्तिम कोने में इस घटना का अन्तिम रूप चित्रित है जिसमें परशुराम फिर महेन्द्र पर्वत की ओर तपस्या करने जाते दिखायी देते है।

एक विशिष्ट चित्र कला विशेषज्ञ नर्मदा प्रसाद उपाध्याय (इन्दौर) के व्यक्तिगत संग्रह में है यह चित्र 'राम दरबार' का है जो **19**वीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में झालावाड़ कलम की विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है। इस चित्र में श्रीराम सीता सहित स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान है तथा उनके एक हाथ में कमल पुष्प है। दोनों के शीश पृष्ठ में प्रभामण्डल का अंकन व उसके ऊपर अयोध्या नगरी का वैभव प्रकृति प्रदत्त हरियाली के मध्य ऊकेर कर प्राणवान बनाया है। यहाँ श्रीराम एवं सीता ने परम्परागत वस्त्राभूषण धारण किये है। श्रीराम का एक पैर नीचे बैठे भक्त हनुमान के घुटनों पर रखे हाथों में है। पीछे दो परिचायक मोरछल लिये है व भरत भी इसमें दर्शाये गये है।

इस प्रकार भारतीय चित्रांकन परम्परा में श्रीराम का अंकन विशिष्ट गरिमा के साथ मध्य कालीन व उत्तर मध्यकालीन संस्कृति में दिखायी देता है।

• • •

प्रसिद्ध इतिहासकार तथा पुरातत्त्वविद

आदिगुरू शंकराचार्य की प्रतिमा का अनावरण

- संजय गोस्वामी

आदि गुरु शंकराचार्य की यह प्रतिमा बहु धातु से निर्मित है। इसमें 16 फीट ऊंचे पत्थर से एक कमल का आधार है और 75 फीट ऊंचा पेडिस्टल बनाया गया है। 45.5 फीट शंकर स्तंभ पर आचार्य शंकर की जीवन यात्रा चित्रित है। मूर्ति के निर्माण में 250 टन से 316 एल ग्रेड की स्टेनलेस स्टील का उपयोग किया गया है। साधारण इस्पात की अपेक्षा ये(स्टेनलेस स्टील 316L अधिक ताप सह सकते हैं। इस्पात में ये गुण क्रोमियम मिलाने से उत्पन्न होते हैं। इसमें 12-20% क्रोमियम (Cr), 8-13% निकेल(Ni) तथा लोहा (Fe) होता है। क्रोमियम इस्पात के बाह्य तल की परत वायु से प्रतिक्रिया कर क्रोमियम आक्साइड बना देता है जिससे इस्पात पर पानी और हवा का प्रभाव निष्क्रिय हो जाता है। इसधातु से बनी शंकराचार्य की यह प्रतिमा 108 फीट ऊंची है। इसे एकात्मता की मूर्ति का नाम दिया गया है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ओंकारेश्वर में आदि गुरु शंकराचार्य की प्रतिमा का अनावरण किया है। ओंकार पर्वत पर स्थापित आदिगुरु शंकराचार्य की इस प्रतिमा का अनावरण गुरुवार 21 सितंबर 2023 को किया। इस अनुष्ठान में 5 हजार से ज्यादा संत शामिल हुए। प्रतिमा के अनावरण के साथ ही मुख्यमंत्री शिवराज ने संतों के साथ इसकी परिक्रमा भी की। इस दौरान प्रस्थानत्रय भाष्य पारायण और दक्षिणाम्नाय श्रृंगेरी शारदापीठ के मार्गदर्शन में देश के करीब 300 विख्यात वैदिक आचार्यों द्वारा वैदिक रीति पूजन और 21 कुंडीय हवन किया गया। आदि गुरु शंकराचार्य की यह प्रतिमा बहु धातु से निर्मित है। इसमें 16 फीट ऊंचे पत्थर से एक कमल का आधार है और 75 फीट ऊंचा पेडिस्टल बनाया गया है। 45.5 फीट शंकर स्तंभ पर आचार्य शंकर की जीवन यात्रा चित्रित है। मूर्ति के निर्माण में 250 टन से 316 एल ग्रेड की स्टेनलेस स्टील का उपयोग किया गया है। साधारण इस्पात की अपेक्षा ये स्टेनलेस स्टील 316 गुणा अधिक ताप सह सकते हैं। इस्पात में ये गुण क्रोमियम मिलाने से उत्पन्न होते हैं। इसमें 12-20% क्रोमियम (Cr), 8-13% निकेल(Ni) तथा लोहा (Fe) होता है। क्रोमियम इस्पात के बाह्य तल की परत वायु से प्रतिक्रिया कर क्रोमियम आक्साइड बना देता है जिससे इस्पात पर पानी और हवा का प्रभाव निष्क्रिय हो जाता है। इसधातु से बनी शंकराचार्य की यह प्रतिमा 108 फीट ऊंची है। इसे एकात्मता की मूर्ति का नाम दिया गया है 12 वर्षीय शंकर की यह मूर्ति उस समय से प्रेरित है, जब गुरु गोविंदपाद ने उन्हें काशी की दिशा में जाने का आदेश दिया था। तब गुरु ने उनको कहा था – जाओ सनातन वेदान्त अद्वैत परंपरा की फिर से स्थापना करो।

आदिगुरू शंकराचार्य का जन्म लगभग 1200 वर्ष पूर्व कोचीन से 5-6 मील दूर कालटी नामक गांव में नंबूदरी ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ। कम उम्र में उन्हें वेदों का पूरा ज्ञान हो गया था और 12 वर्ष की उम्र में शास्त्रों का अध्ययन कर लिया था। 16 वर्ष की अवस्था में 100 से भी अधिक ग्रंथों की रचना कर चुके थे। शंकराचार्य ने उपनिषदों की इस धारणा का समर्थन किया है कि ब्रह्म सर्वोच्च सत्ता है। उससे बढ़कर कोई तत्व नहीं। वह शक्ति और ज्ञान की अंतिम सीमा है। कठोपनिषद में कहा गया है- पुरूषान्न परं

किंचित साकाष्ठा सा परा गतिः। ब्रह्म का अर्थ भी है इससे बड़ा तत्व। ब्रह्म शब्द बृह् और मन् से बना है। इसका व्युत्पतिक्रम्य अर्थ है- सबसे बड़ा और महान। ब्रह्म ही जगत का मूल कारण है, जो अनेक नाम रूपों में प्रकट होने पर भी निर्गुण, निराकार और अखण्ड है। इसलिए इसे अद्वितीय भी कहते हैं। ब्रह्म देश और काल से परे है। वह स्वतः सिद्ध है, अतः उसकी सत्ता को किसी उदाहरण द्वारा नहीं समझाया जा सकता।

शंकराचार्य ने ब्रह्म का विचार व्यावहारिक और पारमार्थिक दो दृष्टियों से किया है। व्यावहारिक दृष्टि से सगुण ब्रह्म (ईश्वर) की सत्ता मानी गई है। यह ब्रह्म संसार की सृष्टि, पालन तथा संहार करने वाला है। यह माया की उपाधि से युक्त है- मायोपहितं सगुणं ब्रह्म। यह ब्रह्म की सृष्टि का निमित्त और उपादान कारण है, यह उपासना का विषय भी है। जब तक हम जगत को सत्य मान रहे हैं, तब तक इस ब्रह्म को स्वीकार करना आवश्यक है, क्योंकि नामरूपात्मक जगत की सृष्टि करने वाला यही सगुण ब्रह्म है। वहीं पालक और संहारक भी है। इस रूप में जब हम ब्रह्म का लक्षण देते हैं, तब यह तटस्थ लक्षण कहलाता है। एक अभिनेता जिस रूप को धारण करके रंगमंच पर आता है, वह उसका तटस्थ लक्षण होता है। इसी प्रकार ब्रह्म का भी तटस्थ लक्षण है- सगुणत्व, उपास्य होना, सृष्टि आदि करना। ब्रह्मसूक्त में इसी लक्षण को समझाने के लिए कहा गया है- जगमायस्य यतः। अर्थात इस जगत का जन्म आदि जिससे होता है, वही ब्रह्म है।

शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त-दर्शन में विश्व की व्याख्या के लिए माया को स्वीकार किया गया है। अन्य कोई वेदान्त सम्प्रदाय माया को उस रूप में नहीं मानता, इसलिए इस दर्शन का एक विशेष अभिधान 'मायावाद' भी पड़ गया है। विवर्तवादी होने के कारण शंकर समस्तनाम रूपात्मक जगत को ब्रह्म का विकार मानते हैं। किन्तु, प्रश्न उठता है

कि ब्रह्म एक है, वह जगत के नाना रूपों को कैसे उत्पन्न करता है? स्वयं निर्गुण होने पर भी सगुण संसार की उत्पत्ति कैसे होती है? निर्गुण और निर्विकार ब्रह्म सृष्टिकर्ता कैसे हो सकता है? इस प्रश्न का समाधान माया के द्वारा होता है। माया के कारण ही निर्गुण और निर्विकार ब्रह्म सगुण ईश्वर होकर सृष्टिकर्ता बनता है। माया शक्ति के बिना जगत की सृष्टि नहीं हो सकती, इसलिए माया ईश्वर की शक्ति है। अपने 'विवेकचूड़ामणि' नामक ग्रंथ में शंकराचार्य माया का वर्णन करते हुए कहते हैं-

अव्यक्तनाम्नी परमेशशक्तिरनाद्यविद्या
त्रिगुणात्मिका परा। कार्यानुमेया सुधियैव
माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते।।

अर्थात् यह अव्यक्त नामक शक्ति परमेश्वर की शक्ति है, जो अनादि अविद्या के रूप में है। वह सत्व, रजस और तमस इन तीन गुणों के रूप में है। विद्वान लोग ही माया के अनुमान उसका कार्य देखकर करते हैं। उसी के द्वारा यह पूरा जगत प्रसूत होता है।

शंकराचार्य के ब्रह्म को समझने के लिए उनकी माया विषयक धारणा को समझना आवश्यक है। यही कारण है कि ब्रह्मसूत्र पर भाष्य का आरंभ करते हुए भूमिका में वे अध्यास को समझाते हैं। यह अध्यास और माया अभिन्न हैं। शंकराचार्य के पूर्ण माया को ईश्वर की शक्ति या उपाधि के रूप में विद्वानों ने कल्पित किया था। गीता में कहा गया है कि माया त्रिगुणमयी है। इसका तरण बहुत कठिन है। जो पुरूष भगवान की भक्ति करते हैं, वे ही माया को पार करते हैं। शंकराचार्य ने माया को ईश्वर की बीजशक्ति के रूप में स्वीकार किया है। इसी शक्ति के कारण संसारी जीव अपने

शंकराचार्य के अनुसार ईश्वर सभी को इस धरा पर दुनिया के सभी चीजों के बारे में जानकारी देते हैं। आप अच्छे काम करें उसका फल अवश्य मिलता है। गलत काम का अंजाम भी भुगतने के लिए आप स्वंय जिम्मेदार हैं। प्राकृतिक को सजाने, सुंदरता व बिगाड़ने में आप की जिम्मेदारी है। अतः प्रकृति के अनुसार चलें, ईश्वर आपको मदद करेगा। आदि शंकराचार्य के उल्लेखनीय कार्यों में भगवद गीता और 12 उपनिषदों सहित हिंदू धर्मग्रंथों पर कई टिप्पणियां शामिल हैं।

यथार्थ स्वरूप को भूलकर प्रगाढ़ शरीर का मोह करता है शंकराचार्य इस सामान्य अनुभव के आधार पर बतलाते हैं कि ब्रह्म जगत में व्याप्त भी है और इससे ऊपर भी है। जब तक जगत का आभास हो रहा है, तब तक वह ब्रह्म का आश्रित है, किन्तु जगत को जब भ्रमजाल समझकर दूर कर देते हैं, तब भी ब्रह्म रहता है। ब्रह्म जगत के सुख-दुःख या पाप-पुण्य से प्रभावित नहीं होता।

ब्रह्म, जगत और जीव ये सब अभिन्न हैं। अज्ञानवश जीव ब्रह्म को उपास्य समझता है और संसार को भोग्य मानता है। किन्तु परमार्थतः जीव भी ब्रह्म है और जगत भी ब्रह्म है। जीव में अल्पज्ञता होती है और ब्रह्म सर्वज्ञ है। जिस क्षण भेद बुद्धि मिट जाती है, उसी क्षण जीव, जगत और ब्रह्म एक हो जातो हैं। शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म सभी भेदों से रहित है।विश्वातीत रूप में ब्रह्म सभी उपधियों से रहित 'परब्रह्म' है। सगुण ब्रह्म या ईश्वर को दूसरी ओर 'अपरब्रह्म' कहते हैं। दोनों में कोई भेद नहीं, उपाधि को लेकर भेद है। -परब्रह्म' उपाधिरहित होता है, जबकि 'अपरब्रह्म' सोपाधिक होता है। परब्रह्म को किसी की अपेक्षा नहीं 'निरपेक्ष' है। 'अपरब्रह्म' को जगत की अपेक्षा होती है, जिसकी सृष्टि, पालन आदि करता है। यद्यपि ईश्वर 'परब्रह्म' का औपाधिक रूप है, किन्तु उसका महत्व भी कम नहीं है। आध्यात्मिक मार्ग पर हम सीढ़ियों से ही चल सकते हैं। विवेकी के लिए सृष्टिकर्ता और पालक ईश्वर की आवश्यकता है। तब ईश्वर उपास्य हो जाता है। वह कर्मानुसार फल देता है। क्रमशः आगे बढ़ने और अद्वैत का साक्षात्कार होता है, जहां परब्रह्म एकमात्र सत्ता है, जीव और ब्रह्म एकाकार हो जाते हैं। इसलिए कहा गया है- जीव ब्रह्मैव नापरः। ब्रह्म को आत्मा भी कहा गया है। वह अद्वैत तत्व है जिसे तर्क या बुद्धि से नहीं जान सकते। फिर भी उसकी सत्ता के लिए प्रमाण दिए गए हैं- ब्रह्म की सत्ताश्रुति प्रमाण से सिद्ध होती है।

उपनिषदों में तत्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि, अममात्मा ब्रह्म, प्रज्ञानं ब्रह्म इत्यादि महावाक्यों के द्वारा ब्रह्म को प्रमाणित किया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कह सकते हैं कि अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म ही सब की आत्मा है।ब्रह्म निर्गुण है, किन्तु माया की उपाधि से युक्त होकर ईश्वर अर्थात सगुण और साकार बन जाता है। माया ईश्वर की त्रिगुणत्मिका शक्ति है। निर्गुण ब्रह्म अपनी ही शक्ति से सगुण बनता है। यह ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। शंकराचार्य गीताभाष्य में कहते हैं कि अज, अविनाशी, भूतेश्वर तथा नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त- स्वभाव ईश्वर अपनी माया को वश में करके देहधारी जैसे हो जाते हैं। माया ब्रह्म की शक्ति है, किन्तु ब्रह्म से भिन्न नहीं है, तथापि वह नित्य नहीं है। वह ईश्वर की इच्छा मात्र है। ब्रह्म स्वयं अपनी इस बीज शक्ति से परिच्छिन्न होकर अनेक द्रष्टा जीवों तथा अनेक दृश्य पदार्थों के रूप में प्रतीत होता है। इस प्रकार दाहकता अग्नि से और संकल्प मन से अविच्छेध्य है, उसी प्रकार शक्ति भी ब्रह्म से अविच्छेध्य है।

माया को लेकर ही ब्रह्म अपने सगुण रूप ईश्वर बन कर जगत की सृष्टि, पालन और संहार करता है। माया की दो शक्तियां होती है- आवरण और विच्छेप। आवरण शक्ति निषेधात्मक होती है, जिसके द्वारा वस्तु के यथार्थ रूप को आच्छन्न कर दिया जाता है। यही शक्ति ब्रह्म के यथार्थ रूप को उसी प्रकार ढंक लेती है, जैसे बादल का छोटा टुकड़ा सूर्य को ढक लेता है। दूसरी ओर विच्छेप शक्ति भावात्मक है, जो छिपाए गए पदार्थ को दूसरे रूप में प्रकट करती है। जैसे शुक्तिका (सीपी) में रजत, रज्जु में सर्प, गगन में नीलत्व प्रकट होता है, इसी विच्छेप शक्ति से संसार के विविध पदार्थ प्रकट होते हैं। इस प्रकार माया का कार्य है ब्रह्म को छिपाकर संसारी जीवों तथा दृश्य पदार्थों को अयथार्थ रूप में उत्पन्न करना। सृष्टि माया की देन है। माया के अभाव में ईश्वर सृष्टि पालन या संहार नहीं कर सकता। माया को अध्यास में कहा गया है। इसी अध्यास से जगत की प्रतीति होती है। जीव और ब्रह्म में भिन्नता प्रतीत होती है। इस प्रकार सारा जगत ही अध्यास है, मिथ्या आरोप है, ब्रह्म पर आरोपित तथा कल्पित है।

शंकराचार्य के अनुसार ईश्वर सभी को इस धरा पर दुनिया के सभी चीजों के बारे में जानकारी देते हैं। आप अच्छे काम करें उसका फल अवश्य मिलता है। गलत काम का अंजाम भी भुगतने के लिए आप स्वंय जिम्मेदार हैं। प्राकृतिक को सजाने , सुंदरता व बिगाड़ने में आप की जिम्मेदारी है। अतः प्रकृति के अनुसार चलें ईश्वर आपको मदद करेगा। उन्हें हिंदू दर्शन के आधुनिक इतिहास में कुछ सबसे महत्वपूर्ण शख्सियतों के रूप में याद किया जाता है। आदि शंकराचार्य के उल्लेखनीय कार्यों में भगवद गीता और 12 उपनिषदों सहित हिंदू धर्मग्रंथों पर कई टिप्पणियां शामिल हैं। हिंदू साधु ने शिवानंद लहरी, निर्वाण शातकम, मनीषा पंचकम और सौंदर्य लहरी जैसे लगभग 72 भक्ति भजनों की रचना की। मात्र 32 साल की उम्र में केदारनाथ में उन्होंने समाधि ले ली। आदि शंकराचार्य ने हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार के लिए देश के चारों कोनों में मठों की स्थापना की थी जिसे आज शंकराचार्य पीठ कहा जाता है।

• • •

प्रबंधक, वैज्ञानिक पत्रिका

विशिष्ट है कोकणा जनजाति की लोक-संस्कृति

– निलेश शिवाजी देशमुख

कोकणा जनजाति समाज महाराष्ट्र के नासिक, ठाणे, धुले, नंदूरबार तथा गुजरात के डांग, सूरत, वलसाड और दादरा व नगर हवेली एवं राजस्थान के कुछ क्षेत्र में देखने को मिलता है। हजारों सालों से जनजाति समाज का यहाँ के जंगलों एवं पहाड़, नदियों के आसपास के क्षेत्र में निवास स्थान रहा है। कोकणा, कुंकणी, कोकणी यह कोकणा जनजाति के समानतादर्शक नाम है। इनमें कोकणा- नासिक, ठाणे, कोकणी- धुले नंदुरबार, कुंकणा, कुंकणी- गुजरात में प्रचलित नाम हैं पर यह एक ही वंशज से माने जाते हैं। विद्वानों ने कोकणा आदिवासियों की उत्पत्ति महाराष्ट्र के अरब समुद्र के किनारे के 'कोंकण' क्षेत्र से मानी हैं।

एक प्रसिद्ध कहावत है – कोस कोस पर बदले पानी, दो कोस पर वानी। यानी दो मील चलने पर भूजल का स्वाद बदल जाता है और चार मील में लोगों की बोली में परिवर्तन मिलता है। इसी प्रकार हर सौ मील पर लोगों की संस्कृति, परंपराओं, रहन-सहन में भी परिवर्तन भी दिखता है। अपनी इन स्थानीय विशिष्टताओं के बाद भी भारत के सभी समुदायों में एक साझापन भी दिखायी देता है। जिन जनजातियों को अंग्रेजों ने भारत के शेष समुदाय से भिन्न दिखाने की भरपूर प्रयास किये और आज भी उनका अनुसरण करने वाले बुद्धिजीवी करते हैं, वे जनजातियां भी अनेक विषयों में भारत के शेष समाज के समान ही हैं। भिन्नता केवल स्थानीयता के कारण आती है, जो कि समस्त भारत के सभी समुदाय को मिली स्थानीय स्वतंत्रता का द्योतक है। महाराष्ट्र के सह्याद्री के पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाली कोकणा जनजाति एक ऐसा ही समुदाय है।

उल्लेखनीय है कि भारत के विभिन्न राज्यों में जनजाति समुदाय की संख्या लगभग 8.5 प्रतिशत हैं। उनमें से कुछ जनजातियां खत्म होने के कगार पर खड़ी है। महाराष्ट्र राज्य में निवास करनेवाली कोकणा एक विशिष्ट जनजाति है। इस समाज में प्रकृति से सम्बन्धित डोंगरदेव, कंसरामाऊली, वाघदेव, नागदेव, ऐसे अनेक देवी-देवता हैं जिनकी अलग-अलग समय पर पूजा की जाती है। कोकणा जनजाति नगर से दूर-दराज पहाड़ों के सानिध्य में निवास करती है। हजारों सालों से महाराष्ट्र के सह्याद्री के पूर्व और पश्चिम के सतपुड़ा, भामरागढ़ पर्वत श्रेणी के सानिध्य में रहने से उनका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास आधुनिक नगरीय तरीके से नहीं हुआ है। वे आज भी परंपरागत तरीकों से ही रह रहे हैं।

कोकणा जनजाति समाज महाराष्ट्र के नासिक, ठाणे, धुले, नंदूरबार तथा गुजरात के डांग, सूरत, वलसाड और दादरा व नगर हवेली एवं राजस्थान के कुछ क्षेत्र में देखने को मिलता है। हजारों सालों से जनजाति समाज का यहाँ के जंगलों एवं पहाड़, नदियों के आसपास के क्षेत्र में निवास स्थान रहा है। कोकणा, कुंकणी, कोकणी यह कोकणा जनजाति के समानतादर्शक नाम है। इनमें कोकणा- नासिक, ठाणे, कोकणी- धुले नंदुरबार, कुंकणा, कुंकणी- गुजरात में प्रचलित नाम हैं पर यह एक ही वंशज से माने जाते हैं। विद्वानों ने कोकणा आदिवासियों की उत्पत्ति महाराष्ट्र के अरब समुद्र के किनारे के 'कोंकण' क्षेत्र से मानी हैं। प्रो. बी. ए. देशमुख का कहना है कि 1300 ईसवी के अंत में दुर्गादेवी का अकाल पड़ने के कारण कोकणा जनजाति समाज ठाणे नासिक से लेकर धूले,

नंदुरबार एवं गुजरात के डांग वलसाड सूरत तक फैल गया, इसलिए कोंकण प्रदेश से आने से इन्हें 'कोकणा' कहा गया। कोकणा जनजाति समाज नागवंशज से संबन्धित हैं जोकि बहुत प्राचीन समय से निवास कर रहे हैं पर आचार्यो ने इनके तरफ ध्यान नहीं किया। उल्लेखनीय है कि नाग समस्त भारत में पूजनीय देवता हैं और नागवंशी पूरे भारत में मिलते हैं।

कोकणा जनजाति समाज प्रकृति पूजक समाज है इस समाज में डोंगरदेव, कन्सरामाऊली, वाघदेव, नागदेव, रानशिवारदेव आदि अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। इनकी संस्कृति के बारे में डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय का मानना है कि-"लोक संस्कृति से हमारा अभिप्राय जन-साधारण की उस संस्कृति से है जो अपनी प्रेरणालोक से प्राप्त करती थी जिसकी उत्स-भूमि जनता थी। इस संस्कृति के अनुयायी बौद्धिक विकास के निम्न धरातल पर अवस्थित थे"। इस परिभाषा में डॉ. उपाध्याय जी कहते हैं कि संस्कृति जनसाधारण समाज से प्रेरित होती है और उसका विकास होता रहता है। लोक संस्कृति लोक की अपनी अलग पहचान एवं विशेषता है। लोक में व्याप्त जनजीवन के पूरा काल से लेकर अद्यतन काल तक के लोक-विश्वास, धार्मिक मान्यताओं एवं सामाजिक संस्कार तथा आस्थाओं व रीति-रिवाज, विधि-पर्व, अनुष्ठान, उत्सव प्रथाओं परंपराओं आचार-विचार व जीवनदृष्टि आदि के समस्त रूप को लोक संस्कृति में समाहित किया जा सकता है। कोकणा जनजाति लोग सीधे-सादे, अपने में ही मस्त और खुश दिखाई देते हैं।

कोकणा जनजाति समाज में वर्ष की शुरुआत बरसात के दिनों से होती है। वर्तमान में मुख्यतःमहाराष्ट्र में हिंदू परंपरा में अप्रैल महीने में गुड़ीपाड़वा के समय से नए वर्ष की शुरुआत मानी जाती है। लेकिन कोकणा जनजाति समुदाय बरसात होने के 15 दिन बाद पेड़-पौधों पर जब नई पल्लव आने लगती हैं और वह हरे-भरे दिखाई देते हैं। उल्लेखनीय है कि अनेक प्राचीन ग्रंथों में श्रावण मास यानी वर्षा ऋतु से वर्षारम्भ का उल्लेख मिलता है। संभवतः कोकणा जनजाति में उस प्राचीन परंपरा को ही आज तक संजोये रखा गया है। इस समय 'कवली की सब्जी' भी खाने लायक हो जाती हैं। इसी के साथ करटुला, तेरा, देवी, आळु आदि सब्जियां जंगल से विशिष्ट दिन लेकर आते हैं और नए साल की शुरुआत मानी जाती हैं। इस सब्जी को पकाने के बाद विधिवत पूजा करते हैं, तब खाते हैं। वस्तुतः यह भी भारत की यज्ञ परंपरा का ही एक प्रकार है। भारत की यज्ञ परंपरा में भी अन्न का उपयोग यज्ञादि पूजन करने के बाद ही प्रारंभ करते हैं।

इसी दिन रात के समय ढोल-वाद्य पर नृत्य का आयोजन होता है। इसके अलावा जंगल से विभिन्न प्रकार के कंदमूल भी लेकर आते हैं, जो शरीर के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं। शायद यही कारण होगा कि वे हर साल खाने में कम से कम एक बार इसका उपयोग करते हैं। कोकणा जनजाति समाज में नासिक, धुले आदि क्षेत्र में आज बड़ी मात्रा में लोग खेती व्यवसाय करते हैं, साथ ही पशुपालन, मछली पकड़ना, शिकार करना आज भी अनवरत रूप से चल रहा है। खेती में वह बाजरा गेहूं, चावल, रागी आदि की खेती करते हैं, साथ ही उड़द, मूंग, अरहर, चना जैसे धान उपजाते हैं। लेकिन पूरे साल के लिए जीवनयापन जितना अनाज उनके पास नहीं होता, इस वजह से वे पशुपालन भी करते हैं। कोकणा जनजाति समुदाय भी अन्य समुदाय की तरह विभिन्न तीज-त्यौहार, उत्सव मनाते हैं, जिनमें चैत्र-उत्सव (घर देवता), आखाजी, सुख भंडारा, बैल-पोला, पित्रा, नवरात्र उत्सव, दशहरा, बाघबारस, दीपावली, डोंगरदेव उत्सव, होली-शिमगा उसी के साथ नागपंचमी, गणपति उत्सव, कार्तिक स्वामी पूजा, संक्रांति, महाशिवरात्रि, हनुमान जयंती (5 साल में एक बार) आदि छोटे-

कोकणा जनजाति समाज में वर्ष की शुरुआत बरसात के दिनों से होती है। वर्तमान में मुख्यत:महाराष्ट्र में हिंदू परंपरा में अप्रैल महीने में गुड़ीपाड़वा के समय से नए वर्ष की शुरुआत मानी जाती है। लेकिन कोकणा जनजाति समुदाय बरसात होने के 15 दिन बाद पेड़-पौधों पर जब नई पल्लव आने लगती हैं और वह हरे-भरे दिखाई देते हैं। उल्लेखनीय है कि अनेक प्राचीन ग्रंथों में श्रावण मास यानी वर्षा ऋतु से वर्षारम्भ का उल्लेख मिलता है। संभवत: कोकणा जनजाति में उस प्राचीन परंपरा को ही आज तक संजोये रखा गया है।

मोटे तीज-त्यौहार बड़ी धूमधाम से कोकणा समाज में मनाए जाते हैं। इनके विधि-विधान तथा मौखिक गीत-नृत्य के माध्यम से लोक-संस्कृति का दर्शन होता है। इससे यह मालूम होता है कि यह जनजाति संस्कृति कितने पुराने समय से चली आ रहीं है।

कोकणा जनजाति समाज की खान-पान की पद्धतियां सरल तरीके से देखने को मिलती है। जो शरीर के लिए फायदेमंद है। रागी, बाजरा, गेहूं, चावल की रोटी एवं उड़द, कुलित, चना, अरहर, मटर आदि की दाल और अन्य कड धान्य तथा चावल का उपयोग खाने में किया जाता हैं। प्राचीन काल से ही जंगल के सानिध्य में रहने के कारण कोकणा जनजाति समाज को कंदमूल काफी पसंद हैं। इसलिए वो हर साल एक-न-एक कंदमूल जरूर खाते है। उल्लेखनीय है कंदमूल के भोजन की परंपरा पूरे भारतवर्ष में पायी जाती है। कोकणा लोग कंदमूल के साथ मांसाहार भी करते है। डोंगरदेव उत्सव, चैत्र उत्सव, सुख भंडारा आदि उत्सव समाप्ति के बाद बकरे की बलि देने की प्रथा है। उस वक्त वो बकरे का मांस मिल-बांट कर खाते हैं, उसी के साथ महुआ की शराब भी पीते हैं। शराब गांव के आसपास के महुआ के पेड़ों पर लगे फूलों

से बनाई जाती है जिसका इस्तेमाल औषधि के रूप में भी किया जाता है। जब कभी छोटे बच्चों को खांसी आती है तो उस वक्त महुए की शराब चाटने के लिए दी जाती है, उससे वह ठीक हो जाता है। इसलिए प्रौढ़ व्यक्ति बकरे के मांस के साथ शराब पीना फायदेमंद समझते हैं। इस तरह कोकणा जनजाति समाज ने अपनी परंपरा से चली आ रही खानपान की पद्धति को कायम रखा है।

इस समाज में खाना होने के बाद दिन की थकावट मिटाने के लिए गमत का आयोजन किया जाता है या संबल वाद्य पर नृत्य किया जाता है। इसमें स्त्री-पुरूष साथ में नृत्य करते हैं। इस समाज में घर चलाने का हक जितना पुरुष का है उतना ही स्त्री का भी। इस जनजाति में आधुनिक काल में विकसित दहेज प्रथा के विपरीत पुरुष को 'वधु मुल्य' चुकाना पड़ता है। महिलाएं खुद खेती करती हैं, बाजार जाती है और उपजा हुआ धान क्रय-विक्रय करती है साथ ही घर चलाने के लिए जरूरी सामान बाजार से लेकर आती है। इतनी क्षमताएँ जनजाति स्त्रियों में दिखाई देती है। यह पूरी तरह से अपने परिवार का ध्यान रखती है। तीज-त्यौहार में अपनी अहम भूमिका निभाती है। इनका चरित्र स्वच्छ, सहज, सरल और स्वाभिमानी है।

वैदिक परंपरा में जिस तरह षोडश संस्कार मनाए जाते हैं, उसी तरह से कोकणा जनजाति समाज में जन्म, मुंडन, बारसे, विवाह, मृत्यु, दहावा आदि संस्कार मनाए जाते हैं। संस्कारों में इनके विविध तरह के विधि-विधान तथा मौखिक गीत गाए जाते हैं। जन्म, मुंडन, विवाह आदि के वक्त महिलाएं खुशी के गीत गाती है, जिसमें वह विवाह में मंडप के गीत, धर निकालने के गीत, हल्दी के गीत, देवका के गीत, तेलवना के गीत, वाघा के वक्त के गीत, शादी के गीत, गौणा के गीत आदि। यह सारी परंपराएं भारत के अन्य समाजों के समान ही हैं। पुरुष मृत्यु के नौवें दिन रात में और डोंगरदेव उत्सव मे आठ दिन तक

गीत गाते हैं, कथाएं गाते हैं। इन लोकगीत, लोककथाओं में जनजाति समाज का दर्शन होता है। यही उस समाज की धरोहर है जिनका कही भी लिखित स्वरूप दिखाई नहीं देता। भारतीय परंपरा के अनुसार कोकणा समाज में भी मौखिक गीत कथाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सतत हस्तांतरित होती रही है।

कोकणा जनजाति समाज में प्रमुख उत्सव के रूप में डोंगरदेव उत्सव मनाया जाता है जिसे कार्तिक मार्गशीर्ष की पूर्णिमा के समय आयोजित किया जाता है। ध्यातव्य है कि कार्तिक पूर्णिमा पूरे देश में उत्सव के रूप में मनाया जाता है। कोकणा समाज में इस उत्सव की कुछ विशिष्ट मान्यताएं, नियम है जिसमें सिर्फ पुरूष ही सहभाग लेते हैं और महिलाएँ दूर से दीप पूजन करती है। इस उत्सव में गीत-नृत्य-गाथा एक साथ देखने को मिलती है। उत्सव में हर परिवार का एक सदस्य पुरुष का सहभाग रहता है। 10-12 दिन तक चलने वाले उत्सव में गांव के आसपास के लोग भी उत्साह के साथ सहभागी होकर नाचते गाते हैं। सम्पूर्ण उत्सव गांव समूह में मनाया जाता है। जिनमें प्रमुख भूमि का पुजारी (भगत), मुधानी, भोप्पा/खुट्या, साधु, माऊलीया आदि रहते है। उसी के साथ पावरकर, टापरागवारी, कथकरी (कथागाणेवाला) जोगा थाल गाते हैं। ये सभी लोग अलग-अलग कार्य करते हैं। एक जगह समूह में रहना और गीत नृत्य गाना तथा विधि-विधान करना पहाड़ (गढ) की पूजा करना इससे भी कोकणा जनजाति समाज की संस्कृति का दर्शन होता है। इनके माध्यम से उनके पुरखा साहित्य के गीत, कथा, गाथा, नृत्य, संगीत, वाद्य का सामंजस्य दिखाई देता है।

कोकणा समाज की अपनी चिकित्सकीय परंपरा भी है। गाँव में जब किसी व्यक्ति को बिच्छू वगैरह काटता है, तब लोग उसे डॉक्टर के पास ले जाने के बजाय गांव के किसी भगत के पास लेकर जाते हैं। ताकि वह व्यक्ति अपनी मंत्र विधि से उसे ठीक कर दे। जब गांव में कभी गाय, बैल, बकरी बीमार रहती है तब जंगल से लाई हुई जड़ीबूटी औषधियाँ लगा देने से या पिला देने से वह ठीक हो जाती है। उनकी चिकित्सकीय विधियां आधुनिक डॉक्टरों के लिए विचित्र हो सकती हैं, परंतु उनके ज्ञान का परीक्षण किया जा सकता है। कोकणा जनजाति का विश्वास जिन बातों पर है, उस पर वे खरे उतरते हैं और पूरी श्रद्धाभाव से उसे पूरा करते हैं। भगत सिर्फ पुरुष ही होते हैं महिला नहीं।

इनके लोक विश्वास पर एक लेखक ने कहा है कि "जनजाति समाज में लोक विश्वास,

वैदिक परंपरा में जिस तरह षोडश संस्कार मनाए जाते हैं, उसी तरह से कोकणा जनजाति समाज में जन्म, मुंडन, बारसे, विवाह, मृत्यु, दहावा आदि संस्कार मनाए जाते हैं। संस्कारों में इनके विविध तरह के विधि-विधान तथा मौखिक गीत गाए जाते हैं। जन्म, मुंडन, विवाह आदि के वक्त महिलाएं खुशी के गीत गाती है, जिसमें वह विवाह में मंडप के गीत, घर निकालने के गीत, हल्दी के गीत, देवका के गीत, तेलवना के गीत, वाघा के वक्त के गीत, शादी के गीत, गौणा के गीत आदि। यह सारी परंपराएं भारत के अन्य समाजों के समान ही हैं।

मान्यताएं, रूढ़ि परंपराएँ बहुत प्रचलित है। लोक विश्वास अज्ञात प्रतिक्रिया से प्रकट होता है। इसका रचनाकार कौन है? कोई नहीं जानता। लोग बिना सच्चाई को पता किये इन्हें स्वीकार कर लेते हैं और समाज में लोगों में विश्वास रूप में प्रचलित हो जाती हैं। वृक्ष पूजा, जानवरों की पूजा, सरीसृप की पूजा, जीव जंतु और मृतकों की पूजा लोक विश्वास का मूल हैं। लोक संस्कृति का विस्तार अत्यंत व्यापक है। लोक जीवन की व्यापक भूमि पर लोकगीतों में होने वाली बहुआयामी व्यंजना लोक संस्कृति को ऊर्जावान बनाती है। लोक विश्वास और पारंपारिक जीवन शैली पर आधारित जीवन की उस चेतना को लोक संस्कृति की व्याख्या दी जा सकती है।" कोकणा जनजाति समाज ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण किया है जो महाराष्ट्र में भिल्ल, मावची, गावित, वारली, महादेवकोली, आंध आदि समाज के साथ दिखायी देता हैं।

जनजाति समाज की पोशाक की बात करें तो इनमें महिला रंग बिरंगे कपड़े, आभूषण पहनती हैं। माथे पर गोदन करती हैं। महिलाएँ साड़ी के दो भाग करके पहनती हैं - एक को फड़की कहा जाता है जो सिर पर ओढ़ी जाती है, तो दूसरे कोलुगड़ा कहा जाता है जो कमर के नीचे पहनते हैं। साथ ही चोली या ब्लाउज/पोलका भी पहनती हैं। इसमें इनकी फड़की की अलग विशेषताएं हैं। यह लाल रंग की होती है जिस पर सफेद बिंदियाँ रहती है। पुरुष पैंट शर्ट तथा कुछ प्रौढ़ व्यक्ति धोतीकुर्ता और सिर पर सफेद गांधी टोपी पहनते हैं। ज्यादातर महाराष्ट्र में सफेद कपड़ा पहनना अच्छा मानते हैं और जनजाति समाज में भी पुरुष सफेद कपड़े ही पहनना पसंद करते हैं। कोकणा जनजाति समाज में विशिष्ट त्यौहारों पर नए कपड़े पहने जाते हैं जैसे कि विवाह, दीपावली, होली आदि के वक्त। वर्तमान में परिवर्तित रूप देखने को मिलता है अब कभी भी नए कपड़े लेकर पहनते हैं।

इस समाज में रहन-सहन की बात करें तो इनका निवास स्थान जंगलों के आसपास ही देखने को मिलता है इसलिए इनके मकान खपरैल की छप्पर से बने होते हैं और दीवार मिट्टी की होती है। एक बाजू में वह खुद तो दूसरी बाजू में अपने पशुओं के लिए मकान बनाकर एक साथ खुशी से रहते हैं। ज्यादातर यह जंगल की लकड़ियों का ही प्रयोग करते है जैसे- खेती के लिए औजार और खेती से उपजा हुआ धान/अनाज रखने के लिए मुड़ी/साटा, घर बनाने के लिए, मनोरंजन के वाद्य बनाने के लिए मुख्य रूप से इनका उपयोग होता है।

कोकणा जनजाति समाज में कोई भी उत्सव हो वह पूरे समूह में मनाया जाता है। यह इनकी अलग सांस्कृतिक पहचान है क्योंकि आदिवासियों की समूह में रहने के आदि होते हैं। जनजाति समाज परंपरा से समूह में टोली बनाकर रहते आया है और उन्होंने जंगल को कभी व्यक्तिगत संपत्ति के रूप में नहीं देखा। वे अपना सर्वस्व चांद, सूर्य, हवा, अग्नि और जंगल को ही मानते हैं। कोकणा जनजाति में भारत के प्रकृति पूजन की परंपरा और संस्कृति आज भी जस की तस देखने को मिलती है।

सन्दर्भ सूची -

1. आदिवासी लोक साहित्य शोध आणि बोध- डॉ.संजय लोहकारे, मेधा पब्लिशिंग हाउस अमरावती पृ.15
2. लोकसंस्कृति की रूपरेखा- डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद पृ.12
3. कोकणा-कोकणी इतिहास आणि जिवण- प्रा.बी.ए.देशमुख, सुगावा प्रकाशनपुणे
4. गगनांचल साहित्यिक पत्रिका -सितम्बर-दिसम्बर-2019

• • •

शोधछात्र (हिन्दीविभाग)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

मुझे माफ़ कर दो माँ

- पूनम देवी

हमारे यहाँ शादी-विवाह गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं है। सात जन्मों का बंधन होता है ये। आज नहीं बाद में समझ आएगा तुम्हें। रही मेरी बात तो जिस दिन तूने इसके साथ फेरे लिए, इसकी माँग में सिंदूर भरा। ये मेरे घर की बहू, गृहलक्ष्मी बन गई।" माधुरी जी रुकीं, पानी पीया और फिर कहना शुरू किया, "तुम दूसरी शादी कर लो मुझे कोई समस्या नहीं क्योंकि शादी मन का, आत्मा का बंधन है और तुम्हारा मन ही यदि रश्मि से उचट गया है तो जबरदस्ती का बन्धन मैं नहीं डालूँगी। रश्मि मेरी बहू भले ही नहीं रहे, बेटी हमेशा रहेगी। तुम खुश रहना।"

अनंत पढ़ने में बहुत तेज था। माँ माधुरी जी का दुलारा, पिता की आँखों का तारा था। उन्हें अपने बेटे पर बहुत गर्व था। माँ से उसे विशेष लगाव था। मजाल है माँ से बिना पूछे कोई कदम उठा ले। अपने छोटे से शहर कालपी से स्नातक करते हुए कंप्यूटर में इंजीनियरिंग किया। तुरन्त बेंगलोर में जॉब भी लग गई।

माधुरी जी के पति सीधे साधे स्वभाव के थे। पत्नी के कार्यों में कभी दखल नहीं दिया। प्यारी सी रश्मि के साथ अनन्त का विवाह भी कर दिया। रश्मि माधुरी जी की सहेली सपना जी की बेटी थी। स्नातक कर राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर कर रही थी। रश्मि को लेकर अनंत बेंगलोर चला गया। माधुरी जी भी साथ में गई थीं। सोचा नई नई गृहस्थी है, मिलजुल कर सजा देगी, फिर चली आएगी। अनंत बहुत ही मेहनती और कर्मठ युवक था। कंपनी उससे बहुत खुश थी। इसीलिए एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में उसे कनाडा भेजा।

अनंत अपने पीछे रश्मि को अपनी माँ के संरक्षण में छोड़ एक सप्ताह बाद ही चला गया क्योंकि उसका पहले से पासपोर्ट वीसा तैयार था कंपनी के तरफ से। माधुरी जी ने आँखों के आँसू रोक कर मुस्कुराकर बेटे को विदाई दी क्योंकि उन्हें अब रश्मि को भी संभालना था और उसके जाने की व्यवस्था भी करनी थी।

अपनी माँ को अनंत ने जिम्मेदारी दे दी कि जल्द से जल्द रश्मि का पासपोर्ट वीसा बनवाकर रखें ताकि एक दो महीने के अंदर रश्मि को ले जा सके। एक साल का प्रोजेक्ट था जो बढ़ाया भी जा सकता था। अनंत के जाने के बाद रश्मि मुरझा सी गई थी। माधुरी जी ने उसे ऑनलाइन पासपोर्ट बनाने के लिए पासपोर्ट वेबसाइट सेवा पर जाने के लिए कहा। रश्मि तुरत इस काम में लग गई फॉर्म भर दिया दोनों के लिए अपना भी और माधुरी का भी, ऑनलाइन पेमेंट भी कर दिया।

"मम्मा, सारी औपचारिकता पूरी हो गई। अब पुलिस वेरिफिकेशन होगी उसके बाद पासपोर्ट हाथ में। ठीक है न मम्मा।" रश्मि कभी मम्मी कहती कभी लाड़ में मम्मा कहती।

"हाँ बेटा ठीक है।" माधुरी जी बहू की खुशी देख मुस्करा पड़ी। पुलिस वेरिफिकेशन होने में थोड़ा समय लगा तो सास बहू बेंगलोर घूमने लगी।टूरिस्ट बस में बुकिंग कराकर एक दिन पूरा बेंगलोर घूम आई जिसमें नंदी मन्दिर, लाल बाग, लुम्बिनी पार्क, बानेरघटा नॅशनल पार्क, कृष्ण जी का इस्कॉन मंदिर, टीपू सुल्तान का ग्रीष्मकालीन लकड़ी का बना महल जैसे मनमोहक स्थान थे। फिर एक दिन मैसूर महल घूमने चली गई और वहाँ से वृंदावन गार्डेन।

इतना खूबसूरत गार्डेन, दोनों तो मुग्ध हो गईं। अनंत को तो समय ही नहीं मिला था रश्मि को घुमाने का। वहाँ से लौटकर आई तो कुछ दिन आराम करने लगी तभी एक दिन पुलिस वेरिफिकेशन के लिए बुलाया गया और संतुष्ट होने के बाद पासपोर्ट रश्मि के हाथ में आ गया।

"ओ मम्मा, आज मैं कितनी खुश हूँ।" रश्मि के बचपने पर माधुरी जी मुस्कुराई और कहा --

"चल अब फटाफट कालपी जाने की तैयारी कर।" माधुरी जी ने कहा तो रश्मि उनका मुंह ताकने लगी।

"कालपी ? मम्मा मुझे तो कनाडा जाना है ना।" रश्मि ने बड़ी मासूमियत से पूछा।

"और अपने मम्मी पापा से मिलकर नहीं जाओगी। अनंत के पापा भी इंतजार कर रहे होंगे। फिर कितने दिनों बाद तुम्हें देखना नसीब हो बेटा।" माधुरी जी की आँखे भर आईं।

"ओ मम्मा, सॉरी। आप कहें तो मैं नहीं जाती।"

"अच्छा, अनंत के जाने के समय तो मुँह बिसूर रही थी। अभी नहीं जाती?" माधुरी जी ने रश्मि को चिढ़ाया तो रश्मि शर्मा कर उनकी गोद में अपना मुँह छुपा लिया। ऐसा था सास बहू का रिश्ता। ना कोई ताना ना कोई उलाहना बस सहज और दोस्ताना रूप था। दोनों फिर कालपी गए सबसे मिलना जुलना हुआ और फिर वे दोनों दिल्ली पहुँची। वहाँ इंटरनेशनल फ्लाइट से कनाडा के लिए रश्मि को बिठा विदा किया। उसके बाद माधुरी जी और उनके पति महेश चंद्र का फोन ही सहारा हो गया।

अक्सर दोनों फोन पर अनंत और रश्मि से बातें करते। अनंत तो कभी आफिस जाने की जल्दी में होता कभी काम में ज्यादा ही व्यस्त होता तो कम समय ही देता लेकिन रश्मि से उनकी लम्बी बातचीत होती। दो महीने हो गए रश्मि को गए हुए लेकिन अनंत कभी घुमाने नहीं ले गया रश्मि को। पता नहीं उसके मन में क्या चल रहा था। माधुरी जी जब भी कहती कोई फोटो भेजो तो अनंत तो टाल देता था लेकिन रश्मि एकाध फोटो घर में ही लिया गया भेज देती थी। इधर कुछ दिनों से रश्मि वीडियो कॉल करना नहीं चाहती थी। कहती मम्मी जी ऑडियो में अच्छे से सुनाई देता है।

माधुरी जी एक अनुभवी माँ थी, उससे बढ़कर एक स्त्री थी। उन्हें लग रहा था कुछ तो गड़बड़ है। आज उन्होंने बात करने की सोची बेटे से। उन्होंने मेसेज किया कि आज बहुत जरूरी बात करनी है, समय बताओ। बेटे ने मेसेज देखा और रश्मि से कहा कि "क्या बात है मम्मी को क्या बात करनी है?" रश्मि को पता ही नहीं था। वो क्या बताती?

फिर अनंत ने फोन लगाया, रात के दस बजे थे। उस दिन जल्दी आ गया था, अन्यथा तो रात के बारह-एक बजे ही घर पहुँचता था। माधुरी जी तो रात से ही इंतजार कर रहीं थीं। सुबह के साढ़े सात बजे और फोन की घण्टी बजी। माधुरी जी चाय बना कर कप में डाल रही थी, वो चाय के कप के साथ फोन के पास जा फोन उठाई।

"मम्मी क्या बात है? अचानक बात करने के लिए मेसेज किया। रश्मि से बात हो जाती है ना।" लगा अनंत उनपर अहसान कर रहा है बात करके।

"इतनी औपचारिकता क्यों बेटा। रश्मि से बात हुई तो तुमसे नहीं होनी चाहिए।" माँ ने आश्चर्य व्यक्त किया बेटे की सोच पर। "विदेश की हवा लग गई क्या बेटा?"

"अरे नहीं मम्मी, आप भी क्या क्या सोच लेते हो, काम का दबाव बहुत रहता है न क्या करूँ, बोलो।"

"लेकिन बेटा, मम्मी पापा से बात करने का समय तो निकालना चाहिए न? और तुम दोनों अपना एक भी फोटो नहीं पोस्ट करते हो। रश्मि तुम्हारे लिए वहाँ गई है। हम तुम्हारे लिए यहाँ बैठे है। अपने लिए और परिवार के लिए न काम करते हो बेटा और परिवार के लिए ही समय नहीं है।

न कभी रश्मि को घुमाने ले जाते हो न हमें समय पर याद कर फोन करते हो।"

"जी मम्मी, आगे से ऐसा नहीं होगा। मैं ध्यान रखूँगा।" अनंत ने कहा तो माधुरी जी को ऐसा क्यों लगा कि अनंत जल्दी से फोन से पीछा छुड़ाना चाह रहा है। फिर लगा थक कर आया काम से इसीलिए वो ज्यादा बात नहीं कर रहा था। लेकिन पापा के बारे में न जानना चाहा न बात करना चाहा। चलो देखते हैं अनंत के मन में क्या है। लेकिन अब रश्मि पहले वाली रश्मि नहीं रही। फोन पर आवाज में खनक नहीं होती पहले की तरह। वीडियो कॉल तो करती नहीं, इधर से करने से बड़ी मुरझाई हुई दिखती। एक दिन बड़े प्यार से माधुरी जी ने रश्मि से सारी बात जाननी चाही।

"रश्मि, आज मुझे बताओ क्या हुआ, मैं सही सही जानना चाहती हूँ।" इतना सुनते ही रश्मि रोने रोने लगी। फिर बताने लगी।

"जब से आई हूँ मम्मी अनंत कभी ठीक से बात नहीं करते हैं। कभी कहते हैं मैं गंवार हूँ, मुझे फर्राटेदार इंगलिश बोलनी नहीं आती। कभी कहते हैं कि मैं यहाँ के लिए अनफिट हूँ। इसीलिए मुझे कहीं लेकर नहीं जाते। उन्हें

अनंत समझ गया कि अब वह मम्मी पापा दोनों की नजरों से गिर गया है। वह मम्मी का इंतजार करता रहा। वह आई रश्मि के बिना। रश्मि अपनी मम्मी के यहां रुक गई थी। माधुरी जी आई और वहीं बैठ गईं। अनंत की हिम्मत नहीं हुई कुछ बोलने की। कहाँ तो वो आया था आशीर्वाद लेने और मम्मी पापा को मना कर अपने साथ ले जाने के लिए। कहाँ दोनों ने उसे अपनी जिंदगी से ही मानो निकाल फेंका।

मेरे साथ कहीं जाने में शर्म आती है।" रश्मि तो हिचक हिचक कर रोने लगी और माधुरी जी अवाक। इतनी प्यारी लड़की जिससे पहले अनंत भी बहुत खुश था, आज उसे गंवार लग रही है।

"मम्मी जी मैं वापस आना चाहती हूँ। हर उपाय करके देख लिया, ये मेरी किसी बात से खुश नहीं होते हैं। मेरी टिकट बनवाकर भेजिये मम्मी।"

"ठीक है बेटा तुम चिंता मत करो। मैं अभी हूँ।" माधुरी जी ने अपने पति से परामर्श किया। ऐसे तो वो किसी बात में दखल नहीं देते हैं। लेकिन आज उन्हें भी बेटे की हरकत से बहुत दुख हुआ। उन्होंने माधुरी जी को जाकर देखने को कहा और रश्मि को साथ ले आने को कहा।

रश्मि ने एक बुद्धिमानी का काम ये किया था कि अपना पासपोर्ट बनाने के समय माधुरी जी का भी पासपोर्ट बनवा दिया था। अब उन्होंने दौड़-धूप कर वीसा बनवाया और दोनों को बिना बताए फ्लाइट बुक कर कनाडा की ओर उड़ चली। पता तो उन्होंने लिया ही था रश्मि के जाने के समय। रात के दस बजे वो

रश्मि के कॉलेज का एक लेक्चरर सुमित जो रश्मि को बहुत पसंद करता था, उसने रश्मि को विवाह का प्रस्ताव दिया। रश्मि नहीं मानी तब वह माधुरी जी से मिला। वह बहुत प्रभावित हुई उससे मिलकर उसके व्यक्तित्व से, उसकी सोच से। सपना से मिल उन्होंने रश्मि को तैयार कर लिया विवाह के लिए। इन सब में छः महीने लगे तब जाकर रश्मि तैयार हुई। फिर क्या था? एक बार फिर माधुरी जी के यहाँ उनका घर सज गया और जिसे बहू बना कर लाई थीं उसे बेटी बना कर विदा किया। मन में एक संतुष्टि थी कि रश्मि के साथ जो अन्याय हुआ था उसका आज प्रतिकार हुआ।

पहुँची कॉल बेल बजाया तो दरवाजा खोला रश्मि ने। वो चौंक गई उन्हें देख और माधुरी जी अंदर का नजारा देख चौंक गई। अनंत एक लंबी गोरी लड़की के साथ एकदम सट कर बैठा ड्रिंक कर रहा था। दोनों के हाथ एक दूसरे के कमर में लिपटे हुए थे और रश्मि को खाना सर्व करने के लिए आवाज दे रहे थे बहुत कर्कशता से रश्मि को पुकार रही थी लड़की। अचानक अनंत की नजर गई, उसे शॉक लगा यहाँ मम्मी कहाँ से। फिर हकीकत समझ आने से नशा हिरन हो गया। तुरन्त लड़की को भेजा माफी माँगते हुए। माधुरी जी ने कहा "नहीं जाने मत बोलो। खाना खाने आई है खिलाकर भेजो।"

"चलो रश्मि खाना लगाओ बेटा चार थाली।" इस बात पर अनंत ने कहा कि "रहने दो ना मम्मी, वो जाना चाह रही है।"

"ठीक है, तुम गेट तक छोड़ कर आओ उसे।" अनंत गया तबतक रश्मि मम्मी के गले लग गई।

अनंत आया कुनमुनाया सा। बोलने लगा,

"एक बार खबर तो देती मम्मी, मैं एयरपोर्ट पहुँच जाता लेने।"

"ठीक है बेटा मैं आ तो गई ना, तुमदोनों को सरप्राइज भी देना था।" यह कह माधुरी जी फ्रेश होने चली गई। रश्मि खाना लगाने लगी। अनंत ने बड़े कड़े शब्दों में डाँटते हुए कहा कि "उसने ही मम्मी को फोन किया। एक बात जान लो रश्मि, मम्मी मेरी है तुम्हारी नहीं। वो कभी तुम्हारी साइड नहीं लेगी। मैं घर की एकलौती सन्तान हूँ।"

माधुरी जी अंदर से सब सुन रही थी लेकिन उन्होंने कुछ न सुनने का दिखावा करते हुए रश्मि को आवाज लगाई, "बेटा एक टॉवल दो।" रश्मि ने जाकर टॉवल दिया। उसकी आँखें पनीली हो रही थी।

"खाना लगा दिया बेटा। अनंत को बुला लो।"

"जी वो बैठे हैं। आप चलिए।" रश्मि के चेहरे की सारी रौनक कहीं खो गई थी। उसकी जगह उदासी, तकलीफ, घुटन नजर आ रहा था। माधुरी जी ने अपने आप को संयत किया और आकर डाइनिंग टेबल पर बैठ गई। अनंत मम्मी से बातें करने लगा। रश्मि खाना लगा खड़ी हो गई तो माधुरी जी ने उसे भी अपनी प्लेट लगा बैठने को कहा। रश्मि हिचकिचाई और अनंत ने भी कहा

"उसे छोड़ो मम्मी, वो बाद में खा लेगी।"

"नहीं वो हमारे साथ ही खाएगी। लगाओ रश्मि अपनी प्लेट।"

जी मम्मी, कहकर रश्मि बैठ गई और चुपचाप खाना खाने लगी। फिर अनंत अपने कमरे में चला गया और माधुरी जी के साथ रश्मि आ गई सोने। अनंत और रश्मि का कमरा भी अलग था।

"मम्मी, मुझे यहाँ से ले चलिएगा ना।"

"हाँ बेटा जरूर।" इसके बाद रश्मि उनकी गोद में सर में रख सो गई। अनंत आया और देख कर जाने लगा। माधुरी जी कुछ नहीं बोली।

अगले दिन अनंत नियत समय पर ऑफिस चला गया। माधुरी जी को बहुत आश्चर्य हुआ, एक एक बात उनसे बोलने वाला बेटा आज एकदम औपचारिक हो गया है। घर में दोनों सास- बहू रह गए। दोनों ने नाश्ता किया दोपहर का खाना उन्होंने बहू की पसन्द का बनाया और मनुहार कर करके खिलाया। तनाव में और न खा खा कर रश्मि एकदम सूख गई थी। माधुरी जी के साथ रश्मि की रौनक लौट आई। और कुछ नहीं तो शाम को दोनों सामने पार्क में टहलने निकल जाती। सारा दिन नई नई डिशेस बनाती, टीवी देखती, गप्पें मारती। लेकिन अनंत वैसा का वैसा ही था। अब काम का बहाना लेकर और भी बारह बजा देता। कुछ दिनों बाद वीकेंड में माधुरी जी ने बेटे और बहू दोनों को सामने बिठाया और

कहा -"क्या समस्या है दोनों के बीच? सच सच बताओ। मुझे लाग लपेट नहीं चाहिए।"

"मुझे रश्मि से तलाक चाहिए। मुझे इसके साथ नहीं रहना।" रश्मि की आंखों से बड़े-बड़े आंसु गिरने लगे।

"इसका दोष क्या है? मैंने रश्मि को तुम्हारी पसन्द जानने के बाद ही उसे तुम्हारी जिंदगी में लाई। तुम्हें तो बहुत पसंद थी।"

"जी मम्मी, रश्मि मुझे पसंद थी लेकिन इस सोसाइटी के लायक नहीं है। वो एडवांस नहीं है।"

"एडवांस वही न जो उस दिन तुम्हारी गर्ल फ्रेंड दिखा रही थी। किसी भी पुरुष के कमर में हाथ डाल ड्रिंक करना।" अनंत मम्मी की बात से चौंका फिर उसने कहा-- "मैं उससे शादी करने जा रहा हूँ, मम्मी।"

"शादी तो तुमने रश्मि से भी किया था, वो भी अपनी मर्जी से। हमने दबाव तो नहीं दिया था। और तुम्हें क्या भारत नहीं आना है यहीं बसना है क्या ?" माधुरी जी ने कहा तो अनंत ने हाँ में सर हिलाया।

"इसकी क्या गलती है? ये क्या करेगी, हम तो कनाडा अमेरिका में नहीं जो आज शादी करें कल तलाक दे। और हमारे बारे में क्या सोचा तुम्हारी आशा लगाए बैठे रहते

उपयोगकर्ता के अनुरूप अगर हम गणना करेंगे, इसकी संख्या के अनुरूप प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या को अगर हम कुल मिलाकर देखेंगे तो विश्व स्तर पर हिंदी प्रथम भाषा के रूप में है। मंदारिन के अंतर्निहित लगभग 300 अन्य भाषाएं हैं। दूसरी ओर, भारत की प्रथम अनुसूची में जिन 22 भाषाओं के बारे में कहा गया है उनकी ज्यादातर की लिपियां तो देवनागरी ही है फिर उनके संख्या को घटाकर के हिंदी के प्रयोग करने वालों की संख्या को क्यों बताया जाता है?

हैं, इसी दिन के लिए कि बेटा विदेश जाकर विदेशी लड़की के साथ शादी करके बस जाए।"

"आप दोनों को मैं यहीं बुला लूँगा मम्मी।" अनंत ने कहा तो माधुरी जी अपने पराए होते बेटे को देखती रह गई। रश्मि मूरत की तरह दोनों माँ बेटे की बातें सुन रही थी।

"ठीक है बेटा, तुमने अपनी बात कह दी। अब मेरी बात सुनो। हमारे यहाँ शादी-विवाह गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं है। सात जन्मों का बंधन होता है ये। आज नहीं बाद में समझ आएगा तुम्हें। रही मेरी बात तो जिस दिन तूने इसके साथ फेरे लिए,इसकी माँग में सिंदूर भरा। ये मेरे घर की बहू, गृहलक्ष्मी बन गई।" माधुरी जी रुकीं, पानी पीया और फिर कहना शुरू किया।

"तुम दूसरी शादी कर लो मुझे कोई समस्या नहीं क्योंकि शादी मन का, आत्मा का बंधन है और तुम्हारा मन ही यदि रश्मि से उचट गया है तो जबरदस्ती का बन्धन मैं नहीं डालूँगी। रश्मि मेरी बहू भले ही नहीं रहे, बेटी हमेशा रहेगी। तुम खुश रहना।"

"मैं रश्मि को लेकर अगले सप्ताह जा रही हूँ। तलाक लेने तो भारत आना ही होगा तुम्हें। नहीं तो मैं रश्मि से साइन करवा डिवोर्स पेपर भिजवा दूँगी।"

अनंत अपनी मम्मी को देखता रह गया। यूँ भी मम्मी हमेशा सीधे सपाट शब्दों में कहना सुनना पसंद करती हैं। माधुरी जी रश्मि को ले उसके कमरे में चली गई। किसी तरह एक सप्ताह बीता। फिर दोनों एयरपोर्ट गए। अनंत भी साथ में गया। माधुरी जी बहुत संतुलित थी, हृदय में उथल-पुथल मची हुई थी। रश्मि तो किसी से कुछ नहीं बोल रही थी। अनंत ने मम्मी को प्रणाम किया उन्होंने कुछ नहीं कहा केवल सर पर हाथ रख दिया। रिक्त हृदय, उहापोह, अशांत मन लेकर माधुरी जी भारत आई।

सभी चौंक गए रश्मि को देखकर। रश्मि की माँ सपना आई। बेटी की हालत देख

अवाक रह गई। बुझे मन से माधुरी जी ने सब बताया।

"अब मधु, मेरी बेटी का जीवन बरबाद हो गया न। मैं क्या करूँगी,मेरी बेटी कैसे जीवन काटेगी ?" सपना आर्तनाद कर उठी।

"इन सब की दोषी मैं हूँ सपना। मैं अपने बेटे को सही परवरिश दे नहीं पाई। लेकिन रश्मि का जीवन क्यों बर्बाद होगा ? उसके जीवन को मैं संवारूँगी। एक दिन गर्व करेंगे हम अपनी बेटी रश्मि पर। अभी उसे संभालने की जरूरत है।"

सपना ने सिर हिलाया। वो तो किंकर्तव्यविमूढ़ थी बेटी की हालत देख कर। कुछ दिन उन्होंने छोड़ दिया रश्मि को सामान्य होने के लिए। फिर एक दिन रश्मि के सामने जाकर बैठी और उसके रेशमी बालों को सँवारते हुए बोली--"बेटा, तुम पीएचडी कर लो।"

"क्या करूँगी मम्मी आगे पढ़कर।" बड़े नैराश्य से रश्मि ने कहा। उसकी सूनी आँखे माधुरी जी के हृदय को चीर दे रही थी।

"बेटा देखो किसी के जाने से जिंदगी नहीं रुकती है। तुम आगे बढ़ो। अपनी पढ़ाई पूरी करो,अपने पैरों पर खड़ी हो।"

"मुझे माफ़ कर दो बेटी आज मेरे कारण तुम्हारी जिंदगी भँवर में आ गई।" इतने दिनों से खुद को संभालती माधुरी जी आज रो पड़ी। रश्मि के सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई। रश्मि हड़बड़ाकर खड़ी हो गई और उनका दोनों हाथ पकड़ लिया।

"नहीं, मम्मी नहीं, आप हाथ मत जोड़िए। आपकी कोई गलती नहीं है। मेरी किस्मत ही खराब है।" इसके बाद तो दोनों सास-बहू एक दूसरे के गले लग कर खूब रोई। आज माधुरी जी का पूरा हृदय से भड़ास निकला, खुद को सशक्त दिखाते हुए उनका हृदय कितना घायल और दुखी था, ये वो बता भी नहीं पाती थीं। आज दोनों ने एक दूसरे से वादा लिया कि कभी रोयेंगे नहीं और जिंदगी में आगे बढ़ेंगे।

फिर रश्मि चल पड़ी एक नई राह पर पीएचडी किया और एक कॉलेज में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हो गई। माधुरी जी का तो दिन रश्मि से शुरू होता और रात रश्मि से खत्म होती। रश्मि के साथ शॉपिंग जाना, मूवी जाना, पार्क जाना उनका प्रिय शगल हो गया था। रश्मि भी अपनी नई जिंदगी में रम गई थी।

एक दिन रविवार का दिन था। सब हँसी मजाक कर रहे थे। अनंत के पापा अपने दोस्त के साथ शतरंज खेलने में लगे हुए थे। माधुरी जी रश्मि के साथ मॉल जाने की तैयारी कर रही थी। रश्मि ने जल्दी से चाय नाश्ता बना कर पापा जी के आगे रख दिया और मम्मी के साथ गेट की ओर बढ़ी। तभी एक गाड़ी आकर रुकी और उसमें से अनंत बाहर निकला साथ में वही विदेशी लड़की सूजी थी। रश्मि तो ठिठक कर खड़ी हो गई। माधुरी जी चुप दोनों को देखती रहीं, अनंत ने पैर छुए।

"मम्मी कहीं जा रही थीं क्या ?" उसने रश्मि की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा।

"जा रही थीं नहीं, बेटा जा रही हूँ। रश्मि मेहमान आये हैं, जरा चाय नाश्ता लगा दो।" सुन रश्मि अंदर चली गई।

"मैं मेहमान हूँ मम्मी? मैं आपका बेटा हूँ और ये आपकी बहू है। और मम्मी ये रश्मि अभी भी यहाँ क्यों है? मैंने तो तलाक दे दिया था उसे। थोड़ा भी स्वाभिमान नहीं है क्या?" अनंत का इतना कहना था कि माधुरी अपने स्वभाव के विपरीत चिल्लाई जोर से---"चुप अनंत, एकदम चुप रहो, एक शब्द मत बोलना। अन्यथा तुम बेइज्जत हो जाओगे। और रही बात स्वाभिमान की तो मैंने वहीं तुम्हें कह दिया था कि अब रश्मि मेरी बहू न रहे बेटी हमेशा रहेगी। इसका अपमान करने की कोशिश भी मत करना, वरना मैं भूल जाऊँगी कि तुम मेरे बेटे हो।"

"माँ एक पराई लड़की के लिए आप अपने बेटे से उलझेंगी। मैं तो इस बार आप

जब यहाँ से गया तो कुछ दिन ठीक बीते। सूज़ी भी ठीक थी। उसे क्लब पार्टियाँ पसन्द थी। मैं भी जाता था साथ में। लेकिन क्लब में अब उसे एक दूसरा अमीर लड़का पसन्द आ गया, उसके साथ घूमना, रात बिताना शुरू हो गया। मैं मना करता तो झगड़े होते। इसी में आर्थिक मंदी छा गई और कंपनी से अनेक स्टाफ की छँटनी हो गई जिसमें मैं भी था। अब मेरे पास नौकरी नहीं थी। सूज़ी भी इन हालातों में मुझे छोड़ अपने उस बॉयफ्रेंड के पास चली गई। मैंने किसी तरह घर के सामान बेचकर टिकट के पैसे जुटाए और यहाँ आया। माँ, रश्मि के साथ अन्याय करने की भगवान ने मुझे सजा दी। मैं उससे माफी माँगना चाहता हूँ। अब मैं एक नई जिंदगी उसके साथ शुरु करना चाहता हूँ।

दोनों को चलने के लिए कहने आया हूँ। आप मुझे ही डाँट रही हैं। मैंने सूजी से आपकी कितनी तारीफ की है माँ। वो क्या सोचेगी?" अनंत ने रुंआसा होकर कहा तो माधुरी जी जोर से हँसी "मैं तो भूल गई थी बेटा कि तुम जैसा नमकहराम, निर्लज्ज बेटा भी है मुझे। रश्मि एक बेटी है बस यही याद रहा मुझे। यह जीवन में बहुत मुश्किल से आगे बढ़ी है। इसका अपमान मत करना। यह मेरा अपमान होगा।"

"रश्मि, चाय नाश्ता दो बेटा मेहमानों को।" माधुरी जी की आवाज पर रश्मि आई उन लोगों के लिए नाश्ता लगाया।

"अब चलो बेटा।" कहकर माधुरी जी रश्मि का हाथ पकड़ बाहर निकल गई। अनंत ठगा सा देखता रहा गया। उसके पापा तबतक बाहर आये, उनके दोस्त जा चुके थे। उन्होंने दोनों को बिठाया। अनंत मम्मी के व्यवहार से कुंठित चुपचाप बैठ गया।

"पापा, मम्मी अपने बेटे की जगह दूसरी

लड़की का साइड ले रही है। मैं आप लोगों की एकलौती सन्तान हूँ। काम तो मैं ही दूँगा। मेरी गलती यही है ना कि मुझे सूजी से प्यार हो गया और मैंने उससे शादी कर ली।'' अनंत ने पापा की सीधेपन का फायदा उठाते हुए उन्हें अपनी ओर करना चाहा।

''देखो बेटा, मैं कभी तुमलोगों के मामले में दखल नहीं देता लेकिन इस बार मैं तुम्हारी मम्मी से सहमत हूँ। तुम घर के बेटे हो इस नाते जितने दिन इज्जत से रह सकते हो, रहो। फिर इज्जत से चले जाना। हमसे कोई उम्मीद मत रखना। तुम्हारी करतूत से हम कहीं मुँह दिखाने के लायक नहीं रहे।'' पापा की इन बातों से अनंत समझ गया कि अब वह मम्मी पापा दोनों की नजरों से गिर गया है। वह मम्मी का इंतजार करता रहा। वह आई रश्मि के बिना। रश्मि अपनी मम्मी के यहां रुक गई थी। माधुरी जी आई और वहीं बैठ गई। अनंत की हिम्मत नहीं हुई कुछ बोलने की। कहाँ तो वो आया था आशीर्वाद लेने और मम्मी पापा को मना कर अपने साथ ले जाने के लिए। कहाँ दोनों ने उसे अपनी जिंदगी से ही मानो निकाल फेंका।

''मम्मी मैं जा रहा हूँ, मैं इंतजार करूँगा उस दिन का जब आपलोग मेरे पास रहने के लिए खुद आएंगे।'' इतना कह वह सूजी के साथ चला गया।

माधुरी जी पति का हाथ पकड़ खूब रोई।

अगले दिन से उनका सामान्य रूटीन शुरू तो हो गया लेकिन जीवन ऐसे ही नीरस सा बीत रहा था। अनंत के आने से उनका मन अस्थिर सा डोल रहा था। रश्मि अपने आप को इन सबका दोषी मान उदास सी रहती थी। तब माधुरी जी ने फिर से घर के माहौल को ठीक करने के लिए अपने जन्मदिन की पार्टी दी। अनंत के पिता ने एक बहुत सुंदर उन्हें घड़ी दी। सपना ने साड़ी दी और रश्मि ने तो उपहारों का ढेर लगा दिया। खुद केक बनाई, बहुत सारे व्यंजन बनाई,अपने कुछ दोस्तों को भी बुलाई। सब खूब नाचे गाये, फ़ोटो खिंचवाए। माने जिंदगी को पटरी पर लाने की कोशिश हुई।

जीवन एक फांस के साथ फिर से पूर्ववत शुरू हो गया।

इस बीच रश्मि के कॉलेज का एक लेक्चरर सुमित जो रश्मि को बहुत पसंद करता था, उसने रश्मि को विवाह का प्रस्ताव दिया। रश्मि नहीं मानी तब वह माधुरी जी से मिला। वह बहुत प्रभावित हुई उससे मिलकर उसके व्यक्तित्व से, उसकी सोच से। सपना से मिल उन्होंने रश्मि को तैयार कर लिया विवाह के लिए। इन सब में छः महीने लगे तब जाकर रश्मि तैयार हुई। फिर क्या था? एक बार फिर माधुरी जी के यहाँ उनका घर सज गया और जिसे बहू बना कर लाई थीं उसे बेटी बना कर विदा किया। मन में एक संतुष्टि थी कि रश्मि के साथ जो अन्याय हुआ था उसका आज प्रतिकार हुआ।

माधुरी जी आज अकेले बैठ अपने जीवन के उतार-चढ़ाव का अवलोकन कर रही थी। शाम का धुंधलका छा रहा था। बाहर स्ट्रीट लाइट अभी जली नहीं थी।पति रश्मि के यहाँ गए थे पगफेरे कराने के लिए। तभी उन्होंने देखा गेट से कोई अंदर घुसा। "कौन है? ''कहकर आगे बढ़ीं तो चेहरा थोड़ा स्पष्ट हुआ बढ़ी हुई दाढ़ी अस्त -व्यस्त कपड़े पहने अनंत खड़ा था। मन काँप गया। माँ थीं वो। कर्तव्यपालन करते करते भी माँ का हृदय एक कोने में छुपा हुआ था।

''माँ मुझे माफ़ कर दो। मैंने आप सबको बहुत तकलीफ दी। मुझे सबसे माफी माँगनी है कह अनंत उनके पैरों पर गिर पड़ा। वो झुककर अनंत बेटा अनंत पुकारने लगीं लेकिन वो तो बेसुध हो गया था। तुरन्त दौड़कर पानी लाई। चेहरे पर छिड़का, होश में लाई और सहारा देकर उसके रूम में ले गई। रसोई में जाकर गरम गरम चाय बना कर लाई और पीने को कहा।

''अच्छा लगेगा बेटा, पी लो।''

''माँ आपने मुझे माफ़ कर दिया। मैंने सबका दिल दुखाया जिसे मैं जीवन में सबसे ज्यादा प्यार करता था उस माँ का दिल दुखाया।''कह वह फूट-फूट कर रोने लगा। फिर वह चाय पीकर थोड़ा स्वस्थ हुआ तो अपनी आपबीती सुनाने लगा।

जब यहाँ से गया तो कुछ दिन ठीक बीते। सूजी भी ठीक थी। उसे क्लब पार्टियाँ पसन्द थी। मैं भी जाता था साथ में। लेकिन क्लब में अब उसे एक दूसरा अमीर लड़का पसन्द आ गया,उसके साथ घूमना, रात बिताना शुरू हो गया। मैं मना करता तो झगड़े होते। इसी में आर्थिक मंदी छा गई और कंपनी से अनेक स्टाफ की छँटनी हो गई जिसमें मैं भी था। अब मेरे पास नौकरी नहीं थी। सूजी भी इन हालातों में मुझे छोड़ अपने उस बॉयफ्रेंड के पास चली गई। मैंने किसी तरह घर के सामान बेचकर टिकट के पैसे जुटाए और यहाँ आया। माँ, रश्मि के साथ अन्याय करने की भगवान ने मुझे सजा दी। मैं उससे माफी माँगना चाहता हूँ। अब मैं एक नई जिंदगी उसके साथ शुरू करना चाहता हूँ।

माधुरी जी तो एकदम शॉक्ड हो गई। सब कुछ लुटा कर आज बेटा सही राह पर आया है।

''माफी मांग लेना बेटा रश्मि से लेकिन उसकी नई जिंदगी शुरू हो गई है। आठ दिन पहले ही हमने एक बहुत अच्छे लड़के के साथ उसकी शादी कर दी। उसका नया जीवन शुरू हो गया। पापा वही गए हैं पगफेरे की रस्म कराने के लिए। आज ही उसकी शिमला की फ्लाइट है हनीमून के लिए हमारे तरफ से।''

''बेटा, अब तुम अपने किए का लेखा-जोखा करो। माँ हूँ, दुत्कार भी नहीं सकती। लेकिन तुमने जो मर्मान्तक चोट हम सबको पहुंचाई है, वो मैं भुला भी नहीं सकती। अभी रश्मि आएगी। एक घण्टे रुक कर निकल जायेगी। तुम कोई नाटक मत करना।''

आज लग रहा था अनंत को, सचमुच उसका अब अब कुछ खत्म हो गया। माफी माँगने के लायक भी नहीं रहा वह। यह सजा अब उसे सारा जीवन भुगतना है।

• • •

कथाकार तथा उपन्यासकार

पितृपक्ष

– मनोज कुमार श्रीवास्तव

कौआ था
कुत्ता था
चींटी थी
गाय थी
और देवता भी
जिसे कहीं ब्राह्मण
तो कहीं कन्या में लक्षित किया
जाता था

सबको अपने भोजन का एक
अंश देना था

देवताओं के पास
विश्व-बुद्धि थी

विश्वविद्यालयीन नहीं

होती तो आपत्ति करते
कि हमें कुत्ते की तरह समझा
कि हमें कौए की तरह समझा

हमारी पूजा की कि हमें गाली दी

और आप भौंचक रहते

कि आपने तो सिर्फ़ थाली दी

•••

पितर ही थे कागभुशुंडि
रामकथा कहते हुए थकते न थे

इतना आदर था स्वत: उनका
कि उन्हें नहीं कहना पड़ा

कि आज जो
ऑक्सीटोसिन खाकर मरती हुई
उनकी संतति

जो बुद्धि में अभी भी प्रखर है
को कहना चाहिए

ब्लैक लाइव्स मैटर

•••

लोगों को लगता है
ये कौए
ये चींटी
ये कुत्ता
ये गाय
ये सब मध्यस्थ हैं
या दूत हैं

पितरों तक
ले जाने वाले
हमारा निवेदन

बिचौलिये की तरह
एक साधन

पितर कहीं दूर हैं
उनके लिए ले जाओ
दोने भर भर

यह जन्म मरण श्रृंखला
व्यर्थ हुई

कि जब हमें
उनमें ही न दिखे
पितर

•••

सृष्टि से प्रेम होगा
तो चींटी तक का ख़्याल रहेगा
कि इसकी भी कोई भूमिका है
इस सृष्टि के यों बनने में
और इसलिए यह भी पितर है

दावा यदि
सृष्टि से अलग
किसी सृष्टा की
आज्ञाकारिता का होगा

तो चींटी की तरह मसल दोगे
उस सृष्टि को भी
जो तुम्हारे पितरों का घर है

•••

यह कुत्ता तुम्हें देखता हुआ
यह चींटी
अपने से कई गुना भार लेकर
चलती हुई
यह कौआ
बिजली के इस तार पर
और यह गाय
आँखों में तुम्हारे सारे अपकर्मों
के बावजूद
ममता लिए

तुम्हें लगा कि
तुम्हारे समक्ष वह भी हुआ

वह जो परमपिता है
तो पितृपक्ष का
एक पक्ष वह भी हुआ

•••

गड़े मुर्दे थे वे
हमारे पूर्वज न थे

और ये तो रस्म है कि
हम पितृपक्ष मनाते हैं

हमें तो निष्पक्ष होना है
ऐसे कि जैसे वह युद्ध अभी भी
जारी है

वह दृष्टि ही नहीं है
कि है वह आधुनिकता
जिसमें सोये कुत्तों को सोये रहने
देना है

या तो वे मुर्दे हैं या वे कुत्ते

पता नहीं कब वे इन्सान हुआ
करते थे

पता नहीं कब उस लिहाज़ से
आज़ादी के लिए लड़ने वाले भी
गड़े मुर्दे हो जायेंगे

कोई अवधि तो निश्चित कर देनी
चाहिए न
कि जिसके बीतने के बाद
कोई उत्सर्ग गड़ा मुर्दा हो जाये

अन्यथा स्वतंत्रता के लिए तो
वे भी लड़े थे
जो आज गड़े मुर्दे लगते हैं

अब यह हमारा ही क़ुसूर है
कि ऐसे मुर्दे हैं
जो हमने गाड़े नहीं जलाये थे

कि वे हमारे हृदय में जलते रहें
एक अर्चिका की तरह
और ज्योति ये बुझे नहीं

इनका क्या करें
कि इनको लेकर भी

किसी फ़ैसले का इन्तज़ार है

कि हश्र के दिन ये मुर्दे ही
पुकारेंगे

•••

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
(से.नि.), मध्य प्रदेश शासन

अत्यंत समृद्ध है भारत में नृत्यों की परंपरा

– रमेश चन्द्र

भारत के शास्त्रीय नृत्य रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवदगीता आदि किसी शास्त्र पर आधारित होते हैं और उनका मंचन उनकी किसी कथा विशेष में अनुस्यूत प्रसंग, घटना आदि को लेकर होता है। भारत में रहन-सहन, पहनावे, अवधारणाओं, संस्कृति और संस्कारों आदि की विभिन्नता के कारण इसके शास्त्रीय नृत्यक कथक, भरत नाट्यम, कूचीपूड़ी, ओडिसी, मणिपुरी, कथकली, मोहिनियट्टम् और सत्रीय में विभाजित हो गए हैं। इनके निष्पादन के सिद्धांत इतने कठोर हैं कि इन्हें किसी गुरु से ही सीखना पड़ता है।

किसी भी देश के विकास के मुख्य रूप से दो आधार-स्तंभ होते हैं – उस देश में ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी की स्थिति तथा उसकी संस्कृति की समृद्धि। इन दोनों स्तंभों की एक लंबी परंपरा होती है और उस परंपरा के पोषण का इतिहास हुआ करता है। ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी मुख्य रूप से देश और अन्य देशों के सापेक्ष स्थिति को दर्शाते हैं और भविष्योन्मुखी होते हैं। संस्कृति में देश की जीवंतता के आधार होते हैं, जो उसे नैतिक रूप से उत्थित, प्रमुदित, सुसंस्कृत, अनुशासित और नियंत्रित रखते हैं और व्यक्ति को समाज का तथा समाज को देश का अभन्नि अंग बनाते हैं। इस तरह संस्कृति की प्रकृति श्लेषात्मक होती है।

संस्कृति एक व्यापक विषय है और इसमें इसके सब तत्वों का समुत्थान देश को गौरवान्वित करता है। संस्कृति के मोटे तत्वों में शास्त्रीय और लोक नृत्य, संगीत और कला, त्योयहार और मेले, धर्म और जातियाँ, वास्तुकला और विरासत, खेल और मेल भावना आदि शामिल होते हैं। ये तत्व अपने अंदर मुख्यत:समूह भावना को वेष्टित किए हुए होने के कारण सामूहिकता को प्रदर्शित करते हैं। दूसरी ओर इसके सूक्ष्म अर्थात् आत्मिक तत्वों में आस्था, आत्मर तत्वक, ज्ञान, आसक्ति, कर्म, सत्य , शिक्षा, गुण, अहिंसा, विनय, क्षमा, ईमानदारी, सहिष्णुता, नैतिकता, प्रेम, मानवीयता, न्यादय, समानता, देशभक्ति, मान, लाज, सदाचार, अक्रोध, शांति, कृतज्ञता, संस्कार आदि होते हैं। इस तरह संस्कृति देश के समूचे रहन-सहन, खान-पान, बौद्धिक ज्ञान आदि को समेटे हुए होती है। इन तत्वों की अपने आप में इतनी व्यापकता होती है कि इन पर अकेले भारत देश में वेद, उपवेद, दर्शन, पुराण, सूत्र, अंग, पिटक और न जाने क्या-क्या ग्रंथ लिख दिए गए तथा इनके पालन-अपालन को लेकर राम-रावण युद्ध, महाभारत और अन्य कितने युद्ध हो गए, स्वयं ईश्वर ने कितने अवतार लिए, तो भी उस व्यापकता की सीमा कभी देखने में नहीं आई। इसलिए संस्कृति के सभी तत्वों को, यहाँ तक कि किसी तत्व विशेष के सभी पहलुओं को, एक जगह उदघाटित करना सहज कार्य नहीं होता।

इस चर्चा का विषय केवल भारत के शास्त्रीय और लोक नृत्य हैं। अत: उन्हीं की बात करते हैं। भारत के शास्त्रीय नृत्य रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवदगीता आदि किसी शास्त्र पर आधारित होते हैं और उनका मंचन

उनकी किसी कथा विशेष में अनुस्यूत प्रसंग, घटना आदि को लेकर होता है। भारत में रहन-सहन, पहनावे, अवधारणाओं, संस्कृति और संस्कारों आदि की विभिन्नता के कारण इसके शास्त्रीय नृत्यक कथक, भरत नाट्यम, कूचीपूड़ी, ओडिसी, मणिपुरी, कथकली, मोहिनियट्टम् और सत्रीय में विभाजित हो गए हैं। इनके निष्पादन के सिद्धांत इतने कठोर हैं कि इन्हें किसी गुरु से ही सीखना पड़ता है।

कथक नृत्य कभी उत्तरी भारत के राजा-महाराजाओं के संरक्षण में फला-फूला था और शुद्ध मनोरंजन के लिए हुआ करता था। यह पैरों में घुँघरू बांधकर तालबद्ध रूप में चक्कर लगाकर किया जाता है। इसमें मुख्यत: हिंदुओं की धार्मिक कथाओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण किया जाता है। भरत नाट्यम् तमिलनाडु राज्य से संबंधित है। यह अपने में भरतचरित काव्य 'नाट्यशास्त्र ' के सिद्धांतों को समाहित किए हुए है। यह एक प्रकार के निवेदन से शुरू होता है, जिसे अलारिप्पु कहा जाता है। उसके बाद इसमें विभिन्न शैलियों और गतियों की भंगिमाएँ एवं श्रृंखलाएँ होती हैं। इसमें भाव, राग और संगीत के समन्वयन के 64 सिद्धांतों का अनुकरण किया जाता है।

कूचीपूड़ी की उत्पत्ति आंध्र प्रदेश के कूचीपूड़ी गाँव में 17वीं शताब्दी में हुई मानी जाती है। कुछ मामलों में यह भरत नाट्यम के समान है तथा संगत और वेशभूषा की दृष्टि से उसी का संशोधित रूप है। प्रारंभ में यह नृत्य आंध्र प्रदेश के मंदिरों में किया जाता था। ओडिशी आंध्र प्रदेश में 17वीं शताब्दी के पहले पनपा, जहाँ यह महिलाओं और पुरुषों द्वारा महिला पोशाकों में प्रस्तुत किया जाता है। इस नृत्य का उद्भव मंदिर में नृत्य करने वाली देवदासियों के नृत्य से हुआ। कथकली केरल का पौराणिक नृत्य है, जिसमें नृत्य और नाटक के उच्चव आदर्शों के सिद्धांतों के आधार पर रामायण, महाभारत और पुराणों की एक कहानी प्रस्तुत की जाती है।

मणिपुरी की उत्पत्ति मणिपुर प्रदेश में हुई, जिसमें नर्तकी भाव-भंगिमाओं द्वारा नहीं, बल्कि शरीर की गति द्वारा भाव व्यक्त करती है, जो उसकी शालीनता से प्रदर्शित होता है। नृत्यांगना यह नृत्यक भड़कीली पोशाक पहनकर और चेहरे को शीशों से जड़ी हुई चुनरी से ढककर करती है। यह नृत्य राधा-कृष्ण की विषय-वस्तु पर आधारित होता है। केरल की महिलाओं का मोहिनीयट्टम् नृत्य कथकली और भरत नाट्यम का मिला-जुला रूप है। प्रारंभ में यह केरल के मंदिरों में किया जाता था। सत्रीय नृत्य असम का शास्त्रीय नृत्य है। इसे भारत के शास्त्रीय नृत्यों में वर्ष 2000 में शामिल किया गया। इसका आरंभ संत शंकरदेव द्वारा असम के वैष्णव मठों, जो सत्रा नाम से जाने जाते हैं, में किया गया माना जाता है।

शास्त्रीय नृत्यों के अलावा भारत में लोक नृत्यों की भी एक समृद्ध परंपरा है। ये नृत्य किसी शास्त्र विशेष पर आधारित न होने के कारण भिन्न-भिन्न समाजों में समय के साथ स्वयमेव विकसित होते गए। कुछ लोक नृत्य किसी पर्व विशेष पर, कुछ अवसर विशेष पर, कुछ ऋतु विशेष के आगमन पर, कुछ फसलों के बोने अथवा काटने के समय तथा कुछ अन्य अवसरों पर खुशियाँ प्रकट करने के लिए किए जाते हैं। इनके मंचन के कोई सिद्धांत नहीं होते, बल्कि स्थान विशेष के लोग इन्हें अपने परिधानों और अपनी शैली विशेष में करते हैं। फिर भी वे परिधान, शैलियाँ, शब्द, भाव-भंगिमाएँ और उनकी पृष्ठ भूमियाँ इतनी रूढ़ हो गई हैं कि उनका पालन भी शास्त्रीय नृत्यों के शास्त्रों में उल्लिखित निर्देशों से कमतर नहीं होता और जब उनका पालन नहीं होता तो वे समाज में मान्य ही नहीं होते। इन्हें किसी गुरु विशेष से नहीं सीखा जाता, बल्कि ये समाज में रह कर उसके लोगों को स्वयं ही आ जाते हैं।

इन लोक नृत्यों को पूर्वोत्तर से आरंभ करें तो अरुणाचल प्रदेश की आका जाति का एक धार्मिक नृत्यं चेकोलोको पाक्षीस्यू है। इसमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती हैं। यह पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा किया जाता है। पुरुष सफेद सिर-वस्त्र और कपड़े तथा कमर में मैरून अंगोछा बांधकर तथा स्त्रियाँ ज्यामितीय नमूनों के चित्र वाले मैरून रंग के लंबे ब्लाउज पहनकर और चेहरे पर चाँदी की चेनें लटकाकर अपनी कतारें मिलाते हुए करते हैं। प्रदेश के अन्य लोक नृत्य बुइया, चालो, वांचो, पासी कोंग्की, पोनुंग, पोपिर, बार्दो छाम आदि हैं।

त्रिपुरा के लोक नृत्यों में रियांग समुदाय का होजागिरि; त्रिपुरी समुदाय के गारिया, झुम, मैमिता, मसाक सुमानी, लेबांग बूमानी नृत्यय; चकमा समुदाय का बीझू नृत्य ; लुसाई

समुदाय के चेराव और वेल्काम नृत्य,; मालसुम समुदाय का हाई-हक नृत्य ; गारो समुदाय का वांग्लाद नृत्यई; मोग समुदाय के सांगरैका, चिमिथांग, पाडिशा, अभांगमा नृत्यक; कलाई और जमातिया समुदायों का गारिया नृत्य; बंगाली समुदाय के गजन, धमैल, सारी और रबींद्र नृत्यी; मणिपुरी समुदाय के बसंत रास और पुंग चोलम् नृत्यु हैं। एक नृत्य असम का देवधनी है, जो अविवाहित लड़कियों द्वारा पदमा देवी के सामने बाल खुले रखकर किया जाता है। नृत्य के चरमोत्कर्ष पर पहुँचते-पहुँचते वे तन्मायता में मूर्छित होकर देवी से संपर्क साधती प्रतीत होती हैं। खेल गोपाल, बिहू, कलिगोपाल, महा रास, नटपूजा, बोई साजू, खल चांगबी, होब्जा नाई नानानृत्यै, राखल लीला, झुकुरा बिदुआ आदि असम के कुछ अन्य लोक नृत्यू हैं।

मणिपुर में उधुकुल रास नृत्यन किया जाता है, जिसमें कृष्ण की बाल लीलाओं का चित्रण होता है। कुंजु रास और नित्यु रास राज्या में पूरे साल किए जाते हैं। गोपा रास नृत्यी में नारद द्वारा कृष्णर और बलराम को गाय को चारा खिलाना सिखाया जाता है। पुंग चोलम् नृत्य नगाड़े बजाकर किया जाता है। लाई हाराओबा मणिपुर का सबसे प्राचीन नृत्य। है, जो भगवान थांमजिना (शि०) को प्रसन्ना करने के लिए किया जाता है। इस नृत्य में लड़के और लड़कियाँ मणिपुर के मिथकीय प्रेमियों खांबा और थोइबी की कहानी का मंचन करते हैं। लाइपु चोंगबा नृत्यर देवी-देवताओं का धन्यवाद करने के लिए गीत गाती माइबियों(पुजारिनों)की अगुआई में किया जाता है। वसंत रास नृत्य होली के समय किया जाता है। राल नृत्य कोईंग जाति के पुरुषों का युद्ध नृत्यत है। नृत्या में वे काले रंग की लंबी नोकदार टोपी पहने हुए होते हैं, जिसके नीचे से लंबे बाल कंधों पर गिर रहे होते हैं। हाथों में धनुष-बाण होते हैं। वे संघर्ष सूचक साधारण इशारे करते हैं। नृत्ये के दौरान ढोल, बांस की पट्टियाँ, गोंग और भैंस के सींग बजाए जाते हैं। थांग टा, थाबाल, चोंगल, किटलाम, खोंगजाम पारबा, संकीर्तन, व्यां गटा, की तलम, थाबल चोंगबी, महा रास, राखाल प्रदेश के अन्य लोक नृत्यस हैं।

लाहो मेघालय की जयंतिया जनजाति का नृत्य है। प्रदेश के अन्य नृत्य शाद सुकीमशीम, शाद नोंगक्रेम, डेरोगाटा, डो डु सुआ हैं। खुल्ल म्, बंबू, चैलम्, चेराव, पखुपिला, चेरोकान मिजोरम के नृत्य, हैं। एक चेरेमू नृत्य सिक्किम का है, जो नृतकों द्वारा फोगखो (लंबे व ढीले गाउन)पहनकर कतारों में मिलते हुए किया जाता है। मोंद्रयाक लोक प्रदेश की लेपचा जाति के पुरुषों द्वारा ग्रामीण मेलों और त्योहारों के दौरान किया जाता है, जिसमें वे शिकार की शैली प्रदर्शित करते हैं। चू फाट, सिकमारी, सिंघी चाम, याक चाम, डेजोंग ग्नेन्हा, तासी यांग्कु, खुकुरी, मारूनी, चुके आदि प्रदेश के अन्य लोक नृत्य हैं। नागालैंड में केदोहोह, खेवा,लिम, नूरालिम, कुमीनाग, रेगमा, चोंग, मोडसे, अगुरसिकुकुला, बटरफ्लाई, आलुयट्टू, कुकी, लेसालप्टू , रेंग्माह, सीचा, सदल केकई, चांगई, खांबा लिम, मयूर, मोनियावशो, कुकई कोचो, शंकई, मोयाशाई आदि लोक नृत्यल किए जाते हैं।

भारत के पूर्व में पश्चिमी बंगाल में पारंपा नृत्य खंभों के सहारे किया जाता है। इसके अतिरिक्त जात्रा, कीर्तन, बाउल, जया, गंभीरा, रामभेसे, काठी भी प्रदेश के अन्य लोक नृत्यू हैं। पूर्व में ही बिहार में झींका दसाई एवं लाग्रोनृत्यर संथाल जन-जाति के स्त्रीज-पुरुषों द्वारा भूत-प्रेत भगाने के लिए किया जाता है। उन्हीं द्वारा विवाह की खुशियाँ प्रकट करने के लिए नेटुआ डाक वापला डोन नृत्य भी किया जाता है, जिसके दौरान स्त्रियों के हाथों में तलवार तथा कमर में शीशा-जड़ी पट्टी होती है। नाचते समय वे एक गोला बना लेते हैं। प्रदेश के अन्य लोक नृत्यत कर्मा, झिझिया, कजरी, झूमर, भोजपुरी झूमर, मगही झूमर, जाट जाटिन, झूमरी, सोहर खेलवाना, होली, छठ पूजा, देवस, कृषि नृत्या, किसान नृत्यह, चैता, नाचनी, नटुआ आदि हैं। ब्रिटा, गंभीरा, छऊ, तुसु, लाठी, बाउल आदि हैं। झारखंड में छाऊ, घुमकुड़िया, जदूर, सरहूल, सोहराई, बैमा, लुझरी, मूका, सेंदरा, माधी, जाट-जाटनी, जाया, विदायत, कीर्तनियाँ, पँवरिया, सामाचकेवा, बखो-बखाइन, बिदेशिया, माधा, जातरा, कर्मा, अग्नि, जनानी झूमर, मरदाना झूमर, पाइका, फगुआ, छानु, सरहुल, डांगा, हुंटा, मुदरी, बराव, झिटका, डोमकच, घोड़ा आदि लोक नृत्य किए जाते हैं।

पश्चिमी भारत में गुजरात का एक नृत्या कहाड़िया है, जिसमें कलाबाजी दिखाई जाती है। डांडिया और गर्भा प्रदेश के प्रसिद्ध लोक नृत्य हैं। डांडिया वडोदरा के निकट मेड़ जाति का नृत्य है, जिसमें नृतकों का एक दल सफेद

रंग की पगड़ी और अंगड़ी (कमर तक का वस्त्र) पहनकर उछलता है और उछलते हुए अपनी डंडियों को चटकाता है। दूसरा दल ढोल झांझा और बीन बजाता है। प्रदेश के अन्य लोक नृत्य टिप्पणी, पाधर, हूडो आदि हैं। राजस्थान के छड़ी नृत्य में स्त्रियाँ गेरुए रंग के वस्त्रु पहने और सिर पर पीतल की टोकणी रखे हुए संगीत की लहर पर थिरकती हैं। जनमाष्टमी के अवसर पर किए जाने वाले इस नृत्य के समय पुरुष अपने हाथ में गुगा नामक पीर की एक बहुत लंबी छड़ी रखते हैं,जिसके ऊपर वाले सिरे पर गेरुआ वस्त्र बंधे होते हैं। ख्याल,गबरी,रम्मबत, तमाशा, स्वांरग, फड़, लीला, नौटंकी, भोपा, रामधारी, बहुरूपिया, भांड, अग्नि, गैहर, गीदड़, घेर, चंग, ढोला, तेरहताली, बम, भवई, जिंदाद, घापाल, कठपुतली, बगारिया, शंकरिया, पनिहारी, गणगौर, गोपिका, झूलन लीला, मारू, कृष्णम राजस्थावन के अन्यद लोक नृत्य हैं। दादरा और नगर हवेली में टोडला जाति द्वारा विवाह के समय तूर और थाली नृत्य किया जाता है, जिसमें दूल्हा और दुल्हन भी भाग लेते हैं। तरपा, भावड़ा, ढोल अन्य लोक नृत्य हैं। गोआ में फुगडी, ढाले, कुणबी, ढांगर, झगोर, खोल, डाकणी, तरंगमेई, शिगमो, घोड़े, मोदनी, सामयी, हगार, जणमले, आमयी, तोन्याद मेल आदि अन्य लोक नृत्य हैं।

उत्तरी भारत में जम्मूर कश्मीर में कुड,धूमल, भांड पत्थर, बच्चा नगमा, हफीजा, भांड जश्नु, वुएगी नाचुन,राउफ,हिकत, चाकरी, भारवा गीत लोक नृत्य किए जाते हैं। उत्तरप्रदेश की भूटिया जनजाति द्वारा भोटिया नृत्य किया जाता है,जिसमें श्री रामचन्द्र के जीवन चरित का मंचन किया जाता है। राई,रासलीला,नौटंकी,झूला,दीवाली,कजरी, करन, चौरसिया, करमा, शीला, ठुमरी, धोबिया, चरकुला, पाईडंडा, डोमकय, मैला प्रदेश के अन्य लोकनृत्य हैं। उत्तराखंड में थड़िया नृत्य अधिक प्रचलित है। यह नृत्य विवाहित लड़कियों के मायके में पहली बार आने के बाद चौक पर किया जाता है। सरौं, चौंफला, मंडाण, हारूल, बुड़ियात, झुमैलो, चाँचरी, रणभूत, लोटा, झोड़ा, बगवाल, छोलिया, घुघूती, भैला, छपेली, गढ़वाली, कुमाऊँनी, कजरी, झोरा, रास लीला, सिपैंया प्रदेश के अन्य लोक नृत्य हैं।

पंजाब में गिद्दा नृत्य बहुत प्रसिद्ध है,जो लड़कियों द्वारा चमकीले रंग के लहंगे पहनकर घूम-घूमकर, गाने गा-गाकर और तालियाँ बजाकर किया जाता है। यूँ यह नृत्यविवाह,जन्म-दिन आदि सभी अवसरों पर किया जाता है,परंतु जुलाई में सावन महीने की तियाँ (तीज) के अवसर पर 12 दिन विशेष रूप से किया जाता है। पुरुषों द्वारा फसल बो लेने के बाद चाँद की चाँदनी में किया जाने वाला भांगड़ा नृत्य भी प्रदेश का प्रमुख नृत्य है। झूमर सामी, मालवाई गिद्दा, लुड्डी प्रदेश के अन्ये लोक नृत्य हैं। चंडीगढ़ के लोक नृत्यों में पंजाब के लोक नृत्य ही शामिल हैं। इसके अलावा जागो, डांकरा, किकिली, गटका आदि का नाम भी लिया जा सकता है। हरियाणा में खोड़िया नृत्य प्रसिद्ध है,जो और तोंद्वारा लड़के की बारात चले जाने के बाद किया जाता है।

इसी प्रकार दीपक नृत्य हरियाणा के जोगियों द्वारा बीन की लहर पर किया जाता है,जिसे करते समय जोगी अपने हाथ में एक दीपक रखते हैं और अपने गुरु के नेतृत्व में घर-घर जाकर भीख मांगते हैं। हरियाणा में जन्माष्टमी के अगले दिन गुगा नृत्य किया जाता है और फागुन में फागुन नृत्य किया जाता है। फसल कटने के बाद हरियाणा की औरतें चाँदनी रात में लूर नृत्य भी करती हैं। हरियाणा के गुरुग्राम,महेंद्रगढ़ और झज्जर जिलों में पुरुषों द्वारा धमाल नृत्य किया जाता है,जिसमें एक दल डाफ और दूसरा दल संटी रखता है। वेढोल की थाप पर पूरी रात नाचते

शास्त्रीय नृत्यों के अलावा भारत में लोक नृत्यों की भी एक समृद्ध परंपरा है। ये नृत्य किसी शास्त्र विशेष पर आधारित न होने के कारण भिन्न-भिन्न समाजों में समय के साथ स्वयमेव विकसित होते गए। कुछ लोक नृत्य किसी पर्व विशेष पर, कुछ अवसर विशेष पर, कुछ ऋतु विशेष के आगमन पर, कुछ फसलों के बोने अथवा काटने के समय तथा कुछ अन्य अवसरों पर खुशियाँ प्रकट करने के लिए किए जाते हैं। इनके मंचन के कोई सिद्धांत नहीं होते, बल्कि स्थान विशेष के लोग इन्हें अपने परिधानों और अपनी शैली विशेष में करते हैं।

शास्त्रीय नृत्यों के अलावा भारत में लोक नृत्यों की भी एक समृद्ध परंपरा है। ये नृत्य किसी शास्त्र विशेष पर आधारित न होने के कारण भिन्न-भिन्न समाजों में समय के साथ स्वयमेव विकसित होते गए। कुछ लोक नृत्य किसी पर्व विशेष पर, कुछ अवसर विशेष पर, कुछ ऋतु विशेष के आगमन पर, कुछ फसलों के बोने अथवा काटने के समय तथा कुछ अन्य अवसरों पर खुशियाँ प्रकट करने के लिए किए जाते हैं। इनके मंचन के कोई सिद्धांत नहीं होते, बल्कि स्थान विशेष के लोग इन्हें अपने परिधानों और अपनी शैली विशेष में करते हैं।

हैं। सावन में गीतगा-गा कर सावन नृत्य किया जाता है। रबी की फसल कटने के बाद औरतों द्वारा घाघरा और ओढ़नी पहन कर घूमर नृत्य किया जाता है।

फागुन में पुरुषों द्वारा अकेले अथवा महिलाओं के साथ मिलकर चौपाया(मंजीरा) नृत्य किया जाता है। इनके अलावा सांग नृत्य में प्राचीन और मध्यकालीन राजाओ –महाराजाओं की कथाएँ नाच-नाचकर और गा-गाकर सुनाई जाती हैं। फाग,छांग,छठी,डाफ,घूमर,झूमर प्रदेश के कुछ अन्य लोकनृत्य हैं। हिमाचल प्रदेश की कुल्लु घाटी में नाथ नृत्य किया जाता है। नाटी(गियामाला) प्रदेश का मुख्य सामूहिक नृत्य है। एक अन्य नृत्य सैब्रो में अधिकांशत:महिलाएँ होती है,जो धूमिल साड़ियाँ और सुंदर-सुंदर शाल पहनकर कतार में नाचती हैं। करियाड़ा,रावल, बुडा, सीह प्रदेश के लोक नाट्य हैं और फुलमु रांझु, कुंजी चंचलों, राजा गद्दन, भुनकु गद्दी, किन्नौहरी, ठोडा, झोरा, झाली, छड़ी, धामन, छपेली, महासु, डांगी, चंबा, थाली, झैंटा, सुहीरानी गीत, लच्छीग आदि इस प्रदेश के चंबा क्षेत्र के प्रसिद्ध लोक नृत्य हैं। घुघटी,बिडसु,बुडाह,दानव,डांगीवडेपक,पांगी की फूलयात्रा,दशहरा,छरबा, महाथू थाली, जद्दी, झँती, छपेली, डांगी कायांग, वाक्यांग प्रदेश के अन्य लोक नृत्य हैं। महाराष्ट्र में लेजिम, दहिकिला, लावनी, तमाशा, मौनी, बौहदा, ढांगरीगाजा, कोली, लेजिम नृत्यों का प्रचलन है।

दक्षिणी भारत के आंध्र प्रदेश का एक विलक्षण नृत्य गोंड है, जो फसल पक जाने और उसके कटने के बाद किया जाता है, जिसके निष्पादन के समय नर्तक बकरी की खाल पहनते हैं, सिर पर मोर के पंख व लंबे-लंबे सींग बांधते हैं, और पटसन की काली दाढ़ी लगाते हैं। इसी प्रकार वहाँ का ढिमसा नृत्य भी आदिवासी पुरुषों और महिलाओं द्वारा जनवरी माह में फसल की कटाई की खुशी में अथवा बटेला कुडुंग (अप्रैल में शिकार के मौसम) में किया जाता है। घंटाला मरदाला, कोलाट्टम्, भागोट्टम्, बूड़ाकथा, भामाकल्पमम्, बूटा बोमालू, डप्पूह, पेरिणी, तप्पीटा गुलु प्रदेश के अन्यल लोक नृत्य हैं। तेलंगाना में गुसाड़ी, ढिमसा, लंबाड़ी, पेरिणी शिवतांडवम्, डप्पू लोक नृत्य किए जाते हैं। ओडिशा का कोया नृत्य लड़कियाँ आधा गोला बनाकर सरल परंतु भव्यल मुद्राओं से करती हैं, जिसके समय वे हाथ में लोहे की छड़ियाँ जमीन से टकराती हैं। पुरुष जंगली भैंसों के सींग लगे सेलों की मालाओं वाले सिरस्त्राण पहनकर ढोल बजाते हैं। सेराइकेला वसंत पर्व के अवसर पर पुरुषों द्वारा देवों को धन्यवाद देने के लिए छाव नृत्य किया जाता है, जिसके दौरान वे ईश्वंर के मुखौटे लगाकर शिव और काली के कथानकों का मंचन करते हैं। संचार, डंडानटा,पैका, अया, सवारी, गरुड़ वाहन, जदूर मुदारी प्रदेश के अन्य लोक नृत्य हैं।

कर्नाटक में महिलाओं का कुर्ग नृत्य प्रसिद्ध है। दक्षिणी कर्नाटक में पुरुषों का यक्षगान नृत्य भी प्रसिद्ध है, जिसमें प्रदर्शन संगीत, संवादों और पदों द्वारा होता है। डोल्लूष केलिया (आदिवासी नृत्य), वीरगास्से, कुजीता, कोडवास, कर्गा प्रदेश के अन्य(नृत्यन हैं। केरल में तेज गति का कन्नियारकली नृत्य भगवती देवी के सम्मान में गानों की धुन पर किया जाता है। ओणम् थुल्ला, कुडीयट्टम, कालीयट्टम्, टप्पासत्रिकाली, सारी, भद्रकबि प्रदेश के अन्य् लोक नृत्य हैं। तमिलनाडु में महिलाएँ और पुरुष आग के गोले लेकर मरियम्मरम् देवी की प्रशंसा में मरियम्मरम् नृत्य करते हैं, जिस दौरान वे तेज से तेज घूमते हैं और अंत में शंख व तुरही बजाते हुए चले जाते हैं। कोट्टयम्, पिन्नेल्, कोलट्टम्, कुंभी, बसंत, आत्मन आंध्र- प्रदेश के अन्य लोक नृत्य हैं। पांडुचेरी में गराड़ी लोक नृत्य प्रसिद्ध है। लक्षद्वीप समूह के मिनिकाय द्वीप में पुरुषों द्वारा बारु (छोटा ढोल) की ताल पर लावा नृत्य किया जाता है। परिचा काली और कोलकाली संघ शासित क्षेत्र के अन्य नृत्य हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में अंडेमानी और निकोबारी लोक नृत्य किए जाते हैं।

मध्य भारत में मध्य प्रदेश में पंडवाणी, गोन्यो, गोड़ो, नवरानी, दिवारी, चैत, रीना, शूआ, टपाड़ी, शैला, बिल्मा, हेरुदन्नाथ, हुल्कीर, मांदरी, छेरिया, डागला, पाली लोक नृत्यज प्रसिद्ध हैं। छत्तीसगढ़ में सुआ, करमा, डंडा अथवा रहस, रउव,सरहुल, बाट, नाटा, घसियाबाजा, पंथी, झूमर, डागला, पाली, टपाली, नवरानी, दीवारी, मुंडारी लोक नृत्य हैं।

इस प्रकार भारत में आठ शास्त्रीय नृत्य तो हैं ही, इसमें हजारों लोक नृत्यों की भी भरमार है, जिनकी लय और थाप पर नर-नारी कहीं न कहीं पूरे वर्ष थिरकते रहते हैं और एक आनंदप्रद वातावरण का सृजन करते रहते हैं। शास्त्रीय और लोक नृत्यों की भारत जैसी यह संस्कृीति कहीं-कहीं ही मिलती है और भारत इसमें अतुल्य गौरव महसूस करता है।

• • •

वरिष्ठ साहित्यकार

भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भ नटराज शिव

– डॉ० कमल किशोर मिश्र

नटराज के अध्ययन के सन्दर्भ में शिलालेखों को दो दृष्टियों से रखते हैं। इन्ही शिलालेखों के साथ दानपत्रों को भी सम्मिलित किया गया है। इनसे प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयामों की विधिवत जानकारी मिलती है। पहले प्रकार में अखिल भारतीय स्तर पर या वृहत्तर भारत से मिले अनेक शिलालेखों में नटराज का उल्लेख है तथा दूसरे प्रकार में प्राचीन चिदम्बरम् मन्दिर परिसर में शिलालेख उपलब्ध है। चिदम्बरम् के नटराज मंदिर परिसर में उत्कीर्ण अनेक शिलालेख हैं, जिनके माध्यम से मंदिर के कालक्रम और तत्कालीन अन्त: व्यवस्था की जानकारी मिलती है। अनेक तत्कालीन शैवभक्त राजाओं ने दान द्वारा इसकी व्यवस्था को निरन्तर घोषित किया है जिससे मंदिर की व्यवस्था निरन्तर संमृद्ध होती रही।

शिव शब्द का अर्थ है शुभ, मंगल और कल्याणकारी। सारा संसार शिव से ही जन्म लेता है और शिव मे ही समा जाता है।यह सिर्फ आस्था नही, विज्ञान है। शिव ब्रह्मांड के 'डार्क मैटर' है और ऐसा माना जाता है कि हर चीज इसी से शुरू होती है और इसी पर खत्म । शिव अनादि और अनंत है , इसीलिए ज्यामितीय डिजाइन में सिर्फ पैराबोला उन्हें समेट सकता है। लिंग का स्वरूप पैराबोलिक होता है। शिव को लिंग रुप में इसीलिए पूजा जाता है ताकि हमे याद रहे कि शिव अनादि और अनंत है। रुद्राक्ष की माला बड़ी पावन मानी जाती है, लेकिन यह रुद्राक्ष है क्या ? करुणामय शिव की आंख से टपकी आंसू की बूंद !

भगवान श्रीराम ने शिव का जो धनुष तोड़ा था उसका नाम था पिनाक। लंका मूलत: रावण की नहीं, शिव की हुआ करती थी। माता पार्वती के कहने पर उन्होंने विश्वकर्मा से अपने और मां पार्वती के लिए लंका का महल बनवाया था। शिव ने जब लंका में गृह प्रवेश पूजा करवायी तो पुरोहित रावण था। दक्षिणा में रावण ने शिव से शिव की लंका ही मांग ली। भोलेनाथ ने हंसते हुए अपने पुरोहित रावण को वह दे दी और माता पार्वती को लेकर रहने के लिए कैलाश चल दिए। हर महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी शिवरात्रि कहलाती है लेकिन फागुन की चतुर्दशी महाशिवरात्रि कहलाती है क्योकि इसी दिन शिव लिंग रुप में अवतरित हुए थे और इसी दिन शिव का विवाह देवी पार्वती से हुआ था । योग की शुरुआत शिव से हुई थी इसीलिए उन्हें 'आदि योगी' कहा जाता है। सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई मे एक प्राचीन मुहर मिली है जिसमें आदि योगी मुद्रा में शिव की छवि अंकित आभासित होती है। समुद्र मंथन से निकला हुआ विष शिव ने अपने गले मे क्यों रोक लिया क्योंकि उनको याद आया कि उनके हृदय मे विष्णु का वास है क्योकि उन्होंने पूरा पी लिया तो विष्णु को कष्ट होगा। इसीलिए वे विष को गले मे रोक कर नीलकंठ हो गए।

शिव 'नटराज' हैं अर्थात सभी कलाओं के स्वामी। संगीत का जन्म शिव के डमरू से हुआ है और नृत्य का उनके तांडव से। शिव भाषाओं के भी पिता हैं। दुनिया की हर भाषा संस्कृत से जन्मी है और संस्कृत की वर्णमाला शिव के डमरू की ध्वनि से । नृत्य और नाट्य का ज्ञान और उसकी अभिव्यक्ति से गहरा सम्बन्ध है। भारत मे अत्यंत प्राचीन काल से इनकी महत्ता को पहचान कर परंपरा में पिरोया गया है। इस ब्रह्माण्ड के उद्भव,स्थिति और संहार के लिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश की संकल्पना की गई है। हमारे ब्रह्माण्ड की गत्यात्मकता के सूक्ष्म और विराट रुप को दर्शाने के लिए नटराज अर्थात् नृत्य के अधिष्ठाता को स्मरण किया जाता है। इसकी परंपरा अद्वितीय, अत्यन्त मनोहर तथा अति

प्राचीन है। आइये इस प्राचीन परम्परा को इतिहास के साक्ष्य में शिलालेखों की दुनिया में चल कर देखें।

पुरातात्विक शिलालेखों की एक समृद्ध परम्परा भारत में विद्यमान है। ये प्राचीन शिलालेख मुख्यतः संस्कृत भाषा में मिलते हैं तथा समानान्तर रूप से स्थानीय भाषा के भी शिलालेख उपलब्ध हैं। इनकी लिपि ब्राह्मी तथा ब्राह्मी के स्थानीय परिवर्तित रूपों में भी है। साथ ही दक्षिण भारतीय ग्रंथ-लिपि भी दृष्टिगत होती है। नटराज के अध्ययन के सन्दर्भ में शिलालेखों को दो दृष्टियों से रखते हैं। इन्ही शिलालेखों के साथ दानपत्रों को भी सम्मिलित किया गया है। इनसे प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयामों की विधिवत जानकारी मिलती है। पहले प्रकार में अखिल भारतीय स्तर पर या वृहत्तर भारत से मिले अनेक शिलालेखों में नटराज का उल्लेख है तथा दूसरे प्रकार में प्राचीन चिदम्बरम् मन्दिर परिसर में शिलालेख उपलब्ध है। चिदम्बरम् के नटराज मंदिर परिसर में उत्कीर्ण अनेक शिलालेख हैं, जिनके माध्यम से मंदिर के कालक्रम और तत्कालीन अन्तः व्यवस्था की जानकारी मिलती है। अनेक तत्कालीन शैवभक्त राजाओं ने दान द्वारा इसकी व्यवस्था को निरन्तर घोषित किया है जिससे मंदिर की व्यवस्था निरन्तर संमृद्ध होती रही। यद्यपि उपलब्ध शिलालेख जिनकी भाषा संस्कृत, तमिल एवं लिपि में ग्रंथी और चोल कालीन ब्राह्मी का स्वरूप मिलता है। राजराज चोल की पुत्री तथा कुलोतुंग चोल की बहन कंडुवायु अलवार से संबंधित शिलालेख के अतिरिक्त यहाँ कई अन्य शिलालेख भी उपलब्ध हैं। इन अभिलेखों की प्रतिलिपि 'साउथइंडियनइंस्क्रिप्सस, एपीग्राफिका 'इंडिका' तथा 'इंडियनएटिक्विटिआदि में उपलब्ध है।

अर्द्धनारीश्वर रूप में नृत्यरत नटराज शिव का चित्रण महत्त्वपूर्ण है जिसमें ताण्डव तथा लास्य को शरीर के दो भागों में नियोजित किया गया है। उनका सुकोमल अंगहार एक ओर है तथा अति भयंकर गति दूसरी और है। इस तरह वे दो प्रकार की मुद्राओं की भाषा को सफलतापूर्वक चरितार्थ कर रहे हैं तथा शिवगण आनन्द रस के सागर के अनन्त विस्तार में संगीत को तरंग लहरों के रूप में उठता गिरता देख रहे हैं। इस कथानक की अभिव्यक्ति वल्लालसेन के नैहाटी (प.बंग) दानपत्र में होती है-

सन्ख्याताण्डवसम्विधानविलस
नान्दीनिनादोमभिः
निर्मर्यादरसार्णवो दिशतु वस्
श्रेयोर्धनारीश्वरः यस्यार्थे
ललितांगहारवलनैः अर्धे व भीमोदद्धटैः
नाद्यारम्भरयैः
जयत्यभिनयद्वैधानुरोघश......
(एपीग्राफिका इंडिका 14, पृ. 159)

एक अन्य राज्यादेश में कवि नृत्य के बाद रेत पर उभरे अर्द्धनारीश्वर के पदचिह्नों की प्रशंसा करता है। गंगा तट पर एक ही शरीर में शिव तथा देवी अपने पदचिह्न छोड़ रहे हैं, जिससे एक में थलयावक (जवा पुष्प) का तथा दूसरे में भस्म का निशान बन रहा है। यह शिव के सृष्टि के नृत्य को संकेत करता है-

गिरिसुताहरयोः अविभिन्नयोः विहरतो
नियमार्थम् अवन्तु वः
सरस- यावकथस्मविचित्रिता: त्रिपथगा-
पुलिने पदपंक्तयः.....
(एपीग्राफका इंडिका 32, पृ. 51)

विरुवणमल्लै से प्राप्त 13वीं शती का कादवराय का अभिलेख अरुणाचलेश्वर मंदिर के पश्चिमी द्वार पर अंकित है तथा 'भरतमवल्ला' नामक एक आभूषण का वर्णन है, जिसमें उच्चकोटि के रत्न जुड़े हैं। भगवान शिव पाँव में नूपुर बाँधे उमा द्वारा गाये गये धुन पर नृत्य कर रहे है :

ओडरि-मैक्कण्ठमैय्-इश-पाड़ि आडिय
यदि कलर
पेरूमाळुक्किन- माणिक्कम्-
इलंगच्छेद बरतम्बल्ल पेरूमालेवन
तिरूवाशिगैयुड्......*(एपीग्राफिका*
इंडिका 27, पृ. 99)

सौन्दर्य की दृष्टि से नटराज स्वयं में अद्भुत हैं। वीर राजेन्द्र के कन्याकुमारी अभिलेख के अनुसार चोलकालीन महत्त्वपूर्ण कांस्य प्रतिमाओं के श्रृंगार हेतु उन्हें जीते गये युद्धों में प्राप्त मव्यतम रत्नों से सुशोभित किया जाता था। ये चित्रण 'तिरूवल्लूर' में सोमस्कन्द शिव के ललाट पर तथा चिदम्बरम् एवं अन्य शैव प्रतिमाओं में पाये जाते हैं। इस अभिलेख में उल्लेख है कि राजा वीरचोल अर्थात् करैकाल ने दभ्र सभा 'नटराज में 'त्रैलोक्यसार' नामक माणिक्य से सुशोभित किया-

देवस्यादृताधिपस्य महतस्
त्रेलोक्यसूराभियम् श्रीमद्
दभ्रसभानटस्य मुकटे माणिक्यम्
आरोपितम् सन्वैकृतम... स्तनुसमारोपितः
....
(त्रावणकोर आर्केलॉजिकल सीरीज 3.
पृ. 148)

गंगा अवतरण से जुड़ी अनेक पौराणिक गाथाएँ भी शिलालेखों में मिलती हैं। अत्रवर्मा के वनपल्लि ताम्रपट्ट अभिलेख में दिव्य नदी मंदाकिनी को अधीर होकर नटराज शिव के जटाओं में नृत्य करते वर्णित किया गया. है। महानट मंदाकिनी की बूंदों की मधुर ध्वनि को कंकड़ की ध्वनि समझकर मुग्ध हो रहे हैं। यहाँ कंकड़ में अर्थ श्लेष है। कंकड़ का अर्थ नूपुर और जल की बूँद दोनों ही है। यहाँ अर्थालंकार (श्लेष) और शब्दालंकार (अनुप्रास) का समन्वय द्रष्टव्य है। इसमें कवि त्रिलोचनाचार्य ने शिव के साथ संबंध होने के कारण गंगा को भी एक महान नृत्यांगना बना दिया है-

महानटजटाचछटानटदमन्दमन्दाकिनी
कलक्वणि तकञ्कण-
व्रजविजृम्भिवाग्गुम्भनः कविः
कविकुलो- भवो भुवनभव्यदिव्योदयास

शिवागमविशारदो जयति
शरदावल्लभः....
(एपीग्राफिका इंडिका 3, पृ. 63)

ब्रह्मदेव के शिलालेख में शिव के नृत्य के अन्तराल में गंगा की जल की बूँदें उनके मस्तक पर मोतियों के आभूषण की तरह अथवा उनकी लता रूपी जटाओं में चमेली के पुष्पों की तरह प्रतीत होती हैं। उनके गले में हार हथेलियों में पुष्प पृथ्वी पर पुष्प तथा आकाश में सितारों की वर्षा की तरह प्रतिभासित हो रहे हैं। यह 'तालपुष्पपुरा' की अभिव्यक्ति है वास्तव में यह नृत्य के प्रारंभ का एक आनन्ददायक और सुकोमल चित्र है-

मौलौमौक्तिकविभ्रमाः पृथुजटावल्लीषु
मल्लीनिभाः
कण्ठे हारविहारिणोञ्जलिपुटे
फुल्लप्रसूनप्रभाः भूमौ
पतितपुष्पवृष्टिरचना तारारूचश्चाम्बरे
शम्भोः वः
सुखदा भवन्तु नटतो गंगाः
पयोविन्दवः............
(कार्पस इंसकिप्सनम् इंडिकेरम् 4, पृ. 571)

विद्याधर भंजदेव के उड़ीसा ताम्रपट्ट अभिलेख में गंगा की विराट लहरों की तुलना नृत्य के मध्य लहराती शिव की भुजाओं सहित कई वस्तुओं से की गई है। यहां गंगा की परिकल्पना एक नटी की तरह मिलती है जो शिव के नृत्य का अनुकरण कर रही है। दिव्य नदी की उत्ताल तरंगें, जो सभी पापों का नाश करती है चंद्रमा की चंद्रिका में शेषनाग के फन अथवा हिमाच्छादित हिमालय के शिखरों की तरह प्रतीत होती हैं। शिव की भुजाओं का व्यापक रूप से संचलन नृत्य को गतिशील सौन्दर्य प्रदान करता है—

शेषाहेः इव ये फणाः
प्रविलसन्त्युदभास्वरेन- दुत्विषः
प्रालेयाचल श्रृंगकोटय इव त्वंगन्ति ये
त्युव्रताः नृताओपविघटिता
इव भुजा राजन्ति ये शाम्भवाः ते
सर्वाद्यविघट्टिनस् सुरसरित्तोयोर्मयः पान्तु
वः......
(एपीग्राफिका इंडिका 9. पृ. 275)

राजराजा के करेपतन ताम्रपट्ट अभिलेख में शिव के ताण्डव नृत्य का वर्णन है जिसमें वे जब अपने दण्डपाद के अंगूठे को अपने सिर तक उठाते हैं तब गंगा का स्पर्श होता है और गंगा के सीपों से मोती उनके कपाल पर गिरते हैं तथा चंद्रमा से टपकता अमृत देखकर सदैव शिव के मुखमंडल पर स्मित मुस्कान आभासित रहती है। अन्यत्र यह भी वर्णित है कि शिव के द्वारा धारण किये गये कपाल साधारण नहीं है बल्कि उन उच्च दिव्य आत्माओं के हैं, जिनका युग का अस्तित्व शाश्वतता में एक बूँद की तरह है। शिव एकमात्र दिव्य नर्तक हैं जो महाप्रलय से पहले और बाद में भी बने रहे तथा पुनः निर्माण एवं विनाश का क्रम निरन्तर रख सभी चराचर जगत को नवीन स्वरूप प्रदान करते रहे-

हेलोल्लालितचण्डदण्डचरणान्गुष्ठाग्र
भागाहत स्वर्गगोद्गत
शुक्तिसम्पुट गलन्मुक्ताभृताम् ताण्डवे
पाणी विक्ष्य कपालम्
अश्वथ जटाचन्दा मृतोज्जीवितम्
कंकालम् च यद्
अदद्भुतम् स्मितम् अवत्वीशेन तद्वश्चिरम्
....
(एपीग्राफिका इंडिका 3, पृ. 297)

गुजरात से प्राप्त श्रीधर के देवपतन प्रशस्ति अभिलेख में शिव के पंचकृत्य अर्थात् सृजन, रक्षण, विलयन, भ्रम निवारण तथा मुक्ति देने का वर्णन किया गया है :

उपास्महे परम् तत्त्वम्
पंचकृत्यैककारणम्.....
(हिस्टोरिकल इंस्कृप्संस ऑफ गुजरात- 2, पृ. 104)

दक्षिण-पूर्व एशिया के चम्पा क्षेत्र से प्राप्त प्रकाशधर्म का मिशन स्टेले अभिलेख में यह जिज्ञासा की गई है कि जब भगवान शिव ब्रह्मा, विष्णु एवं सभी देवताओं के अधिपति हैं तब वे श्मशान में नृत्य क्यों करते हैं? इसका उत्तर भी यहाँ दिया गया है कि विश्व के कल्याण के लिए वे नृत्य करते हैं तथा विश्व को धारण करने के लिए अपनी ऊर्जा के समान पंचतत्त्वों के स्वरूप को ग्रहण करते हैं-

तथापि भूत्यै जगताम्
अनृत्यच्छमशानभूमवति चित्रम् एतत्..
(इस्कृप्सस ऑफ चम्पा, बुक 3, पृ. 20)

कुमारपाल के वडनगर प्रशस्ति अभिलेख में शिव को नृत्य करते हुए तथा एक माणिक पिण्ड रूपी कन्दुक से खेलते हुए वर्णित किया गया है जिससे प्रतीत होता है कि मानो वे ब्रह्माण्ड के नवसृजित और सृजित होने वाले ग्रह हैं, जिनका निर्माण भगवान शिव की इच्छाशक्ति मात्र से होता है:

ब्रह्माद्वैतधिया मुमुक्षुभीरभीध्यातस्य
बद्धाहरैः इच्छाशक्तिम्
अभीष्टवीमि जगताम् पत्युस् श्रुतीनाम्
निधेः या
व्यापारितसम्रतस् स्वसमयम्
ब्रह्माण्डपिण्डैः नवैः
क्रीडन्ती मणिकन्दुकैः इव सदा
स्वच्छन्दम् आहलादते.....
(हिस्टोरिक इंस्कृप्संस ऑफ गुजरात 2, पृ. 44)

शिव का ताण्डव नृत्य संहारक भी माना गया है। यद्यपि ताण्डव नृत्य के कई रूप हैं यथा आनन्द ताण्डव इत्यादि परन्तु ताण्डव शब्द मात्र से संहारक भाव ध्वनित होता है । अतएव ताण्डव स्वयं में उग्रता का बोधक भी है। यहाँ पर इसी ताण्डव रूप से संबंधित अभिलेखीय तत्त्वों को देखा गया है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के सूर्यवर्मन प्रथम के प्रभखान अभिलेख में शिव के भयानक ताण्डव नृत्य की कल्पना है। सभी देवतागण उनके नृत्य को देख रहे हैं। शिव के ताण्डव से धरती झुक रही है और दिशाएँ कांप रही है-

श्रीमत्पादाग्रल्-
ईलावनमितघरणिवक्षोभिकाषम्
भ्राम्यत्कृन्द- त्सुरेन्द्रम्
भुजबलपवनैः समखलत्सद्विमनैः स्वागै
स्वत्मिपकृताशम् नवरासरूचिभिः
विस्फुरदशिमिमल्यै नाट्यम् ब्रह्मादिसेव्यम्
सुखयतु दयितानन्दनम् चंद्रमौले....

(बी.इ.एफ. इ.ओ. 4, पृ. 674)

हर्ष के एक शिलालेख में वर्णित है कि शिव के नृत्यरत पाद पृथ्वी को दबाकर झुका देते हैं। यद्यपि यह पृथ्वी शेषनाग के फन पर स्थित है तथा उनकी ऊपर उठी हुई भुजाएँ सूर्य और चंद्रमा तक पहुँच रही है। और ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुओं, चराचर जगत की स्थित में परिवर्तन हो जाता है-

पादन्यासावनुना नमति वसुमति
शेषभागावलग्ना बाहूत्क्षपैः समम्...
ऋक्कचन्द्रैः भिन्नावस्थाम् समस्तम्
भवति हि भूवनम् यस्य नृत्ते
प्रवृत्ते स श्रीहर्षाभिभानो जयति पशुपतिः
दत्तविश्वानुकम्पः ....
(एपीग्राफिका इंडिका 2. पृ. 119)

कलचुरी राजा पृथ्वीदेव द्वितीय के कोनि अभिलेख में वर्णन आता है कि ताण्डव नृत्य के समय शिव के पैरों के धमक से पृथ्वी धंस गई है। लोकपाल भयभीत हो गए हैं। उनके हाथों के रौद्र संचालन से पहाड़ एक दूसरे से टकराने लगे हैं दिशाएँ भय से भीत हो गई हैं तथा उनके हाथ के विशिष्ट अस्त्र खटवांग की नोक ब्रह्माण्ड के वृत्त को चीर रही है-

पादन्यासनमत्कषितिप्रविलसद्दोः
कण्डचण्ड- भ्रमिभ्रान्तप्रान्त- नगाभिगात
विदधद्दिक्पाल पर्याकुलम्
खट्वांगोत्कटकोटिगृष्टिविचटद्
ब्रह्माण्डमुड्डामरम् पायात् ताण्डवम्बरम्
पुरभिदो देवस्य वः सर्वदा....
(एपीग्राफिका इंडिका 27. पृ. 280)

स्नोद से प्राप्त एक अभिलेख में धूर्जटि शिव के नृत्यरत पाद संचालन की भयंकर थाप से होने वाले भयावह परिणाम का वर्णन है जिसमें पृथ्वी को धारण करने वाला कछुआ भी स्वयं ही धँस जाता है-

वर्णपरिष्कारिणि चरणभरावनत अवनि
विमत्कमठोरूकपराभोगा
नाट्यस्य धारूजटे घुरि वर्णपरिष्कारिणि
जयति......

एक अन्य राष्ट्रकूट अभिलेख में शिव के सूचीपाद के रौद्र संचालन का सजीव चित्रण है। जब भगवान् नृत्य करते हैं तब उनके सूचीपाद के स्पर्श से पृथ्वी हिल जाती है और पृथ्वी को धरण करने वाले नगाधिराज उनके पाँव के नीचे काँपने लगते हैं। क्षीरसागर एक फड़फड़ाते हुए श्वेत वस्त्र की तरह दिखता है और सबसे बढ़कर उनके घूमते हुए पर्वतों की भाँति प्रतीत होते हैं जिन्हें फिर से पंख लग गये हों।

(एपीग्राफिका इंडिका 1, पृ. 354)

सुन्दर चोल के अनविल ताम्रपट्टाभिलेख में नृत्यमय शिव के हस्त संचालन से होने वाले परिणाम का विवरण है। शिव की गदानुमा भुजाएँ सभी दिशाओं में पहुँचती हैं जिनसे सभी देव एवं असुर भयभीत हो जाते हैं। पहाड़ों की कन्दराओं में एक विशेष प्रकार का कम्पन उत्पन्न होने लगता है और सभी यह सोचने लगते हैं कि असमय में ही प्रलय अथवा महाविनाश आ गया है-

सम्हारः ये
वेगाकृष्टविश्वाचलवलयमहागह्वरो
दयन्निनादव्याभिताशेषदेवासुर
परिकलिताकाण्ड सम्हारशंकाः
आश्वाचक्रावसानावधि
नीतिरास् ताण्डवव्यपरिताः ते
भाहादण्डाः चिरम् वो विदधतु
महतीम् भूतिम् अर्धेन्दुमैले....
(एपीग्राफिका इंडिका 15, पृ. 59)

खजुराहो से प्राप्त एक शिलालेख में शिव के हस्तसंचालन से श्रेष्ठकुल पर्वतों का समूह हवा में वर्तुलाकार घूमते हुए गिर पड़ते हैं और सभी दिशाओं को संभालने वाले हाथियों का करुण क्रंदन सुनाई पड़ता है। सात समुद्रों तक विस्तृत पृथ्वी छिन-भिन्न-सी लगती है और दिव्य पर्वत मेरु शिखरविहीन हो गया सा प्रतीत होता है-

तृणम्पूर्णति यत्र गोत्रशिखरिव्यूहः समूहः
पतत्यव्यावर्तितमूर्तिः
आतंविरूतम् कुर्णन् ककुकुम्भिनाम्
सप्ताम्बोध्यवधिः
प्रधूतवसुधाबन्धः कबन्धिकृतस्वर्गाधूः
वषयकाण्डताण्डवविधिः शवशिवायास्तु
वः...
(एपीग्राफिका इंडिका 1, पृ. 140)

बड़ौदा से प्राप्त एक अभिलेख में शिव के ताण्डव का वर्णन है इसमें शिव की अनेक भुजाओं के रौद्र संचालन से हो रहे विस्फोट से पर्वतों के समूह ऊपर उड़ने लगे और दूसरी ओर इंद्र को अपने वज्र की और देखने के लिए वाध्य होना पड़ा क्योंकि उन्हें लगा कि पर्वतों के पंख फिर से उग आये हैं, जिन्हें उन्होंने अपने वज्र से पूर्वकाल में ही समाप्त कर दिया था-

सन्धयाताण्डव वडम्बरव्यसनिनो भीमस्य
चण्डप्रमिः
व्यानृत्यदुजदण्ड-मण्डलभुवो
झम्झानिलाः पान्तु वः
येषाम् उत्सभवम्
जवेन झगिति व्याहेषु
भूमिभृताम्
उड्डीनेषु विडोजता
पुनः असी दम्बोलि
अलोकितः....
(इस्क्रप्संस ऑफ गुजरात 1. पृ. 67)

सिरपुर से प्राप्त एक अभिलेख में वर्णन है कि शिव किस तरह पर्वतों पर भयंकर प्रहार कर रहे हैं और वे पहाड़ पिण्ड की तरह ऊपर जाकर नीचे गिर रहे हैं। साथ ही शिव अपने नृत्य से लय और गति भी बनाये हुए है-

उतरनाभिघातोप
यः कन्दुकैः इव
कृतातुलतालकेलिः
नृत्ते बभौ स भवभिद्रवताद् भवो वः.......
(एपीग्राफिका इंडिका 31, पृ. 35)

एक कल्चुरी शिलालेख में उल्लेख है कि शिव का ताण्डव नृत्य नागों के अधिपति के फणों को नीचे झुका देता है। पृथ्वी उनके पाद संचालन से वलयाकार हो जाती है सभी दिशाओं के हाथी भयभीत हो भागने लगते हैं और उनके दण्ड समान भुजाओं के संचालन से ब्रह्माण्ड का शीर्ष डमरू की गंभीर ध्वनि पर घूमने लगता है-

चारीसम्चरण प्रवीण
चरणव्यापारणघूर्णित- क्षोणीकुण्ड
नमत्फणीश्वरम् विद्राणदिग्वारणम्
दोर्दण्डब्रमणाद् अकाण्ड
चलितब्रह्माण्ड खण्डम् मुडे भूयाद् वो
निबिडक्क्वणड्डमरूकम् चण्डीपतेः
ताण्डवम्.....
(एपीग्राफिका इंडिका 21, पृ. 149)

एक अन्य अभिलेख में शिव के ऊपर उठे हुए दण्डपाद के साथ-साथ यह भी वर्णन है कि किस प्रकार त्रिपुरजयी शिव अपने ताण्डव में ग्रहों एवं नक्षत्रों पर प्रहार कर रहे हैं, उनके दूसरे पाँव द्वारा नीचे किए गए बहार से पृथ्वी लुप्त हो जाती है और उन्हें आकाश में ही चारी मुद्रा में नृत्य करना पड़ता है-

भूचारीः उत्विष्तो दण्डपादो ग्रहगणम्
उछुभिः सार्धम्
उत्तमम्य भूयः नायाद् यावत् स्वसीमाम्
अपरपदभरभ्रष्टाक्य
भूमिः इल्हः दौस्थयेपिरंग
गगनतलचलच्चारिकाचारवृत्तेस्
त्रयन्ताम् वस् त्रिसन्ध्यम्
त्रिपुरविजनिम्ताण्डवक्रीडितान...
(एपीग्राफिका इंडिका 1, पृ. 354-5)

एक अन्य शिलालेख में विवरण मिलता है कि किस प्रकार शिव के नृत्य को देखने के लिए एकत्र हुए लोग चिंतत है तब वे उनके अद्वितीय सर्वांग सम्पूर्ण नृत्य तथा लास्य की सूक्ष्मताओं को चित्रित करते देखते हैं, जो कि नृत्य का एक सुकोमल अंग है। यह भी कैलाश पर्वत के अस्तित्व के लिए भी खतरा प्रतीत होता है। सर्वपाप हर शिव का आनन्दपूर्वक लास्य नृत्य यद्यपि अपनी विशिष्टताओं- 'स्थानक' के साथ है फिर भी शिव की तलवों की थाप से कैलाश पर्वत कंपित हो रहा है जिससे वहाँ उपस्थित देव और असुर एक साथ भयभीत हो जाते हैं-

सम्पूर्णांगम् अशेषकल्मषमूषम् सम्पन्नम्
अप्यादराद् दूरम्
पादतलावद्यट्टनमत्कैलासनश्यत्सिीति
सानन्दम्
युगपत्सुरासुर सभासमाभदलव्यथाम्
सम्भोः
लास्यप- रिग्रहस्य दिशतु श्रेयाम्सि वः
स्थानकम्-.......
(एपीग्राफिक इंडिका 1. पृ. 354)

बिलहरी चंदि शिलालेख में त्रिपुरजयी

शिव के नृत्य का रौद्र चित्रण है। यहाँ वर्णन है कि उनके विशाल भुजाओं से हो रहे शक्तिशाली विस्फोट से दिशाएँ पीछे की ओर हट गई हैं। जब उनकी पूर्ण ऊर्जा नृत्य में होती है तो आकाश और ऊपर उठ जाता है एवं उनके चारी अथवा वलय से पृथ्वी नीचे चली जाती है-

दिक्षु खाभियोगप्रवलितवलना
विभ्रमाकाण्डचण्डः दोर्दण्डानाम्
प्रकामप्रथिमभिरनिलैः व्योम्ति याते
महत्ताम् अय्याद्
अव्याहतेच्चहम् त्रिपुरविजयिनस् ताण्ड-
वाडम्बरम् यः.......
(एपीग्राफिका इंडिका 1, पृ. 254)

एक अन्य राष्ट्रकूट अभिलेख में शिव के सूचीपाद के रौद्र संचालन का सजीव चित्रण है। जब भगवान् नृत्य करते हैं तब उनके सूचीपाद के स्पर्श से पृथ्वी हिल जाती है और पृथ्वी को धरण करने वाले नगाधिराज उनके पाँव के नीचे काँपने लगते हैं। क्षीरसागर एक फड़फड़ाते हुए श्वेत वस्त्र की तरह दिखता है और सबसे बढ़कर उनके घूमते हुए पर्वतों की भाँति प्रतीत होते हैं जिन्हें फिर से पंख लग गये हों-

सूचिपातेन सद्यः प्रचलति वसुधा कम्पते
नागराजः पदोद्धारेणनितो
ध्वज इव धवलो दुग्धसिन्धुः विभाति
दोर्दण्डैश् च भ्रमभिः
पुनरपि गिरयो जातपवक्षाः प्रयान्ति
यस्मिन्नित्थम् प्रवृत्ते भवति जगदिदम्
सोस्तु भूत्यै भवो वः....
(एपीग्राफिक इंडिका 32, पृ. 115)

कम्बोडिया से प्राप्त राजेन्द्र वर्मन के प्रिं रूप स्टेले अभिलेख में अद्भुत दक्षता से नृत्यरत शिव तथा ब्रह्माण्डीय शक्तियों पर उनके पूर्ण नियंत्रण को दिखलाया गया है-

त्रातुम् त्रिलोकीम् कलिकालकाल्याम्
सन्दर्शयन्
नृत्तम् उवाह सर्वम् उ वार्षध्वजम्
ताण्डवपाटवम्
यो निजम् प्रयोगम् त्ववनेर अकम्पम्...

नरसिंह के भेड़ाघाट शिलालेख में नीलकंठ शिव को एक नीलकंठ मयूर के साथ ताण्डव नृत्य में तल्लीन दिखलाया गया है-

शक्तिहेतिपरप्रीतिहेतुः चन्द्रकचर्चित
ताण्डवाडम्बरः
कुर्यानीलकण्ठः प्रियाणि वः.....
(कार्पस इंस्क्रिप्सनम इंडिकेरम 4, पृ. 315)

एक अन्य अभिलेख में शिव के नृत्य तथा उनके पदध्वनि की तुलना किसी घुड़सवार सेना के घोड़ों के खुरों के अबाध धमक से करता है जो पृथ्वी को धूल-धूसरित करते हुए निकल जाती है। ऐसे में दिशाएँ धूलाच्छादित हो जाती है-

कल्पः यद्धाटी
घोटकोटीप्रकरखुरपुटप्रोतितं
कप्रणादिक्षुण्ण
होणी प्रदेशत्रुटदनणुरजस्समापिता शावा
काशः
दृष्यत्कल्पान्तहेलाहतहरडमरू
डडामरस्फारभेरी
भांकारोद्धीममूरिभ्रमणभयमृताराातिभूपा
भ्रमन्ति....
(हैदराबाद आर्केलाजिकल सीरिज 6, पृ. 5)

मुनिराबाद से प्राप्त एक पश्चिमी चालुक्य अभिलेख में भस्म लेप किए हुए शिव के नृत्य का वर्णन है। शिवजी तालियाँ बजाते हैं और सौर एवं चदं को कम्पायमान कर देते हैं, विश्वसर्प शेष को अपनी पदताल के बोझ के नीचे झुकने को विवश कर देते हैं और अपने चपल संचालन से समुद्र को तरंगायित कर देते हैं-

प्रचलितरवीन्दुमण्डलम् आकुंचितशेषम्
उच्च- लज्जलधिः
उद्धूलितस्य शम्भोः उभयकरा-
स्फालनम्जयति........

> **नेपाल से प्राप्त एक अन्य अभिलेख में प्रयुक्त काव्यगत शैली में, जिसके प्रणेता स्वयं राजा हैं, में पशुपति शिव को एक मंदिर समर्पित करने का उल्लेख किया गया है। यहाँ शिव ने वस्त्र के रूप में अनन्त आकाश को धारण कर लिया है तथा बिना किसी संकोच के सर्वो के स्वामी होकर भी नृत्य कर रहे हैं। यह अपने आप में स्तुत्य है क्योंकि भगवान सभी सांसारिक औपचारिकताओं से ऊपर हैं उनका भव्य स्थान परस्पर विरोधाभासो गुणों से परिपूर्ण है और उनकी महिमा का गुणगान चार मुखों वाले ब्रह्मा छह मुख वाले कुमार तथा दशानन रावण एवं सहस्रजिह्वा वासुकि के द्वारा किया यद्यपि वे एक ही है किन्तु उनके आठ शरीर हैं- अष्टमूर्ति और देवताओं तथा असुरों द्वारा समान रूप से पूजित होकर भी वे गगनाभरण होकर नि:संकोच नृत्यमय हैं।**

(हैदराबाद आर्कॅलाजिकल सीरिज 5, पृ. 5)

नृत्यमय शिव स्वरूप में कपालों की स्थिति, लयों की ध्वन्यात्मकता, शब्द ब्रह्म को उत्पत्ति तथा देवी का नृत्य भी साकार हो उठता है। भुवनेश्वर से प्राप्त पूर्वी गंग राज के एक शिलालेख में काव्यात्मक शैली में कपाल के अर्थ को संकेत किया गया है। यहां कंकालों तथा कपालों का पुनरुज्जीवित होना शिव के नृत्य के द्वारा ही संभव हो पाया है। नृत्य के समय शिव के तृतीय नृत्य की लपटें गर्म होकर चंद्रमा से अमृतधार प्रवाहित करती है तथा उनके द्वारा धारण कपालों की श्रेणी एवं श्रृंखला को पुनरुज्जीवित करते हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि एक राहु कई गुणा हो गया है और इससे चंद्र भयभीत हो जाता है। वे शिव की जटाजूटों के जंगल में तथा दिव्य नदी गंगा की कंदराओं में छिप जाते हैं। बिना शरीर के कपालों के जीवित होने का विचार असंख्य राहुओं के घूमने का विचित्र दृश्य सृजित करता है:

विद्युतियंगल
भाललोचनशिखिज्वालागलस्यामृतस्ये
तस्स्पर्शन जीविताशवशिरश्शेणीस शिवे
या एको राहुः
अनेकताम् गत इति त्रासाद् इव प्रेयतास्
चंदस्
सान्द्रजटाटवीसुरसरिदुर्गाभूतः पातु
वः.......
(एपीग्राफिक इंडिका 6, पृ. 200)

बलरामवर्मन के कन्याकुमारी अभिलेख में वर्णन है कि शम्भु का नृत्य सर्वविजयी है। इसके बाजूबंद झलम्-झलम् की ध्वनि ध्वनित हो रही है। धरती पर थपकियाँ देते पाँवों से तक-तक की ध्वनि निकल रही है पाँवों के नूपुर से क्वणन- क्वणन के शब्द निकल रहे हैं। सभी और हर-हर का नाद हो रहा हैं दुदुभि से धिम्म्-धिम्म् और माडल से ध्वनद्-ध्वनद् का नाद हो रहा है। यहाँ शुद्ध नृत्य के लयात्मक अंग पर बल दिया गया है जिसमें ताल पर विशेष ध्यान दिया गया है:

झलम् झलितकंकणम्
तकतकांधूसन्ताडितम्
कवणत्क्वणितनूपुरम् हरहरेति शब्दो
ज्ज्वलम्
धिमिद्धमिदुन्दुभिध्वनिधनाबुलम् मद
दूधणद्धणघन-
धवनंजयति ताण्डवम् शाम्भवम्.......
(त्रावणकोर आर्कलाजिकल सीरीज 4. पृ. 107)

इसी शिलालेख में शिव के साथ देवी के अभिनय एवं उनके लास्य नृत्य का प्रभावशाली चित्रण काव्यात्मक शैली में किया गया है। नटराज की सोंगनी हमारी रक्षा करें जो स्वयं अभिनय अर्थात् नृत्यगत मुद्राओं में निष्णात हैं और जिनसे अद्भुत भावनाओं की सृष्टि होती है वह नृत्य संगीत, ताल तथा लय में नवीन और चिर-नवीन सौन्दर्यात्मक सर्जना से नृत्य को अभिव्यक्त करती हैं। वे सूर्य के समान प्रकाशमान हैं तथा 18 पादों के अद्भुत संचालन से और भी सौन्दर्यवती हो गई हैं-

नवनवनवसारैः नाट्यसंगीततालैः
अभिनयकुशला सा
चाद्भुतोल्लसभावा दिनकररूविभासा
शोभिता- ष्टादशांगैः
करणगतिविदग्धैः नर्तितेशप्रियाव्यात्
......
(त्रावणकोर आकेलाजिकल सीरीज 4, पृ. 107)

स्तोत्र समुच्चय के एक श्लोक में वर्णन है कि किस प्रकार शिव के नृत्य के समय उनके डमरू से चौदह सूत्र निकले, जिनका विश्लेषण और व्याख्या वैयाकरण पाणिनि ने अपने माहेश्वर सूत्र में किया है :-

सूत्राणि प्रथितानि यस्य नटने
ढक्कोत्थितान्यादितस् सम्शोध्यैव
चतुर्दश स्वयम् उदाहार्षिन् मुनिः पाणिनिः
सूत्रः आत्मकृतैः स्फुटार्थघटनम्
सूप्तिंपदव्याकृतिम् वन्दे तम्
जलकण्ठदेवम्
अनिशम् वन्दारुचिन्तामणिम्.......
(जलकण्ठेश्वरशतकम् , 52)

एक अन्य अभिलेख में वर्णन है कि इस प्रकार विजेता सुन्दरवर्मन पुलियार (चिदम्बरम्) की पवित्र परिधि में प्रवेश करने के बाद नटराज की नृत्यरत प्रतिमा को देखकर मुग्ध हो गया और भगवान के श्रीचरणों में गिर पड़ा-

अय्यप्पड़ाद अरूमरै टेः अन्दणर्गळ देव्य-
पुलियाः
तिरूवेल्लैमुटपुक्कुप्योत्रमबलम्पोलिय
आडुवाः पुवैयुडका
मन्नुन तिक मेलिकण्डु-मनकलिप्प
क्लोल मलः मेल अयनुकुलि
तुलाय्मालुम अरेया मलः छेविडि
वर्णग..............
(एपीग्राफिका इंडिका 22, पृ. 47)

राजराज प्रथम के लंगडन ताम्रपट्ट अभिलेख में नटराज मंदिर के निर्माण की सूचना मिलती है। यहाँ वर्णन है कि किस तरह परान्तक चोल ने चिदम्बरम् मंदिर को स्वर्णाच्छादित करवाया था-

स्वभावीः यावजिताखिलाशामुखोपनी-
तामलहाटकेन
समावृओन् मन्दिरम् इन्दुमौलेः
व्यघ्राग्रहारे रविवमशकेतु......
(एपीग्राफिका इंडिका 22, पृ. 239)

तिरूवालगाडु ताम्रपट्ट अभिलेख में परान्तक द्वारा पुरारी शिव के लिए स्वर्ण निर्मित दन सभा बनाये जाने का उल्लेख है-

रजतगिरिजुषः पुरा पुरारेः अकृत स
दग्रसमाभि- धानम् एकनकमयम्
उदारसम्पदा यस्सछिवम् अगुषय छ
लज्जितम् धनेशम्............
(साउथ इंडियन इंस्क्रिप्स 33 पृ. 396)

नोरोड, ग्वालियर से प्राप्त एक शिलालेख में वर्णन है कि महान शैवाचार्य व्योम शिव की प्रेरणा से बनवाए गए शिव के मंदिर के लिए 'नाट्येश्वर' नामक एक विशिष्ट प्रतिमा के साथ उमा-माहेश्वर, गणपति की स्थापना की

गई है-

शिवयुग्मम् उमादेवीनादयेश्वरविनायकौ
समठम् मन्दिर
रम्यैर अयम् एतान्यछाकरत्...
(एपीग्राफिका इंडिका 1, पृ. 359)

इससे यह स्पष्ट होता है कि उत्तर एवं मध्य भारत में नटराज को नाट्येश्वर के नाम से जाना जाता था। नियमित शिल्प ग्रंथों के अभाव में केवल प्राचीन अभिलेखों से ही नटराज के नामों में समानार्थक मित्रताओं का पता चलता है। आदनुर से प्राप्त एक शिलालेख में इन्हें नटिश्वररत्नलवार कहा गया है तथा इनको दान किए गए अखण्डदीप का उल्लेख है-

आडेरिपिडार: कोइल निररूलिय
कूत्पेरूमा-
नडिगलुक्कु तिरूवमि:तुक्कु पकलुम्
इरवुम् एरिय कुक्कुवन् पो......
(साउथ इंडियन इंस्क्रिप्सस 14, पृ. 73)

तंजावुर के राजराजेश्वर मन्दिर की बायीं भित्ति पर अभिलेखों की श्रृंखला मिलती है। इस श्रृंखला के एक अभिलेख में सम्राट राजराज की संगिनी शोला महादेवी द्वारा दिए गए दान का वर्णन है जिसमें 'आढवल्लार' की प्रतिमा का विवरण है जिसके चार हाथ हैं, सिर पर जटा में गंगा- जवजटाएँ सात फूलों को मालायें यह प्रतिमा एक विशाल पद्मपीठ पर स्थित है। यह नटराज ही है-

स्वस्तिश्री उवैया: श्रीराजराजदेव:
नम्वराटियाः सोलमहादेवियाः
श्री राजराजेश्वरमुडैयाः कोथिलिल्
याजुडु इरूपत्तोन्तावद् करै
एसुन्दरूलिवित घोप्पुत्तिरूमेनिकल
उडेयाः कोयिलिल मूलताल
अलन्दुम् रत्ना छरच्हदहप्प णेकलुनिक्के
दक्षिणमे-
रूविटंकन एनुनकल्लाल निरै
एडुतुनकल्लिकवेहिनपडि काक्किन्द
मुशलगनोडुंकुड.
(साउथ इंडियन इंस्क्रिप्सस 14. पृ. 73)

चित्तौड़गढ़ से प्राप्त एक अभिलेख में शिव के एक भव्य मंदिर के निर्माण का उद्देश्य शिव के ताण्डव के प्रति अनुरक्ति को इंगित करता है। कवि के अनुसार कैलाश के ऊपर ताण्डव करना सुरक्षित नहीं है क्योंकि रावण ने इसे जड़ तक हिला दिया है इसलिए शिव नृत्यरूप में अब चित्तौड़गढ़ के मनोहारी चित्रकूट पहाड़ी पर सुरक्षित है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के अनुसार कैलाश नृत्य सभागार नहीं है-

गिरि: कैलासो यद्
दशमुखभुजोच्चवासनादिनाद्
गलन्मूलस्थामा प्रभवति न नाट्यम्
विषहितुम् विषहितुम्
प्रदेशप्राग्भारप्रकृतिरमणीये तद् अधुना
समिद्धेशस् श्रीमन् इह वसति
गौरीसहचर:.........
(एपीग्राफिक इंडिका 2, पृ. 420)

नेपाल से प्राप्त एक अन्य अभिलेख में प्रयुक्त काव्यगत शैली में, जिसके प्रणेता स्वयं राजा हैं, में पशुपति शिव को एक मंदिर समर्पित करने का उल्लेख किया गया है। यहाँ शिव ने वस्त्र के रूप में अनन्त आकाश को धारण कर लिया है तथा बिना किसी संकोच के सर्वो के स्वामी होकर भी नृत्य कर रहे हैं। यह अपने आप में स्तुत्य है क्योंकि भगवान सभी सांसारिक औपचारिकताओं से ऊपर हैं उनका भव्य स्थान परस्पर विरोधाभासो गुणों से परिपूर्ण है और उनकी महिमा का गुणगान चार मुखों वाले ब्रह्मा छः मुख वाले कुमार तथा दशानन रावण एवं सहस्रजिह्वा वासुकि के द्वारा किया यद्यपि वे एक ही है किन्तु उनके आठ शरीर हैं- अष्टमूर्ति और देवताओं तथा असुरों द्वारा समान रूप से पूजित होकर भी वे गगनाभरण होकर निःसंकोच नृत्यमय हैं:-

यम् स्तौति प्रकटप्रभावमहिमा ब्रह्मा
चतुर्भिः मुखे यम् च श्लाघयति
प्रणम्य चरणे षड्भिः मुखैः षण्मुखः यम्
तुष्टाव दशाननोपि दसभिः
वक्त्रे स्फुरत्कन्यरस् सेवाम् यस्य करोति
वासुकि अलम्
जिहवासहस्त्रैः स्तुवन् ख्यात्या यः
परमेश्वरोप
वहते वासो दिशाम् मण्डलम् व्यापी
सूक्ष्मतरः
च शंकरतया ख्यातोपि सम्हारकः
एकोऽप्यष्टतनुः
सुरासुरगुरू वीतत्रपोनृत्यति स्थाणुः
पूज्यतमो विराजति गुणैः एवम् विरूद्धैः
अपि ....
(इंस्क्रिप्सस ऑफ नेपाल 15, 26-27 पृ. 18)

पूर्वी बंगाल के एक अभिलेख में नृत्यमय शिव का नटेश्वर कहा गया है यहां शिव को नृत्यमय प्रतिमा की लाया चंद्रदेव द्वारा स्थापित करने का वर्णन है। यह उल्लेख भी रोचक है कि तिपेरा (आधुनिक बाङ्लादेश)) जिले के नट नगर में अभी भी इस प्रकार के एक नटराज प्रतिमा की पूजा की जाती है । यही शब्द कम्बोडिया के अभिलेखों में भी मिलता है। कम्बाडिया में इन्हें नाटकेश्वर के रूप में भी वर्णन किया गया है जिनको दस भुजाएँ हैं। *(जर्नल ऑफ एशिऐटिक सोसाइटी ऑफ*

> **राजराजा के करेपतन ताम्रपट्ट अभिलेख में शिव के ताण्डव नृत्य का वर्णन है जिसमें वे जब अपने दण्डपाद के अंगूठे को अपने सिर तक उठाते हैं तब गंगा का स्पर्श होता है और गंगा के सीपों से मोती उनके कपाल पर गिरते हैं तथा चंद्रमा से टपकता अमृत देखकर सदैव शिव के मुखमंडल पर स्मित मुस्कान आभासित रहती है। अन्यत्र यह भी वर्णित है कि शिव के द्वारा धारण किये गये कपाल साधारण नहीं है बल्कि उन उच्च दिव्य आत्माओं के हैं, जिनका युग का अस्तित्व शाश्वतता में एक बूंद की तरह है।**

बंगाल (1914-15)

इस प्रकार शिलालेखों में नटराज के संदर्भ में यद्यपि काव्यात्मक शैली में वर्णन मिलता है पर काव्यात्मक संदर्भी के माध्यम से नटराज का वैविध्यपूर्ण वर्णन ऐतिहासिक के साथ ही भारतीय चिंतन में शिव की केन्द्रीय उपस्थति को भी रेखांकित करता है।

संदर्भ :

1. ***एपीग्राफिका इंडिका , vol- 1,2,3,6,9,14,15,22,23,27,31,32,***

   EPIGRAPHIA INDICA. A Collection of Inscriptions. Supplement to The Corpus Inscriptionum Indicarum of the Archaeological Survey. Volumes I-LXIII. Translated by several oriental scholars. Edited by James Burgess, L.L.D., C.I.E et al. Calcutta: The Superintendent of Government Printing, 1892–1977. Reprinted by the Archaeological Survey of India, Government of India, Delhi, 1979–1992.

2. ***इस्कृप्संस ऑफ गुजरात, vol-1.***

   - A collection of Prakrit inscription and Sanskrit inscription, Gujarat, Mewar, Marwar, Kattyawar, Dynasty the Bhavnagar Archaeological Department, Bhabnagar
   - **A Historical and Cultural Study of the Inscriptions of Gujarat:** From Earliest Times to the End of the Caulukya Period (circa 1300 A.D.) Hariprasāda Gaṅgāśaṅkara ŚāstrīB.J. Institute of Learning & Research, 1989 - Gujarat (India) - 312 pages

3. ***इस्कृप्सस ऑफ चम्पा, बुक 3, पृ. 20***

   In 2009, the French School of Asian Studies (École française d'Extrême-Orient, EFEO) launched the project *Corpus of the Inscriptions of Campā* (CIC), aiming to renew the tradition of scholarship on these inscriptions that had thrived at the institution in the early 20th century.

4. ***इंस्क्रिप्सस ऑफ नेपाल 15, 26-27 पृ. 18***

   IMPORTANCE OF NEPALESE SANSKRIT INSCRIPTIONS (English-Hindi Translation) Author Krishan Dev Agrawal "Arvind" RASHTRIYA SANSKRI SANSKRIT SANSTHAN DEEMED UNIVERSITY NEW DEL

5. ***कार्पस इंसकिप्सनम् इंडिकेरम् 4, पृ. 571***

   Epigraphical Studies in India, III CORPUS INSCRIPTIONUM INDICARUM, Archaeological Survey of India

6. ***बी.इ.एफ. इ.ओ. 4, पृ. 674***

   BEFEO is **an annual journal of general Asian studies**;École française d'Extrême-Orient 1901-2021 (Vol. 1, No. 1 - Vol. 107)

7. ***जर्नल ऑफ एशिऐटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (1914-15)***

   The journal of the Asiatic Society of Bengal

   Asiatic Society of Bengal. Proceedings of the Asiatic Society of Bengal

   Calcutta, Bishop's College Press, 1832-1936

8. ***हिस्टोरिकल इंस्कृप्संस ऑफ गुजरात-2,***

   हिस्टोरिक इंस्कृप्संस ऑफ गुजरात 2,

   Historical Inscriptions Of Gujarat (1933)vol 1ac 717

   ByDigital Library Of India

9. **हैदराबाद आर्केलाजिकल सीरिज 6,**

   हैदराबाद आर्केलाजिकल सीरिज 5, 1915,

   Archaeological Departmentfor Hyderabad Archaeological Series

10. ***साउथ इंडियन इंस्क्रिप्स 33***

    साउथ इंडियन इंस्क्रिप्सस 14.

    Archaeological Survey of India

11. ***त्रावणकोर आर्केलॉजिकल सीरीज 3.***

    त्रावणकोर आर्केलाजिकल सीरीज 4.

    Travancore Archaeological series Vol.VI - part-1, 1927,

    Kerala Sahitya Akademi, Kerala, Ramanatha Ayyar A.S.

• • •

संस्कृत विभाग, कलकत्ता
विश्वविद्यालय, कोलकाता

जापान में हिन्दू प्रतीकों की व्याप्ति

– केशव चंद्र

भारतीय संस्कृति और आध्यात्म का संबंध संपूर्ण एशिया में प्राचीन काल से ही रहा है। जापान उन देशों में से एक है जहां की आध्यात्मिक संस्कृति पर भारतीय परंपरा एवं दर्शन का निर्णायक प्रभाव पड़ा है। प्राचीन काल से ही जापान में हिन्दू देवी-देवताओं के अनेक प्रमाण मिले हैं और उन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है। 6ठी शताब्दी में जापान में चीन से बौद्ध धर्म आया। उसके बाद से ही जापान में बौद्ध अवधारणा और प्रथाओं का प्रसार पूरे देश में हुआ। जापान में हिंदू देवी-देवता भी काफी लोकप्रिय रहे हैं। कम ही लोग जानते हैं कि जापान में हिंदू देवताओं की भी पूजा होती है। जापान में हिंदू देवी-देवताओं, विशेषकर मां सरस्वती के लिए कई मंदिर हैं। जापानी मंदिरों में लक्ष्मी, गणेश, इंद्र, ब्रह्मा, गरुड़ और अन्य देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। देखने में आया है किवायु और वरुण जैसे देवताओं की भारत में भले ही ना होती हो लेकिन जापान में अभी भी उनकी पूजा की जाती है।

जापान में हिंदू देवी-देवता भी काफी लोकप्रिय रहे हैं। कम ही लोग जानते हैं कि जापान में हिंदू देवताओं की भी पूजा होती है। जापान में हिंदू देवी-देवताओं, विशेषकर मां सरस्वती के लिए कई मंदिर हैं। जापानी मंदिरों में लक्ष्मी, गणेश, इंद्र, ब्रह्मा, गरुड़ और अन्य देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। देखने में आया है कि वायु और वरुण जैसे देवताओं की भारत में भले ही ना होती हो लेकिन जापान में अभी भी उनकी पूजा की जाती है।

जापान में हिंदू और बौद्ध धर्म दोनों का ही परिचय भारत से हुआ है। डीपी सिंघल ने कहा कि, "कुछ हिंदू देवताओं को बुद्ध धर्म के देवताओं में शामिल मान लिया गया। उदाहरण के रूप में, हिंदू धर्म में वज्र का धारण करने वाले, देवताओं के राजा इंद्र को माना जाता है ठीक इसी प्रकार से जापान के देवता तैशकू को देवताओं के शासक माना जाता है। जबकि बौद्ध धर्म सौभाग्यके भगवान'शो-टेन' या 'शोडेन' की संकल्पना हिंदुओं के भगवान गणेश के रूप में देखी जा सकती है।[1]

समुद्र के देवता वरुण को टोक्यो में सुई-टेन (जल-देवता) के रूप में पूजा जाता है। विद्या की देवी सरस्वती की भांति जापान में 'बेंटेन' ज्ञान की देवी हैं। भगवान शिव की भांति 'डाइकोकू' एक ऐसे भगवान हैं जिनकी मान्यता समूचे जापान में है। जापान के शिकोकू द्वीप में नाविक वर्ग कोम्पेरा नामक देवता की पूजा करता है। यह शब्द संस्कृत के कुंभिरा (मगरमच्छ) का अपभ्रंश है। इसी प्रकार 'बिशुकत्सुमा' भारतीय शिल्पियों के देवता विश्वकर्मा के समान हैं। मृत्यु के देवता यमराज को, जापान में 'डैमानेशन के शासक एम्मा-ओ" के रूप में जानते हैं।[2]

डोनाल्ड ए मैकेंजी के अनुसार: "सागर मंथन की कथा का भी एक जापानी संस्करण है। जापानी कथा में पर्वत एक कछुए के पीठ पर टिका है, देवता हाथों में पानी का फूलदान लिए इसे संभाल रहे हैं। जापान के जुड़वा देवताओं इजानगी और इजानामी ने समुद्र को धकेल दिया। फिर देवता, आदिम या उनके अनुयायी तब तक एक मूसल से मंथन करते रहे जब तक कि उन्हें खट्टा या कड़वा पदार्थ और एक वस्तु की प्राप्ति न हो गई।[3]

समझा जाता है कि जापान में बौद्ध धर्म के साथ ही हिंदू देवता भी एक ही समय में आये। बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बनाए गए हांजी सुइजाकू सिद्धांत के अनुसार मूल जापानी देवताओं और मूल बौद्ध देवताओं का दावा करने वाले स्थानीय लोग थे। जबकि जापान के

कुछ भगवान हिंदू धर्म से संबंधित हैं। प्रारंभिक जापानी साहित्य में इंद्र, यम, लक्ष्मी और अन्य जैसे कई हिंदू देवी देवताओं का वर्णन है। मध्य युगीन जापान में तो केवल हिंदू देवताओं के लिए कई मंदिर बनाए गए हैं। उदाहरण के लिए - हिंदू देवी सरस्वती के मंदिर जापान के हर इलाके में पाए जाते हैं।[4]

जापान में हिन्दू देवी-देवताओं का अंगीकरण:

11वीं शताब्दी के आसपास होन्जी सुइजाकू ने धार्मिक जगत में एक विचार की अवधारणा रखी कि जापान के स्थानीय धर्म शिंतो देवताओं को विभिन्न बौद्ध देवताओं का अस्थायी प्रतिनिधि माना जाये। इस विचार के परिणामस्वरूप बौद्ध देवता मुख्य धारा से बाहर होते चले गए और शिंतो देवताओं के रूप में जापान पर छा गए। चूंकि बौद्धों ने पहले से ही कई हिंदू देवताओं को अंगीकृत किया इसलिए वे शिंतो देवताओं में भी शामिल हो गए। इस प्रकार, कई शिंतो देवता हिंदू देवताओं के अवतार में बदल जाते हैं। होन्जी सुइजाकु मायो-हो-रेन-गे-क्यो सूत्र के "जू-रयो-बॉन" अध्याय के अनुसार पूर्ण बुद्ध जो सर्वोच्च और अनंत हैं उन्होंने इस ग्रह पर शाक्य के रूप में अपने अवतरण किया है। उदाहरण के लिए; - तनबा क्षेत्र का एक छोटा सा शहर, जो सूखे और महामारी के कारण नष्ट हो गया। जब ग्रामीणों ने सहायता के लिए स्थानीय देवता से अपील की। गाँव में यह महामारी इसलिए आई क्योंकि ग्रामीण बोधिसत्व हचमन की पूजा नहीं कर रहे थे। ग्रामीणों ने विहार बनाया जिसमें बोधिसत्व हाचिमा का एक प्रतीक स्थापित किया गया और इसके बाद गांव में किसानी अच्छी हो गई और शांति लौट आई।[5]

वर्ष 742 में मंदिर को सूचित किया कि सम्राट वहां एक जिंगौजी का निर्माण करने पर विचार कर रहे थे। कुछ समय के पश्चात सूर्य देवी वैरोकाना बुद्ध के रुप में प्रकट हुई थीं। एक बहुत भरोसेमंद रिकॉर्ड मिनामोटो नो मोरोटोकी के चोशुकी की डायरी के अनुसार, जब उन्होंने 1134 में सम्राट के साथ कुमानो पूजा स्थल में तीन स्वर्गों की यात्रा की तो उन्होंने पूजा स्थल के अधिकारी से पूछा कि उन तीन अभयारण्यों की देवता के अवतार कौन थे। इसका उत्तर यह है कि वे अमिताभ बुद्ध, एक हजार हाथ वाले अवलोकित और भैसज्यगुरु के अवतार थे। अवतार के दूसरे मामले में, काशीमा अभयारण्य के देवता डेम्योजिन का चित्र ग्यारह मुख वाले अवलोकितेश्वर बुद्ध का है उन्होंने अपने दैवीय ज्ञान को शिथिल कर दिया है ताकि लोग इसे समझ सकें।[6] इस प्रकार हम पाते हैं कि स्थानीय तीर्थ देवता बौद्ध धर्म के देवताओं के अवतार बन जाते हैं जोकि हिंदू भगवानों के अवतार भी होते हैं।

जापान में जापानी रूप में हिंदू भगवान के प्रकार:-

ऐसे कई हिंदू देवता हैं जिन्हें जापानियों द्वारा स्वीकार किया जाता है। जो निम्नांकित है-

1 वैश्रवण एक उपचारक राजा:- (Vaisravana the Healing King)

हिंदू लोककथाओं में, वैश्रवण एक अर्ध देवता हैं। उन्हें धन के देवता कुबेर और यक्ष के स्वामी के नाम से भी जाना जाता है। बौद्धों ने कुबेर को चार देवराजों या बौद्ध देवताओं में से एक के रूप में स्वीकार किया। उन्हें दुर्भावनापूर्ण (बुरी) शक्तियों से बौद्ध धर्म की रक्षा करने का दायित्व सौंपा गया था। चार स्वर्गीय शासकों को जापानियों से परिचित कराने वाली प्रारंभिक सामग्री में से एक शि-टेन-ओ-बोन की व्याख्या पर सुवर्णप्रभा-सूत्र है, "पहले अध्याय के (चार दैवीय राजा) ने कहा कि चार दैवीय शासक धृतराष्ट्र, विरुधक, विरुपाक्ष और वैश्रवण हैं उनपर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर को बुरी ताकत से सुरक्षित करने जिम्मेदारी है।[7] आज भी, जापानियों में नए साल के दिन भाग्य के सात देवताओं के मंदिरों में जाने की परंपरा है। तीन देवताओं की लोकप्रियता का अंदाजा इस तथ्य से आसानी से लगाया जा सकता है कि अकेले टोक्यो के असाकुसा क्षेत्र में सात देवताओं के तीन अलग-अलग राज्यों के लिए तीन तीर्थयात्राएं होती हैं, जिसमें वैश्रवण सात देवताओं में से एक है। वैश्रबाण से कुछ मिलती-जुलती प्राकृतिक वस्तु की भी पूजा की जाती थी। पाषाण युग में वैश्रवण का प्रादुर्भाव हुआ। ग्रामीणों ने एक पत्थर के ऊपर एक संरचना बनाकर एक मंदिर स्थापित किया है।[8]

धन की देवी लक्ष्मी:-

भारत में, लक्ष्मी को सौंदर्य और धन की देवी के रूप में देखा जाता था। पुजारी केइकाई के निहोन रयोइकी ने लक्ष्मी की तस्वीर को जापान में प्रचलित किया और लक्ष्मी की दो कहानियाँ दीं। एक संकट में एक अनुयायी को बचाने के बारे में और दूसरी सुंदरता के बारे में। आधिकारिक इतिहास शोकू निहॉन्गी के अनुसार आठवीं शताब्दी में जापान में राष्ट्र और लोगों की समृद्धि के लिए लक्ष्मी पूजा को राज्य से समर्थन प्राप्त था। यह नए साल के दौरान किशो केकई त्यौहार के रूप में आयोजित किया गया था जहां समृद्धि और सुंदरता के लिए लक्ष्मी की पूजा की जाती थी।[9]

विद्या की देवी सरस्वती :-

देवी लक्ष्मी की ही तरह, देवी सरस्वती का भी जापानियों से परिचय कोन-को-न्यो-क्यो सूत्र द्वारा हुआ। हांजी सुइजाकू अवधारणा पर हेयान काल से मिलते-जुलते मूल देवताओं को मान्यता दी गई थी। विभिन्न बौद्ध देवताओं के जापानी अवतार की इस परिकल्पना भी सरस्वती देवी के साथ जुड़ गई। शिंतो अभयारण्य में, चिकुबुशिमा द्वीप में सरस्वती देवी की पूजा की जाती है।[10]

यम, मृत्यु के स्वामी :-

यम मृत्यु के लिए एकमात्र हिंदू देवता हैं। जापानी साहित्यिक कृतियों में उन्हें एक

ऐसे देवता के रूप में दर्शाया गया है जो मृत्यु के बाद मनुष्य के कार्यों का न्याय करता है और इनाम या सजा देता है। महामारी और अन्य बीमारियों के समय यम की पूजा की जाती है।[11]

महाकाल, महान काले देवता:-

विभिन्न शिची फुकु जिन या भाग्य की संपूर्ण दिव्यताओं के रूप में महाकाल एक प्रमुख देवता हैं। महाकाल के तीन चरण और छह हाथ हैं। एक हाथ में हाथी का कफन है जो उनकी पीठ पर घूमता है और दो हाथों में तलवारें हैं। उसकी गर्दन के चारों ओर खोपड़ी के माध्यम से सांप का जहर प्रविष्ट है। होन्जी सुजाकु की किवदंती के अनुसार जापान में उनकी लोकप्रियता के तेजी से बढ़ने का कारण है कि महाकाल का संबंध ओकुनिसुही नो मिकोटो से था। इस बात पर विश्वास किया जाता है कि जापान में दस दाई सेक के प्रवर्तक, पुजारी सैचो, जापान में महाकाल की प्रतिमा स्थापित करने वाले पहले व्यक्ति थे। ऐसा कहा जाता है कि जब वह चीन से घर लौट रहे थे तो उन्होंने महाकाल के दर्शन किये और वैसा ही प्रतीक चिन्ह बनाया। जापान में महाकाल

भारत में लक्ष्मी को सौंदर्य और धन की देवी के रूप में देखा जाता था। पुजारी केइकाई के निहोन रयोइकी ने लक्ष्मी की तस्वीर को जापान में प्रचलित किया और लक्ष्मी की दो कहानियाँ दीं। एक संकट में एक अनुयायी को बचाने के बारे में और दूसरी सुंदरता के बारे में। आधिकारिक इतिहास शोकू निहॉन्गी के अनुसार आठवीं शताब्दी में जापान में राष्ट्र और लोगों की समृद्धि के लिए लक्ष्मी पूजा को राज्य से समर्थन प्राप्त था। यह नए साल के दौरान किशो केकई त्यौहार के रूप में आयोजित किया गया था जहां समृद्धि और सुंदरता के लिए लक्ष्मी की पूजा की जाती थी।

ने किसी न किसी तरह यौन देवता के महत्व को भी प्राप्त कर लिया था। महाकाल के कुछ जलाए गए प्रतीकों में पीछे की ओर एक लिंग का प्रतीक है। वेश्याएं इस चिह्न को अपने घर के पवित्र स्थान पर रखती थीं। तोकुगावा काल में महाकाल को युद्ध के दिव्य देवता के रूप में दरजा दिया गया।[12]

स्वर्ग के राजा इंद्र:-

स्वर्ग के स्वामी के रूप में इंद्र को बौद्ध धर्म में स्वीकार किया गया। जापान के चौथे आधिकारिक इतिहास शोकू निहोनकोकी में इंद्र और ब्रह्मा उल्लेख किया गया है। इसमें कहा गया है कि इंद्र व ब्रह्मा की पूजा एन्र्याकुजी अभयारण्य के जोशीस्निन श्राइन में दस पुजारियों द्वारा की जानी चाहिए। हर दिन सफेद चावल चढ़ाया जा सकता है। यो-गो-गो-मा-की का कहना है कि इंद्र सफेद हाथी पर सवारी करते हैं। वह पांच रंग के बादलों में रहते हैं और उनका रंग सुनहरा है।[13]

गणपति- हाथी मस्तक देवता:-

जापान में गणपति को शोटेन नाम से जाना जाता है। कीरेन शुयोशी (1347) तोजी, मिइडेरा और अन्य अभयारण्यों के समकालीन पुजारी गणपति की प्रार्थना करते हैं। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विभिन्न प्रदेशों में मुख्य धारा के गणपति की पूजा की पुष्टि होती है। पुजारी इकु ने 1682 में ओसाका के पास शोबीजी अभयारण्य में गणपति की एक प्रतिमा स्थापित की थी। यह पुजारी अपने क्लोजडेन में लिखते हैं कि यह प्रतिमा नौवीं शताब्दी के प्रसिद्ध पुजारी कुकाई चीन से लाए थे। उन्होंने (इकु) 121 दिनों तक प्रार्थना करने के बाद मंदिर में प्रवेश किया। यह जापान की सबसे पवित्र मूर्ति है। इस मूर्ति को यामाजाकी नो शोटेन के नाम से भी जाना जाता है। जर्मन विशेषज्ञ फिलिप फ्रांज वॉन सिस्कोबोल्ड, जो 1823-18 के बीच जापान में रहते थे। उन्होंने अपनी किताब निप्पॉन में गणपति का उल्लेख किया है। चित्रण में भगवान को एक हाथी के नेता और एक मानव शरीर के साथ दर्शाया गया है।[14]

मरीचि - किरणों के देवता:-

भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, दस व्यक्तित्वों में से एक मरीचि की ब्रह्मा की संतानों के रुप में कल्पना की गयी थी। यह शब्द ऋग्वेद में मिलता है, जिसका अर्थ है "सूर्य या चंद्रमा की रोशनी की किरण"। जापान में, इन्हें देवी के रूप में माना जाता था।

लंबी परिवर्तनकारी प्रक्रिया को दर्शाती है। वह बहुत पहले ही लोमड़ी के साथ बागवानी/कृषि के विशेषज्ञ इनारी के साथ संबंध बनाने की बातें प्रचलित हुई। डाकिनी और इनारी का मायोजेनजी के बीच एक सौहार्दिक संबद्ध है जिसे प्रमुख रूप से टोयोकेआ इनारी के नाम से जाना जाता है।[18]

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जापान में बौद्ध धर्म के माध्यम से मूल धर्म शिंतो के रूप में कई हिंदू देवता पाए जाते हैं। जापान में प्रत्येक देवता के पीछे उनकी कहानी, विश्वास, विश्वास और प्रथाएँ हैं जो हिन्दू धर्म के आधार से विकसित हुए हैं। उनकी परपराएँ मान्यताएं और विश्वास में बहुत हद तक एकसमान हैं।

Source- https://twitter.com/Bharathgyan/status/ 1056768395348246528

अधिकांश ऐतिहासिक वृत्तांतों के अनुसार मैरिसी को एक देवी माना जाता है। इन्हें कई भुजाओं के साथ चित्रित किया जाता है, जो एक शूकर की सवारी करती हैं या सात घोड़ों या सात शूकरों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार होती हैं। समुराई योद्धा जीत हासिल करने के लिए सूर्योदय के समय मैरिसी का आह्वान करता था। इससे यह आभास होता है कि मार्शल आर्ट के कुछ प्रसिद्ध अभ्यासकर्ता थे, जिन्होंने उनसे सफलता के लिए प्रार्थना की थी। के-मन-ग्यो कहते हैं कि मूर्ति का निर्माण सोने, चांदी, तांबे और सफेद चंदन या बैंगनी चंदन का उपयोग करके किया गया है।[15]

जल के देवता वरुण:-

जापान अक्सर सूखा, तूफ़ान, बाढ़ आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित रहा है। जल के देवता वरुण की पूजा करना एक सामान्य प्रथा थी। हालांकि इनका उल्लेख जापानी अभिलेखों में बहुत कम मिलता है। कामाकुरा के आसपास के इलाके के आधिकारिक गजेटियर शिनपेन सेज मिनोकामी फुडो किको ने 1828 ई. के आसपास लिखा था, जिसमें टोकाकुइन अभयारण्य में जल देवता की एक तस्वीर का उल्लेख है।[16]

विष्णु- ब्रह्मांड के स्वामी:-

जापान में विष्णु मुख्यतः नारायण के रूप में थे। जापानियों ने उन्हें बौद्ध धर्म के रक्षक के रूप में एक आम देवता के रूप में देखा। हिराता अत्सुटेन आम तौर पर उन्हें नारायण के रूप में संदर्भित करते हैं। हिराता ने नारायण शब्द के अर्थ की व्याख्या की, जहाँ 'नारा' का अर्थ है मनुष्य और 'याना' का अर्थ है जीवन का स्रोत। हिराता का कहना है कि विष्णु गरुड़ की पीठ पर बैठकर यात्रा करते हैं। नारायण मानव जाति की दिव्य शक्ति हैं। हिराता का कहना है कि उन्होंने हर चीज को सजीव और निर्जीव बनाया है। टोक्यो के मेग्यूरो वार्ड में युतेनजी मंदिर में नारायण की एक मूर्ति है।[17]

डाकिनी, डेमी देवी:-

हिंदू पौराणिक कथाओं की भांति ही डाकिनी को जापान में डाकिनी को काला जादू से जोड़ कर देखा जाता है। डाकिनी में विश्वास करने वाले बुद्ध को तांत्रिक बौद्ध धर्म कहा जाता है। कामाकुरा काल के प्रसिद्ध महाकाव्य हेइके मोनगाटारी में डाकिनी से संबंधित एक प्रसंग का उल्लेख मिलता है। एदो समय के दौरान जापानी कार्यों में उल्लेखित डाकिनी की मुख्य धारा की तस्वीर डेमी देवी की एक

जापान में हिंदू धर्म की तरह अनुष्ठानिक प्रथाएं:-

वज्रनाला होम के प्रमुख देवता थे। होम वज्रयान का विशेष प्रतीक है।य़हाँ होम के धुएं की वजह से इसे एक आद्वितीय अभयारण्य माना गया। जापान के वज्रयान (शिंगोन) मंदिर में होम के लिए विशेष गलियारे विकसित किए गए हैं। वज्रयान में होम की विशिष्टता इसके परंपरा में भी स्पष्ट है. जापानी सामग्री शि-दा-इन-ज़ू में, 'चार समारोहों की मुद्राएं', चार रीति-रिवाज हैं: (1) 18 चरणों का प्रारंभिक कार्य (जहाचिदा), (2) वज्रधातु (कोंग काई), (3) गर्भधातु (ताइजाकाई), और (4) होम या फ़ुड (अकाला)।

होम के दौरान ग्यारह मुद्राओं के कार्यों के लिए एक विशेष खंड दिया गया है। प्राथमिक मुद्रा कोंगाकारुमा-बोसात्सु-इन है, जिसे पवित्र अग्नि जलाने से पहले किया जाता है। दूसरा है का-तेन चो-शो इन, 'अग्नि देवता का स्वागत करने के लिए मुद्रा'। यह होम उत्सव का मुख्य प्रदर्शन है। यह अग्नि के आह्वान हेतु एक आनुष्ठानिक क्रिया है। नवग्रह एक तीसरी मुद्रा है, राशि चक्र के लक्षण (रासी); और स्वर्गीय पिंड एक चौथी मुद्रा है। प्राथमिक देवता होमा

समारोह की पांचवीं मुद्रा (जाप, होनज़ोन) है, अकला, जिसका पृथ्वी पर अपना स्थान रखने के लिए पहला स्थान है। यह संपूर्ण सेवा का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक है। अकाला (जापानी फ़ूडा) ज्वालाओं से घिरा हुआ है, और जापानी प्रतीकात्मक अभ्यावेदन में उसे केवल उसकी ज्वालाओं और मुहरों द्वारा चित्रित किया गया है। यह वज्र-ज्वल-गुदा-केंद्रित अर्क (वज्रनाला और ज्वालानाला का संक्षिप्त रूप) की याद दिलाता है।[19]

जापानी लिपियों, कहानियाँ और शास्त्रीय कार्यों में हिंदू धर्म के साक्ष्य:-

भारत की लिपियों पर आधारित जापानी वर्णमाला:-

जापानी भाषा संस्कृत की भाँति विभक्ति आधारित है। वाक्य संरचना, आकृति विज्ञान, ध्वनि विज्ञान और अर्थ संरचना को प्रशासित करने वाले इसके सिद्धांत अपने ही उदाहरण पर चलते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जापानी अक्षर सेट के सैंतालीस अक्षरों की कल्पना कोबो दैशी 774-835 ने संस्कृत अक्षर के बाद की थी। जापानी शब्दांश की संरचना को जापान में बोडशीसेना के प्रभाव का श्रेय दिया जाता है।' जापानी गीत 'इरोहा-उता' में सभी 47 जापानी अक्षर शामिल हैं जो महापरिनिर्वाण-सूत्र में संस्कृत बौद्ध गीत से आए हैं।[20]

भारतीय लिपियों को सिद्धम के नाम से जाना जाता है, जिन्हें चीनी में हिस-तान और जापानी में शित्तन कहा जाता है और इसे आठवीं शताब्दी से जापान में संस्कृत की रचना के लिए लिखा गया था। इसकी शुरुआत कोबो ने की थी इन्हें ही मन्त्रयान बौद्ध धर्म को चीन से जापान लाने का श्रेय प्राप्त है। सिद्धम, एक प्रकार की ब्राह्मी लिपि और नागरी की एक बड़ी बहन, विशेष रूप से मन्त्रयान बौद्ध धर्म के उदय के साथ चीन और जापान में प्रसिद्ध हो गई। इसका उपयोग धरणियों, मंत्रों और बीजाक्षरों की रचना के लिए किया जाता था।[21] बीजाक्षर, शित्तन में लिखे गए प्रतिनिधि शब्दांश प्रार्थना की वस्तु हैं जब वे भगवान के तत्व से बात करते हैं। उदाहरण के लिए, 'अन्' अग्नि के लिए बना है, 'सीए' कैंड्रा के लिए, 'आई' इंद्र के लिए इत्यादि। सूर्य जापान में जीवन का प्रतीक है, और कैंड्रा के साथ इसका अर्थ ब्रह्मांडीय अनुक्रम में अनंत है। बीज अक्षरों को कमल के फूलों पर उनकी स्वर्गीय उत्पत्ति को प्रदर्शित करने के लिए स्थापित किया गया है।[22] कोबे द्वारा लिखित एक पाठ में कुछ विवरण सिद्धम लिपियों का संरक्षण जो बोनजी, शिट्टानजिमो, नाराबी-नी-शोकू-गी हैं। इन विभिन्न धरणियों में भारतीय लिपियों की उत्पत्ति की व्याख्या है।

जापानी कहानियों पर भारतीय प्रभाव-

जापानी ब्रह्माण्ड संबंधी और पौराणिक साहित्य का एक बड़ा हिस्सा भारतीय कथाओं से प्रभावित है। हाजिमे नाकामुरा का वर्णन है कि भारतीय कहानी की सामग्री जापानी कहानी को आकार प्रदान करती है। इससे पहले व्हीलर का वर्णन है कि जापानी कहानी का कई हिस्सा भारतीयों के लिए अज्ञात था। बुरो-नोकामी की एक और कहानी है जिसका चरित्र एक देवता के रूप में स्थापित है जिसे बहादुर-तेज-तेजस्वी पुरुष के रूप में जाना जाता है। यह कामी कोई और नहीं बल्कि भारतीय देवता गवाग्रीविया बैल के सिर वाले देवता हो सकते हैं। कहानी में जातक कथाओं की शैली का वर्णन किया गया है और दिखाया गया है कि कैसे भगवान एक बुरे राजा को दंडित करते हैं और अच्छे आदमी को इनाम देते हैं। भारत में चंद्रमा को शशांक भी कहा जाता है। ससांका का मतलब खरगोश होता है। प्राचीन जापान में यह धारणा आम थी कि चंद्रमा पर एक खरगोश को ले जाया गया था, जो संभवतः भारतीय प्रभाव का परिणाम था।[23]

बंदर और मगरमच्छ की पौराणिक कथा का का उल्लेख निचिरेन ने 1222-82 ई. के अपने एक कार्य में किया गया है। कोनजाकू मोनोगटारी में भी इस कथा का स्पष्ट उल्लेख है। ऋषि रुस्यारंगा की एक और कहानी संभवतः बौद्ध किंवदंतियों के अनुसरण में जापान पहुँची। एक लोकप्रिय मध्यकालीन जापानी नाटक नारुकामी इसी कहानी पर आधारित है।[24] भारतीय शास्त्रीय कृतियों का प्रमाण जापानी साहित्य की शास्त्रीय कृतियों में देखा गया है। जापानी शास्त्रीय लेखन का पहला चरण बौद्ध धर्म से प्रभावित था। The Tale of Genji बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाने वाला एक महानतम उपन्यास है। जापानी लेखन के दूसरे चरण में यह भी पता चला कि उनके कार्यों में बौद्ध धर्म का प्रभाव था। शिराम ने कई लेख लिखे जैसे तन्निशो अमिताभ बुद्ध से संबंधित है। जापानी लेखन भारतीय लेखन के समान है, जिसमें कर्म और आत्मा के स्थानांतरण को महत्व दिया गया है। मैत्रेय, अमिताभ और वैरोकाना जैसे बौद्ध देवता जापानी लेखन में प्रचलित हैं व हिंदू देवता भी बहुत उल्लेखनीय हैं।[25]

भगवान	भारतीय नाम	जापानी नाम
1. सीगोड	वरुण	सूटेन
2. King of Gods	Indira	Taishakuten
3. God of Success	Ganesha	Shoten
4. God of Wealth	Kuvera	Bishamon
5. Goddess of Learning	Sarasvati	Benten
6. Goddess of Fortune	Laksmi	Kichijoten
7. Mahesh	Shiva	Daikoku
8. Divine Architect	Visvakarman	Bishukatsuma

Source:-http://hssjapan.org/hindu-gods-in-japan/

जापान में हिंदू देव पूजा की प्रगति चरणबद्ध तरीके से हुई। प्राकृतिक घटनाएं जापान में हिंदू भगवान की पूजा के लिए एक अन्य सबसे महत्वपूर्ण कारक है। जापानियों को यह नहीं लगता कि वह विदेशी देवता हैं। जापान में हिंदू देवता की पूजा करने का प्रमुख कारक होन्जी सुइजियाकु ही था। जापानी कला और संस्कृति पर भी हिंदू धर्म का प्रभाव है, विशेष रूप से जापानी लिपियों, जापानी पौराणिक कहानी और शास्त्रीय कार्यों पर, जो

बताते हैं कि भारत और जापान के संबंध बहुत गहरे, मजबूत और पुराने हैं। भौगोलिक दृष्टि से दोनों देश बहुत दूर हैं लेकिन आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टि से दोनों देश एक-दूसरे के बहुत करीब हैं।

सन्दर्भ सूची -

1. Ayer, Pallavi(2017), "Tokayos Invisiable Ganesha', [online web] http://www.thehindu.com/society/history-and-culture/tokyos-invisible-ganeshas/article18514752.ece
2. Nayyar, sanjeev(2002), "china Korea, Japan" [online web] http://www.samskiriti.com.
3. Dr. Shashibala(2016), "Sankrit manuscript and Indian scripts in Japan.[online web] http://www.samskriti.com
4. Bandyopadhya, Krishnendu(2016), "Hindu gods forgotten in India revered in Japan", [Online Web] https://timesofindia.indiatimes.com/india/Hindu-gods-forgotten-in-India-revered-in-Japan/articleshow/50525067.cms
5. BENOY K. BEHL, "Hindu deities in Japan", Frontline, http://www.frontline.in/arts-and-culture/heritage/hindu-deities-in-japan/article7654825.ece
6. Chandra,Lokesh(1980),"Chand Mandut and pawn : a new interpretation", Bijdregentet detail-land envolkenkunde, vol 2/2,pp 313-320
7. Chandra,Lokesh(1978), "The Iconography of uma and Meshavara in Japanese art' annual of Bhandarkar oriental research institution, vol-58/59 pp-733-744.
8. Chandra, Lokesh, "Hindu God and Goddess rooted in Japan" [online web] http://www.sanskrit.nic.in/SVimarsha/V3/c14.pdf
9. Chaudhary .sarojkumar(2003), "Hindu Gods and Goddess in Japan", Vedams e book (p) Ltd, Newdelhi.
10. Rao, sanjay (2012), "Harmonious Bland of Hindism, Buddhism Shinto strain in Japan", [Online Web] https://www.esamskriti.com/e/History/Indian-Influence-Abroad/Harmonious-Blend-Of-Hinduism,-Buddhism,-Shinto-Strains-In-Japan-1.aspx
11. Singhal, D.P (2012), "India and world civilization" rupa publication new delhi.
12. Online web:-http://hssjapan.org/hindu-gods-in-japan/
13. Keshav Chandra, Ph.D Scholar, Japanese Division, Department Of East Asian Studies, Faculty Of Social Science, University Of Delhi.

संदर्भ ग्रंथ:-

1. D.P SINGHAL(2012), " India and world civilization"
2. BENOY K. BEHL, "Hindu deities in Japan", Frontline, http://www.frontline.in/arts-and-culture/heritage/hindu-deities-in-japan/article7654825.ece.
3. Donald A. Mackenzie , "Myths of Pre-Columbian America" - p.190-191).
4. Chaudhary,Hindu Gods and Goddess in Japan 2003
5. ibid
6. Chaudhary,Hindu Gods and Goddess in Japan 2003
7. ibid
8. ibid
9. ibid
10. ibid
11. ibid
12. Chaudhary,Hindu Gods and Goddess in Japan 2003
13. ibid
14. ibid
15. ibid
16. ibid
17. Chaudhary,Hindu Gods and Goddess in Japan ,2003
18. ibid
19. Chandra ,Chand Mandut and pawn : a new interpretation", Bijdregentet detail-land envolken kunde,1980
20. Sanjeev Nayyar, China, Korea, Japan.
21. Dr. Shashibala, "Sanskrit Manuscripts and Indian scripts in Japan
22. ibid
23. Sanjeev Nayyar, China, Korea, Japan
24. ibid
25. ibid

•••

शोधार्थी, पूर्वी एशिया अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा जी-20 में भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन

जी-20 की अध्यक्षता में विश्व नेताओं और प्रतिनिधियों को भारत की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए भा. सां.सं.प. को एक अनूठा और अभूतपूर्व मंच प्रदान किया।

भा. सां.सं.प. को जी-20 के सांस्कृतिक कार्यक्रम की जिम्मेदारी उठाने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ। इस दौरान देश भर में 60 से अधिक स्थानों पर 17000 से अधिक कलाकारों को शामिल करते हुए 300 से अधिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

सभी कार्यक्रम प्रदर्शन कला, दृश्य कला, हस्तशिल्प और सजावट के अन्य प्रदर्शनों के रूप में थे, जिन्हें उदयपुर में सिटी पैलेस, कर्नाटक में हम्पी विरासत स्थल, मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवडिया आदि जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर प्रदर्शित किया गया था, जो न केवल समृद्ध संस्कृति को दर्शाते हैं, बल्कि समकालीन वैश्विक चुनौतियों के माध्यम से दुनिया के लिए एक मार्गदर्शक आवाज के रूप में भविष्य की ओर भारत के विकास मार्च को भी दर्शाते हैं। अंतर-सांस्कृतिक समझ और रचनात्मक तालमेल को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश में जी-20 सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गए।

2023 INDIA

मालदीव में मना 77वां भारतीय स्वाधीनता दिवस

आईसीसी माले ने भारत स्थित कलाकारों के अर्ध शास्त्रीय और हल्के गीतों पर केंद्र में 'संगीत की महफ़िल नामक एक युगल संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया। गत एक अगस्त, 2023 को केंद्र में सुनीता टिकारे और आईसीसी संगीत शिक्षक श्री संतोष कुमार सिन्हा एक दुर्लभ जुगलबंदी की। श्रीमती टिकारे गुरु स्वर्गीय विदुषी पद्मावती शालिग्राम गोखले के शिष्य हैं।

मालदीव में 77वें भारतीय स्वाधीनता दिवस को बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर 15 अगस्त को झंडोत्तोलन तो हुआ ही साथ ही, गत 18 अगस्त को ओलम्पस थिएटर में भारत के 77वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर संगीत एवं नृत्य संध्या का आयोजन किया गया। इसमें भारत-मालदीव सद्भाव तथा आत्मीय संबंधों का विशेष प्रदर्शन किया गया। इसमें आयोजित एकल गायन में बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की। इसी दिन आईसीसी माले के सहयोग से प्रवासी भारतीयों के एक समूह के द्वारा एक रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया।

गत जुलाई मास में आईसीसी, माले द्वारा दो संगीत कार्यशालाओं का आयोजन किया गया था। आठ जुलाई को आयोजित पहली कार्यशाला ताल दादरा पर आधारित थी और दूसरी कार्यशाला ताल कहरवा पर। दोनों ही कार्यशालाओं में सभी आयुवर्ग के लोगों ने अच्छी संख्या में सहभागिता की।

मिश्र में मना हिंदी दिवस

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 18 सितम्बर, 2023 को कैरो में भारतीय दूतावास के टैगोर सभागार में हिंदी में आलेख तथा कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में लोगों ने इसमें सहभागिता की। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को भारतीय राजदूत श्री अजित गुप्ते जी द्वारा सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर मिश्रियों द्वारा हिंदी में कविता पाठ करना सभी के लिए आकर्षण का केंद्र था।

यूनेस्को द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस में एमएसीआईसी, कैरो ने सहभागिता की। यह आयोजन नार शहर में अरब काउंसिल फॉर चाइल्डहुड एंड डेवलॉपमेंट के फ्युचर बिल्डर क्लब में 23 सितम्बर, 2023 को किया गया था। इसमें केंद्र द्वारा एक स्टाल लगाया गया था जिसमें 200 से अधिक लोग आए। साथ ही केंद्र द्वारा पुस्तकें, भारतीय संस्कृति पर साहित्य तथा भारतीय कला और हस्तशिल्प की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। भारतीय संस्कृति पर एक पॉवरप्वाइंट प्रजेंटेशन दिया गया और इनक्रेडेबल इंडिया, महात्मा गाँधी तथा आजादी का अमृत महोत्सव पर एक-एक वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया गया।

सिडनी में आयोजित हुए भारतीय कलाओं के कार्यक्रम

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, हिंदी दिवस 2023 के उपलक्ष्य में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट सोसाइटी ऑफ ऑस्ट्रेलिया के सहयोग से स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र सभागार में हिंदी दिवस कार्यक्रम किया गया।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा 'द स्टोरीज अनटोल्ड' के सहयोग से एक वृत्तचित्र, पैनल चर्चा और केरल के पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र चेंडा का प्रदर्शन आयोजित किया। इस कार्यक्रम में सिडनी में रहने वाले मलयालम समुदाय बहुत गर्मजोशी से भाग लिया।

एक अन्य प्रयास के अंतर्गत मीमेराकी के सहयोग से स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र सभागार में एक वर्ली पेंटिंग प्रदर्शन और कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 65 समुदाय के सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला का मार्गदर्शन दहानू, महाराष्ट्र, भारत से वारली मास्टर आर्टिस्ट श्री अनिल वांगड ने किया, जो ऑनलाइन शामिल हुए। इस कार्यक्रम में छात्र और शिक्षक भी शामिल हुए।

सितम्बर मास में ही स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र ने मीमेराकी और सिडनी संस्कृत स्कूल द्वारा आयोजित गोंड कला कार्यशाला में सहयोग किया। कार्यशाला विशेष रूप से सिडनी संस्कृत स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली क्योंकि यह छात्रों के लिए भारतीय कला के बारे में और अधिक जानने का अवसर लेकर आई।

हिंदी दिवस २०२३ के उपलक्ष्य में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट सोसाइटी ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया के सहयोग से स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र सभागार में हिंदी दिवस कार्यक्रम किया गया।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा 'द स्टोरीज़ अनटोल्ड' के सहयोग से एक वृत्तचित्र, पैनल चर्चा और केरल के पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र चेंडा का प्रदर्शन आयोजित किया। इस कार्यक्रम में सिडनी में रहने वाले मलयालम समुदाय से बहुत गर्मजोशीपूर्ण प्रतिक्रिया मिली।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा मीमेराकी के सहयोग से स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र सभागार में एक वर्ली पेंटिंग प्रदर्शन और कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 65 समुदाय के सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला का मार्गदर्शन दहानू, महाराष्ट्र, भारत से वारली मास्टर आर्टिस्ट श्री अनिल वांगड ने किया, जो ऑनलाइन शामिल हुए। इस कार्यक्रम में छात्र और शिक्षक भी शामिल हुए।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र ने मीमेराकी और सिडनी संस्कृत स्कूल द्वारा आयोजित गोंड कला कार्यशाला में सहयोग किया। कार्यशाला विशेष रूप से सिडनी संस्कृत स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली क्योंकि यह छात्रों के लिए भारतीय कला के बारे में और अधिक जानने का अवसर लेकर आई।

आईसीसीआर, कोलकाता में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

गत 22 सितम्बर को मुक्तोधारा शिल्पी गोष्ठी एवं कला ज्योति एन्सेम्बल (श्रीमती. मोनालिसा घोष) द्वारा सत्यजीत रे सभागार में कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

गत 26 सितम्बर, 2023 को सत्यजीत रे ऑडिटोरियम में इक्वाडोर का लैटिन अमेरिकी संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

सितम्बर को ही आईसीसीआर सहयोगी कार्यक्रम के अन्तर्गत एक शाम: राजभाषा के नाम हिंदी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

हनोई, वियतनाम में मना हिंदी दिवस

मिजोरम राज्य सरकार के सहयोग से 08-सदस्यीय सेनहरी लोक और संस्कृति मंडली द्वारा 8-13 सितंबर, 2023 तक मिलान, इटली में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति का प्रदर्शन।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

सदस्यता शुल्क फार्म

प्रिय महोदय,

कृपया गगनांचल पत्रिका की एक साल/तीन साल की सदस्यता प्रदान करें।

बिल भेजने का पता ....

पत्रिका भिजवाने का पता ....

विवरण	शुल्क				प्रतियों की सं.	रुपये/US$
गगनांचल वर्ष	एक वर्ष	₹	500	(भारत)		
		US$	100	(विदेश)		
	तीन वर्षीय	₹	1200	(भारत)		
		US$	250	(विदेश)		
कुल	छूट, पुस्तकालय		10%			
	पुस्तक विक्रेता		25%			

मैं इसके साथ बैंक ड्राफ्ट सं. .... दिनांक ....

रु./US$ .... बैंक ....

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली के नाम भिजवा रहा/रही हूँ।

कृपया इस फॉर्म को बैंक ड्राफ्ट के साथ
निम्नलिखित पते पर भिजवाएँ :
कार्यक्रम निदेशक (हिंदी)
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
आजाद भवन, इंद्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली-110002, भारत
फोन नं. 011-23379309, 23379310

हस्ताक्षर और स्टैंप ....

नाम ....

पद ....

दिनांक ....

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

प्रकाशन एवं मल्टीमीडिया कृति

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा गत 46 वर्षों से हिंदी पत्रिका गगनांचल का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य देश के साथ-साथ विदेशों में भी भारतीय साहित्य, कला, दर्शन तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है तथा इसका वितरण देश-विदेश में व्यापक स्तर पर किया जाता है।

इसके अतिरिक्त परिषद ने कला, दर्शन, कूटनीति, भाषा एवं साहित्य, विभिन्न विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन किया है। सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों और दार्शनिकों जैसे महात्मा गाँधी, मौलाना आजाद, नेहरू व टैगोर की रचनाएँ परिषद की प्रकाशन योजना में गौरवशाली स्थान रखती हैं। प्रकाशन-योजना विशेष रूप से उन पुस्तकों पर केंद्रित है, जो भारतीय संस्कृति, दर्शन तथा पौराणिक कथाओं, संगीत, नृत्य और नाट्यकला से संबद्ध हैं।

परिषद द्वारा भारत में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महोत्सवों के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा विदेशी सांस्कृतिक दलों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों की वीडियो रिकॉर्डिंग तैयार की जाती है। इसके अतिरिक्त परिषद ने ध्वन्यांकित संगीत के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दूरदर्शन के साथ मिलकर ऑडियो कैसेट एवं डिस्क की एक शृंखला का संयुक्त रूप से निर्माण किया है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की स्थापना, सन् 1950 में स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद द्वारा की गई थी। तब से अब तक, हम भारत में लोकतंत्र की दृढ़ीकरण, न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था की स्थापना, अर्थव्यवस्था का तीव्र विकास, महिलाओं का सशक्तीकरण, विश्व-स्तरीय शैक्षणिक संस्थाओं का सृजन और वैज्ञानिक परम्पराओं का पुनरुज्जीवन देख चुके हैं। भारत की पांच सहस्त्राब्दि पुरानी संस्कृति का नवजागरण, पुनः स्थापना एवं नवीनीकरण हो रहा है, जिसका आभास हमें भारतीय भाषाओं की सक्रिय प्रोन्नति, प्रगति एवं प्रयोग में और सिनेमा के व्यापक प्रभाव में मिलता है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, विकास के इन आयामों से समन्वय रखते हुए, समकालीन भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है।

पिछले पांच दशक, भारत के लम्बे इतिहास में, कला के दृष्टिकोण से सर्वाधिक उत्साहवर्द्धक रहे हैं। भारतीय साहित्य, संगीत व नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला व शिल्प और नाट्यकला तथा फिल्म, प्रत्येक में अभूतपूर्व सृजन हो रहा है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, परंपरागत के साथ-साथ समकालीन प्रयोगों को भी लगातार बढ़ावा दे रही है। साथ ही, भारत की सांस्कृतिक पहचान-शास्त्रीय व लोक कलाओं को विशेष सम्मान दिया जाता है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद सहभागिता व भाईचारे की संस्कृति की संवाहक है, व अन्य राष्ट्रों के साथ सृजनात्मक संवाद स्थापित करती है। विश्व-संस्कृति से संवाद स्थापित करती है। विश्व-संस्कृति से संवाद स्थापित करने के लिए परिषद ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय संस्कृति की समृद्धि एवं विविधता को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

भारत और सहयोगी राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक व बौद्धिक आदान-प्रदान का अग्रणी प्रायोजक होना, परिषद के लिए गौरव का विषय है। परिषद का यह संकल्प है कि आने वाले वर्षों में भारत के गौरवशाली सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक आंदोलन को बढ़ावा दिया जाए।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

अध्यक्ष	:	23378616, 23370698
महानिदेशक	:	23378103, 23370471
उप-महानिदेशक (प्रशासन)	:	23370784, 23379315
उप-महानिदेशक (संस्कृति)	:	23379249, 23370794
हिंदी अनुभाग	:	23370237, 23379309-10 एक्स. 2256/2272

पंजीयन संख्या, आर.एन/32381/78
ISSN-0971-1430

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के प्रकाशन

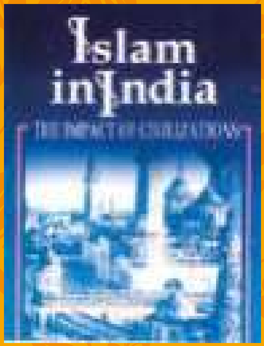

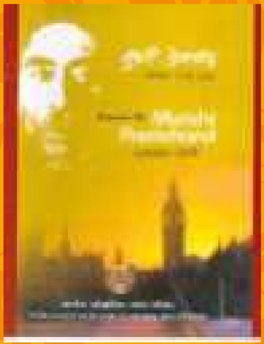
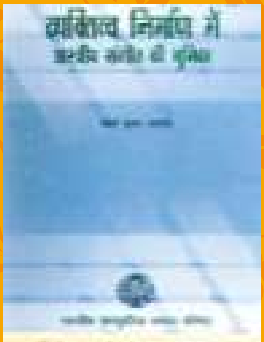

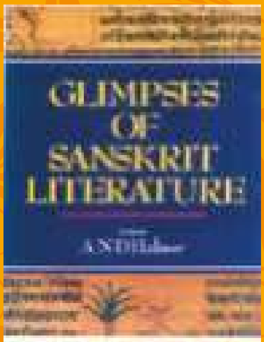

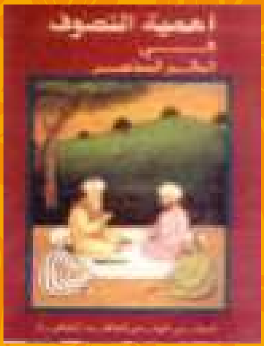
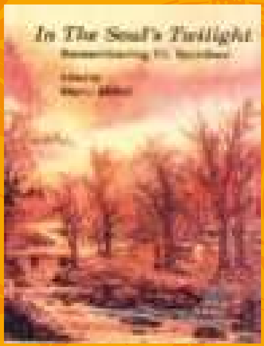

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
फोन : 91-11-23379309, 23379310
ई-मेल : pohindi.iccr@nic.in
वेबसाइट : www.iccr.gov.in

आवरण परिकल्पना : ममता गोयनका